स्वाध्याय स्वमन्थन स्वावलम्बन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

166

इलाहाबाद

DFD/[redacted]-03

फैशन डिजाइनिंग

DFD/[redacted]-03

पंचम खण्ड - फैशन के प्रभाव

शान्तिपुरम् (सेक्टर-एफ), फाफामऊ, इलाहाबाद - 211013

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

DFD/[redacted] - 03

फैशन डिजाइनिंग

डिजाइन आइडिया-१

ब्लाक

५

फैशन के प्रभाव

यूनिट-१

फैशन को प्रभावित करने वाले तत्व

यूनिट-२

शारीरिक समानुपात

यूनिट-३

फैशन व्याख्या

यूनिट-४

बाजार का सर्वेक्षण

ब्लाक-१

पाठ्यक्रम परिचय

फैशन के प्रभाव

स्थान विशेष के लिए वस्त्र पहनने के कई कारण होते हैं। शीत, वर्षा और बर्फ से सुरक्षा, पर्वतारोही, कड़कड़ाती ठंड, शीत से बचने के लिये उच्च तकनीक आउटर वियर, पार्टी मे जाने के लिए आकर्षक वियर तथा तैराकी के लिए स्विम वियर आदि पहनते समय हमे आसपास के चलन, प्रथागत तथा नवीनतम फैशन का ध्यान रखना पड़ता है। ये फैशन के प्रभाव का एक अंश मात्र है। जो कि हमें अधिकांशतः देखने को मिल जाता है।

यूनिट-१

फैशन को प्रभावित करते तत्व- किसी युग के फ़ैशन को कई चीजें या तत्व प्रभावित करते हैं। यह यूनिट इन्हीं तत्वों को सूचीबद्व कर, विस्तश्त व्याख्या करता है।

यूनिट-२

शारीरिक समानुपात- यह यूनिट फिगर के दो पक्षों से सम्बन्धित है। एक उनके समानुपात व दूसरा, विभिन्न फ़िगर के लिये कपड़े का चुनाव। साथ ही विभिन्न प्रकार के फिगर पर ड्राफ्ट कैसे समायोजित किये जायें, पर भी कुछ सुझाव देता है।

यूनिट-३

फैशन व्याख्या- यह यूनिट वस्त्रों के विभिन्न भागों व भिन्न प्रकारों के सरल रेखांकन को सूचीबद्व करता है।

यूनिट-४

बाजार का सर्वेक्षण- फैशन डिजाइनर को जानकारी होनी चाहिए कि बाजार में क्या और किस कीमत पर उपलब्ध है। यूनिट ने वस्त्र के दो पक्ष बटन व लेन को बाजार के सर्वेक्षण के लिए चुना है।

संरचना

१.१ यूनिट प्रस्तावना

१.२ उद्देश्य

१.३ फैशन को प्रभावित करते तत्व

१.४ सारॉश

१.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

१.६ स्वाध्ययन हेतु

१.१ यूनिट प्रस्तावना:-

ऐसे कई तत्व हैं जो किसी युग के फैशन को प्रभावित करते हैं। यह यूनिट उन्हीं तत्वों को सूचीबद्ध कर, विस्तृत व्याख्या करता है।

१.२ उद्देश्य:-

यदि एक फैशन डिजाइनर इन फोकस को समझता है, तो उसके लिए, हमारे समय के बदलते फैशन परिवेश को समझ पाना सरल होगा।

१.३ फैशन को प्रभावित करते तत्व:-

फैशन एक स्थिर साफ तालाब की तरह है जो अपने आस–पास की हर वस्तु को उसके सच्चे रूप में प्रतिबिम्बित कर देता है। फैशन के चारों ओर प्राकृतिक व मानवकृत वस्तुओं के साथ–साथ समाज भी है।

फैशन सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक स्तर, राजनीतिक ताकत, धर्म, व्यवसाय व उद्योगों, लिंग, जाति, जनजाति, विचार, औद्योगिक प्रगति, तकनीक सुधारों, नई खोजों, हीरो व आदर्श व्यक्तियों, व्यक्तिगत पसन्द, नापसन्द, कला, भवन निर्माण, संगीत, खेल,

मनोरंजन, इत्यादि से प्रभावित होता है।

फैशन और कला, दोनों ने ही एक दूसरे को प्रभावित किया है। फोटोग्राफी के उद्भव से पहले के दिनों में, लोगों का दृश्य पेन्ट कर रहे एक पेन्टर की कल्पना करिए, कलाकार, उस समय लोगों द्वारा पहने गए कपड़ों को रिकार्ड कर रहा होगा।

परन्तु असल में सापेक्षिक आधुनिक जगत में ही कला आंदोलन फैशन को प्रभावित कर पाये हैं।

अतः कुछ आधुनिक कला आंदोलनों जैसे - इम्प्रेशनिज्म और पॉप आर्ट मूवमेन्ट पर विचार करें। अधिक सम्भावना इस बात की है कि सामान्य रोजमर्रा के फैशन की तुलना में, अधिक असामान्य फैशन डिजाइन ही इन कला आंदोलनों से प्रेरित हुए हों। साथ ही यह सीमा भी है कि विभिन्न युगों में न जाने कौन सी तकनीकें व कौन से कपड़े प्रचलित हों।

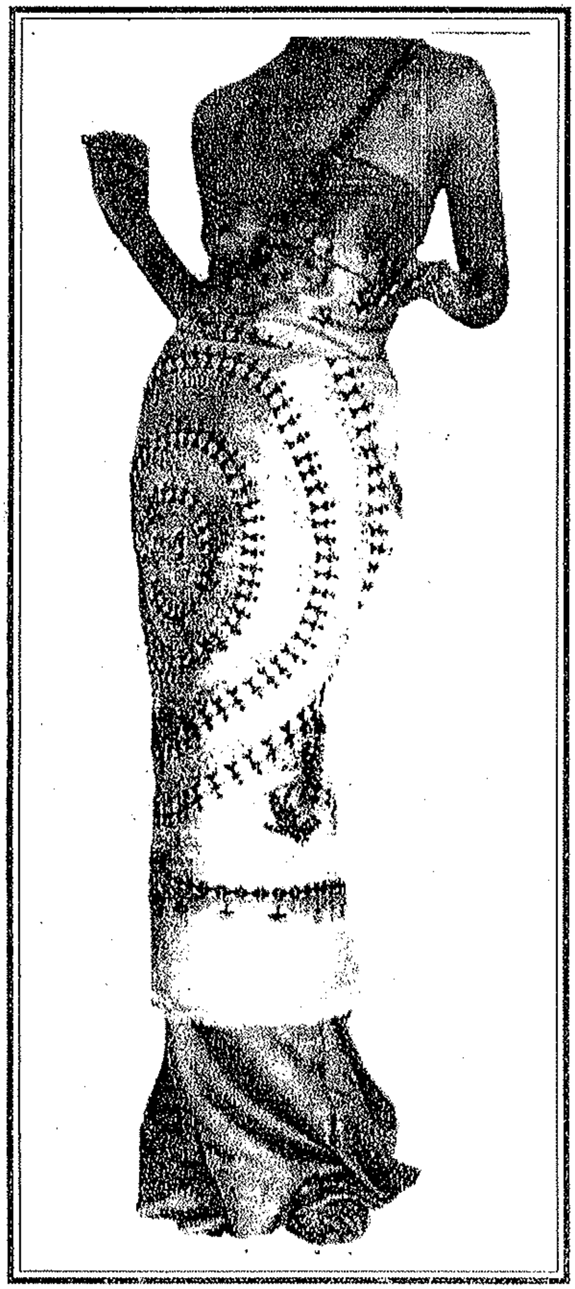

परन्तु ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण शब्द है इक्सटेन्ट अर्थात कि कला से जुड़ा या प्रेरित फैशन कितना जन सामान्य या लोकप्रिय है।

फैशन एक चिन्ह तंत्र की तरह है। यह संकेतों, चिन्हों व आक्नोग्राफी की माला है जो बिना कुछ बोले व्यक्तियों व समूहों के सम्बन्ध में अर्थ संवहित करती है। टैटू व छिदी हुई नाभि से लेकर नवीनतम केश सज्जा तक, अपने

सभी रूपों में फैशन आइक्नोग्राफी का सर्वश्रेष्ठ रूप है। हम व्यक्तिगत पहचान अभिव्यक्त करते हैं। यह हमें, स्वयं को दूसरों को जल्दी समझा पाने में सहायक होती है।

फैशन सांस्कृतिक बदलावों का बैरोमीटर भी है। हम अपने शरीरों का सौन्दर्य या बदसूरती कैसे देखते हैं, यह मुखाकृति के प्रति सांस्कृतिक विचारों पर निर्भर करता है।

आज सांस्कृतिक आदर्शो पर कड़ी नजर रखते हुए अपने शरीर को पुनः आकृति देने व रि—फैशन करने में हमारी अक्षमता ने हमें फैशन की परीक्षा में असफल कर दिया है। वह जो इस परीक्षा में सफल होते हैं, अपना पूरा जीवन संतुलित भोजन, व्यायाम, कास्मेटिक सर्जरी और अन्य व्यवस्थाओं में व्यतीत कर देते हैं। इसमें उस अल्टीमेट पहनावे की खोज में की जानी वाली खरीददारी भी शामिल है।

संतुलित भोजन, व्यायाम द्वारा अपना नियमित मेक ओवर करने के प्रति हमारी लापरवाही तथा लगातार विशिष्ट ड्रेस शैलियों का प्रयोग बताता है कि हमारे व्यक्तित्व में, कमजोर इच्छाशक्ति की खामी है। फैशन की नजरों में हम सिद्व होते हैं, फैशन के स्तर पर कुछ अपर्याप्त व अपूर्ण सिद्व होते हैं।

" फैशन आकाश में है, सड़क पर है, फैशन का सम्बन्ध विचारों से है, हम जैसे रहते हैं, जो हो रहा है।"

" फैशन कुरूपता का एक रूप है जो इतना असहनीय होता है कि हमें इसे हर छः माह में बदलना पड़ता है।"

"केवल एक वह वस्तु जो हमें पशुओं से भिन्न बनाती है, स्वयं को करने की हमारी क्षमता है।"

फैशन एक ऐसी वस्तु है जिससे हम रोज रूबरू होते हैं। वह लोग जो कहते हैं कि वह क्या पहनते हैं इसकी परवाह नहीं करते, भी हर सुबह ऐसे कपड़े चुनने में समय व्यतीत करते हैं जो उनके विषय में तथा उस दिन की उनकी भावनाओं के विषय में बहुत कहते हैं।

फैशन जगत में एक चीज निश्चित है और वह है बदलाव या परिवर्तन। संगीत, वीडियो, पुस्तकों व टी० वी० के माध्यम से हम पर निरन्तर नये फैशन विचारों की बौछार

हो रही है। लोगों के पहनावों पर फिल्मों का भी प्रभाव पड़ता है। फिल्म 'मेन इन ब्लैक' के बाद, रे बैन कम्पनी ने कई अधिक धूप के चश्मे बेचे। कभी–२ एक प्रचलन विश्वव्यापी होता है। १९५० के दशक में हर युवा वर्ग इलूक्स प्रेस्ले की तरह कपड़े पहनता था।

फैशन को कौन डिक्टेट करता है? संगीतज्ञों व सांस्कृतिक आदर्शो ने सदा से हमारे पहनावे को प्रभावित किया है। परन्तु ऐसा ही राजनीतिक व्यक्तित्वों व राजसत्ताओं ने भी किया है। हिलेरी क्लिंटन ने क्या पहना है, पर अखबार व पत्रिकाएँ– रिर्पोट लिखती है। वेल्स की राजकुमारी डायना की हाल ही में हुई मृत्यु, उच्च फैशन जगत के लिए भारी आघात है, जहाँ उनके कपड़े दैनिक खबरों में रहते थे।

१७०० के दशक के लोग भी, नवीनतम शैलियों की खोज में पत्रिकाएँ ढूंढा करते थे। फ्रैस्च कोर्ट के बाहर महिलाएँ और ड्रेसमेकर हेतु क्या चल रहा है, जानने के लिये रेखांकनों पर निर्भर रहते थे। प्रख्यात फ्रॉसीसी राजा लुईस चर्तुदश ने कहा था कि फैशन एक दर्पण है। लुईस स्वयं भी अपनी शैली के लिये विख्यात थे जो अत्यधिक लेस व वेलवेट का प्रयोग करते थे।

कपड़े लोगों को समूहों में विभाजित कर देते हैं। फैशन प्रदर्शक है। कपड़े प्रदर्शित करते हैं कि व्यक्ति किस समूह का है। हाई स्कूल में समूहों के नाम होते हैं– गोथ्स, स्केटर्स, प्रेप्स, हर्वस। शैलियाँ दिखाती है आप कौन हैं, परन्तु वह स्टिरियो ट व समूहों के बीच दूरी भी उत्पन्न करती है उदाहरणार्थ एक व्यवसायिक हरे बाल व कइ फ्रेक हुए लड़के को पागल व बाहरी व्यक्ति समझ सकता है, परन्तु किसी अन्य व्यक्ति के लिये वह लड़का सच्चा कन्फर्मिस्ट हो सकता है। वह एक विशिष्ट में पोशाक पहन कर विद्रोह और अलगाव का संदेश संवहित करता है परन्तु उसके समूह के अन्दर उसका यह रूप सामान्य है। किसी शैली को स्वीकृति या अस्वीकृति, उस समाज की प्रतिक्रिया है जिसमें हम रहते हैं।

फैशन भाषा है जो पहनने वाले के बारे में एक सार सुनाता है। "कपड़े संवहन के ऐसे शब्द विहीन माध्यम की रचना करते हैं जिसे हम सब समझते हैं", यह कथन है कैथरीन हैमनेट जो ब्रिटेन की शीर्ष की फैशन डिजाइनर है। हैमनेट लोकप्रिय हुई जब "जीवन चुनिए" जैसे बड़े–२ संदेशों वाले उनके टीशर्ट कई रॉक बैन्डस् द्वारा पहने गए।

जो हम पहनते हैं उसे पहनने के कई कारण होते हैं। शीत, वर्षा और बर्फ से सुरक्षा, पर्वतारोही, कड़कड़ाती ठंड, शीत से बचने के लिये उच्च तकनीक आउटर वियर, पहनते हैं।

शारीरिक आकर्षण:-कई शैलियाँ केमिस्ट्री प्रेरित करने के लिये पहनी जाती हैं।

भावनाएँ:-जब हम खुश होते हैं 'ड्रेस अप' होते हैं और जब दुखी होते हैं तो हम 'ड्रेस डाउन' होते हैं।

धार्मिक अभिव्यक्ति:-रूढ़िवादी यहूदी (जेविस) पुरूष लम्बे काले सूट पहनते हैं व मुसलमान स्त्रियाँ, आँखों के सिवा अपने शरीर का हर भाग ढँकती हैं।

पहचान व परम्परा:-जज लोग लम्बे रोब्स पहनते हैं, सेना के जवान वर्दी पहनते हैं, दुल्हनें लम्बी सफेद पोशाक पहनती हैं।

फैशन एक बड़ा व्यापार है। विश्व के किसी भी अन्य व्यवसाय से अधिक लोग वस्त्रों के खरीदने, बेचने तथा निर्माण से सम्बद्ध हैं। हर रोज करोड़ों कारीगर कपड़ों की डिजाइनिंग, सिलाई, चिपकाने डाईग तथा स्टोर तक पहुंचाने के कार्य में संलिप्त हैं। जाने-अनजाने बसों पर विज्ञापन, बिलबोर्ड व पत्रिकाएँ हमें क्या पहनना चाहिये, पर सुझाव देते रहते हैं।

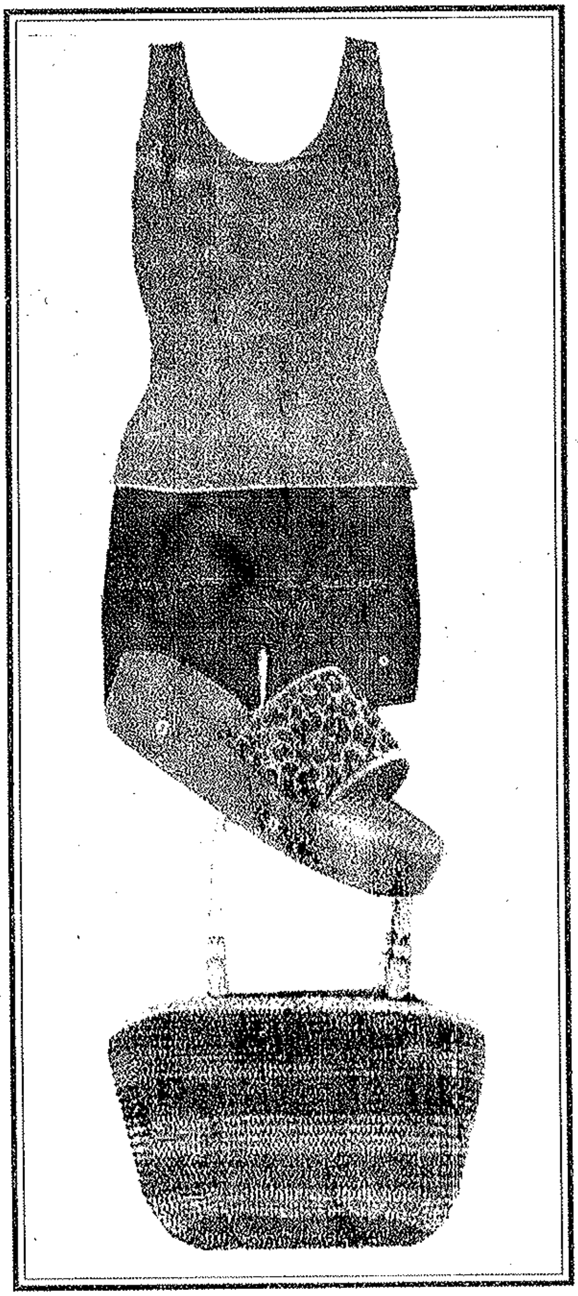

पहनावे को राजनीतिक हथियार के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है। १६ वीं सदी के इंग्लैंड में, जन-सामान्य पर फ्रांस में निर्मित कपड़े पहनने पर कानूनन प्रतिबंध लगाया गया था। बीसवीं शताब्दी के कम्युनिस्ट विद्रोह के दौरान, जाति व नस्लभेद हटाने के लिये वर्दी का प्रयोग किया जाता था।

फैशन एक अनन्त लोकप्रिय प्रतियोगिता है। हाई फैशन विशिष्ट पसन्द व फैशन जगत में विशेष अधिकार वाले पुरूष व स्त्रियों के एक छोटे समूह की शैली है। धन सम्पदा व स्तर वाले लोग, मुख्य डिपार्टमैन्ट स्टोर के उपभोक्ता, फैशन पत्रिकाओं के सम्पादक व लेखक, सभी हॉट कान्टूर (फ्रेंच भाषा में हाई फैशन) का भाग है। इन बहुमूल्य व कलात्मक फैशन में कुछ कमी आगे बढ़कर जन सामान्य के लिये फैशन बन सकते हैं। अधिकतर रनवे पर ही रह जाते हैं।

लोकप्रिय फैशन की जड़े खोजना लगभग असम्भव है। कोई नहीं जानता कि १६६० में इग्लैण्ड के युवाओं द्वारा पहने जाने वाले शार्ट स्कर्ट और बूट, कैसे पेरिस के रनवे तक पहुँचं अथवा कैसे नीली जींस अमरीका में इतनी लोकप्रिय हो गई अथवा ब्रोन की गलियों से हिप–हॉप, लन्दन व मिलान के हॉट कन्टूर फैशन शो तक पहुँच गया।

टीवी के सिटकॉमज देखकर, खिलाड़ियों के कपड़े व नग्न मिडरिफ, बैगी पैन्ट और संगीत, कला व पुस्तकों के प्रचलन में क्या लोकप्रिय है, यह जानना आसान है।

कस्ट्यूम इतिहास के परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट है कि किसी भी युग की पोशाक, उस समय के मौसम से पूरी तरह मेल खाती थी। यह कथन है जेम्स लिवर का जो जाने माने अंग्रेजी कस्ट्यूम इतिहासकार हैं। बेल बाटम जींस, कैसे डिजाइनर जींस में परिवर्तित हो गई, १६८० के दशक का बूट लुक, १६६० के दशक का बैगी लुक बन गया? कोई नहीं जानता।

एक बार पहचान बना लेने के पश्चात कुछ नये व अलग की तलाश में फैशन परिवर्तित होने लगता है।

सात साल पहले पेजेन्ट शुरू हुए जिनमें टू–पीस स्विमसूट पहने जाने की आज्ञा मिली। इस साल ४२ प्रतियोगियों ने पेजेन्ट द्वारा उपलब्ध कराये गये डोरी वाले स्विम सूट पहने। कुछ ने मना कर दिया।

एक प्रतियोगी ने कहा "इतना कुछ खोल देने पर मैं असुविधा महसूस करूंगी।" मैं अपनी पुत्री को ऐसी पोशाक नहीं पहनाना चाहूंगी। "नग्नता ने टी वी रेटिंग बढाने में सहायता नहीं की। दर्शकों की संख्या अब तक की न्यूनतम संख्या थी। ६.८ मिलियन, २००३ की तुलना में ५०,००० कम थे।

स्त्रियों की शालीनता के विषय में धार्मिक विचारों की जड़े मजबूत व साधिकार हैं।

इस्लाम में कुरान (२४:३१) ने महिलाओं को निर्दिष्ट किया है, "उन्हें अपनी छाती पर्दो से ढंकने दें तथा अपनी वेशभूषा कुछ विशेष रिश्तेदारों, नौकरों तथा बच्चों के अलावा किसी को न दिखाने दें।"

इन शब्दों को मुसलमान विविध तरीकों से कार्यान्वित करते हैं। कुछ सीधे--२ पहनावे को दिखाने से बचते हैं। मुसलमान लड़कियाँ व्यायाम कक्षाओं में शार्टस पहनने से दूर रह सकती हैं। अन्य मानते हैं कि महिलाओं को केवल अपने चेहरे व हाथ खुले रखने चाहिये और अफगानी स्त्रियाँ, पूर्ण रूप से ढ़कने वाले बुर्के पहनती हैं जिसमें आँखों के लिये जालीदार छिद्र होते हैं।

यहूदी पुराणों में स्त्रियों की वेशभूषा पर कुछ निश्चित निर्देश नहीं हैं परन्तु शारीरिक शुद्वता और शालीनता के प्रति चेतावनी के कारण तालमुदों ने विवाहित महिलाओं पर सार्वजनिक जगहों पर अपने केश खुले रखने पर प्रतिबंध लगाया जिसके कारण विग अर्थात नकली केशों और स्कार्फो का प्रयोग शुरू हुआ।

शालीनता की विचारधारा शुरू होती है, नग्न आदम व ईव के स्वयं को किम की पत्तियों से ढंके जाने से।

ईसाइयों के नई बाइबिल में मुख्य पद्यॉश यीशू के शब्दों में महिलाओं की पोशाक पर नहीं बल्कि पुरूषों की प्रतिक्रिया पर केन्द्रित होता है।

"मैं तुमसे यह कहता हूँ कि हर वह व्यक्ति जो किसी महिला को लालचपूर्ण नजरों से देखता है, वह अपने हृदय में उस महिला के प्रति व्यभिचार कर लेता है।"

ऐसे ही दो नये टेस्टामेन्ट के गद्यॉश पहनावे से सम्बन्धित है। "महिलाओं को स्वयं को शालीन व समझदारी से सजाना चाहिये न कि सजावटी केशों, सोने या मोती या बहुमूल्य वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिये।"

"चोटी या जुड़ा, सोने की सजावट या रोब्स, पहनने जैसे बाहरी शोभाओं को अपना न होने दें।"

इसी कारण कुछ विरोधी विचारों के लोग, आभूषण मेकअप, व बहुरंगी कपड़ों के प्रयोग का विरोध करते हैं। परन्तु असल में यह पद्यॉश ऐसे पहनावों के विरूद्व चेतावनी है जो लैंगिक रूप से उत्तेजक या अत्यधिक भड़कीले अथवा महँगे हों।

एक अन्य मुद्दा है पूजा के समय का पहनावा। यह लिखा गया है कि कोई भी महिला जो अपना सिर खोल कर पूजा करती हैं, अपने शीश का अनादर करती हैं।

कई धर्मो के लोग पोशाक का प्रयोग अपने विश्वास के चिन्ह के रूप में करते हैं। कभी-२ धर्म के कारण एक विशेष प्रकार की पोशाक की आवश्यकता होती है, तो कभी यह परम्परा की बात होती है।

इस्लाम में, पुरूष व महिला दोनों को व्यवहार में ही नहीं, पहनावे में शालीन होना आवश्यक है। कुछ मुसलमान महिलाएँ शालीन पोशाक या हिजाब पहनती हैं, शरीर व सिर का बड़ा भाग ढंक लेती हैं।

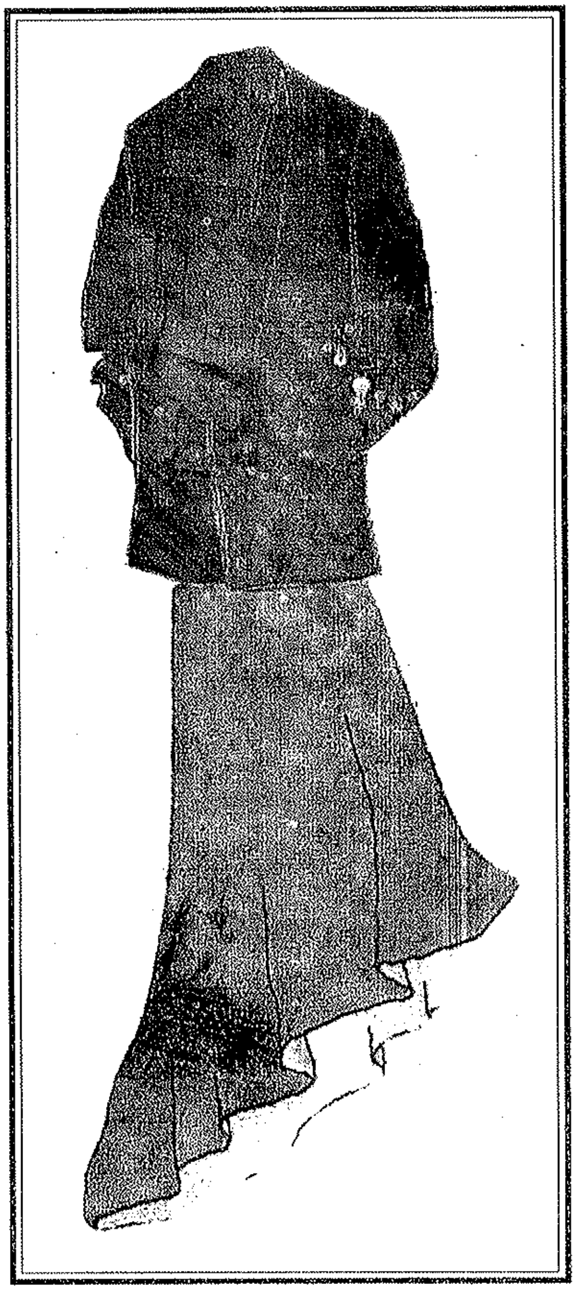

सिक्ख धर्म के अनुयायी जो भारत का एक धर्म है, लोग भी अपने सिर ढंक कर रखते हैं। सिख पुरूष अपने सिर, सूती पगड़ी से बांध कर रखते हैं। जबकि सिख महिलाएँ पगड़ी या स्कार्फ पहन सकती हैं।

अधिकतर हासिदिक यहूदी पुरूष सामने के बाल घुंघराले रखते हैं और झालरदार शॉल पहनते हैं, दोनों चीजें कुछ प्राचीन इजाइलियों द्वारा पहनी जाती थी। हर पृष्ठभूमि के यहूदी पुरूष यारमुल्क (स्कलकैप्स) पहन सकते हैं।

बौद्वसाधु व साधिकाएँ कई रंगों में रोब्स पहनते हैं, ग्रे से नारंगी तक जो उनके क्षेत्र व तौर-तरीकों के अनुसार होता है। कई बार बौद्वपरम्पराओं के अनुसार साधु व साधिका दोनों ही अपने सिर मुड़वा लेते हैं।

"प्लेन लोग" जैसे अमिश और मेमोनिट्स सादे कपड़े पहनते हैं जो परम्परागत तौर तरीकों के प्रति आस्था का प्रतिबिम्ब होते हैं। पुरूष प्रायः सादी हैट व लम्बे कोट पहनते हैं और स्त्रियाँ सादी पोशाकें व रिपुन पहनती हैं।

विशिष्ट प्रकार के पहनावे पहनने का या पहनने के तरीके का एक सोचा समझा उद्देश्य हो सकता है, अथवा इसका इच्छित या अनिच्छित साइड इफेक्ट हो सकता है जो आपके सामाजिक स्तर, आय, व्यवसाय, रूढ़िवादी या धार्मिक झुकाव, हाव–भाव, वैवाहिक स्तर, शारीरिक क्षमता और लैंगिक दृष्टिकोण आदि के विषय में सही या गलत विचारधारा का निर्माण कर सकता है। इसे एक "सामाजिक संदेश" कहा जा सकता है। भले ही यह सोच–समझ कर न किया गया हो। यदि देखने वाले का 'कोड आफ इन्टरप्रेशन" अर्थात समझने का तरीका पहनने वाले के तरीके से भिन्न होगा तो इससे गलत विचारधाराओं का जन्म होगा।

किसी भी संस्कृति में सामाजिक संदेश भेजने के लिये पहनावे के निर्माण एकत्र करने व पहने जाने का तरीका, प्रचलित फैशन द्वारा चलाया जाता है। फैशन के परिवर्तन की दर बदलती रहती है, कपड़े पहनने व एसेसरी करने में आसान बदलाव वाली शैलियाँ कुछ महीनों में ही बदल सकती हैं या छोटे समूहों अथवा मीडिया–प्रभावित आधुनिक परिवेश में, कुछ दिनों में भी बदल सकती हैं। अधिक विस्तृत परिवर्तन जिनमें अधिक समय, पैसा या मेहनत की आवश्यकता हो सकती है, को बदलने में पीढ़ियाँ गुजर सकती हैं। जब फैशन बदलता है तो पहनावे से आने वाले संदेश भी बदल जाते हैं। जैसे मूल्यवान कपड़े पहनना निम्न कारण या इनका समायोजन हो सकता है।

— धनवान होना
— कपड़ों पर अधिक धन व्यय करना, पसन्द होना
— सामान्य से सस्ते कपड़े खरीद पाना

अन्य संदेश जो पहनावा दे सकता है-

— व्यक्तिगत या सांस्कृतिक पहचान जताना
— सामाजिक समूह के प्रसंग को स्थापित करना बनाये रखना या विरोध करना।

कई समाजों में उच्च पदों के लोग, अपने सामाजिक स्तर के प्रतीक के रूप में विशेष प्रकार के कपड़े या सज्जा की वस्तुएँ आरक्षित कर लेते हैं। प्राचीन समय में केवल यूनानी राजसभा के लोग ही टेरिन परपिल में रंगे कपड़े पहन सकते थे, केवल उच्च पदासीन हवाई चीफ ही फिदर क्लाक्स और व्हेल के नक्काशीदार दाँत पहन सकते थे। चीन में गणतंत्र की स्थापना से पूर्व केवल सम्राट ही पीला रंग पहन सकते थे। पूरे

इतिहास के दौरान, कौन क्या पहन सकता है को नियंत्रित करने के लिये कई प्रकार के नियंत्रण नियमों का पूरा विस्तृत तंत्र रहा है। अन्य समाजों में निचले स्तर के लोगों, उच्च स्तर के व्यक्तियों के वस्त्रों को पहनने से रोकने वाले कानून नही थे, परन्तु स्तरीय वस्त्रों की ऊँची कीमतें, उनकी खरीद व प्रदर्शन को स्वतः ही सीमित कर देती थी। आज के पश्चिमी समाज में केवल धनवान ही हॉट कन्दूर वहन कर सकते हैं। समाज से बहिष्कृत होने का डर भी वस्त्रों के चुनाव को सीमित कर देता है।

सेना, पुलिस व दमकल कर्मी, सामान्यतः वर्दी पहनते हैं, जैसा कि कई उद्योगों में मजदूर करते हैं। विद्यालय में जाने वाले बच्चे, विद्यालय की वर्दी पहनते हैं, जबकि कॉलेज या विश्वविद्यालय के विद्यार्थी कभी–२ अकादमी की पोशाकें पहन लेते हैं। ६ ार्मिक संघों के सदस्य, हैविट्स नामक वर्दी पहन सकते हैं। कभी–२ पहनावे की या एसेसरी की कोई एक वस्तु व्यक्ति के व्यवसाय या व्यवसाय के अन्दर पद का पूर्ण ब्यौरा दे देती है। उदाहरणार्थ– ऊँची टोक या मुख्य कुक द्वारा पहनी जाने वाली चिफ्स हैट।

विश्व के कई क्षेत्रों में पहनावे व आभूषण की शैलियाँ व राष्ट्रीय पोशाकें, किसी विशिष्ट गॉव, जाति, धर्म इत्यादि की सदस्यता की घोषणा करते हैं। एक स्कोट्समैन अपने कुल की घोषणा अपने चारखोने से करता है। एक सिक्ख, पगड़ी व अन्य परम्परागत पहनावा पहन कर अपना धार्मिक सम्मिलन दर्शा सकता है। एक फ्रांसीसी किसान महिला अपने गॉव की पहचान अपनी टोपी या कोइफ से कर सकती है।

कपड़े सॉस्कृतिक मान्यों तथा परम्परागत विश्वासों से मतभेद भी दर्शा सकते हैं, साथ ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता के द्योतक हो सकते हैं। १६ वीं शताब्दी के यूरोप में लेखकों व कलाकारों का जीवन व पोशाके आम लोगों को धक्का पहुँचाने वाली थीं। पुरूष कलाकार वेलवेट के वेस्टकोट्स तथा भड़कीले नेक क्लाथ्स पहनते थे। २० वीं सदी के पश्चिम में बोहेमिथन, बीटनिक्स, हिप्पी, गोथ, पंक और स्किनहेड्स ने सांस्कृतिक परम्पराओं के विरूद्व चलना जारी रखा है। अब जब हॉट्स कन्दूर फैशन, स्ट्रीट फैशन की साहित्यिक चोरी कर रहा है तो स्ट्रीट फैशन ने झटका देने की अपनी कुछ शक्ति खो दी है, परन्तु फिर भी हिप व कूल लगने की चाह रखने वाले सैकड़ों को यह आज भी प्रेरित करता है।

हिन्दू महिलायें– एक बार शादी हो जाने के बाद–सिन्दूर, एक लाल चूर्ण केशों की मांग में लगाती हैं। विधवा हो जाने पर वह सिन्दूर तथा आभूषण पहनना त्याग देती हैं तथा सरल सफेद कपड़े पहनती हैं। पश्चिमी विश्व के पुरूष व स्त्रियॉ वैवाहिक स्तर दिखाने के लिए शादी की अंगूठियॉ पहन सकते हैं। यह वैवाहिक स्तर के दृष्टिगत

संकेत हैं।

कुछ पहनावे पहनने वाले की शालीनता के द्योतक होते हैं। उदाहरणार्थ- कई मुसलमान स्त्रियाँ अपने सिर व शरीर ढंक कर रखती हैं जो उनके सम्मानित महिला होने के स्तर की घोषणा करते हैं। कुछ अन्य पहनावे उच्श्रृंख्ल झुकाव दर्शा सकते हैं। उदाहरणार्थ- एक पश्चिमी महिला अति स्टीलेटो हील पहन सकती है, अति कसे व शारीरिक प्रदर्शन करने वाली काली या लाल पोशाक, अत्यधिक मेकअप, भड़कीली आभूषण और इत्र पहन कर अपनी कामुक रूचि का प्रदर्शन कर सकती हैं। एक पुरूष एक कसी हुई शर्ट ऊपर के बटन खोल कर पहन सकता है।

शालीनता व प्रलोभन किससे बनता है, यह विभिन्न संस्कृतियों, एक ही संस्कृति में विभिन्न सन्दर्भों और समयानुसार जैसे-जैसे फैशन उभरते व खत्म होते हैं, के आधार पर विविध हो सकता है। साथ ही व्यक्ति मिश्रित संदेश प्रदर्शित करने का चुनाव कर सकता है। उदाहरणार्थ एक सऊदी अरब की महिला, अपना सम्मान प्रदर्शित करने के लिये अबाया पहन सकती है। परन्तु वह एक विलासी कपड़े का अबाया चुन सकती है जो सिर पर कसने के लिये काटा गया हो तथा उसे ऊँची हील और फैशनेबल पर्स से कर सकती है। सभी विस्तार सेक्सुअल डिजायरबिल्टी दर्शाते हैं परन्तु सम्मान का भी संदेश देते हैं।

कभी कभी लोग फैशन के पक्ष या विरोध का चयन इस आधार पर करते हैं कि क्या वह ''गे'' दिखता है या नहीं? पूर्णतः 'गे' फैशन चयनों

में प्रचलित लिंग मान्यों के विरूद्व पहनावे और 'गे' या समलैंगिक पुरूषों के लिए, फैशनेबल या वेल केप्ट दिखना आते हैं। जहाँ कुछ लोग इन स्टीरियो टाइप्स का शोषण करते हैं, वही काफी लोग इनके फैशन चयनों की उपेक्षा करते हैं, जानबूझकर इनसे बचते हैं या इनके विषय में जानते ही नहीं हैं। परम्परागत लिंग मान्यों तथा दूयर्थकता का धीरे–धीरे मिटना तथा फैशन के बदलते मानकों ने ऐसे स्टीरियो टाइप्स के आधार पर, व्यक्ति के लैंगिक झुकावों को निश्चित करने के प्रति अविश्वसनीयता को बढ़ाया है और कुछ लोग ऐसा कोई भी प्रयास करना बुरा समझेगें।

टोन्गा में पुरूषों का बिना कमीज, सार्वजनिक स्थान पर दिखना गैरकानूनी है। न्यू गुनिया में सार्वजनिक स्थानों पर पुरूष, पेनिस शिथ के अलावा कुछ नहीं पहनते। महिलाएँ स्ट्रिप पहनती हैं। बाली में महिलाएँ टापलेस घूमती हैं। भारत में हिन्दू महिलाएँ अपना पेट प्रदर्शित कर सकती हैं परन्तु पैर नहीं।

बरमूडा के द्वीप में एक कठोर ड्रेस कोड है, इतना कि रेस्तरॉओं विभिन्न ड्रेस कोड स्तरों से पदनामित किया गया है जैसे "विजनेस कैजुअल" या "कैजुअल"। साथ ही समुद्र के किनारे के अलावा द्वीप के किसी भी सार्वजनिक स्थान पर कमीज या जूता न पहनना भी गैर कानूनी है।

निजी हस्तियों द्वारा भी ड्रेस कोड लगाया जा सकता है, सामान्य किसी निजी स्थान में प्रवेश के लिए विशिष्ट आवश्यकताओं को पूर्ण करना जरूरी होता है। "ड्रेस कोड" का अर्थ किसी सामाजिक "नार्म" से भी हो सकता है।

कुछ विशिष्ट सामाजिक अवसरों और नौकरियों के लिये ड्रेस कोड कार्य करता है। एक विद्यालय या सैन्य संस्था के लिये विशिष्ट वर्दियों की आवश्यकता हो सकती है। यदि वह सारे कपड़े पहनने की आज्ञा देते हैं तो उनके प्रयोग पर कुछ पाबन्दियां लगा सकते हैं। किसी डिस्को या नाइट क्लब का बाउंसर, आने वाले लोगों को पहनावे के आधार पर निर्धारित कर, निर्दिष्ट आवश्यकतानुसार पोशाकें न पहने लोगों को अंदर जाने से मना कर सकता है।

हाल के कुछ सालों में व्यावसायिक पहनावे भी बदले हैं। एक कार्यालय में एक सही कारपोरेट पोशाक स्वच्छ, औपचारिक पोशाक हो सकती है जैसे— एक कमीज व टाई, सूट या ऐसी ही कई अन्य पोशाक।

जहाँ पोशाकों के पिछले युगों में अति मानलित व्यापरिक पोशाकें हुआ करती

थी, जिसमें पुरूषों व स्त्रियों के पोशाक चुनावों में अत्यधिक भिन्नता होती थी, आज वह दोनों शैलियाँ मिलाकर एक हो गई हैं क्योंकि स्त्रियों की व्यावसायिक शैलियाँ, स्कर्ट और ब्लाउज तक ही केन्द्रित न करके, दोनों लिंगों के लिये व्यावसायिक पोशाक के रूप में सूट को इन्ट्रोड्यूस कर दिया गया है।

हाल ही में, कैजुअल वियर ने भी कारपोरेट जगत में जगह बनाई है, सिलिकान वैली तकनीक कम्पनी के अवतरित होने से, कार्यालय में अनौपचारिक पहनावे को जनसामान्य स्वीकृति मिली है। साथ ही कुछ कम्पनियों में सप्ताह का कोई एक विशिष्ट दिन, सामान्यतः शुक्रवार, जिसे 'ड्रेस डाउन फ्राइडे" या कैजुअल फ्राइडे" कहते हैं, निध ारित कर दिया जाता है जब कर्मचारी कुछ कम औपचारिक पोशाक पहन सकते हैं।

कुछ नियोक्ता यह मानते हैं कि भेदभाव सम्बन्धी कानून, सही कार्यालय पोशाक निर्धारित करने के उनके अधिकार को प्रतिबन्धित करता है। सत्य तो यह है कि नियोक्ता अत्यधिक विचारशील होते हैं कि कैसे वर्क क्लाथ्स की आवश्यकता है। सामान्यतः, एक सावधानीपूर्ण ड्राफ्ट किया गया ड्रेस कोड जो सामान्य रूप से लगाया जायेगा को भेद–भाव सम्बन्धी कानूनों की अवमानना नहीं करनी चाहिये।

१९९० के दशक में पश्चिमी देशों की हवाइट कलर कार्य स्थलों में, बिजनेस कैजुअल जिन्हें स्मार्ट कैजुअल भी कहा जाता है, नामक लोकप्रिय ड्रेस कोड का उद्भव हुआ। सिलिकान वैली के कई सूचना तकनीकी व्यापारों ने ड्रेस की इस शैली को जल्दी ही अपना लिया। कभी–कभी अन्र्तराष्ट्रीय मानकित व्यवसायिक पोशाक भी कहे जाने वाले व्यावसायिक औपचारिक पहनावे (सूट व टाई) के विपरीत, व्यावसायिक कैजुअल वियर की कोई निश्चित परिभाषा नहीं होती, विभिन्न संस्थानों के मध्य इसका इन्टरप्रिटेशन भिन्न हो जाता है 'जो प्रायः पशोपेश की स्थिति का कारण बनता है।

पहनावे के प्रति सामाजिक व्यवहार ने कई नियम व सामाजिक रिवाजों को जन्म दिया है, जैसे–शरीर को ढंक कर रखना व सार्वजनिक स्थलों पर अन्तः वस्त्रों का प्रदर्शन न करना। इन सामाजिक मान्यों के विरूद्व बोलना, विद्रोह का पारम्परिक तरीका हो गया है।

महान औद्योगिक क्रान्ति का फैशन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। अब तक वस्त्र हाथ से सिले जाते थे। सिलाई मशीन के आविष्कार से कपड़ों का निर्माण तेजी से होने लगा। और आज के वस्त्र उद्योग का बीज तक ही पड़ा था। वस्त्र बड़ी संख्या में निर्मित किये जाते थे। और रेडी–टू–वियर (पहनने के लिये तैयार) विचारधारा आने लगी।

वस्त्र निर्माण में तकनीकी विकास, कई प्रकार के रेशे भी लेकर आया। पूर्णतः क्रीजेस प्रतिरोधी, अग्नि रोधक, वास एण्ड वियर कपड़े उत्पन्न हुए। प्राकृतिक व मानव- निर्मित रेशों के गुणो वाले कपड़े बाजार में आ गए। इसने पोशाकों की शैली को एक नया अर्ध दिया।

व्यापार तथा वाणिज्य ने विभिन्न संस्कृतियों को प्रभावित कर, फैशन को सदा ही प्रभावित किया है। पूर्व की बढ़िया मलमल विश्व विख्यात हैं।

सूचना तकनीक में भी तेजी आई है। कोई भी खबर, सेकेण्डों में पूरे विश्व में फैल जाती है। और ऐसे ही फैशन प्रचलनों के प्रति जागरूकता भी बढती है।

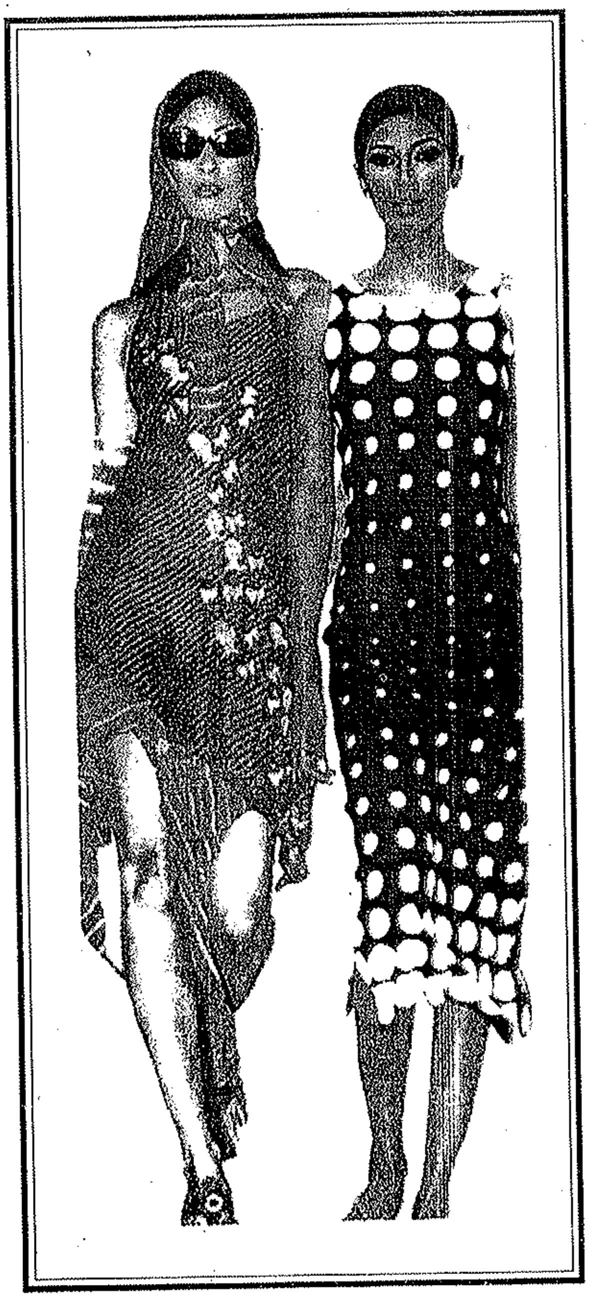

आदर्शो, फिल्मी सितारों, प्रख्यात व्यक्तियों का एक प्रशंसक वर्ग होता है जो उनकी फैशन शैलियों को अपनाता है जिससे फैशन ट्रेन्ड्स बनते हैं। नेहरू जैकेट इसका बढ़िया उदाहरण है।

व्यक्ति का लिंग, जाति व धार्मिक मत, उसके सोचने के तरीके, पसन्द, नापसन्द, उसके रहन सहन के स्तर इत्यादि को प्रभावित करता है। यह फिर पहनावे के उसके चुनाव को प्रभावित करता है।

यदि आप किसी भी सभ्यता की कला व भवन-निर्माण का अध्ययन करें तो पायेगें कि दीवारों पर अंकित डिजाइन, कपड़ों पर छपे या बुने डिजाइनों से मिलते जुलते थे। यह स्पष्ट दर्शाता है

कि वस्त्र व कला, एक दूसरे को, प्रभावित करते थे।

किसी विशेष स्थान का भूगोल वहाँ के लोगों के पहनावे को प्रभावित करता है। पहाड़ों में पहने जाने वाले कपड़े, मैदानी क्षेत्रों में पहने जाने वाले कपड़ों से भिन्न होगें।

भौगालिक स्थितियों के अलावा, मिट्टी का प्रकार, जूतों के प्रकार को प्रभावित करेगा। रेतीले स्थानों में पहने जाने वाले जूते-चप्पल, मैदानी क्षेत्रों में पहने जाने वाले फूटवियर से भिन्न होगें।

जलवायु स्थितियाँ भी पहनावे को प्रभावित करती हैं। लोगों के गर्मी व सर्दी के लिये अलग-अलग कपड़े होते हैं।

व्यक्ति की क्रियाएँ, उसे उसका पहनावा परिवर्तित करने को विवश कर देंगी।

क्रीड़ाओं के लिये खिंचाव तथा बिना फ्रिल सजावट वाले आरामदेह वस्त्रों की आवश्यकता होती है।

महान औद्योगिक क्रान्ति ने मॉस उत्पादान एवं पहमने के लिए तैयार कपड़ों को बढ़ावा दिया है।

वस्त्र निर्माण में तकनीकी विकास, कई प्रकार के रेशे भी लेकर आया।

व्यापार तथा वाणिज्य ने विभिन्न संस्कृतियों को प्रभावित कर, फैशन को सदा ही प्रभावित

किया है।

सूचना तकनीक में भी तेजी आई है। कोई भी खबर, सेकेण्डों में पूरे विश्व में फैल जाती है। और ऐसे ही फैशन प्रचलनों के प्रति जागरूकता भी बढती है।

आदर्शो, फिल्मी सितारों, प्रख्यात व्यक्तियों का एक प्रशंसक वर्ग होता है जो उनकी फैशन शैलियों को अपनाता है जिससे फैशन ट्रेन्ड्स बनते हैं।

व्यक्ति का लिंग, जाति व धार्मिक मत, उसके सोचने के तरीके, पसन्द, नापसन्द, उसके रहन सहन के स्तर इत्यादि को प्रभावित करता है। यह फिर पहनावे के उसके चुनाव को प्रभावित करता है।

यदि आप किसी सभ्यता की कला व भवन–निर्माण का अध्ययन करें तो पायेगें कि दीवारों पर अंकित डिजाइन, कपड़ों पर छपे या बुने डिजाइनों से मिलते जुलते थे।

पहाड़ी इलाकों में पहने जाने वाले कपड़ों के तरीके मैदानी इलाकों मे पहने जाने वाले कपड़ों के तरीके से भिन्न होते हैं। मैदानी क्षेत्रों में पहने जाने वाले फूटवियर मरूस्थली क्षेत्रों में पहने जाने वाले फूटवियर से भिन्न होते हैं। लोगों के गर्मी एवं जाड़े के विभन्न पहनावें होते हैं।

अभ्यास-

१– ऐसी घटनाओं की चित्र चिपकाकर एक फोल्डर बनाएँ जिन्होनें फैशन को प्रभावित किया हो।

२– ऐसी घटनाओं के चित्र चिपका कर एक संग्रह बनाएँ, जिन्होनें एसेसरीज को प्रभावित किया हो।

१.४ **सारॉशः-** फैशन, सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक स्तर, राजनीतिक शक्ति, ध ार्म, व्यापार व वाणिज्य, लिंग, जाति, समूह, विचारों, औद्योगिक विकास, तकनीकी सुधार, नये आविष्कारों, हीरो तथा आदर्शो, व्यक्तिगत पसन्द–नापसन्द, कला, भवन निर्माण, संगीत, क्रीड़ा, मनोरंजन इत्यादि द्वारा प्रभावित होता है।

फैशन व कला ने सदा एक दूसरे को प्रभावित किया है।

फैशन सांस्कृतिक परिवर्तनों का बैरोमीटर है।

"फैशन आकाश में है, सड़क पर है, फैशन का सम्बन्ध विचारों से है, हम जैसे जीते हैं, जो हो रहा है, उससे है।"

"फैशन कुरूपता का एक रूप है जो इतना असहनीय है कि हर छः माह पर उसे बदलना पड़ता है।"

"वह एक चीज जो हमें पशुओं से भिन्न करती है, वह है स्वयं को एसेसरीज करने की क्षमता।"

फैशन एक ऐसी चीज है, जिससे हम हर दिन रूबरू होते हैं।

फैशन जगत में एक निश्चित चीज है– परिवर्तन। संगीतज्ञ व अन्य सांस्कृतिक प्रतिमूर्तियों ने सदा से हमारे पहनावे को प्रभावित किया है, परन्तु ऐसा ही राजनीति व राजसत्ताओं ने भी किया है।

कपड़े लोगों को समूह में बाँट देते हैं। फैशन प्रदर्शक है।

फैशन एक भाषा है जो पहनने वाले के विषय में एक कथा बताती है। "कपड़े, संवहन का ऐसा शब्दविहीन माध्यम हैं जिसे हम सब समझते हैं।" हम जो पहनते हैं वह हम, शीत, वर्षा व बर्फ से सुरक्षा प्रदान करने के लिए, शारीरिक आकर्षण के लिए, धार्मिक अभिव्यक्ति और पहचान तथा परम्परा के लिये पहनते हैं।

फैशन एक बड़ा व्यवसाय है। विश्व के किसी भी अन्य व्यवसाय से अधिक लोग कपड़ों की खरीद, विक्रय व निर्माण में संलिप्त हैं।

पहनावे को राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

फैशन एक अनन्त लोकप्रिय प्रतियोगिता है। उच्च फैशन, ऐसे पुरूष व स्त्रियों का छोटा समूह है जिसका फैशन जगत में एक विशिष्ट पसन्द तथा अधिकार है।

एक बार पहचान बना लेने के बाद, फैशन, कुछ नए और भिन्न की तलाश में, परिवर्तित होने लगता है। कई धर्मों के लोग पोशाक को अपने विश्वास के प्रतीक के रूप में प्रयोग करते हैं। कभी–२ किसी धर्म द्वारा एक विशेष प्रकार की पोशाक की माँग होती है, तथा अन्य जगह, एक परम्परा की बात होती है।

कई समाजों में, उच्च पदासीन लोग पहनावे या सज्जा की कुछ विशेष वस्तुएँ,

स्वयं के सामाजिक स्तर के चिन्ह के रूप में आरक्षित कर लेते हैं।

सैन्य, पुलिस व दमकल कर्मी एक वर्दी पहनते हैं, जैसा कि कई उद्योगों के कर्मचारी भी करते हैं।

विश्व के कई क्षेत्रों में, राष्ट्रीय पोशाकें व पहनावे की शैली व गहने, किसी विशेष गाँव, जाति या धर्म इत्यादि की सदस्यता के उद्घोषक होते हैं।

कपड़े, सांस्कृतिक मान्यों व प्रचलित मान्यताओं से मतभेद तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की घोषणा भी कर सकते हैं।

कुछ कपड़े पहनने वाले की शालीनता जताते हैं। क्या शालीनता है व क्या प्रलोभनपूर्ण, यह विचार भिन्न संस्कृतियों के अनुसार भिन्न हो सकता है, एक ही संस्कृति में भिन्न संदर्भों में, समय, फैशन के उद्भव या अवनति के अनुसार भिन्न हो सकता है।

ड्रेस कोड निजी हस्तियों द्वारा भी कार्यान्वित किया जा सकता है, सामान्यतः इसमें किसी निजी स्थान पर प्रवेश करने के लिये विशिष्ट जरूरत निर्दिष्ट की जाती है। "ड्रेस कोड" का अर्थ सामाजिक मान्यों से भी हो सकता है।

पहनावे के प्रति सामाजिक नजरिये ने कुछ नियम व सामाजिक रिवाज निर्धारित किए हैं, जैसे शरीर को ढंक कर रखना व अन्तः वस्त्रों का सार्वजनकि प्रदर्शन न करना।

१०.५ स्वनिधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न–१ फैशन को प्रभावित करने वाले तत्वों को सूचीबद्ध करें।

प्रश्न–२ किस प्रकार धर्म, फैशन को प्रभावित करता है?

प्रश्न–३ सामाजिक गतिविधियाँ फैशन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

प्रश्न–४ तकनीकी विकास ने फैशन को कैसे प्रभावित किया है?

प्रश्न–५ फैशन बदलता क्यों रहता है?

१०.६ स्वाध्ययन हेतु

१– फैशन केलीडोस्कोप, द्वारा मेहर कॅस्टेलिनो, प्रकाशक–रूपा एंड कम्पनी।

संरचना

२.१ यूनिट प्रस्तावना

२.२ उद्देश्य

२.३ फिगर समानुपात

२.४ सारॉश

२.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

२.६ स्वाध्ययन हेतु

२.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

यह यूनिट शारीरिक आकार के दो पक्षों से सम्बद्व है। एक उनका समानुपात तथा दूसरा विभिन्न फिगर के लिए कपड़े का चुनाव। इसमें विभिन्न फिगर के अनुसार ड्राफ्ट को समायोजित करने सम्बन्धी कुछ सुझाव भी शामिल हैं।

२.२ उद्देश्यः-

जब कोई डिजाइनर, डिजाइन करता है, तो सभी प्रकार की फिगर के लिए करना पड़ता है। यह यूनिट उन्हें विभिन्न प्रकार की फिगर के लिए ड्राफ्टिंग करने में सहायता करेगा।

२.३ फिगर समानुपातः-

विभिन्न प्रकार के फिगर तथा उन्हें संतुलित करने का तरीकाः-

१-औसतः- आदर्श फिगर सभी प्रकार से समानुपातिक व संतुलित होती है। ऊंचे तथा नितम्ब, अच्छी कमर के साथ अच्छे समानुपात में होते हैं। यह किसी भी प्रकार के कपड़े सफलतापूर्वक व प्रभावशाली ढंग से पहन सकते हैं, परन्तु इस प्रकार की फिगर कम ही देखने को मिलती है।

२-त्रिकोणीय आकार की फिगर

अ-शरीर का आकारः-

कंधों पर चौड़ी या फुल ब्रस्टेड, पतली कमर और पतले नितम्ब वाली और पिछला भाग चौड़ा तथा पतले पैर।

ब-उद्देश्यः-

ब्रस्ट तथा मिडरिफ क्षेत्र को कम से कम कर, नितम्बों को चौड़ा करना।

स-हलः-

रेगुलर आस्तीन, चुन्नट, प्लीट्स रफल्स इत्यादि का स्कर्ट में अधिक प्रयोग करें। प्लीट्स चौड़ी होनी चाहिए और स्कर्ट में बार्डर हो सकता है। ब्लाउज या ऊपर की एसेसरीज सादी होनी चाहिए और लो वेस्टेड पोशाकें नहीं पहननी चाहिए। कंधों के पैड्स, फ्रिल वाले टाप्स इत्यादि से बचना चाहिए। क्षैतिज रेखाओं वाले टाप्स, अति बड़ी आस्तीन या रफल्स न पहनें। छोटी जैकेट, छोटे वेस्ट्स, व ऊपर की ओर भारी कपड़े या मोटी तहें न पहनें।

३-आर-ग्लास आकार की फिगर

अ-शरीर का आकारः-

सामान्यतः इस प्रकार का शरीर में उपरी भाग भरा – भरा होता है, कमर पतली व हिपलाइन चौड़ी होती है। पीछे का भाग चौड़ा और जांघें भरी भरी होती हैं।

ब-उद्देश्यः- उभारों को कम कर, फिगर को लम्बा दिखाना।

स-हलः- घेरदार हेम लाइन वाली स्कर्ट या नर्म फुलनेस वाली स्कर्ट, सीधी पैन्ट, जिनके पैरों में नर्म प्लीट्स या चुन्नटदार पोशाकें पहनें। नर्म कपड़ों का प्रयोग करें जो नितम्बों पर ड्रेप हो जाएं। बॉक्सी जैकेट, भारी स्वेटर, कसे कपड़े या कोई भी ऐसी वस्तु जो ब्रस्ट को अधिक प्रभावी बनाएँ, पहनने से बचें। चौड़े वेस्टबैन्ड्स और ब्रस्ट रेखा पर बंधने वाले टाप्स, पैच जेबें, क्षैतिज रेखाओं तथा ब्रस्ट लाइन या नितम्बों पर पैटर्न वाले वस्त्रों का प्रयोग न करें।

४-त्रिकोणीय फिगरः-

अ-शारीरिक आकारः-

सामान्यतः यह शारीरिक आकार ब्रस्ट क्षेत्र में, नितम्बों से बड़ा होता है या नितम्ब या जॉघों की तुलना में कंधे कम चौड़े होते हैं।

ब-हलः-

ऊपरी शरीर की सज्जा की वस्तुएँ जैसे चुन्नट, प्लीट्स और पैच जेबों के साथ चौड़ी या गहरी नेकलाइन व सोल्डर पैड्स वाली सीधी रेखा वाली जैकेट का प्रयोग करें। लम्बाई, नितम्ब के सर्वाधिक चौड़े भाग से कम या ज्यादा होनी चाहिए, ड्राप वेस्ट टाप (नीची कमर वाले) व टू–पीस ड्रेस पहन सकते हैं।

हेल्टर टाप या टैन्क टाप्स से दूर रहें। रैगलॉन आस्तीन और अन्य ऐसी रेखाएँ पहनने से बचें जो नजर को नीचे की ओर खींचे।

क्षैतिज सिलाइयों, चुन्नट, प्लीट्स या हिप लाइन पर पैटर्न वाली पोशाकों से बचें। ऐसे फिट जैकेट न पहने जो नितम्ब के सबसे चौड़े भाग पर रुके। गहरे रंग के टाप्स के साथ हल्के रंग के बाटम्स न पहनें।

५-आयताकार फिगर

अ-शरीर का आकारः-

इस प्रकार की फिगर एन्गुलर होती है जिसमें कम घुमाव और सुनिश्चित वेस्ट लाइन नहीं होती। यह सिलहौटी ऊपर से नीचे तक लगभग सीधा होता है। कमर व नितम्ब रेखा में बहुत कम अन्तर होता है।

ब-उद्देश्यः- ऊपरी भाग को कम से कम कर, एक अधिक सेलेन्डर आकार की रचना करना।

स-हलः- स्कल्पचर्ड, शेप्ड जैकेट का प्रयोग कर, बॉयश पर कटी घेरदार स्कर्ट, प्लीट वाली स्कर्ट, ऊँची या कमर पर ड्रेप वाली स्कर्ट या पैन्ट का प्रयोग करें।

चौड़ी या विरोधाभासी रंग की बेल्ट क्षैतिज रेखाओं और पैटर्नस, नितम्ब पर

बड़े–बड़े पैच जेबें बाक्शी वाइड या वर्गाकार जैकेटों से बचें।

६-पतली फिगर

अ-शरीर का आकारः-

इस प्रकार की फिगर सामान्यतः कंधों, कमर व नितम्बों पर पतली होती हैं और सिलहौटी हल्के या बिना घुमावों के लगभग सीधा होता है।

ब-उद्देश्यः- अधिक भरा–भरा और शेप्ड रूप की रचना करना।

स-हलः-

टाप्स, आस्तीन, पैन्ट, स्कर्ट इत्यादि में फुलनेस वाली शैलियाँ अपनाएँ। चुन्नट, प्लीट्स, रफल्स तथा पैच जेबें, आपकी वार्डरोब के मुख्य तत्व होने चाहिए। सबसे उपयुक्त कपड़े हैं, टेक्सचर्ड कपड़े जैसे–ट्यूड्स, ऊनी, वेलवेट और निट्स–प्रिन्ट अण्डाकार या एस–आकार के पैटर्न में होने चाहिए।

अति भारी कपड़े, बहुत बड़े पैटर्न, कसे कपड़े, लम्बवत धारी या डिजाइन, पतले कपड़े, स्ट्रेपी ड्रेस या चौड़े गले वाली पोशाकें सख्ती से दूर रखनी चाहिए।

७-अण्डाकार फिगर

अ-शरीर का आकारः-

ऊपरी भाग भरा, कमर भी भारी चौड़ी हिप लाइन और एक उभरा हुआ पेट, ओरल फिगर बनाते हैं।

ब-उद्देश्यः-

शरीर को लम्बा तथा पतला दिखाना।

स-हलः-

नितम्ब की लम्बाई जितनी या लम्बी रिलैक्स जैकेट पहनना। बिना कमर वाली शैलियों का प्रयोग करें, टाप जो बेल्टेड आउट हो या हल्के ब्लूज्ड हों। ऊँची या ड्रेप्ड कमर वाली स्कर्ट या पैन्ट प्रयोग करें।

भारी या भारी टेक्सचर वाली पोशाकों से बचें। चौड़ी बेल्ट, मिडरिफ या नितम्बों की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं। साथ ही क्षैतिज रेखाएँ व पैटर्न का प्रयोग न करें।

८-सामान्य फिगरः-

नार्मल या सामान्य वह है जो किसी विशेष क्षेत्र में लोगों के बड़े भाग द्वारा स्वीकृत व अनुसरित किया जाता हो। नार्मल या सामान्य की आवश्यकता, विशेष्ताएँ व जरूरतें, स्थान व समयानुसार भिन्न होती हैं। साधारणतया, एबनार्मल या असामान्य, लोगों के औसत समूह से हटकर की गई किसी वस्तु को कह सकते हैं।

डिजाइनिंग के लिए सामान्य फिगर का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि यह हर प्रकार के मानवीय आकारों के लिए, वस्त्र रचना के लिए आधार उपलब्ध करता है (चूँकि नार्मस, सामान्य से ऊपर व सामान्य से नीचे के बीच में आता है) दिखाए गए तरीके की नार्मल फिगर में सभी सामान्य अंग होते हैं और लम्बवत इसे दो बराबर व एक जैसे अध ि भागों में विभाजित किया जा सकता है।

अ-लम्बवत विभाजनः- एक सामान्य फिगर के शरीर की कुल ऊँचाई, सिर की आठ गुना होती है (जब व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो) अथवा सामान्य खड़े होने की स्थिति में सात गुना होती है (जूते की ऊँचाई घटा कर)।

ब-चौड़ाई में विभाजनः- यहाँ पर फिर फिगर को एक हेड के बराबर, बराबर पार्ट लेन्थ, में विभाजित किया जा सकता है।

इस ८ हेड विभाजन जिसे ८ हेड थ्योरी भी कहा जाता है से विभिन्न रेखाएँ निकलती हैं।

मानव शरीर का विभिन्न कोणों से निरीक्षणः

एक डिजाइनर के दृष्टिकोण से हम निम्न रूप देखते हैं:—

१. चेहरे के सामने से निरीक्षणः-

एक सामान्य फिगर का चेहरा सामने से देखते हुए, हम शरीर को केन्द्रीय लम्बवत रेखाओं द्वारा विभाजित कर सकते हैं। इनके अनुसार गर्दन बेलनाकार होती है, कंधे लगभग दो हेड्स चौड़े होते हैं, छाती पर केन्द्रीय रेखा से बराबर की दूरी पर दो

निप्पल बिन्दु रखे जाते हैं, कमर, छाती वृत्त व नितम्ब वृत्त से पतली होती है। नितम्ब रेखा के ठीक नीचे, शरीर दो पैरों में विभाजित हो जाता है।

फिगर के आकारानुसार, शरीर को दो सरल भागों में विभाजित किया जा सकता है जिससे ब्लॉक वस्त्र बनाना सरल हो जाता है।

अ— ऊपरी शरीर का वस्त्र (गले से कमर तक)
ब— नीचे के शरीर का वस्त्र (कमर से पंजों तक)

२-फिगर का पीछे से निरीक्षणः-

छाती वाली रेखा नहीं दिखती व विशेष बिन्दु जैसे निप्पल बिन्दु नही होते। पीछे की कमर की रेखा थोड़ी अन्दर की ओर होती है तथा नितम्बों में कमर से अधिक मॉसपेशियॉं दिखती हैं, और नितम्ब रेखा के ठीक नीचे शरीर दो पैरों में बॅटा होता है।

३-साइड से निरीक्षणः-

यह देखा जाता है कि सिर ऐसी बेलनाकार गर्दन पर रखा है जो आगे की ओर अधिक, पर पीछे की ओर कम (लगभग नहीं के बराबर) झुकी है। आगे की छाती रेखा, पीछे से अधिक मॉसल होती है परन्तु केवल नितम्ब रेखा पर, पीछे की ओर, आगे से अधिक मॉसपेशियॉं होती हैं। अतः सामने की ओर हिप लाइन लगभग सपाट होती है जबकि पीछे की ओर एक बाहर निकलता घुमाव मिलता है।

रचनात्मक डिजाइन एक निजी वस्तु है और जैसे लोगों के भिन्न व्यक्तित्व होते हैं, वैसे ही कपड़ों व रंगों के भी होते हैं। फैशन डिजाइनिंग एक कला है जिसका लुत्फ उठाया जा सकता है और विस्तार से इस पर काम करके सफलता पाई जा सकती है। सही कपड़े का चुनाव महत्वपूर्ण है क्योंकि वह शेड, टेक्सचर तथा ड्रेपिंग गुण लाता है। वस्त्र का सिलहौटी रचने में यह प्रमुख भूमिका निभाता है। जब कपड़ा सिलहौटी करें तो निम्न बातों का ध्यान रखें—

१— क्या वह शरीर के घुमावों पर फोल्ड्स में गिरते हैं?

२— क्या वह कमर पर चुन्नट होता है?

३— क्या वह प्लीट्स को क्रिस्प लाइन देगा?

४– क्या वह स्मूथ या बल्क रूप देगा?

५– क्या कृत्रिम प्रकाश में यह आकर्षक आकार देगा?

यह कुछ बातें हैं जो यह निर्दिष्ट करेगी कि कपड़ा कैसा व्यवहार करेगा।

सम्पूर्ण प्रभाव के लिए निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखें-

१– बड़ी फिगर वाले लोगों को बल्की कपड़े नहीं पहनना चाहिए, जो उनके साइज को बढ़ायेगा। चिकने, चकमीले कपड़े जो प्रकाश का परावर्तन करते हैं भी बड़ी फिगर का भ्रम पैदा करेगें।

२– लम्बी, पतली फिगर वालों को भी बल्की या भारी कपड़े नहीं पहनने चाहिये जो फिगर को दबा दें। इन्हें हल्के से मध्यम भार वाले कपड़े चुनने चाहिए जिनकी सतह पर कुछ टेक्सचर हों।

३– यदि फिगर अति लम्बी व अति पतली है तो, चिपकने वाले कपड़े, जो शरीर को पतलेपन को उभारते हैं, न पहने बल्कि शरीर को गोलाई देने वाले पोशाक पहनें।

४– यदि फिगर लम्बी व भारी है तो बिना चमक वाली चिकनी सतह चुनें तथा बड़े–२ पैटर्न न पहनें। हल्के से मध्यम भार का कपड़ा चुनें।

५– छोटी व पतली फिगर को बढ़ाने से बचाने के लिए खुरदुरे, भारी कपड़े तथा बड़े–२ पैटर्न वाले डिजाइन के कपड़े न पहनें। नर्म तथा छोटे पैटर्न वाले कपड़े जो फिगर की नजाकत में वृद्धि करेगें, चुनें।

६– यदि फिगर छोटी व मोटी है तो खुरदुरे, भारी व चमकीले कपड़ों से बचें। नर्म कपड़े, हल्के से लेकर मध्यम भार वाले, बिना चमक के कपड़े इस फिगर प्रकार के लिए श्रेष्ठ सिद्व होते हैं।

७– लो ब्रस्टेड फिगर के लिए हल्के से मध्यम भार वाले कपड़े चुनें।

८– सपाट छाती वाली फिगर के लिए नर्म, हल्के से मध्यम भार तथा अच्छे ड्रेपिंग गुणों वाले कपड़े का चुनाव करें।

९– बड़े नितम्ब वाली फिगर चिकने, हल्के से मध्यम भार वाले कपड़ों का प्रयोग

स्कर्ट व ट्राउजर के लिए कर सकती हैं।

१०— छोटी गर्दन वाली फिगर को खुरदुरे टेक्सचर व गले के आस—पास बल्की कपड़े पहनने से बचना चाहिए।

विभिन्न प्रकार की फिगर के लिए स्टाइल लाइन्स का चुनाव- शैली फिगर व कपड़ा एक साथ ध्यान देने योग्य बातें हैं। निम्न आपको सही स्टाइल लाइन के चुनाव के विषय में निर्देशक सिद्ध होगें—

१—लम्बी पतली या स्लिम— फिगर के एक्रास सिलाई, एन्गुलर रूप से बचने के लिए हल्की राउन्डेड रेखाएँ, नर्म ड्रेप का प्रयोग करें।

२—लम्बी व भारी बिल्ड— स्मूथ प्रभाव के लिए टेलर्ड लाइन्स और पैनल सीम्स।

३—छोटी पतली, पेटील— नर्म फ्लोइंग रेखाएँ, लम्बवत रेखाएँ, फिगर को दबा देने वाले अति फुल रेखाएँ न हों।

४—छोटी व मोटी—लम्बवत सिलाई टेलर्ड लाइनें जो फूलापन घटाकर लम्बाई बढ़ाये।

५—लो ब्रस्ट— गोल रेखा से नर्म रूप में गिरते हुए गैदर्स, ऊपर की ओर जाती इम्पायर लाइन, फ्रेंच डार्ट का प्रयोग जो कमर के नाप को लम्बाई दे।

६—फ्लैट चेस्टेड— ब्रस्ट रेखा के नाप को बढाये, क्षैतिज रेखा वाली इम्पायर लाइन, नर्म गैदर्स वाली बॉडिस और ऐसी नैकलाइन जो पूरे बॉडिस पर फोल्ड्स हो।

७—चौड़े नितम्ब— एक लाइन को नितम्ब के ऊपर से हल्का फ्लेयर बड़े नितम्ब से प्रभाव पैरों पर डालने के लिए पैरल सीम्स का प्रयोग करें।

८—छोटी गर्दन— वी गला, खुला कॉलर लम्बाई बढ़ाता है। ऊँची व वृत्ताकार गले से बचें।

कपड़े पर निर्णय ले लेने के पश्चात, रंग पर ध्यान देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इन पर पहले ध्यान दिया जाएगा। कुछ रंग, कुछ कम्पलेक्शन्स का रंग उड़ा देते हैं। अच्छा होगा कि कपड़े को गले से फिगर के सामने, पूरी लम्बाई के शीशे के सामने खड़ा होकर देखा जाए। दिखने वाली छवि अच्छा सुझाव देगी कि रंग उपयुक्त है या नहीं।

फिगर विश्लेषणः- फैशन ट्रेन्ड्स, कई स्त्रियों को नवीनतम शैलियाँ खरीदने को विवश कर देते हैं, जो मॉडल्स पर तो अच्छी लगती हैं, परंन्तु उन पर नहीं जँचती। परिणामतः, वह ऐसे फैशन पर धन व्यय कर देती हैं जो उन पर अच्छा नहीं लगता। इसका हल है कि अपने शारीरिक गुणों को पहचानें तथा इन गुणों के सौन्दर्य में वृद्वि करने वाली आकर्षक शैलियों का चयन करें। अपने व्यक्तित्व के अनुसार आकर्षक स्टाइल लाइन का चुनाव के बाद आप इसे बाहरी तौर पर नवीनतम रूपों में एसेसरीज कर सकती हैं।

इस पाठ में आप जानेगें कि अपनी फिगर का ऑकलन कैसे करें और फिर, आपके लिये व आपके प्रकार की फिगर के लिए सर्वश्रेष्ठ शैलियों को कैसे पहचानें। स्मरण रहे कि हर स्त्री के कुछ गुण होते हैं व हर स्त्री में कुछ कृतियाँ होती हैं। स्मार्ट ड्रेसिंग का अर्थ है अपने गुणों को बढ़ाना व कमियों को इस तरह कम करना कि आप स्टाइलिश व आकर्षक दिखें।

ब्लॉक की ड्राफ्टिंग के लिए ८ हेड थ्योरी और शरीर निरीक्षण को कार्यान्वित करनाः विभिन्न निरीक्षणों द्वारा यह पाया गया कि शरीर को विभिन्न भागों में विभाजित किया जा सकता है तथा साथ ही, एक लम्बवत रेखा के दोनों ओर के भाग बिल्कुल एक दूसरे के समान होते हैं। हम इन भागों को आगे, ब्लॉक में विभाजित कर सकते हैं। जिन्हें गणनाओं के साथ फेर बदल कर वस्त्र निर्माण के बेसिक ब्लॉक बनाये जाएगें।

ब्लॉक के लिए ड्राफ्टिंगः- क्योंकि शरीर दोनों ओर एक जैसे दो भागों में विभाजित है, अतः हम एक उत्तर के लिये बेसिक ब्लॉक करके, उसी को दूसरी ओर के लिए मिरर्ट इमेज में दोहरा सकते हैं। पीछे के ब्लॉक की फुलनेस घटाकर उसी को प्रयोग किया जा सकता है।

इसी तरह नीचे की और के लिए एक ओर का डिजाइन कर, पीछे की फुलनेस के आधार पर फेर बदल कर, प्रयोग किया जा सकता है। ८ हेड थ्योरी का प्रयोग कर ब्लॉक के लिए उपयोगी रेखाओं की रचना की जाती है। इसके द्वारा तुलनात्मक नाप, दूरी, विभिन्न भागों की लम्बाई के विषय में जानकारी प्राप्त करने का मजबूत आधार भी उपलब्ध होता है।

हम वस्त्र निर्माण के लिए निम्न आधार रेखाएँ (निर्देशक रेखाएँ) प्राप्त कर सकते हैं: कंधे की रेखा, गले की रेखा (आगे व पीछे) पूरी लम्बाई रेखा छाती की रेखा, कमर की रेखा, कंधे के ढ़ाल की रेखा, बगल या आर्महोल, साइड लाइन, (आगे व पीछे के जोड़ की रेखा) तथा नितम्ब रेखा।

सामान्य फिगर के लिये निम्नलिखित फार्मूले लगते हैं:-

१.	छाती	= कुल ऊंचाई का ५५ प्रतिशत
२.	आस्तीन	= छाती का २/३३
३.	कंधें	= लगभग छाती का १/२२
४.	नितम्ब या सीट	= छाती + छाती का ५ प्रतिशत
५.	कमर	= छाती का ६० प्रतिशत
६.	गर्दन	= छाती की ४० प्रतिशत
७.	स्काई की गहराई	= छाती का १/४
८.	कफ	= छाती का २५ प्रतिशत

विभिन्न प्रकार के असामान्य फिगर:-

१- सीधी खड़ी फिगर:-

इरेक्ट फिगर में, पीछे की माँसपेशियों पर अन्दर की ओर पुल होने के कारण, पीछे की लम्बाई हल्की सी कम हो जाती है।

१. इरेक्ट फिगर में आगे की लम्बाई सामान्य फिगर से अधिक होती है।

२. इरेक्ट फिगर में, पीछे की माँसपेशियों पर अन्दर की ओर पुल होने के कारण, पीछे की लम्बाई कुछ कम हो जाती है।

३. इरेक्ट फिगर में, फिगर व वस्त्र का संतुलन पीछे की ओर चला जाता है।

४. इरेक्ट फिगर में, आगे की छाती का चौड़ाई में नाप, पीछे के चौड़ाई में नाप से अधिक होता है।

इरेक्ट फिगर के लिए ड्राफ्ट करते समय किए जाने वाले परिवर्तन:-

१. पीछे के रेजिंग नाप कम हो जाते हैं।

२. इस प्रकार की फिगर के लिए आगे की लम्बाई, पीछे से अधिक होती है।

२- झुकी हुई फिगरः-

स्टापिंग फिगर का चारित्रिक गुण, इरेक्ट फिगर के ठीक विपरीत होती है।

(१) क्योंकि फिगर आगे की ओर झुकी होती है, अतः आगे की लम्बाई कम हो जाती है।

(२) इस फिगर की पीछे की लम्बाई दो से०मी० तक बढ़ जाती है।

(३) नार्मल इरेक्ट फिगर के कमर वृत्त से इसका कमर वृत्त अधिक होता है।

(४) स्टापिंग फिगर छाती का चौड़ाई में नाप तुलनात्मक रूप से कम होता है।

(५) स्टापिंग फिगर में पीछे की चौड़ाई का नाप, सामान्य फिगर से अधिक होता है।

(६) इस फिगर में, आगे की फोर्क लेन्थ सामान्य फिगर की तुलना में कम होती है।

(७) इस फिगर में, पीछे की फोर्क लेन्थ सामान्य फिगर की तुलना में अधिक होती है।

(८) इस फिगर में, आगे का संतुलन सामान्य फिगर की तुलना में कम होता है।

(६) स्टापिंग फिगर में, आगे की गर्दन की लम्बाई कम हो जाती है व पीछे की गर्दन की लम्बाई बढ़ जाती है।

(१०) इस फिगर की कुल ऊँचाई, सामान्य फिगर से कम होती है।

मॉसल या मोटा फिगरः-

एक कारपुलेन्ट फिगर एक मोटी फिगर होती है जिसका पेट बड़ा होता है। छाती वृत्त व कमर वृत्त में बहुत कम अन्तर होता है। इस फिगर में छाती की चौड़ाई, पीछे की चौड़ाई से अधिक होती है। फिगर छोटी व मोटी लगती है। इसमें निम्नलिखित परिवर्तनों की आवश्यकता है–

१. केन्द्रीय रेखा से आगे की लम्बाई बढ़ा दी जाती है।

२. इस फिगर में, वेस्ट लाइन की डार्ट की मात्रा कम कर दी जाती है।

३. इस फिगर में, वेस्ट लाइन सामान्य फिगर से कम होती है।

४. इस फिगर में, छाती की चौड़ाई का नाप बढ़ा दिया जाता है।

५. कारपुलेन्ट फिगर में, पीछे की चौड़ाई का नाप घटा दिया जाता है।

६. इस फिगर में, कारपुलेन्ट वाला व्यक्ति खड़े होने की स्थिति में अपने पैर नहीं देख पाता। अतः नीचे के वस्त्र में पैरों की ओपनिंग साइड की ओर कर दी जाती है।

७. इस फिगर में, कमर वृत्त व नितम्ब वृत्त के मध्य का अन्तर लगभग शून्य होता है, अतः सीट का आकार लगभग फ्लैट होता है।

८. इस फिगर की आगे की फार्क लम्बाई, सामान्य से अधिक रखी जाती है।

९. इस फिगर में, गर्दन कम हो जाती है तथा गर्दन का वृत्त बढ़ जाता है।

१०. इस फिगर में पोशाक का संतुलन आगे की ओर अधिक होता है।

कारपुलेन्ट फिगर के लिए पैटर्न में आवश्यक परिवर्तनः-

१. कमर वृत्त को बढाएं और डार्ट की मात्रा कम कर दें।

२. फिगर के अनुसार कमर का आकार बदल दें।

३. एक्रास बैक लाइन का नाप घटा दें।

४. एक्रास चेस्ट नाप बढ़ा दें।

५. क्योंकि आगे का संतुलन अधिक है, केन्द्रीय आधार रेखा पर आगे की लम्बाई बढ़ा देनी चाहिए।

४- लम्बी व पतली फिगरः-

(१) सम्पूर्ण शारीरिक ऊँचाई, सामान्य के अनुपात में अधिक होती है।

(२) छाती का कुल नाप, सामान्य फिगर से कम होता है।

(३) कंधे तुलनात्मक रूप से चौड़े होते हैं।

(४) स्के की गहराई सामान्य फिगर से अधिक होती है।

(५) गर्दन सामान्य फिगर से ऊँची होती है।

टाल व थिन फिगर के लिए आवश्यक फेर बदलः-

(१) लम्बाई बढ़ा देनी चाहिए।

(२) डार्ट एलाउन्स में वृद्वि होती है।

(३) चेस्ट रेखा व कमर की रेखा का आकार ठीक करना चाहिए।

(४) चेस्ट राउन्ड कम होता है व लम्बाई के समानुपात में नहीं होती।

(५) इस प्रकार की फिगर के लिए प्लीटेड पोशाक बेहतर होती है।

(६) इस प्रकार की फिगर के लिए बड़े डिजाइन और कसे वेस्टबैन्ड नहीं चुनने चाहिये।

(७) इस प्रकार की फिगर के लिए, एक पीस पोशाक जैसे— मैक्सी, गाउन, कसे फिगर फिटिंग पोशाकों से बचना चाहिए।

(८) जितना सम्भव हो, एकल रंगों के कपड़े न पहनें।

५- छोटी व पतली फिगरः-

(१) सामान्य शरीर अन्य फिगरों से कम होता है।

(२) अन्य फिगर की तुलना में स्के की गहराई कम होती है।

(३) अन्य फिगर की तुलना में, छाती की रेखा व कमर की रेखा के मध्य का अन्तर कम होता है।

(४) गर्दन की लम्बाई, सामान्य फिगर से कम होती है।

(५) छाती का वृत्त (अधिकतर) कम होता है व लम्बाई के समानुपात में नहीं होता।

शार्ट और स्लिम फिगर के लिए पैटर्न में आवश्यक परिवर्तनः-

(१) ढ़ीले ढ़ाले पोशाकों से बचें।

(२) हो सके तो बड़े डिजाइन और कसे ब्रेस्ट बैन्ड से बचें।

(३) लम्बवत धारियों का प्रयोग बेहतर होगा।

६- छोटी व मोटी फिगरः-

(१) इस फिगर की ऊँचाई, तुलनात्मक रूप से काफी कम होती है।

(२) नितम्ब, कमर व छाती का घेरा अधिक होता है।

(३) गर्दन की लम्बाई कम होती है।

(४) आस्तीन की लम्बाई कम होती है।

(५) डार्ट की गहराई व लम्बाई कम होती है।

(६) स्के की गहराई भी कम होती है।

शार्ट व स्लाउट फिगर के लिए पैटर्न में आवश्यक परितर्वतनः-

(१) कुल लम्बाई घटा देनी चाहिए।

(२) डार्ट की मात्रा कम कर देनी चाहिए।

(३) लम्बवत धारियाँ बेहतर रहेंगी।

७-वर्गाकार कंधेः-

(१) कंधे का ढ़ाल, सामान्य फिगर की तुलना में कम होता है।

(२) कंधे की रेखा, छाती की रेखा के लगभग समानान्तर दिखती है।

(३) गर्दन की ऊँचाई, सामान्य फिगर से कम दिखती है।

(४) सामान्य फिगर की तुलना में, कंधे अधिक चौड़े दिखते हैं।

आवश्यक परिवर्तनः-

(१) कंधे का ढ़ाल कम कर दें।

८- ढ़रकले कंधेः-

(१) कंधे का ढ़ाल सामान्य फिगर से अधिक होता है।

(२) गर्दन की ऊँचाई सामान्य फिगर से अधिक होती है।

(३) कंधे का नाप, सामान्य फिगर से अधिक होता है।

आवश्यक परिवर्तनः-

(१) आवश्यकतानुसार कंधे की लम्बाई व ढ़ाल बढ़ा दें।

(२) प्रभाव के लिए सोल्जर पैड्स लगाये जा सकते हैं।

९- पिगन चेस्ट फिगरः-

(१) इस फिगर में, छाती की चौड़ाई का नाप सामान्य फिगर से अधिक होती है।

(२) एक्रास बैक का नाप काफी कम होता है और आकार में लगभग स्पष्ट होता है।

(३) आगे की लमबाई पीछे की लमबाई से अधिक होती है।

(४) इस फिगर का संतुलन पीछे की ओर होता है।

१०- प्रोमीनेन्ट चेस्ट फिगरः-

(१) इस फिगर में राउन्ड बेस्ट का नाप सामान्य फिगर से अधिक होता है।

(२) आगे की चौड़ाई के नाप तथा पीछे के नाप में बहुत कम अनतर होता है।

(३) पिगान चेस्ट की तुलना में इसकी आगे की लमबाई अधिक होती है।

११- फ्लैट बस्टेड फिगरः-

(१) इस फिगर में क्योंकि छाती के क्षेत्र में मॉसपेशियों की ग्रन्थियाँ पूरी तरह विकसित नहीं होती, अतः फिगर फ्लैट बस्टेड लगती हैं। साथ ही डार्ट्स में फेर बदल भी वस्त्र को अच्छा आकार व सही फिट नहीं देगा। इस स्थिति में, फुलनेस के भिन्न स्त्रोत, जैसे गैदर्स, स्मोकिंग, हॉनीकाम्ब और प्लीटिस तथा पिन टक्स का प्रयोग कर चेस्ट लाइन को उभारें।

१२- टेढ़े पैरों वाली फिगरः-

(१) घुटने व कमर के मध्य का अन्तर, सामान्य से कम हो जाता है।

(२) नीचे की ओर पैर एक दूसरे के काफी पास होते हैं।

(३) नीचे के वस्त्र की साइड रेखा, सीधी न होकर घूमकर धनुष जैसी हो जाती है।

(४) अन्दर के पैर की लम्बाई सामान्य से कम होती है।

आवश्यक निर्देशः-

(१) वस्त्र के साइड की लम्बाई बढ़ाकर अन्दर के पैर की लम्बाई घटा दी जाती है।

(२) असामान्यतः के अनुसार साइड व केन्द्र की रेखाओं के आकार को हल्का घुमावदार कर दिया जाता है।

(३) बेहतर होगा कि ढ़ीली फिट के वस्त्र डिजाइन करें।

(४) साइड लाइन को केन्द्र की ओर शिफ्ट कर दें।

१३- नॉक-नी फिगरः-

(१) यह फिगर बो–लेग फिगर के ठीक विपरीत होती है।

(२) सामान्य फिगर की तुलना में, पैरों के साइड की लम्बाई कम तथा अन्दर के पैर की लम्बाई अधिक होती है।

(३) पैर, घुटनों पर अधिक करीब होते हैं और दोनों पंजों के बीच की दूरी अधिक होती है।

आवश्यक परिवर्तनः-

(१) नीचे के वस्त्रों में, साइड लाइन, केन्द्रीय रेखा से दूर कर दी जाती है।

अभ्यास-

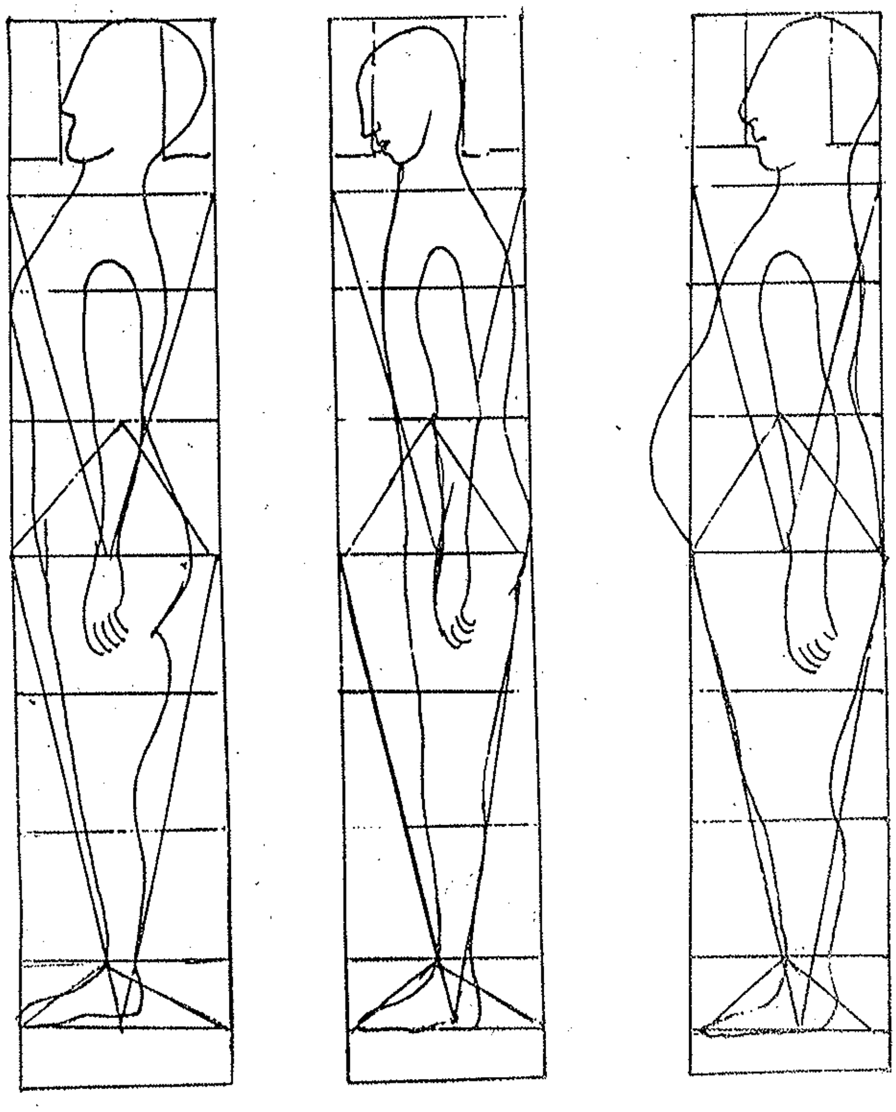

खड़ी फिगर, झुकी फिगर, मोटी फिगर,

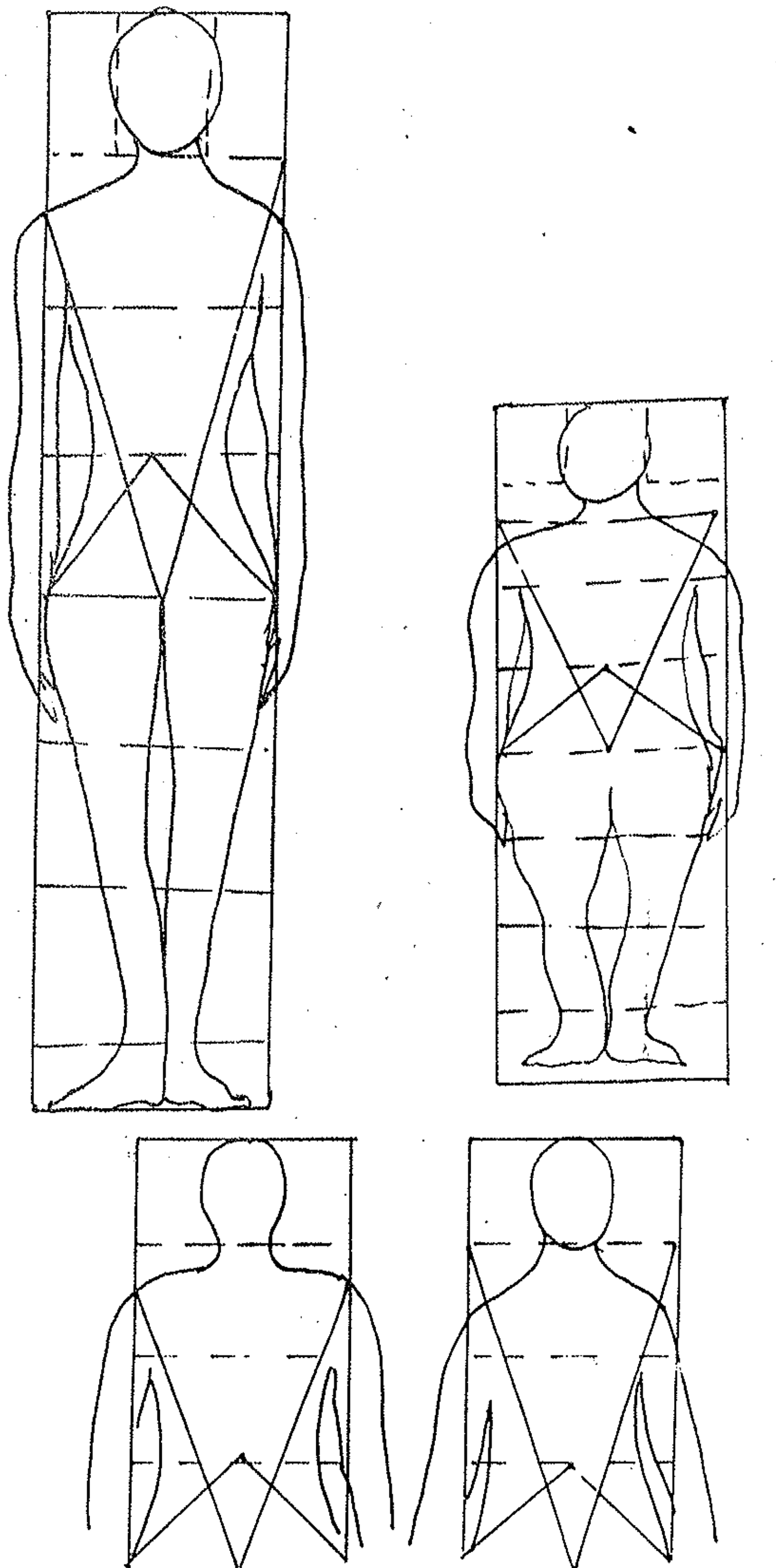

SQUARE SHOULDERS STOOPING SHOULDERS

लंबी व पतली फिगर, छोटी व मोटी फिगर, वर्गाकार कंधे, झुके कंधे,

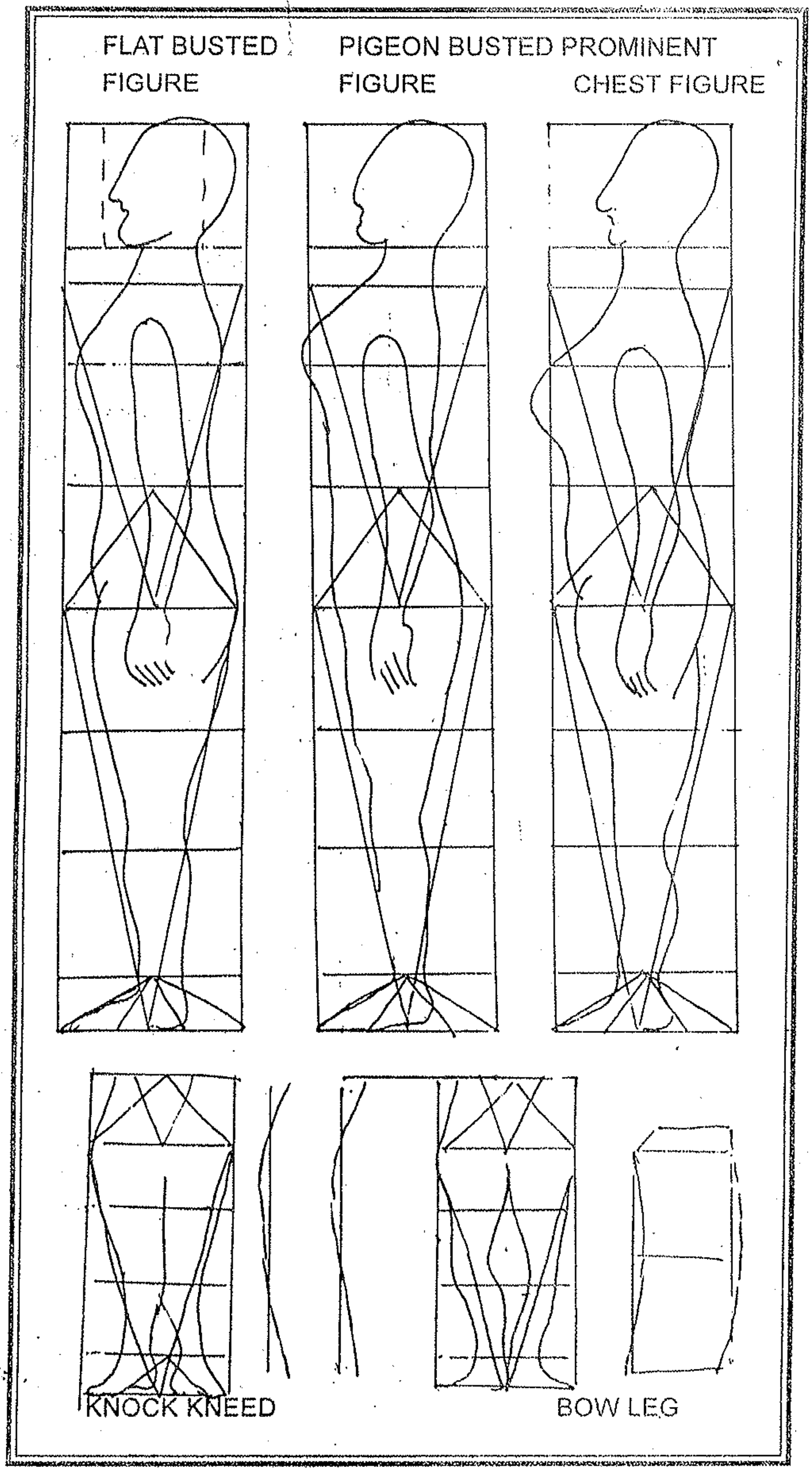
FLAT BUSTED
FIGURE
PIGEON BUSTED
FIGURE
PROMINENT
CHEST FIGURE
KNOCK KNEED
BOW LEG

१— विभिन्न लोगों का नाप लें और देखें कि क्या वे दिये गये अनुपातों के लगभग समान हैं।

२.४ सारांशः-

यह यूनिट आपको सिखाता है कि फिगर के विभिन्न फिगर समानुपातों पर कार्य व संतुलन कैसे करते हैं। शामिल की गई फिगर, में औसत फिगर, वेज आकार की फिगर, आर—ग्लास आकार की फिगर और अण्डाकार फिगर हैं।

आगे यह व्याख्या करता है कि सामान्य फिगर का लम्बवत व चौड़ाई में विभाजन कैसे होता है। साथ ही फिगर, को विभिन्न कोणों से देखना भी बताता है।

किसी भी प्रकार के फिगर के लिए कपड़ा चुनते समय ध्यान रखने योग्य बातें भी वर्णित की गई हैं। ब्लॉक की ड्राफ्टिंग के लिए शरीर का निरीक्षण व ८ हेड थ्योरी के कार्य पर भी चर्चा की गई है।

२.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न—१ विभिन्न संरचनात्मक रेखाओं को हम प्रभावशाली रूप से कैसे प्रयोग कर सकते हैं?

प्रश्न—२ आपको कपड़े का चुनाव कैसे करना चाहिए?

प्रश्न—३ विभिन्न प्रकार की फिगर के लिए आप किन विभिन्न कपड़ों का प्रयोग कर सकते हैं और कैसे?

प्रश्न—४ फिगर विश्लेषण आवश्यक क्यों हैं?

प्रश्न—५ कोई भी चार भिन्न प्रकार की फिगर की व्याख्या करें तथा उन्हें संतुलित करने का तरीका बताएँ?

२.६ स्वाध्ययन हेतु-

१— फैशन कैलीडोस्कोप, द्वारा मेहर कैस्टेलिनों, प्रकाशक—रूपा एण्ड कम्पनी।

संरचना

३.१ यूनिट प्रस्तावना

३.२ उद्देश्य

३.३ फैशन का विस्तार

३.४ सारॉश

३.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

३.६ स्वाध्ययन हेतु

३.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

यह यूनिट वस्त्र के विभिन्न भागों तथा उनके प्रकारों को सूचीबद्व करता है।

३.२ उद्देश्यः-

फैशन के विद्यार्थियों को वस्त्र के विभिन्न भाग तथा उनके प्रकारों से अवगत होना चाहिये। फैशन के विद्यार्थियों को वस्त्रों के नापों से भी परिचित होना चाहिए। इस यूनिट का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रचलित प्रकारों के वस्त्र तथा उनके नामों से परिचित कराना है।

३.३ फैशन डिटेलः-

यह यूनिट विभिन्न प्रकार के नेक लाइन्स, कॉलर, आस्तीन, स्कर्ट, लोअर्स इत्यादि को सूचीबद्व करता है।

अब नेक लाइन्स से शुरू करते हैं-

वी–गला

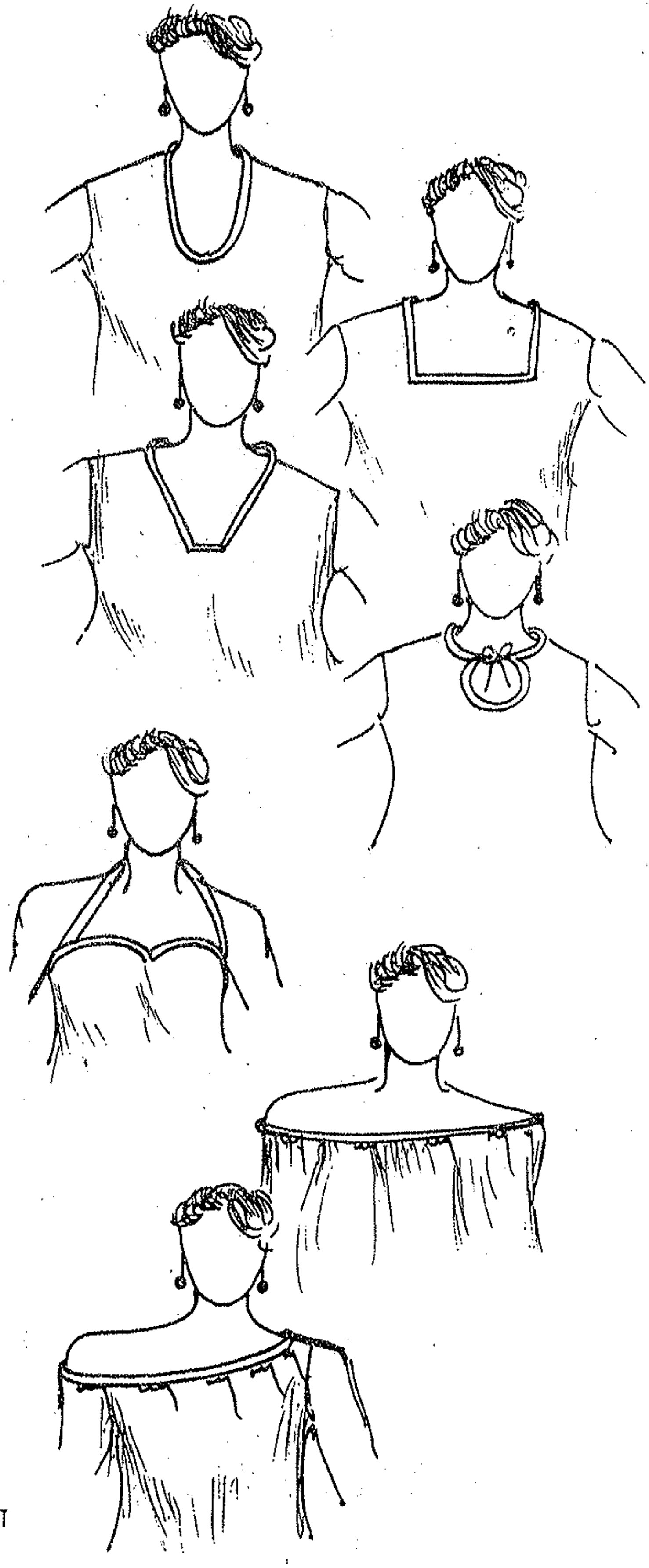

यू–गला

वर्गाकार–गला

ग्लास आकार का गला

की–होल गला

हॉल्टर गला

आफ–शोल्डर गला

ऑफ–वन– शोल्डर गला

मटका गला

गोल गला

बोट गला

काउल गला

स्कूप्ड गला

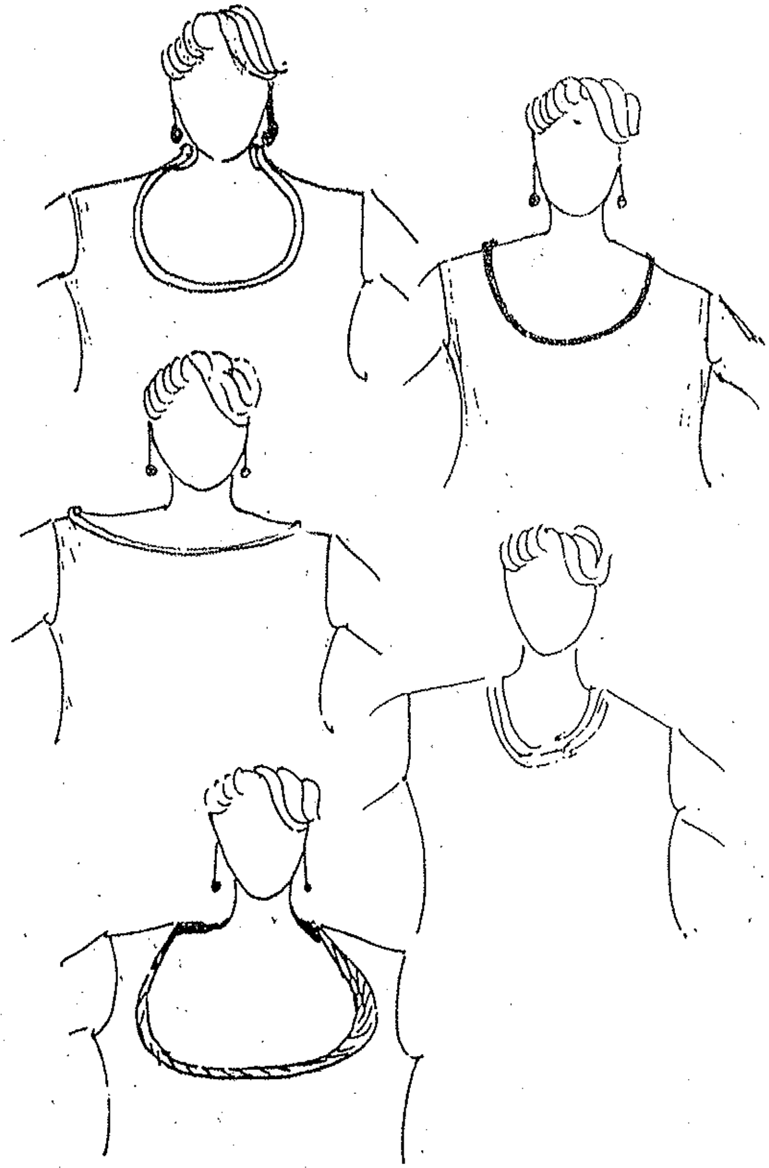

अब हम विभिन्न प्रकार के कॉलर देखते हैं-

पीटरपैन या बेबी कॉलर

केप कॉलर

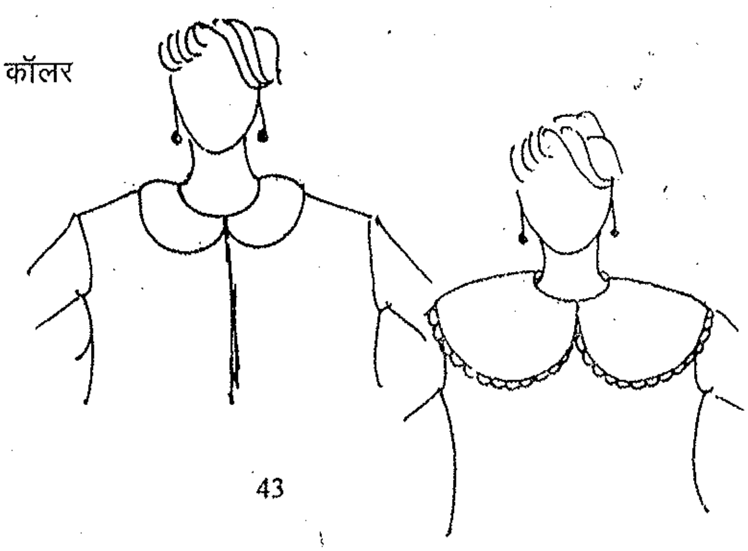

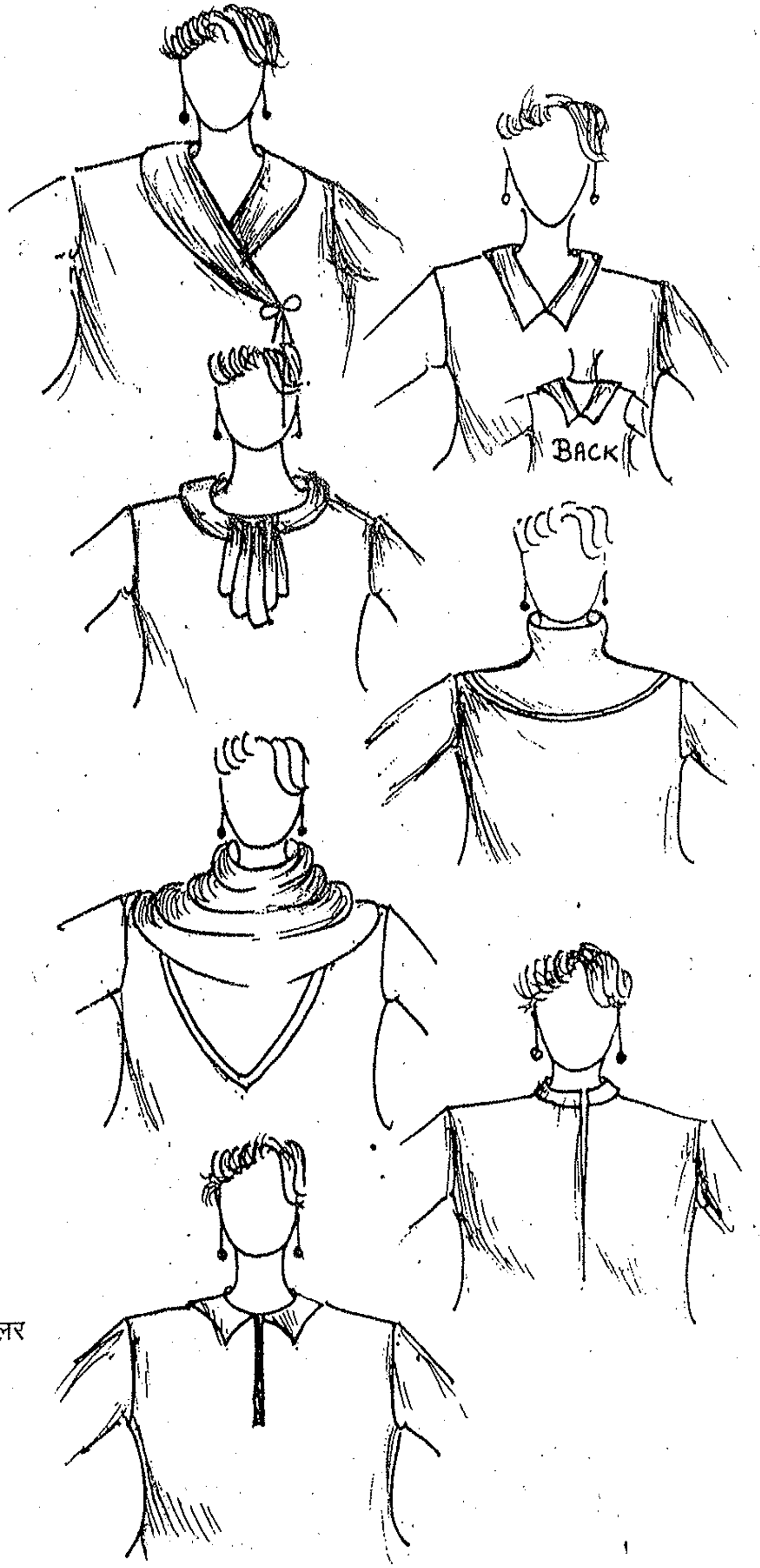

शॉल कॉलर

चेलसिया कॉलर

जैब्बोट कॉलर

फनेल कॉलर

टरटिल कॉलर

चाइनीज बैन्ड कालर

टेनिस कॉलर

शर्ट कॉलर

मैन्डेरिन कॉलर

कोट कॉलर

गाउन कॉलर

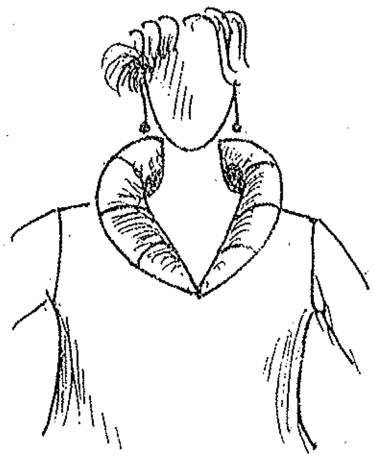

रोल कॉलर

मेडिकि कॉलर

अब हम विभिन्न प्रकार की आस्तीनें देखते हैं-

प्लेन आस्तीन

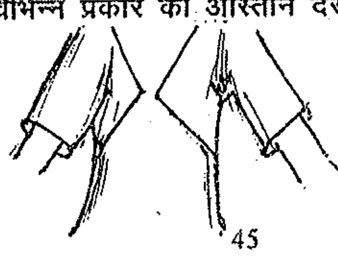

पफ आस्तीन

लेग 'ओ' मटन आस्तीन

फ्लेर्ड आस्तीन

कैप आस्तीन

इपॉउलेट आस्तीन

हैन्की आस्तीन

मैगयार आस्तीन

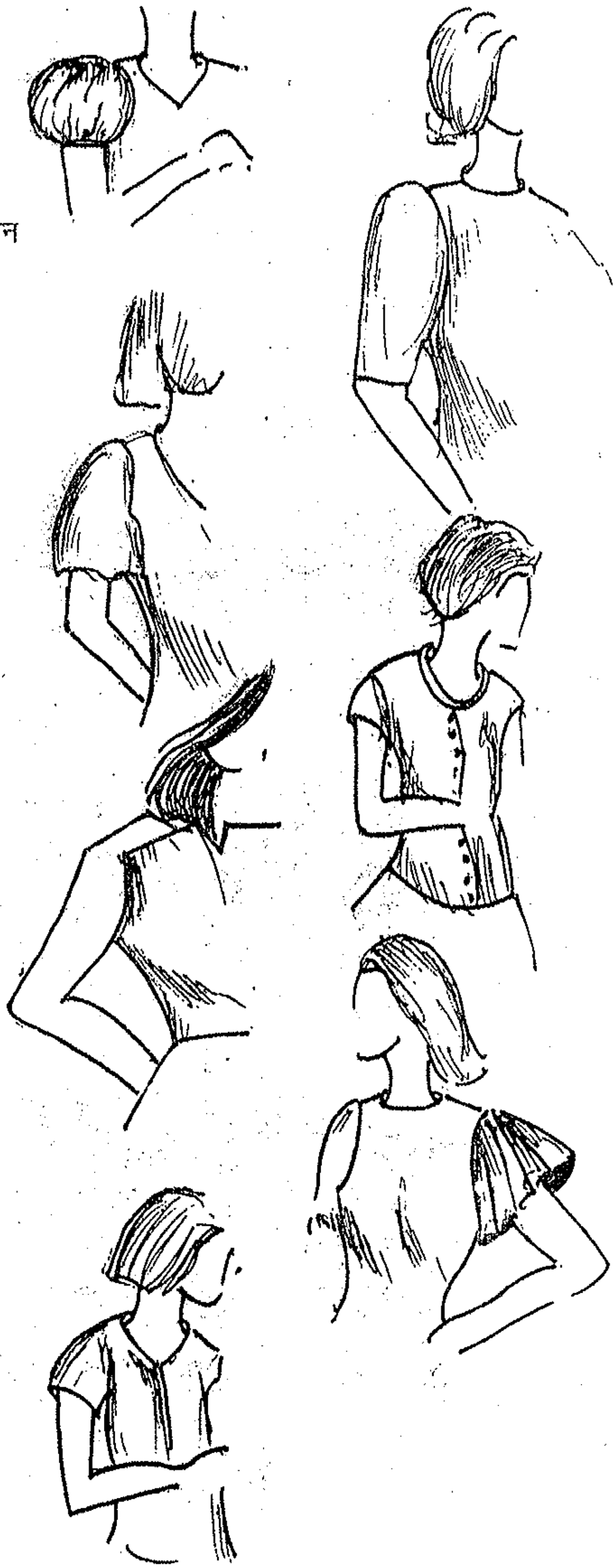

डॉलमन आस्तीन

किमोनो आस्तीन

बटर फ्लाई आस्तीन

रैगलान आस्तीन

बिना आस्तीन का

इनकट आस्तीन

फ्रिल आस्तीन

लैन्टर्न आस्तीन

कॉल आस्तीन

पीजेन्ट आस्तीन

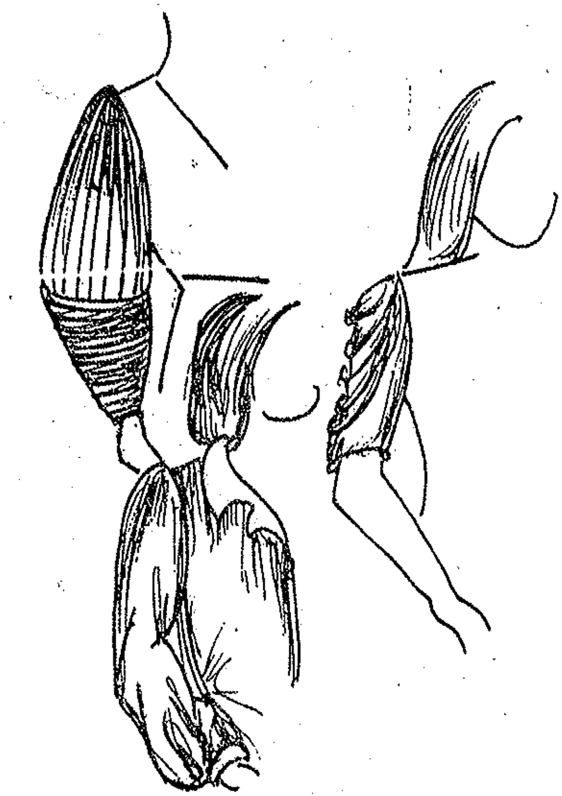

अब हम विभिन्न प्रकार के आर्महोल देखते हैं-

सामान्य आर्महोल

रैगलान आर्महोल

ड्रॉप्ड आर्महोल

वर्गाकार आर्महोल

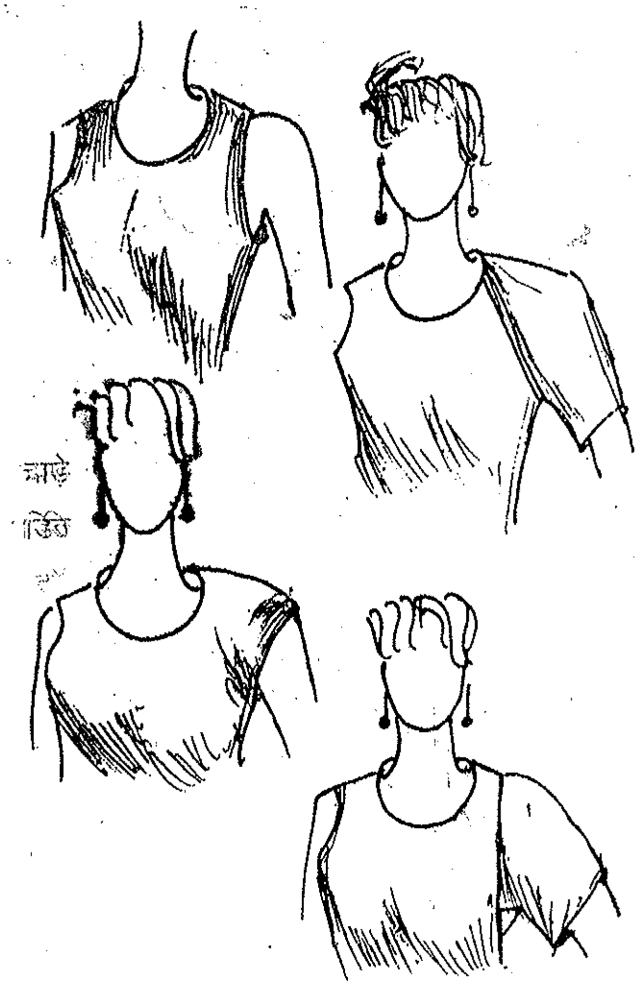

अब हम विभिन्न प्रकार के लोअर्स और पैन्ट्स देखते हैं-

निक्कर

हाफ पैन्ट

फुल पैन्ट

बेल बॉटम्स्

पैरेलल

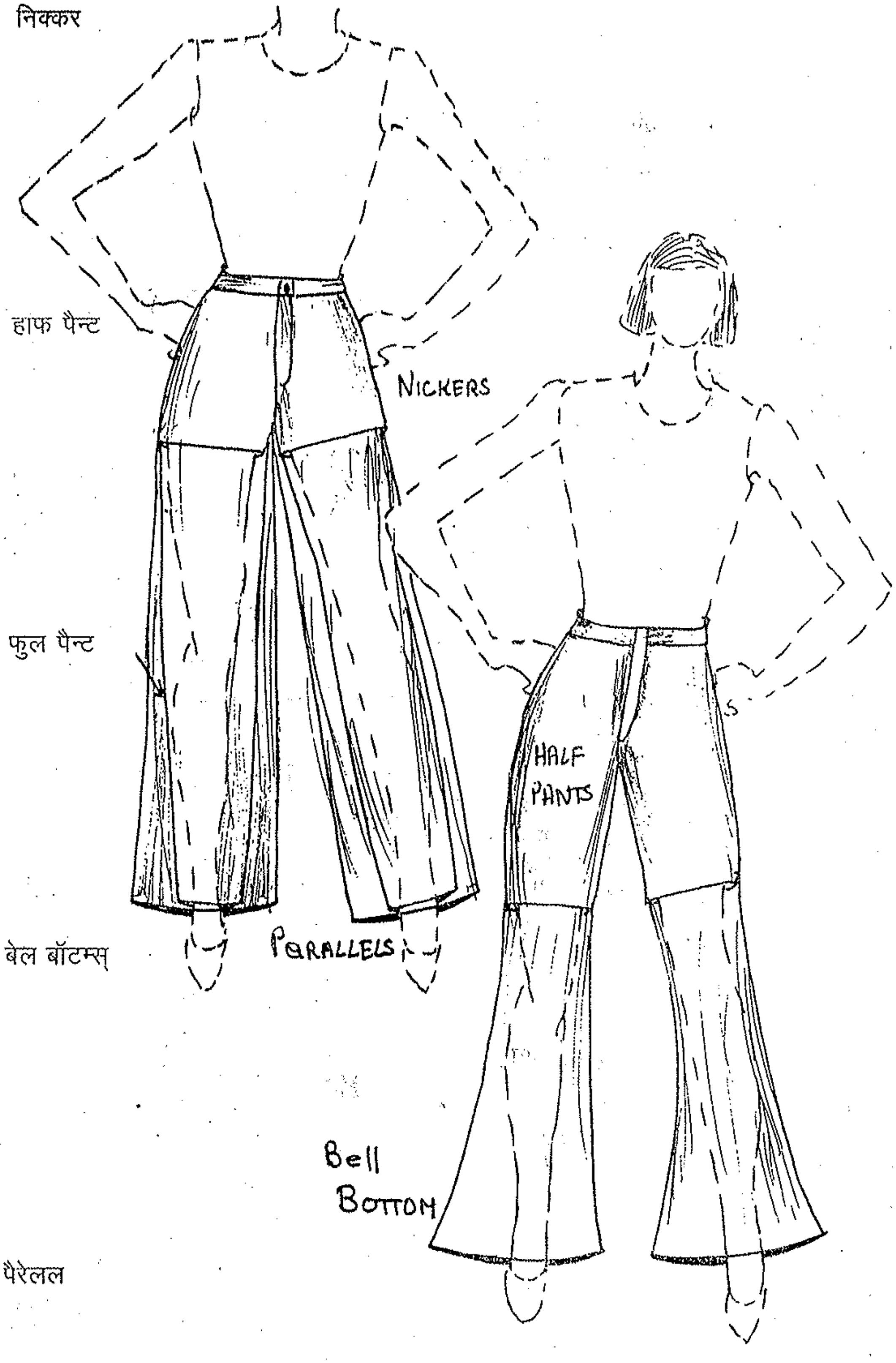

प्लाजोस

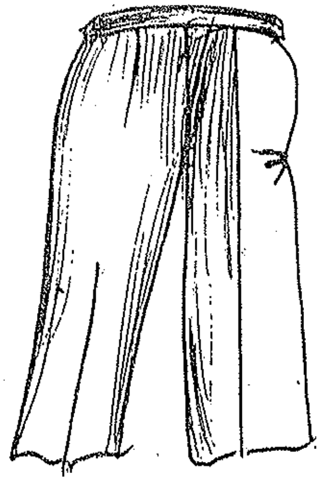

बीच पैन्ट

पालियो पैन्ट्स

पूर्वी पैन्ट या हॅरेम

ढ़ीला पायजामा

चूड़ीदार

सलवार

हॉट पैन्ट

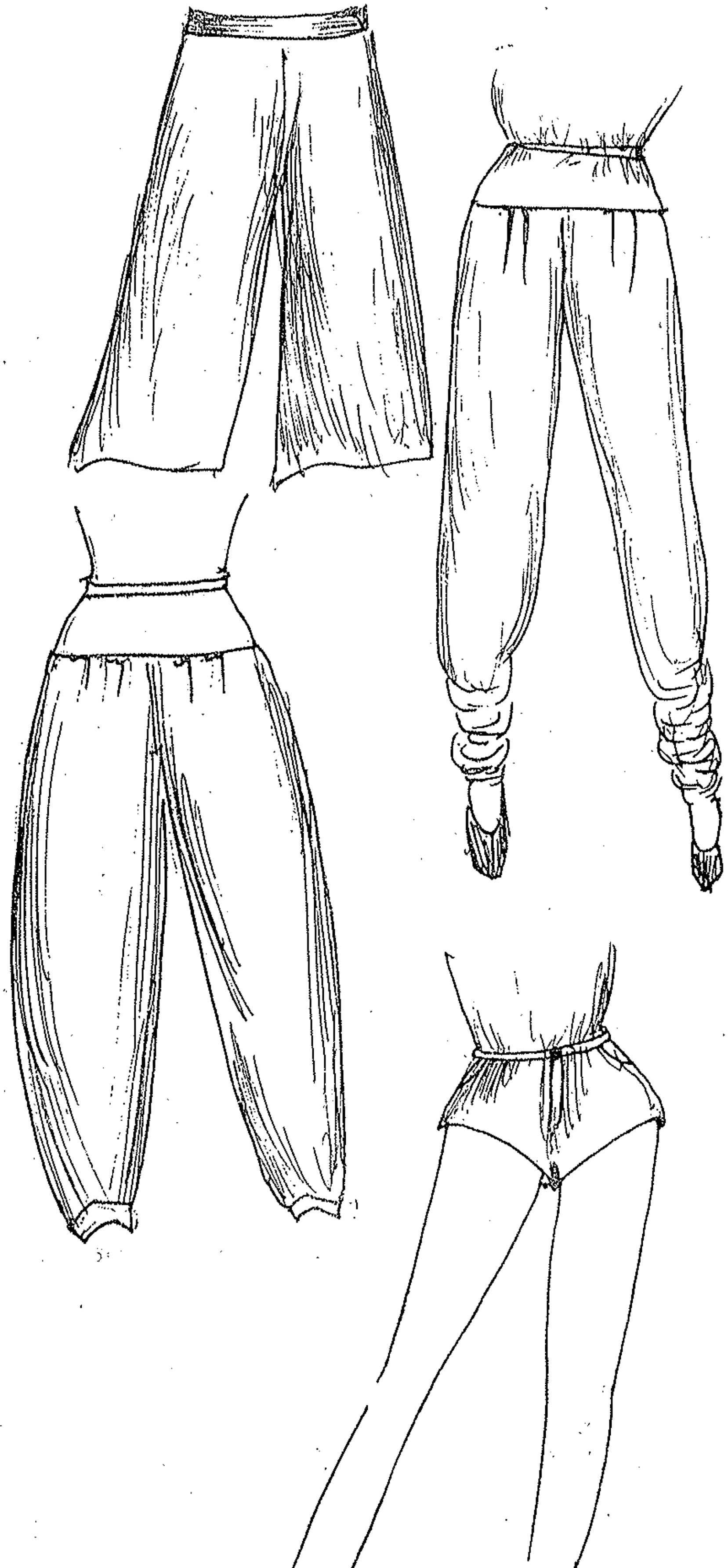

बरमूडा

गाउचोस

पेडल पुशर्स

केपरी पैन्ट

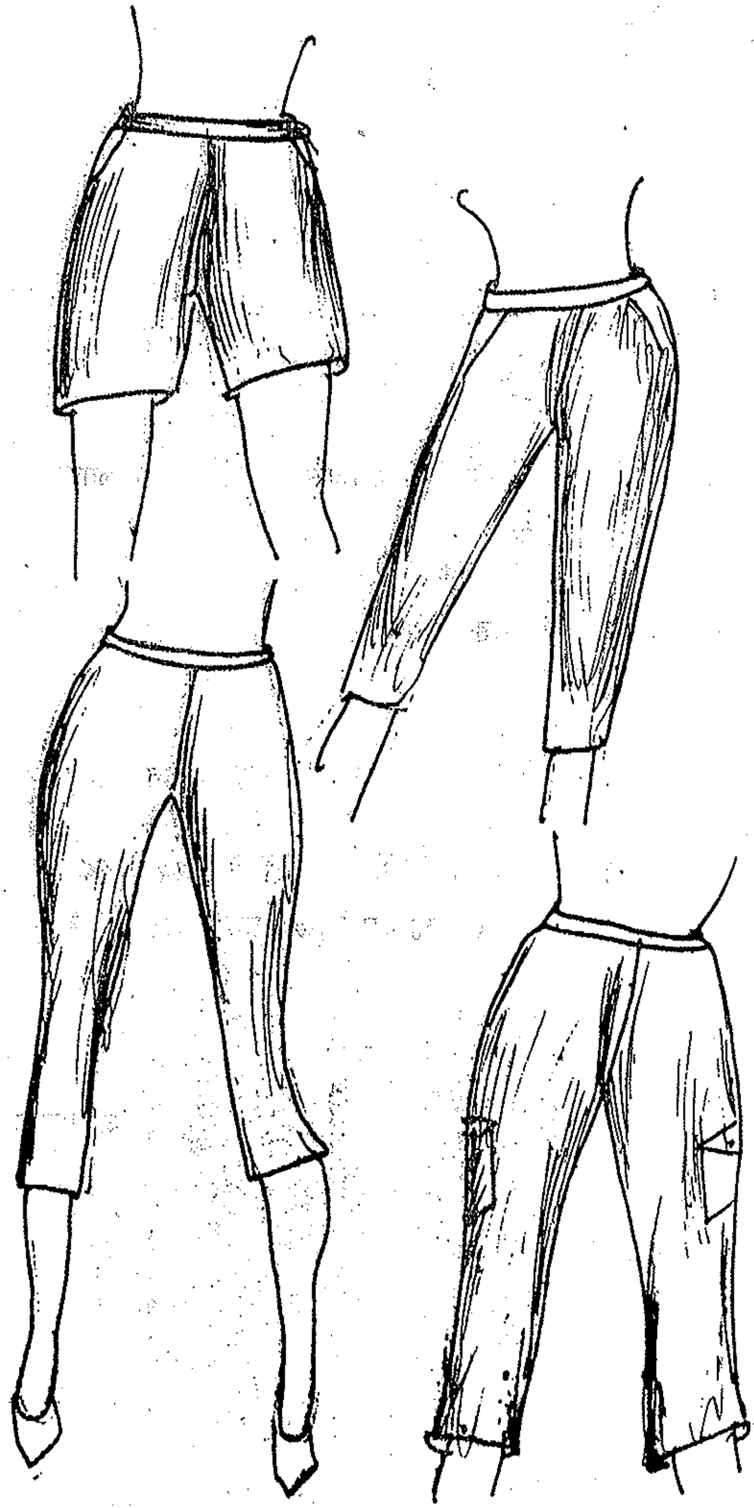

पायरेट पैन्ट

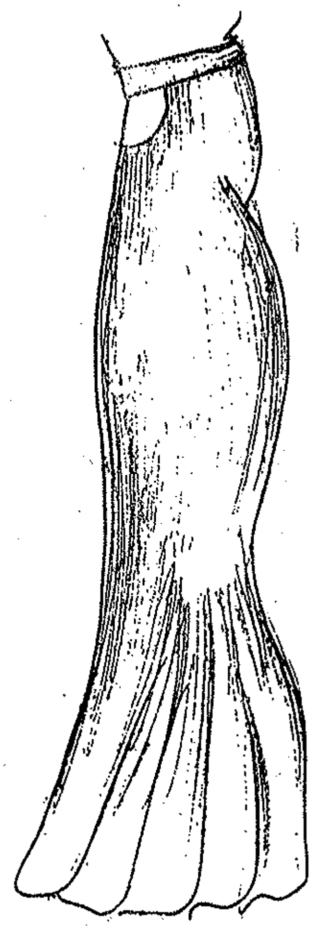

ड्रेन पाइप पैन्ट

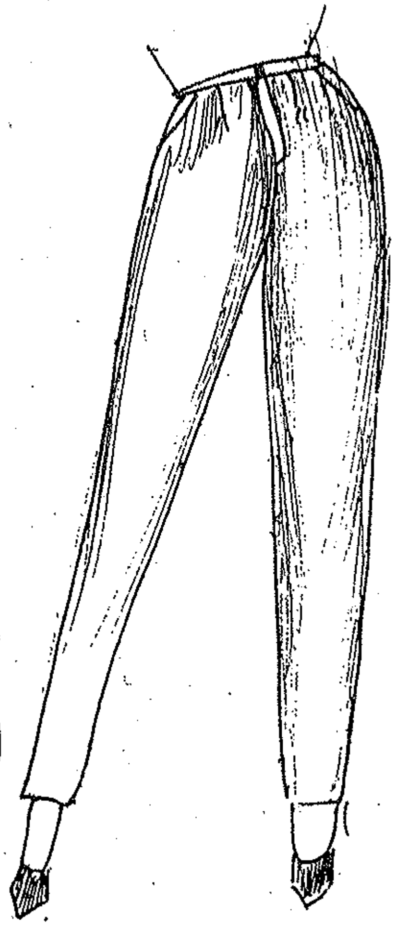

अब हम विभिन्न प्रकार की स्कर्ट देखेगें-

स्ट्रेट स्कर्ट

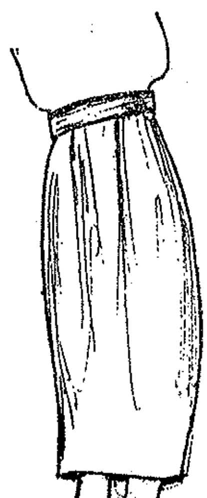

गैदर्ड स्कर्ट

नाइफ प्लीटिड स्कर्ट

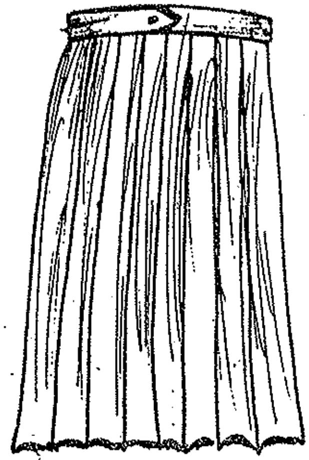

बॉक्स प्लीटिड स्कर्ट

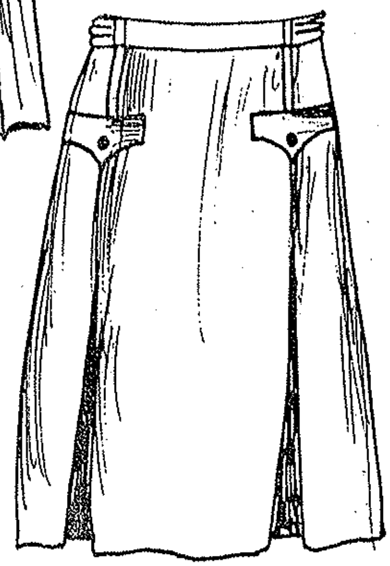

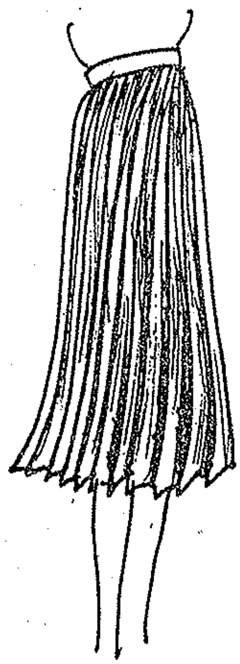

अकोर्डियन प्लीटिड स्कर्ट

रैप अराउन्ड स्कर्ट

सरकुलर स्कर्ट

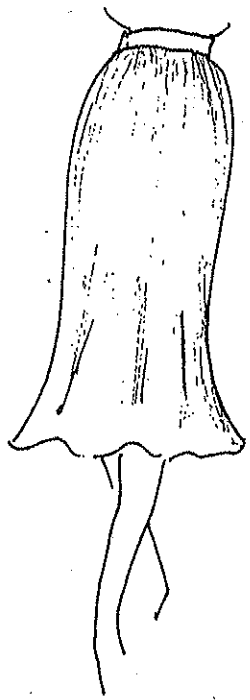

पैनल्ड स्कर्ट

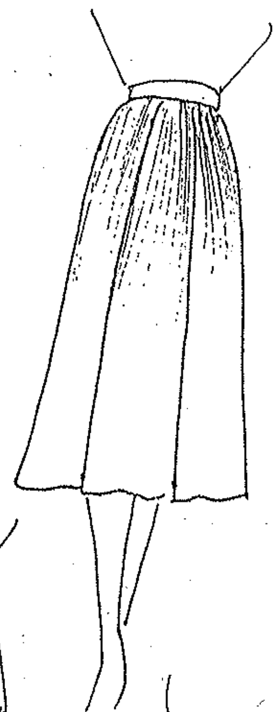

नोवेल्टी गैदर्ड स्कर्ट

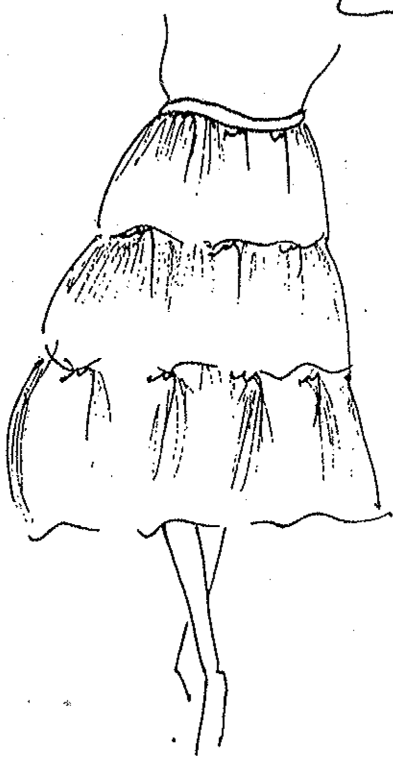

किक प्लीटिड स्कर्ट

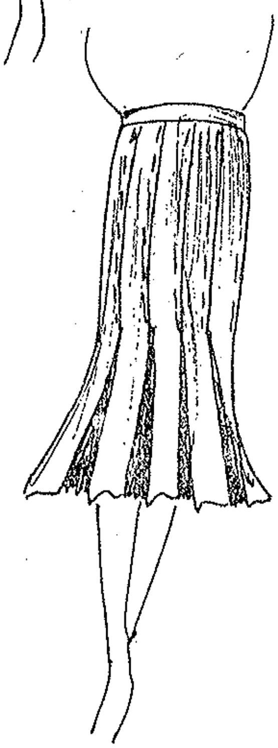

पेग स्कर्ट

डिवाइडेड स्कर्ट

ए–लाइन स्कर्ट

योक वाली स्कर्ट

हिपराइडर स्कर्ट

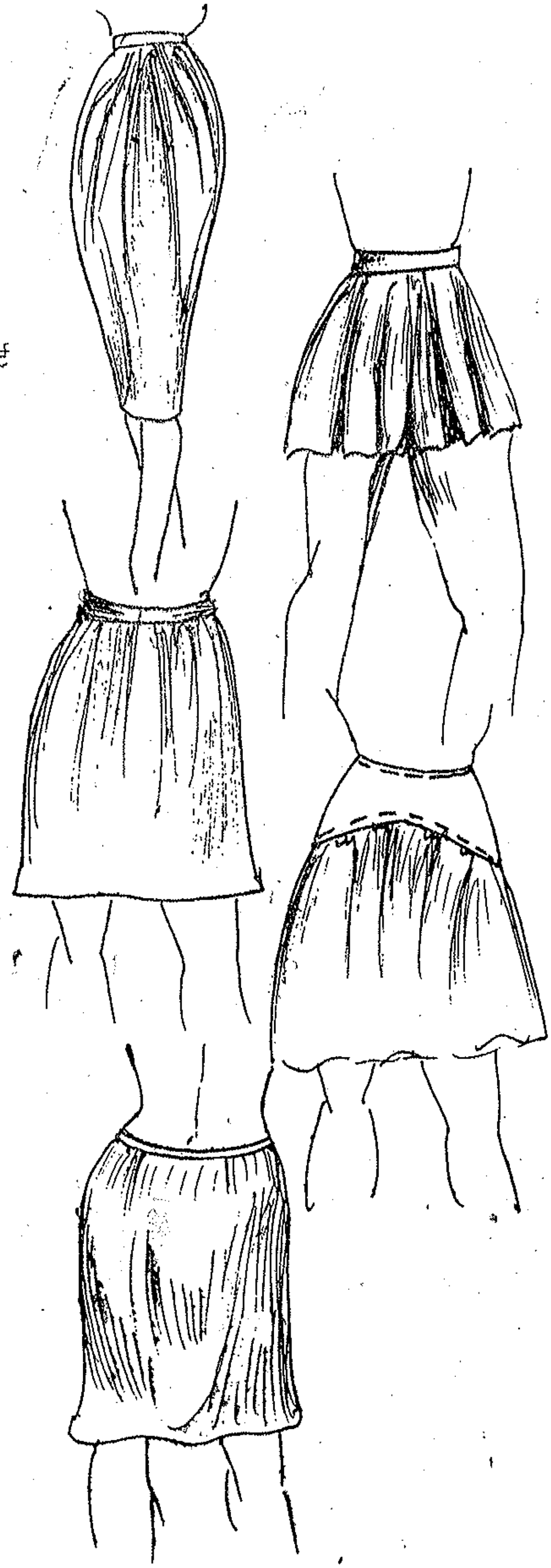

अभ्यास-

१— टेक्स्ट में इंगित हर नाम का चित्र का संग्रह करें और स्क्रैप बुक में चिपकाएँ।

३.४ सारांशः-

टेक्स्ट में दी गई विभिन्न प्रकार के गले हैं— वी—गला, यू—गला, वर्गाकार गला, ग्लास आकार गला, की—होल गला, हॉल्टर गला, आफ शोल्डर गला, ऑफ वन शोल्डर गला, मटका गला, गोल गला, बोट गला, काउल गला, तथा स्कूप्ड गला।

दिखाए गए विभिन्न प्रकार के कॉलर हैं— पीटरपैन या बेबी कॉलर, केप कॉलर, शॉल कॉलर, चेलसिया कॉलर, जैब्बोट कॉलर, फनेल कॉलर, टरटिल कॉलर, चाईनीज बैण्ड, टेनिस कॉलर, शर्ट कॉलर, मैण्डेरिन कॉलर, कोट कॉलर, गाउन कॉलर, रोल कॉलर, और मेडिसि कॉलर।

दिखाई गई विभिन्न प्रकार की आस्तीनें हैं— प्लेन आस्तीन, पफ आस्तीन, लेग 'ओ' मटन आस्तीन, फ्लेर्ड आस्तीन, कैप आस्तीन, इपॉलेट आस्तीन, हैन्की आस्तीन, मैगयार आस्तीन, डॉलमन आस्तीन, किमोनो आस्तीन, बटरफ्लाई आस्तीन, रैगलॉन आस्तीन, बिना आस्तीन का, इनकट आस्तीन, फ्रिल, लैन्टर्न आस्तीन, कॉउल आस्तीन, और पीजेन्ट आस्तीन।

विभिन्न प्रकार के आर्महोल हैं— सामान्य आर्महोल, रैगलान आर्महोल, ड्रॉप्ड आर्महोल, और वर्गाकार आर्महोल।

विभिन्न प्रकार के लोअर्स व पैन्ट्स हैं— निकर, हाफ पैंट, फुल पैंट, बेल बॉटम्स, पैरेलल, प्लाजो, बीच पैंट, पालियो पैंट, पूर्वी पैंट या हॅरेम, ढ़ीला पायजामा, चूड़ीदार, सलवार, हॉट पैंट, बरमूद्धा, गाउचोज, पेडल पुशर्स, केपरी पैंट, पायरेट पैंट और ड्रेन पाइप।

विभिन्न प्रकार की स्कर्ट हैं— सरकुलर स्कर्ट, गैदर्ड स्कर्ट, नाइफ प्लीटेड स्कर्ट, बॉक्स प्लीटेड स्कर्ट, अकोर्डियन प्लीटेड स्कर्ट, रैप अराउन्ड स्कर्ट, स्ट्रेट स्कर्ट, पैनल्ड स्कर्ट, नोवेल्टी गैदर्ड स्कर्ट, किक प्लीटेड स्कर्ट, पेग स्कर्ट, डिवाइडेड स्कर्ट, ए लाइन स्कर्ट, योक्ड स्कर्ट और हिपराइडर स्कर्ट।

३.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न—१ हैरम पैन्ट क्या होती है?

प्रश्न—२ रैगलॉन आस्तीन क्या होती है?

प्रश्न—३ पैग स्कर्ट क्या होती है?

प्रश्न—४ ड्रेन पाइप पैन्ट क्या होती है?

प्रश्न—५ अकोर्डियन स्कर्ट क्या होती है?

३.६ स्वाध्ययन हेतु-

१— इन्साइक्लोपीडिया आफ फैशन डिटेल्स, द्वारा पैटरिक जॉन आयरलैण्ड, प्रकाशक— बी० टी० बैटस्फोंड लि०, लन्दन।

संरचना

४.१ यूनिट प्रस्तावना

४.२ उद्देश्य

४.३ बाजार सर्वेक्षण

४.४ सारॉश

४.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

४.६ स्वाध्ययन हेतु

४.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

फैशन डिजाइनर को यह जानकारी होनी चाहिए कि बाजार में क्या, किस दाम में उपलब्ध है। इस यूनिट में पहनावे के दो पहलू, बटन व लेस को बाजार के सर्वेक्षण के लिए चुना गया है।

४.२ उद्देश्यः-

न सिर्फ मूल्य का ज्ञान होना ही महत्वपूर्ण है बल्कि उत्पाद की गुणवत्ता, रंग का पक्कापन तथा मजबूती की जानकारी भी आवश्यक हे। यह यूनिट वस्त्रों पर प्रयुक्त दो एसेसरीज पर प्रयोगात्मक एसाइनमेन्ट देता है और आपको बताता है कि बाजार का सर्वेक्षण कैसे किया जाता है। स्मरण रहे कि बाजार के आधार पर एक ही वस्तु का मूल्य भिन्न–भिन्न होगा।

४.३ बाजार सर्वेक्षणः-

विश्व के फैशन महानगरों में, ऐसी दुकानें हैं जो केवल बटन ही विक्रय करती हैं। सर्व बटनरीजर्स पेरिस में आपको, कोई भी प्रकार का बटन मिल सकता है। यहॉ तक कि जूते, टोपी, पिन, घड़ी, पशु, पक्षी, टंकी, फूल, पेड़, कम्पयूटर चिप, मोबाइल सिम कार्ड और कलाकारों के आकारों के बटन भी मिल जायेगें। यह विभिन्न प्रकार की

सामग्री जैसे लकड़ी, शंख, हड्डी, प्लास्टिक, चमड़ा, कपड़ा या बहुमूल्य पत्थर से बनाए जाते हैं। हम इन बटनों का प्रयोग (इनका आश्चर्यजनक मूल्य है रू० बीस) हम कुछ मूल्यवान पोशाकों पर करते हैं। मोती के बटन की सर्वश्रेष्ठ जननी पेरू से आती है और फ्रेंच हॉट कन्टूअर में बहुत प्रयोग किये जाते हैं। रंगों की श्रृंखला पर्ल ह्वाईट से रोज, वेग, ग्रे, ब्राउन और ब्लैक पर्ल होती है।

बटन के कई वर्गीकरण है परन्तु निम्न सात वर्ग सर्व स्वीकृत है:–

१. सिव थ्रो बटन-

यह वह बटन है जिनमें दो या चार छिद्र होते हैं।

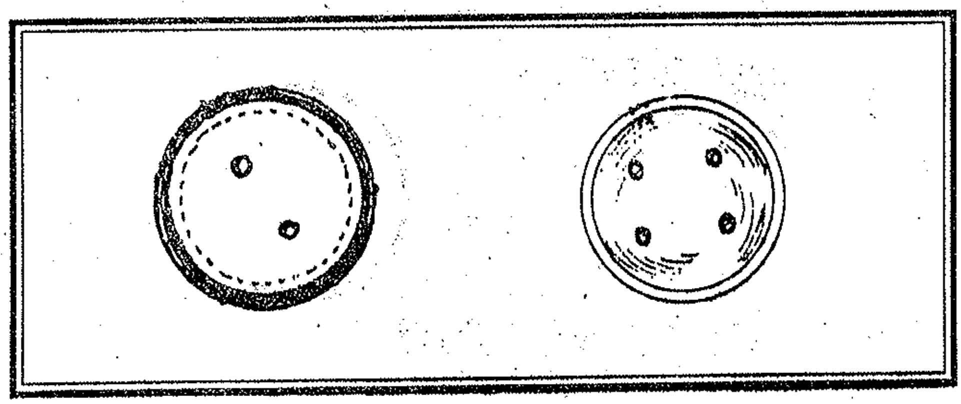

२. सैंक बटन-

धातु, प्लास्टिक या लकड़ी से बने होते हैं। यह ऊपर से सपाट होते हैं जो इनसिगिया से इम्ब्रोज्ड हो सकता है और नीचे की ओर, छेद पर एक छोटा यू–आकार का तार होता है जिससे उन्हें बटन होल में बांधा जा सकता है। यह इस तरह बनाए जाते हैं कि धाते समय इन्हें हटाया जा सके तथा यह वर्दियों पर पाये जाते हैं।

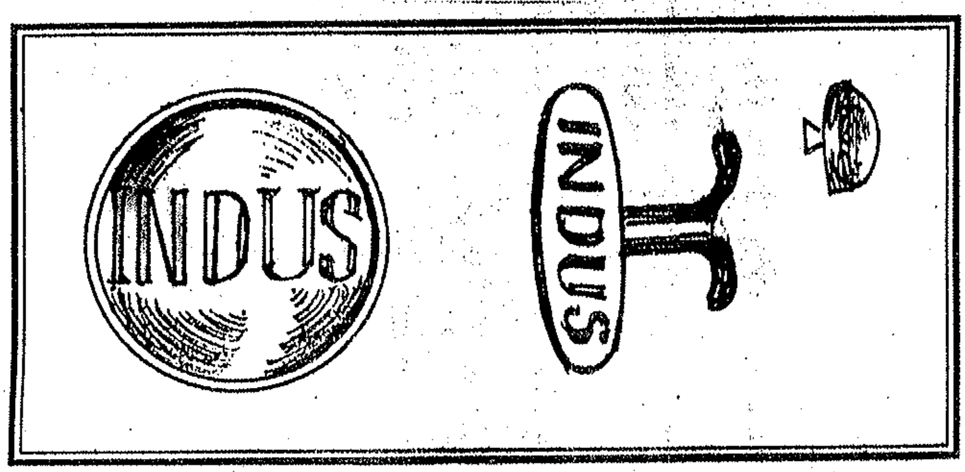

३. टिविन्स बटन्स-

कफलिंग के जैसे दिखते, यह बटनों का जोड़ा होता है जो एकल से०मी० के धागे के छल्ले या गोटे से जुड़ा होता है। इनका प्रयोग दो बटनहोल द्वारा बॉधने के लिये होता है जैसा कि कफलिंग्स में होता है।

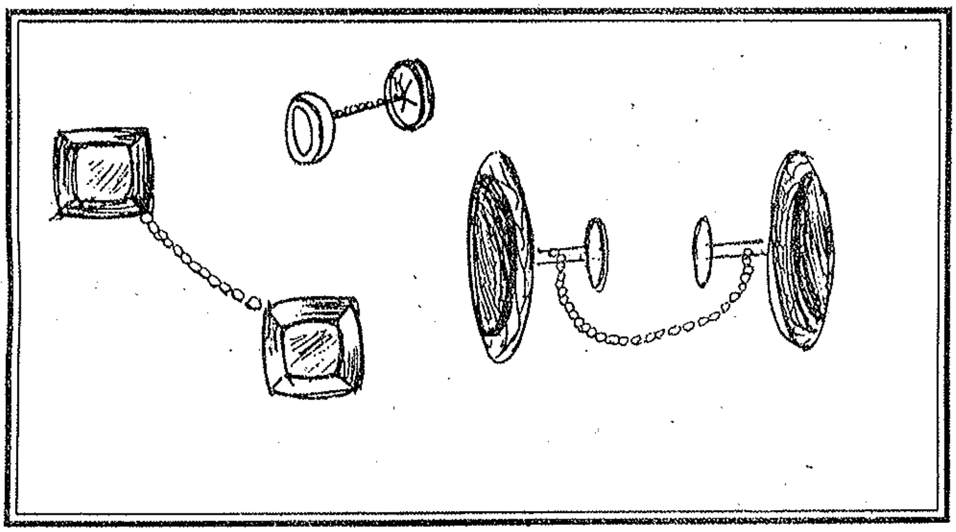

४. प्रेस बटन्स-

इन्हें शेप्स भी कहा जाता है तथा यह क्रोम या काले में उपलब्ध होते हैं। हॉउट कन्टूर में यह कपड़े से ढंके हुए आते हैं जिससे एक अधिक फिनिसिंग रूप आता है।

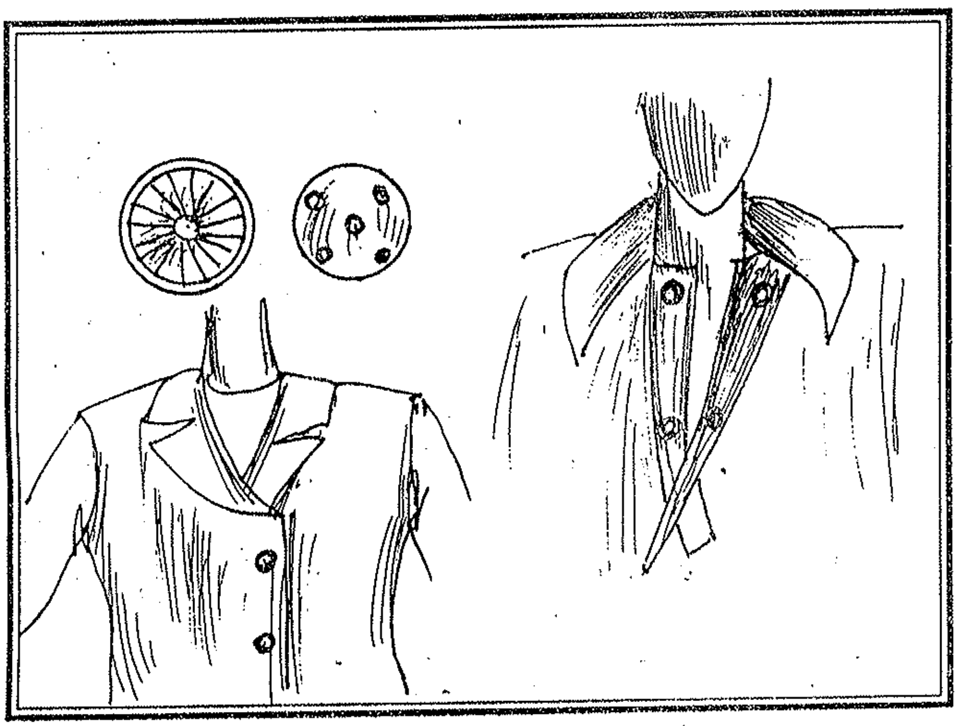

५. **कन्सील्ड इनवर्स बटन**- ट्यूड जैसे कपड़े की ढीली पेल को बड़े बटन द्वारा फटने से बचाने के लिये असल बटन के नीचे एक छोटा बटन लगा दिया जाता है। यह दो बटनों के मध्य कपड़ा रहता है, अतः बराबर का संतुलन बना रहता है।

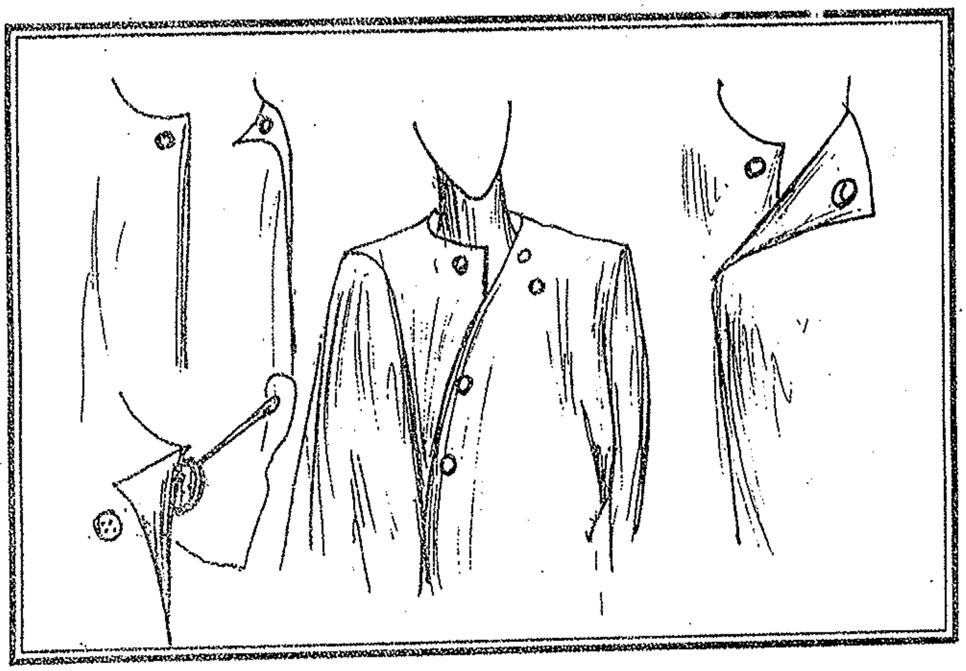

६. **कवर्ड बटन्स**- कपड़े से ढंके बटन बाजार में परिचित हैं। इन्हें हेड्स या सितारों से सजा कर इवनिंग वर्क के लिए औपचारिक रूप दिया जा सकता है।

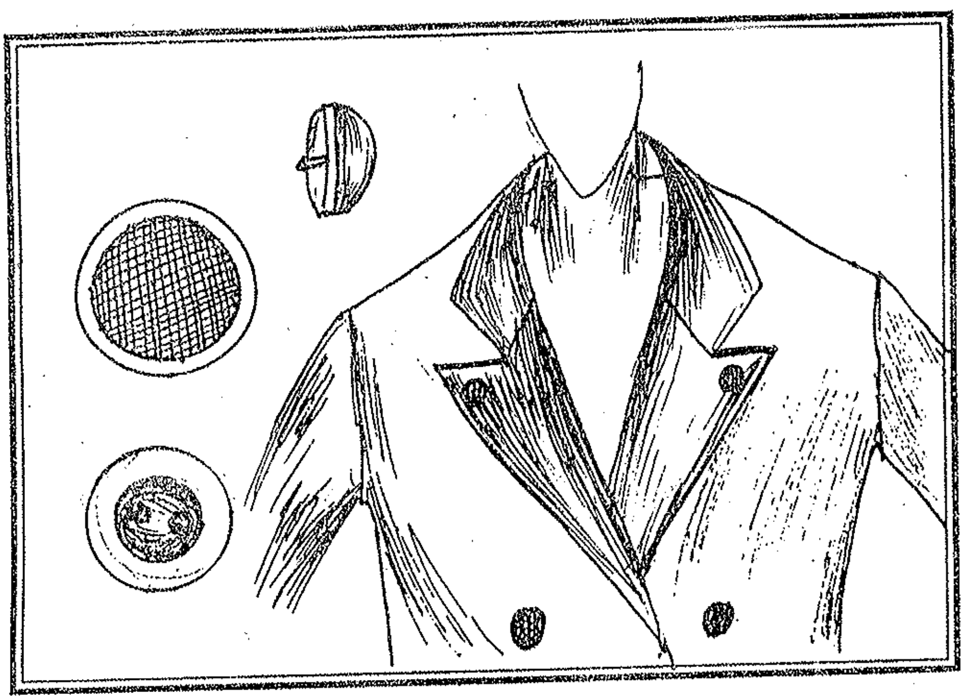

७. चाइनीज बाल बटन-

यह कॉर्ड या पाइपिंग से बनाए जाते हैं।

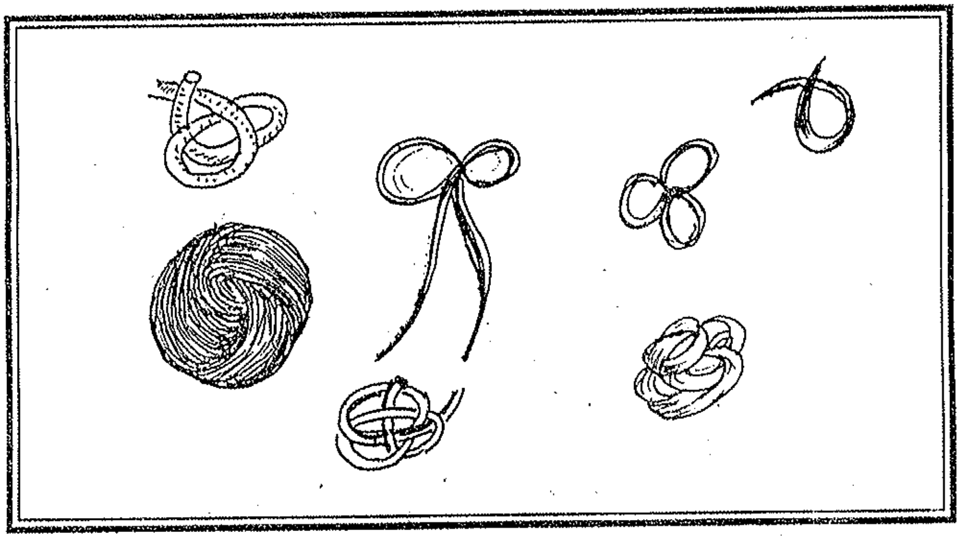

बटन होल बनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये-

१– बटन का नाप, पहनने वाला सुनिश्चित करता है।

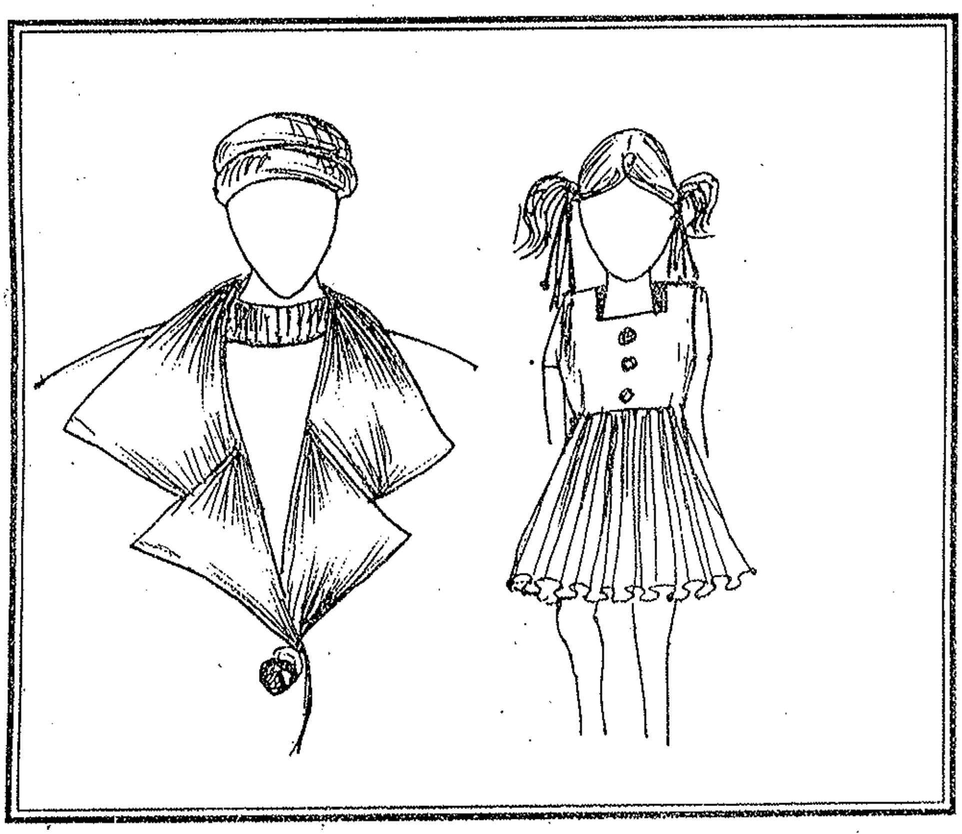

२– सिलने से पहले लगा कर देखें कि वह कैसा लगता है।

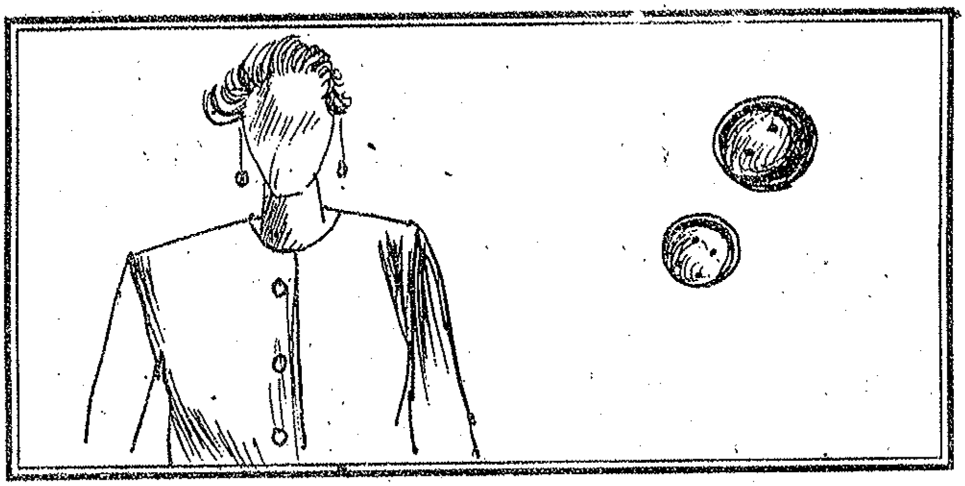

३– बटन स्ट्रेस बिन्दुओं पर लगाए जाते हैं।

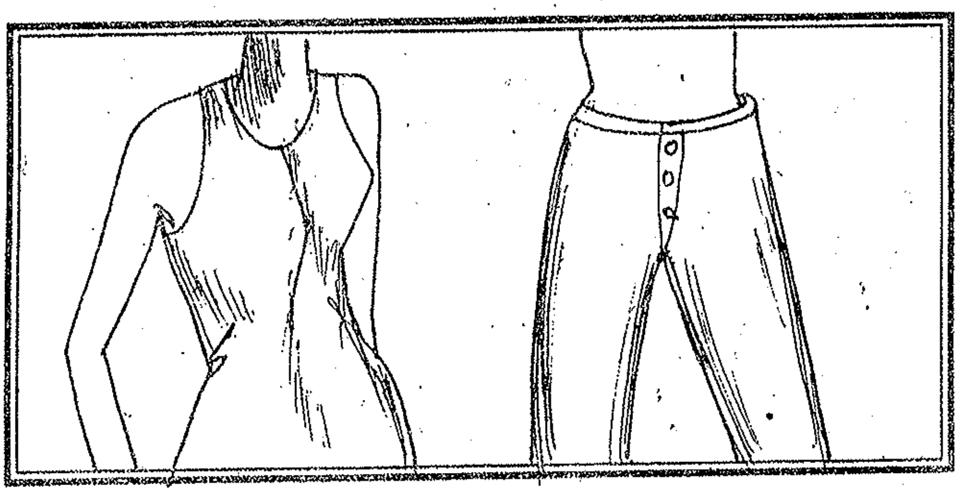

४– बटनों के बीच की दूरी वस्त्र के पूरे रूप को बदल सकती है।

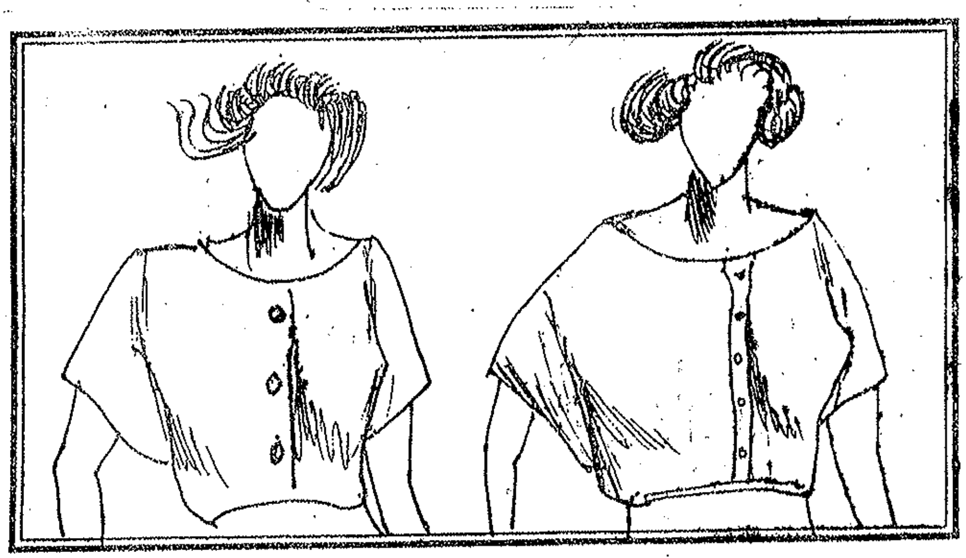

५— यदि आप वस्त्र को लम्बा या छोटा कर रहे हैं तो बटनों के मध्य की दूरी भी बदलनी होगी।

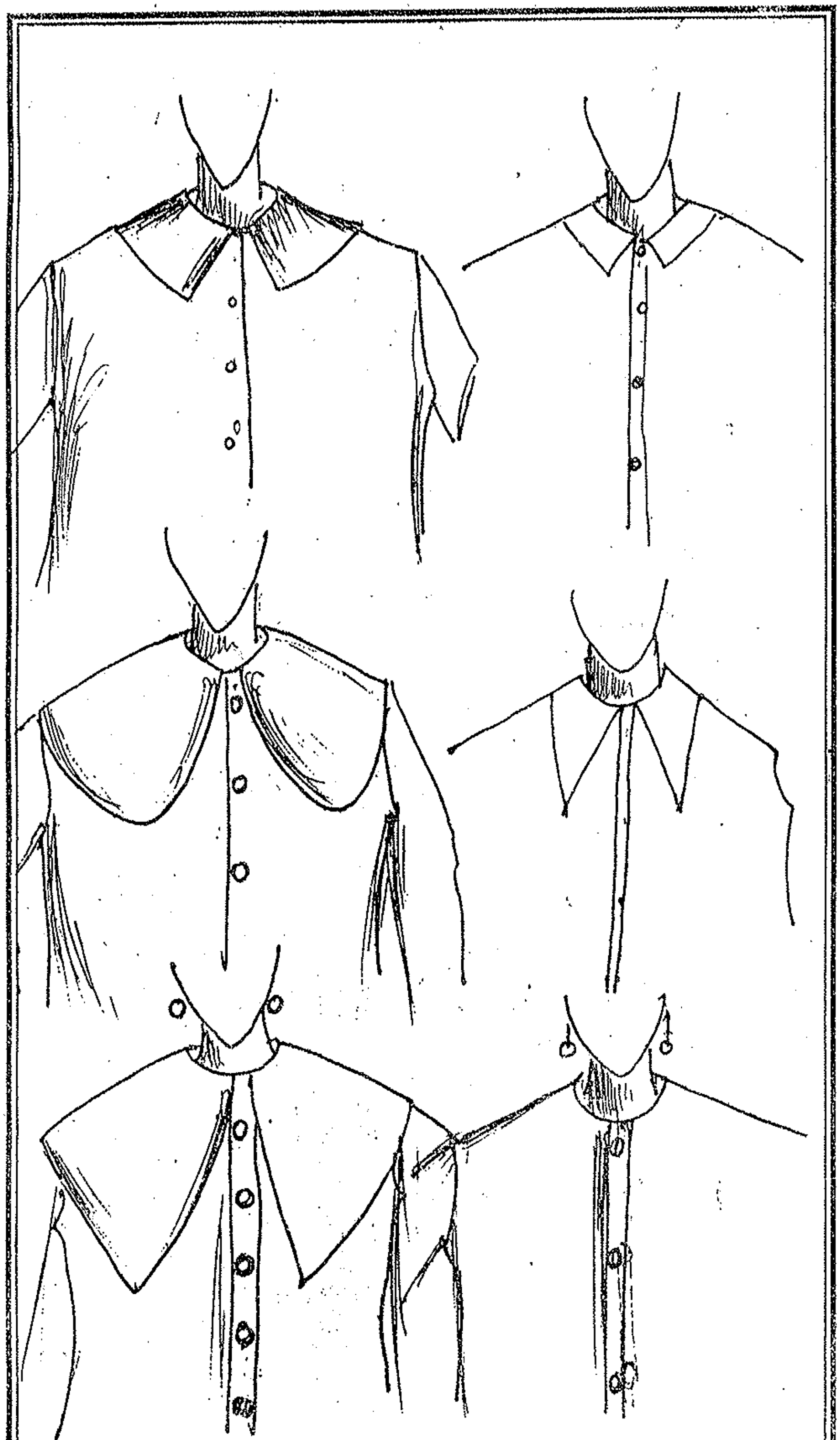

६— एक पोशाक जो गैप्स ओपेन हो, उसे गैप बंद करने के लिये पर्स बटन की आवश्यकता होगी।

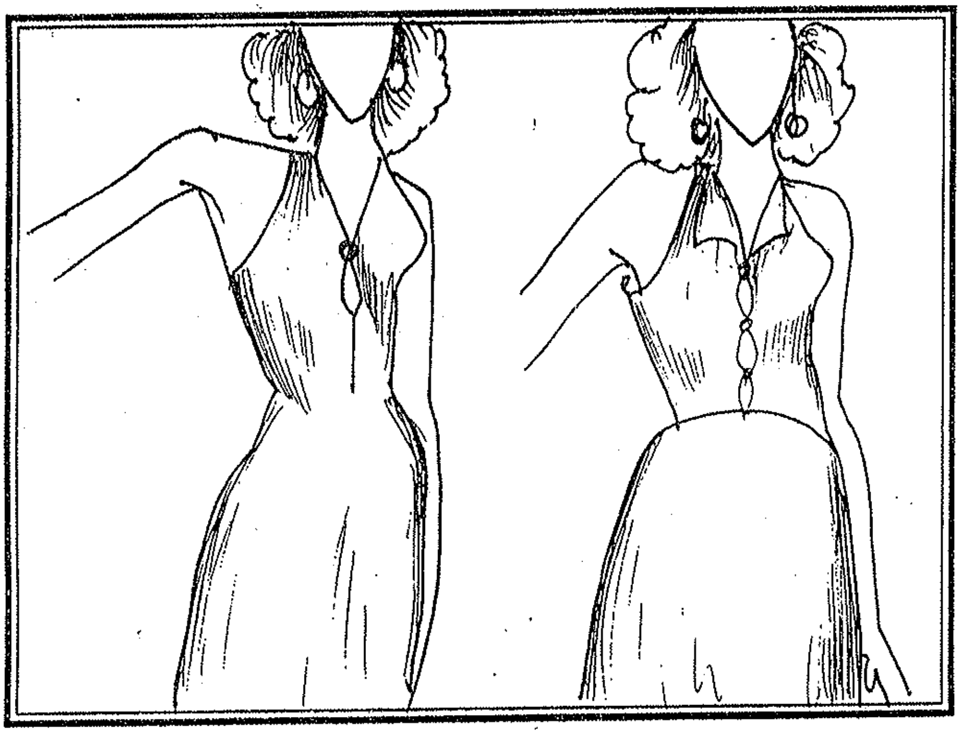

७— बटन व बटन होल बनाते समय, वस्त्र को सपाट रखना चाहिये।

८— सिलने के लिये पोलीस्टर धागों का प्रयोग करें।

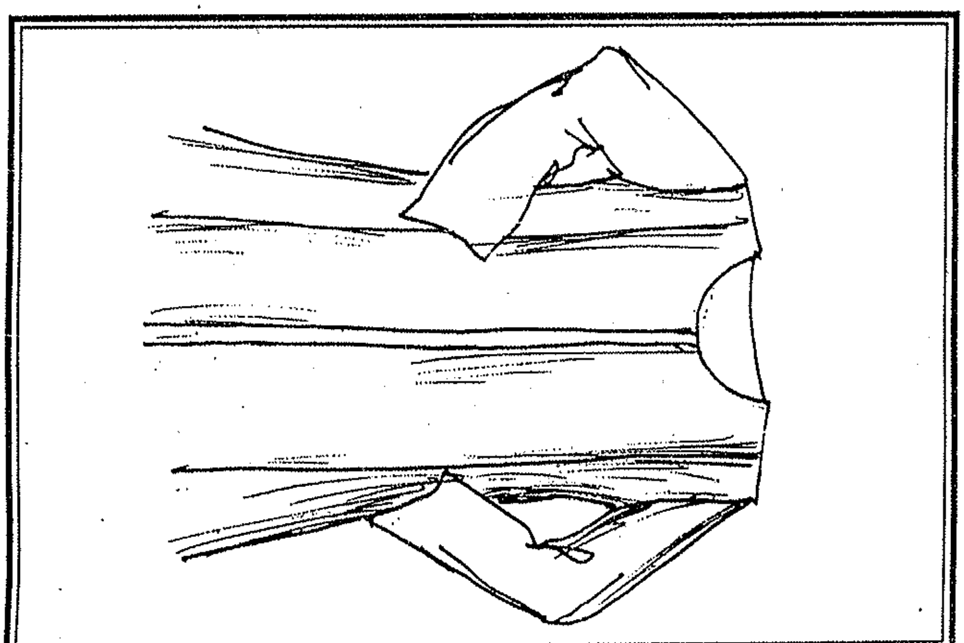

६— भारी कपड़ों के लिये कपड़े के दूसरी ओर छोटा बटन सिलने की आवश्यकता होगी।

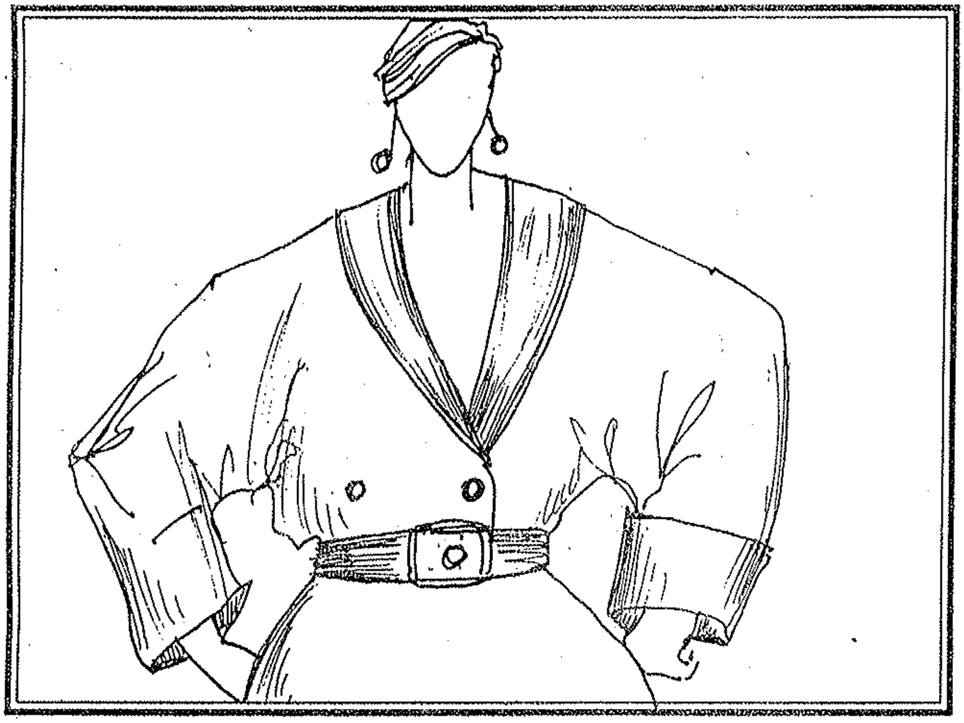

बटन को बनाई जानी वाली सामग्री के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है। बटन में हर प्रकार के हुक व आई भी शामिल होते हैं। बीड्स, वेल्क्रो टेप, इलास्टिक, जिप, कफलिंग, टिच बटन, डोरियाँ आदि। बटन कई प्रकार के होते हैं— इन्हें वस्त्र के प्रकार, प्रयुक्त कपड़े, पहनने वाले, टेस्टेनिंग के प्रकार आदि के अनुसार चुना जाता है।

ट्रिमिंग व एजिंग्स- लेसेसः- लेस पोशाक पर सज्जा के लिये प्रयोग किया जाने वाले ट्रिमिंग व एजिंग्स में से एक हैं।

पहनावे के अधिक से अधिक शोभामय बनाने के निरन्तर प्रयासों ने सबसे बढ़िया व मूल्यवान ड्रिपिंग को जन्म दिया जिसे लेस कहते हैं। ये पहले कदम फारोस की भूमि पर उठाये गये थे जो रंगीन धागों को सजे फ्लेस कॉटन कपड़े का प्रयोग करते थे और इनमें ज्यामितीय डिजाइन बनाते थे।

प्राचीन यूनानी व रोमन लोग अपने टोगा को रंगों या सोने से अलंकृत करते थे। पहने हुए या धागे निकले हुए वस्त्रों में धागे ऐंठ कर एक साथ सिल दिये जाते थे। लेस बुने हुए कपड़ों के फ्रिंज किनारी की सज्जा में प्रयुक्त, ऐंठनें की तकनीकों से ली गई है। लेस को कॉंत भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है बार्डर या किनारा। लेस बनाने

वाले इटालियन लोग, सुई की सहायता से एक धागे वाली तकनीक का प्रयोग करते थे, जबकि रोमन लोग लकड़ी के शटल या बॉबिन पर लिपटे धागों का प्रयोग करते थे। यह बॉबिन लेस थी और इसे शुरू में पिनवर्क कहते थे।

सोलहवीं शताब्दी की दुल्हनें अपनी पोशाकों में बहुत भारी लेस का प्रयोग करती थीं। अधिक जटिल डिजाइनों का विकास हुआ और लेस एक जटिल कला बन गया।

प्रारम्भिक फ्रांसीसी लेसो को पेसमेन्ट्स भी कहा जाता था, नाम का अर्थ अलंकारी ओपेन वर्क से था जो फ्लैक्स, कॉटन, सोने या चॉंदी के धागों और कभी–२ मोहेर या अलोए के रेशों से हाथ से ऐंठ या प्लेट या लूप कर किया जाता था।

१– सूई के साथ, जब कार्य को विशिष्ट रूप से निडिल प्वाइंट लेस कहा जाता है।

२– बॉबिन, तकिये, कुशन या पिन के साथ, ज़ब कार्य को पिलो लेस कहा जाता है; और

३– भाप चालित मशीन द्वारा जब निडिल प्वाइंट और पिलो लेसेज की नकल बनाई जाती है। लेस बनाने का अर्थ अलंकरण व कपड़े का साथ–२ निर्माण है।

कई प्रकार की लेस होती हैं जैसे बॉबिन लेस, निडिल लेस, ब्रेड लेस, टेप लेस, नोटिंग, कढ़ाईदार लेस इत्यादि। लेसेज को सामग्री अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे– सूती, जूट लेस, नायलॉन लेस इत्यादि।

लेस कई विविध चौड़ाइयों व रंगों में उपलब्ध हैं। आजकल बाजारों में भारी कढ़ाईदार कटवर्क व बीड और सितारों वाली लेस की भरमार है।

लेसेज को या तो कपड़े पर सिला जा सकता है, अथवा कपड़े के किनारे पर लगाया जा सकता है, जैसे डिजाइन की आवश्यकता हो। नवीनतम तकनीक विकास ने पिचकने वाली लेस भी ला दी है जिनके उल्टी ओर गोंद लगा होता है, जिन्हें इस्तिरी करके कपड़े पर चिपकाया जा सकता है।

लेस व रिबन, ट्रिमिंग व एजिंग्स के रूचिकर माध्यम हैं जो पोशाक का सौन्दर्य सरलता से बढ़ा देते हैं।

अभ्यास-

१— बाजार का सर्वेक्षण करें तथा निम्नलिखित फास्टनर्स के सैम्पल एकत्र करें। साथ ही आवश्यक जानकारी भी हासिल करें।

शर्ट बटन — मूल्य —प्रति दर्जन

स्वेटर बटन — मूल्य —प्रति दर्जन

पैन्ट बटन — मूल्य —प्रति दर्जन

हुक और आई — मूल्य —प्रति दर्जन

टिच बटन — मूल्य —प्रति दर्जन

वेल्क्रो   मूल्य –प्रति दर्जन

इलास्टिक   मूल्य –प्रति दर्जन

धातु की जिप   मूल्य –प्रति दर्जन

नायलॉन की जिप   मूल्य –प्रति दर्जन

स्नेप बटन   मूल्य –प्रति दर्जन

कफ लिंक   मूल्य –प्रति दर्जन

कुर्ता बटन — मूल्य –प्रति दर्जन

सेफ्टी पिन — मूल्य –प्रति दर्जन

बकल — मूल्य –प्रति दर्जन

जूते के फीते — मूल्य –प्रति दर्जन

लकड़ी के बटन — मूल्य –प्रति दर्जन

फैन्सी बटन — मूल्य –प्रति दर्जन

चमड़े के बटन | | मूल्य –प्रति दर्जन

टाई पिन | | मूल्य –प्रति दर्जन

लूप व कॉर्ड | | मूल्य –प्रति दर्जन

ब्रोच | | मूल्य –प्रति दर्जन

२– बाजार का सर्वेक्षण करें और निम्नलिखित ट्रिमिंग्स के सैम्पल एकत्र करें। आवश्यक जानकारी विस्तार से दें।

सूती लेस | | मूल्य –प्रति मीटर

ब्रेड — मूल्य–प्रति मीटर

नायलॉन लेस — मूल्य –प्रति मीटर

हकोबा लेस — मूल्य–प्रति मीटर

जूट लेस — मूल्य–प्रति मीटर

पिन लेस — मूल्य–प्रति मीटर

मैक्रमे — मूल्य–प्रति मीटर

जिग जैग लेस — मूल्य–प्रति मीटर

गोटा — मूल्य–प्रति मीटर

किरन — मूल्य–प्रति मीटर

सैटिन रिबन — मूल्य–प्रति मीटर

नायलान रिबन — मूल्य–प्रति मीटर

प्रिंटिड रिबन — मूल्य–प्रति मीटर

टैटिंग लेस मूल्य—प्रति मीटर

क्रोशेय लेस मूल्य—प्रति मीटर

४.४ सारांशः-

बटनों को सिव थ्रू बटन्स, शैन्क बटन्स, ट्विन्स बटन, प्रेस बटन, कन्सील्ड इन्वर्स बटन, कवर्ड बटन, और चाइनीज बाल बटन, में वर्गीकृत किया जा सकता है।

बटन होल्स बनाते समय, व्यक्ति को बटन का नाप ध्यान में रखना चाहिये, लगाने से पहले देखना चाहिए कि वह कैसा लगेगा। बटन को स्ट्रेस बिन्दुओं पर लगाना चाहिए। बटनों के मध्य के अन्तर को जॉचना चाहिए। यदि वस्त्र लम्बा या छोटा किया जा रहा है तो बटनों को भी बदलना पड़ेगा। गैप्स ओपेन होने वाले वस्त्र को बन्द करने के लिए पर्स बटन की आवश्यकता होगी। बटन तथा बटन होल्स बनाते समय, कपड़े को सीधा फैलाना चाहिए। पोलीस्टर धागों का प्रयोग करें। भारी कपड़ों के लिये कपड़े के दूसरी ओर छोटा बटन सिलने की आवश्यकता होती है।

बटन को उस सामग्री के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है, जिससे वह बने हैं।

लेसेज, वस्त्रों में सज्जा के लिये प्रयुक्त ट्रिमिंग व एजिंग का भाग है।

लेसेज को सूई से बनाया जाता है, जिसे विशिष्ट रूप से निडिल प्वाइंट लेस कहा जाता है, बॉबिन पिन तथा तकिये या कुशन से बनाया जाता है। जिसे पेलो लेस कहा जाता है, और भाप चालित मशीन से पिलो और निडिल प्वाइंट लेसेज की नकल उत्पन्न की जाती है।

कई प्रकार की लेस होती है जैसे-- बॉबिन लेस, नीडल लेस, ब्रेड लेस, टेप लेस, नेटिंग, कढ़ाईदार लेस, इत्यादि। लेस व रिबन रूचिकर ट्रिमिंग व एजिंग्स हैं जो सरलता से वस्त्रों का सौन्दर्य बढ़ा देते हैं।

४.५ स्वार्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न--१ फास्टेनर्स क्या होते हैं?

प्रश्न--२ ट्रिमिंग्स क्या होते हैं?

प्रश्न--३ बटन को कैसे सिला जाना चाहिये?

प्रश्न--४ बटन को आप कैसे वर्गीकृत कर सकते हैं?

प्रश्न--५ लेसेज को आप किस तरह वर्गीकृत कर सकते हैं?

४.६ स्वाध्ययन हेतु

१-- इन्साइक्लोपीडिया आफ फैशन डिटेल, द्वारा पैट्रिक जॉन आयरलैण्ड, प्रकाशक बी०टी० बैटस्फोर्ड लि० लन्दन।

NOTES

DFD/[redacted] - 03

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

फैशन डिजाइनिंग

डिजाइन आइडिया-१

ब्लाक

६

वस्त्र डिजाइन के तत्व

यूनिट-५

कॉलर, नेकलाइन व जेबों के प्रकार

यूनिट-६

कफ, बो व योक के प्रकार

यूनिट-७

आस्तीन, प्लीट्स व ड्रॉ-स्ट्रिंग के प्रकार

यूनिट-८

स्कर्ट व शियरिंग के प्रकार

ब्लाक-२

विषय परिचय

वस्त्र डिजाइन के तत्वः-

वस्त्र के विभिन्न भाग जैसे कॉलर, गला, जेब, कफ, बो, योक, आस्तीन, प्लीट, ड्रा–स्ट्रिंग, शियरिंग इत्यादि ही उसके विभिन्न तत्व होते हैं। यह खण्ड आपको इन सभी तत्वों से दृश्यगत परिचय कराता है जिससे आप इनका प्रयोग डिजाइनिंग में कर सकें।

यूनिट-५

गले व जेबों के प्रकारः-

यह यूनिट आपको विभिन्न प्रकार के कॉलर, गले और जेबों से परिचित कराता है जिनका प्रयोग वस्त्रों में किया जा सकता है।

यूनिट-६

कफ, बो व योक के प्रकारः-

यह यूनिट आपको विभिन्न प्रकार के कफ, बो, व योक से परिचित कराता है जिनका प्रयोग वस्त्र में किया जा सकता है।

यूनिट-७

आस्तीन, प्लीट्स व ड्रा-स्ट्रिंग के प्रकारः-

यह यूनिट आपको विभिन्न प्रकार की आस्तीन, प्लीट, ड्रा–स्ट्रिंग से परिचित कराता है जिसका प्रयोग वस्त्रों में किया जा सकता है।

यूनिट–८

स्कर्ट व शियरिंग के प्रकारः-

यह यूनिट आपको विभिन्न प्रकार की स्कर्ट व शियरिंग से परिचित कराता है जिनका प्रयोग वस्त्रों में किया जा सकता है।

संरचना

५.१ यूनिट प्रस्तावना

५.२ उद्देश्य

५.३ कॉलर, गले व जेबों के प्रकार

५.४ सारॉश

५.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

५.६ स्वाध्ययन हेतु

५.१ यूनिट प्रस्तावना:- इस यूनिट का अध्ययन, विद्यार्थियों को प्रचलित कॉलर, नेक लाइन्स अर्थात गले व जेबों के सम्बन्ध में जानकारी देगा। इन पर आधारित करके वह अपने मौलिक डिजाइन बना पायेगें।

५.२ उद्देश्य:-

इस यूनिट का अध्ययन करने से वर्तमान में चल रहे डिजाइन के बारे में जानकारी मिलेगी। इन्ही डिजाइनों से प्रेरणा लेकर नई डिजाइन के लिए कल्पना का एक नया द्वार खुलेगा।

५.३ कॉलर, गले व जेबों के प्रकार:-

कॉलर, गला व जेब, किसी भी पोशाक के रूचिकर तत्व होते हैं। इनमें थोड़ा सा भी परिवर्तन, पूरी पोशाक के रूप को परिवर्तित कर सकता है। इस यूनिट द्वारा विभिन्न प्रकार के कॉलर, नेकलाइन व जेबों को पहचानने में आपकी सहायता करने का प्रयास किया गया है।

कॉलर को तीन प्रकार में बॉट सकते हैं-

फ्लैट कॉलर जिसमें पीटर पैन कॉलर जिसे सामान्य रूप से बेबी कॉलर कहते हैं और केप कॉलर अथवा बर्था शामिल हैं।

रोल आन कॉलर जिसमें हाई नेक्स और शॉल या गाउन कॉलर आते हैं तथा तीसरा है–

दि स्टैन्डिंग कॉलर जिसमें शर्ट कॉलर व चाइनीज बैण्ड शामिल हैं।

TYPES OF COLLARS

PETER PAN COLLAR OR BABY COLLAR

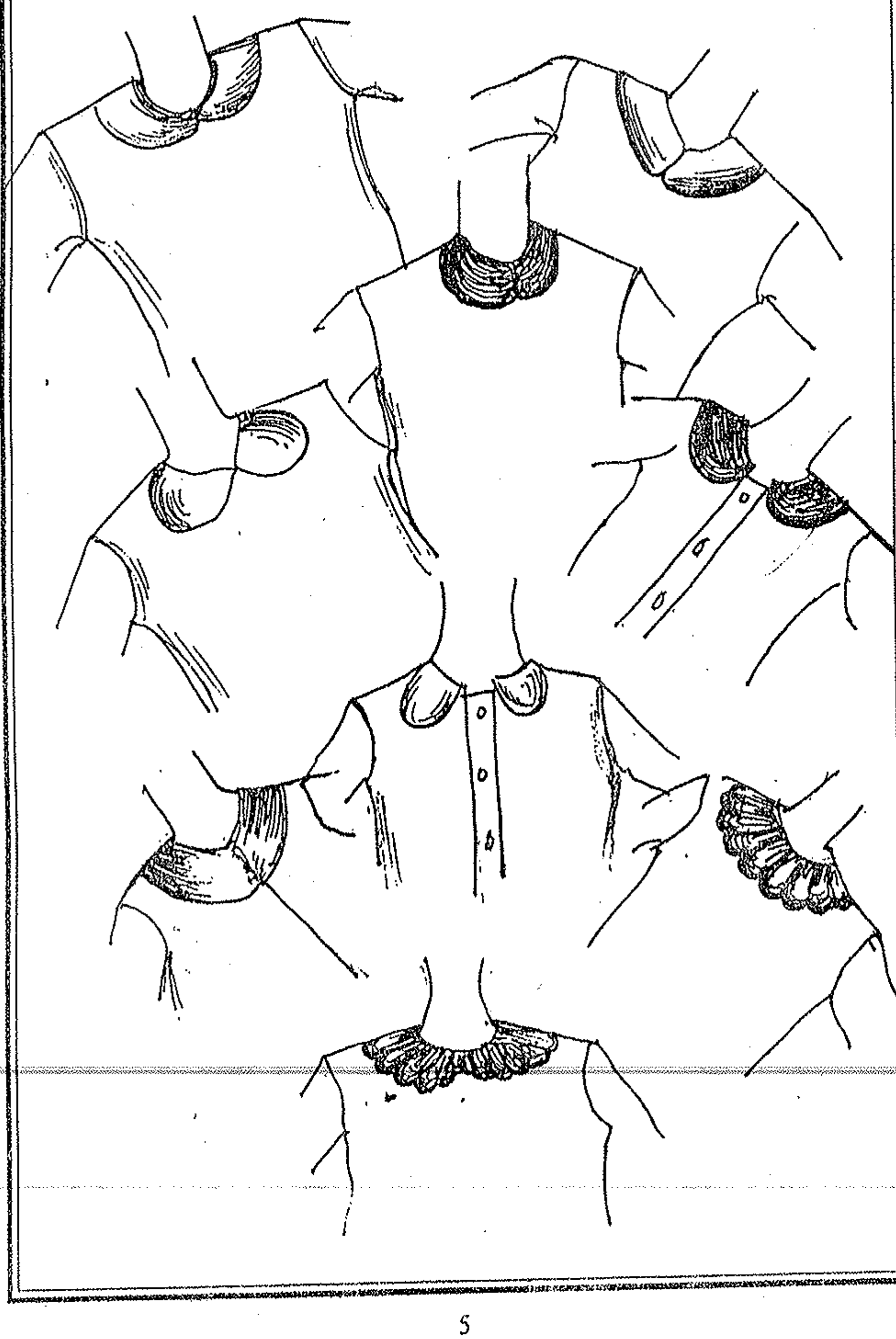

TYPES OF COLLARS

CAPE COLLAR OR BERTHA

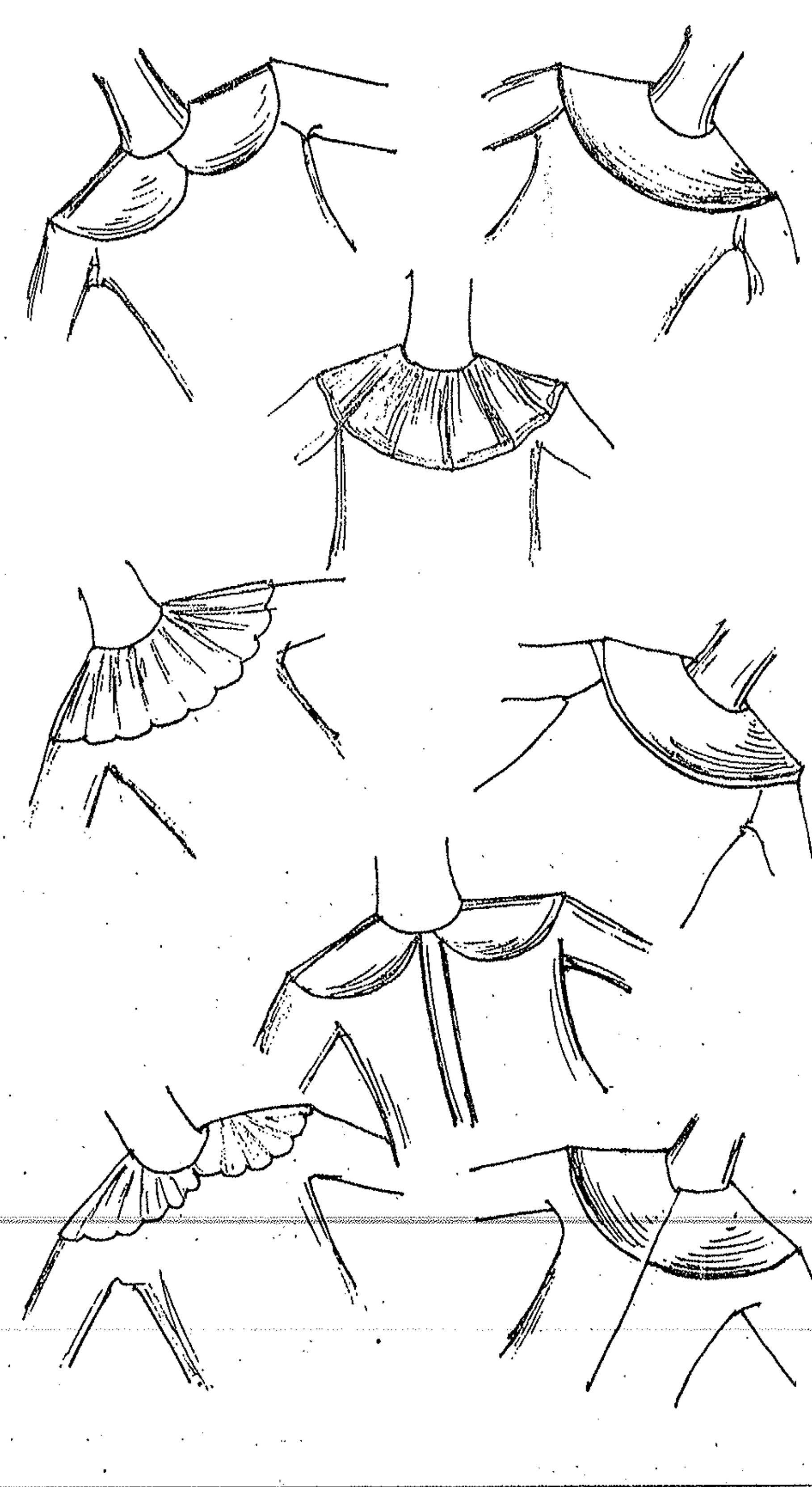

ROLL ON COLLARS

HIGH NECKS

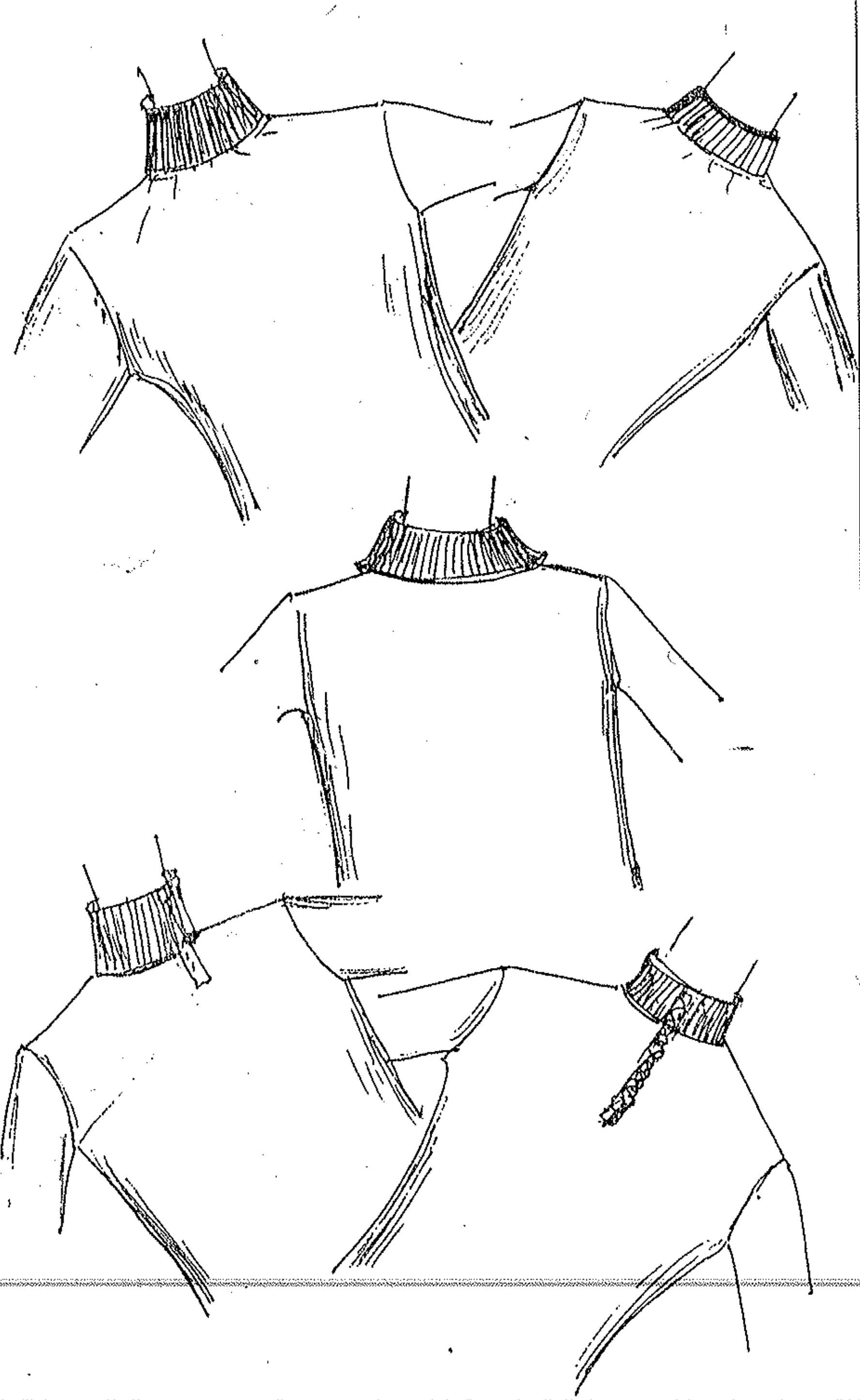

ROLL ON COLLARS

THE SHAWL COLLARS OR GOWN COLLARS

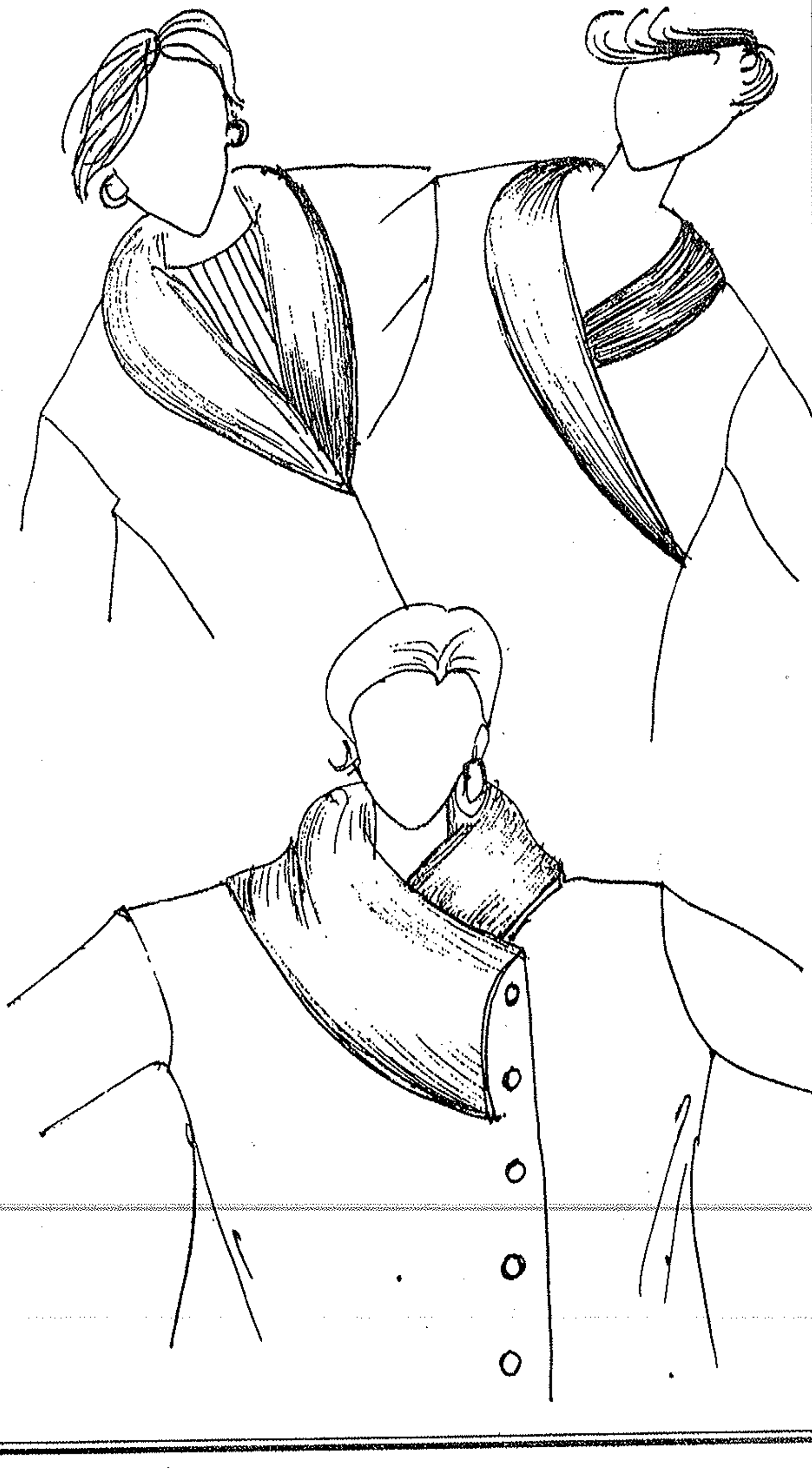

THE STANDING COLLARS

THE SHIRT COLLARS

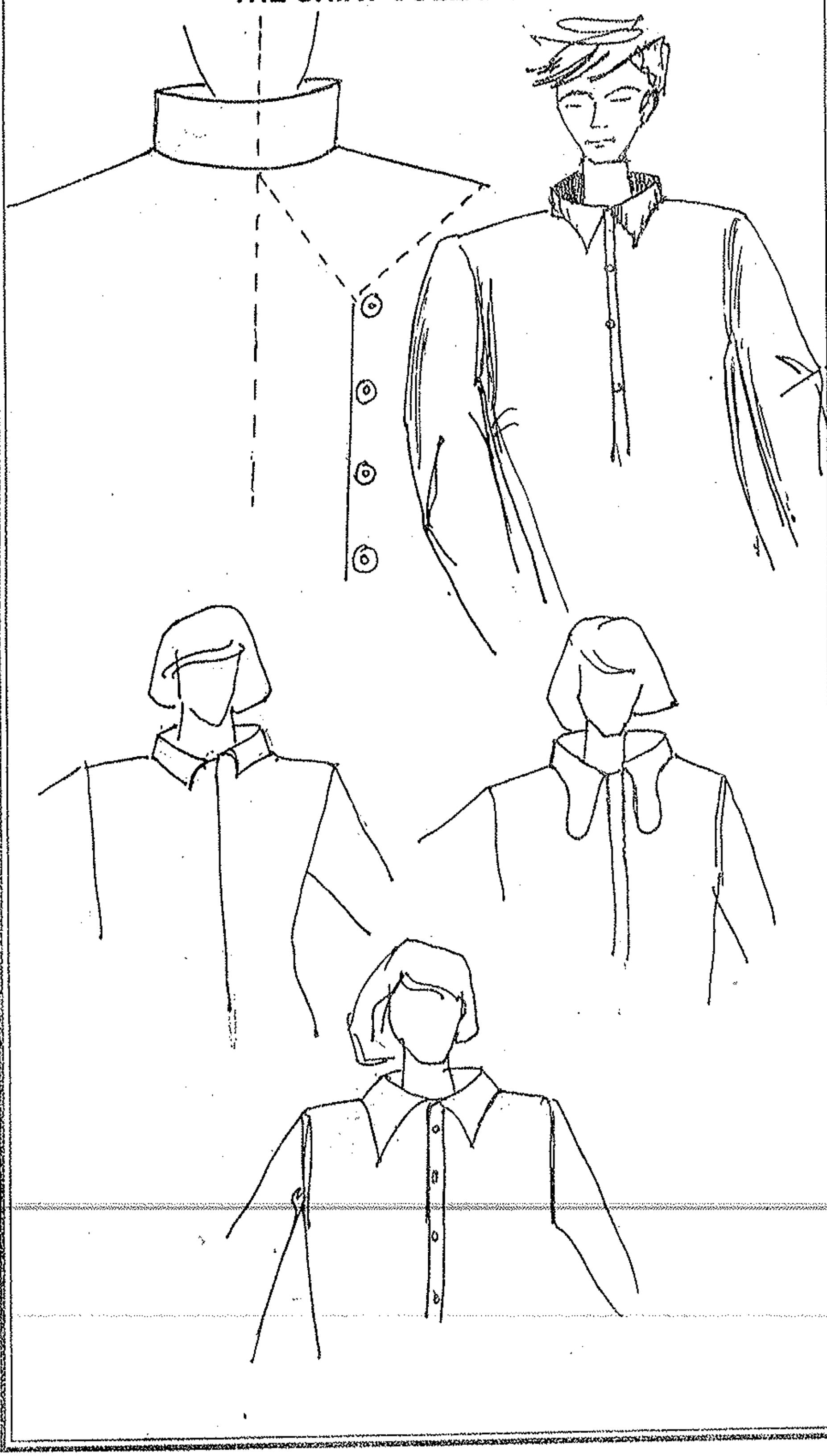

THE STANDING COLLARS

THE CHINESE BAND

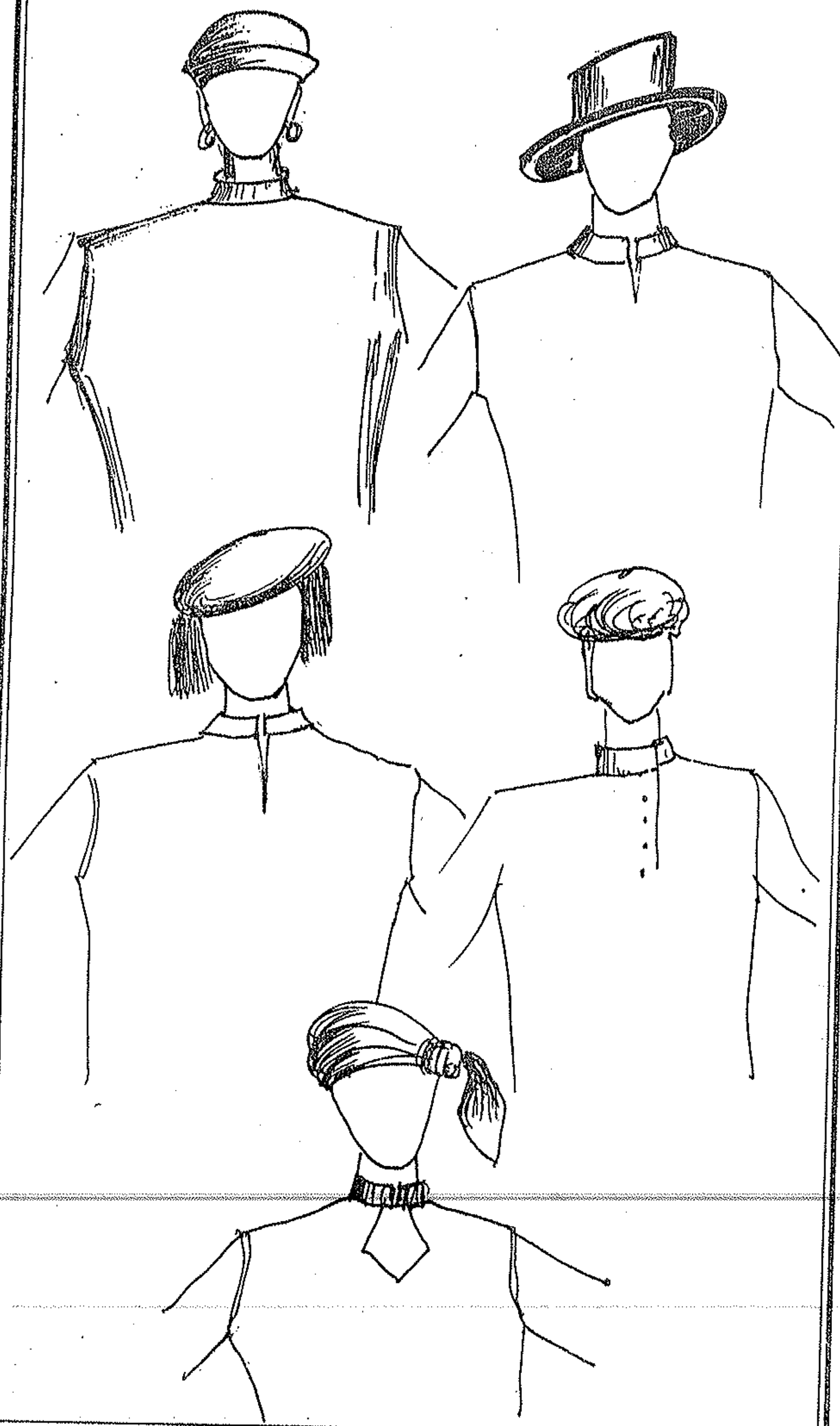

विभिन्न प्रकार की नेकलाइन्स या गले हैं-

राउन्ड या गोल गला, वी–गला, वर्गाकार गला, ग्लास गला, की–होल गला, मटका गला, स्वीटहार्ट गला, बोट गला और हॉल्टर गला।

TYPES OF NECKLINES

SWEETHEART NECKLINE

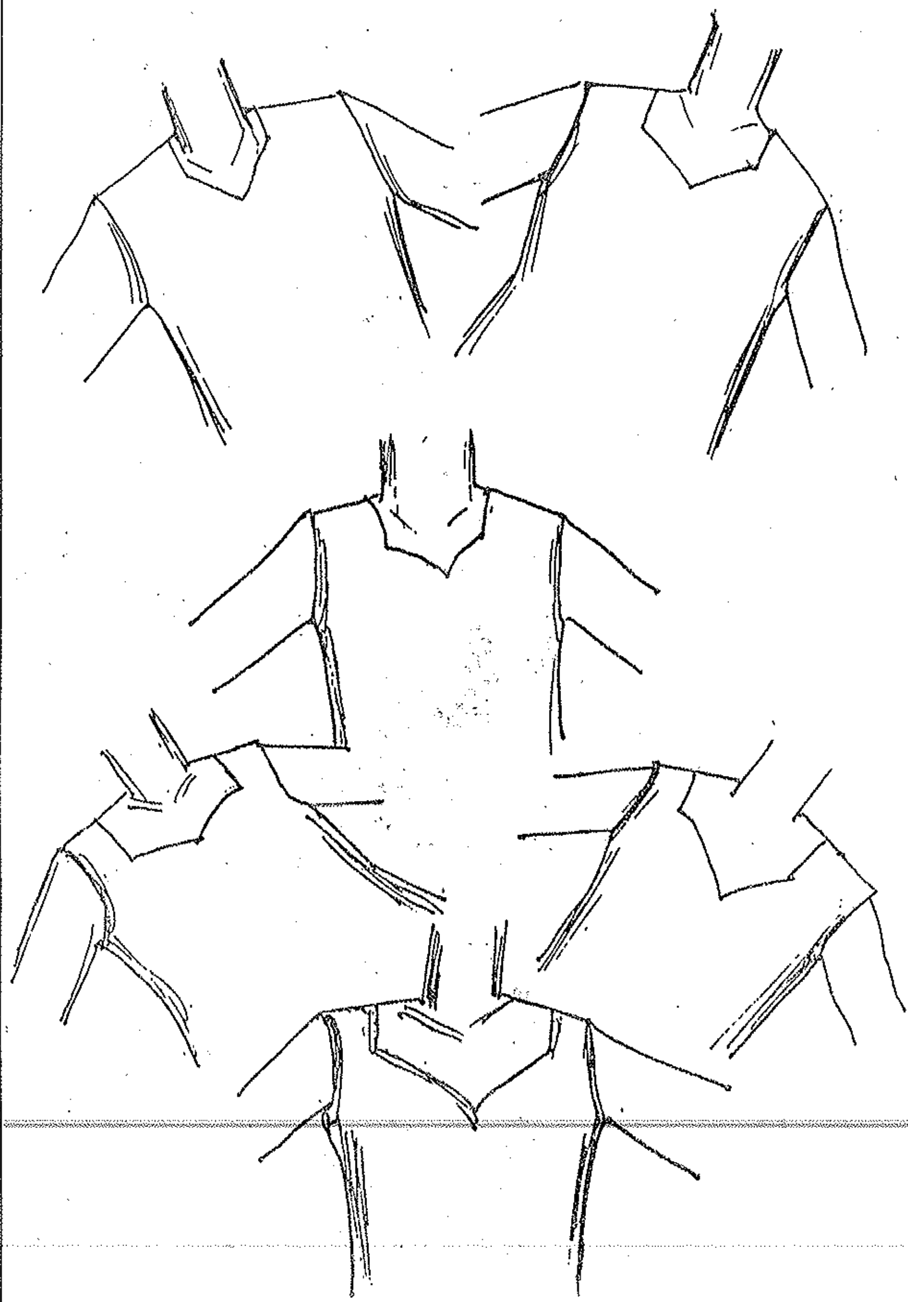

TYPES OF NECKLINES

SQUARE NECKLINE & GLASS NECKLINE

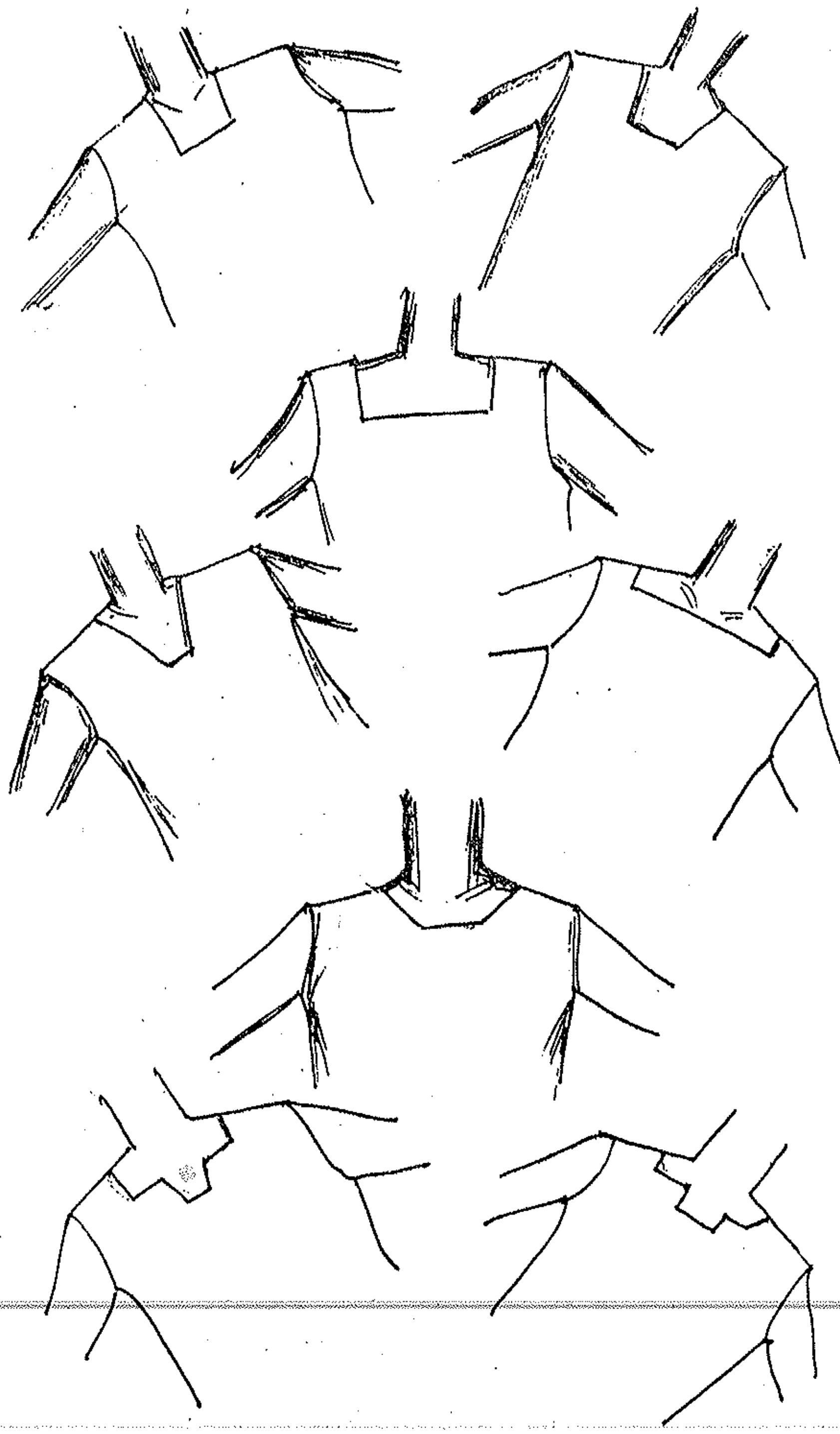

TYPES OF NECKLINES

MATKA NECKLINE

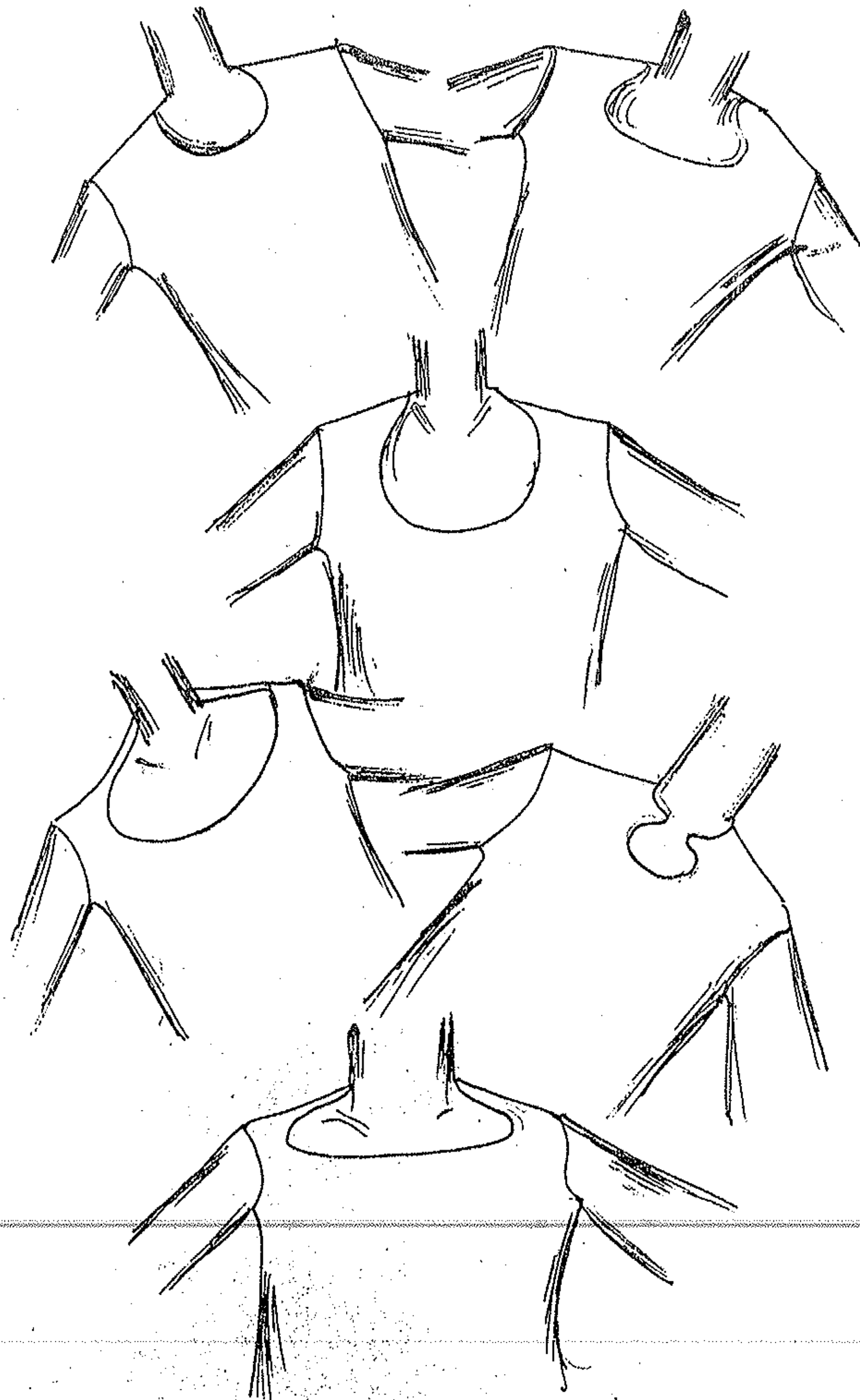

TYPES OF NECKLINES

KEYHOLE NECKLINE

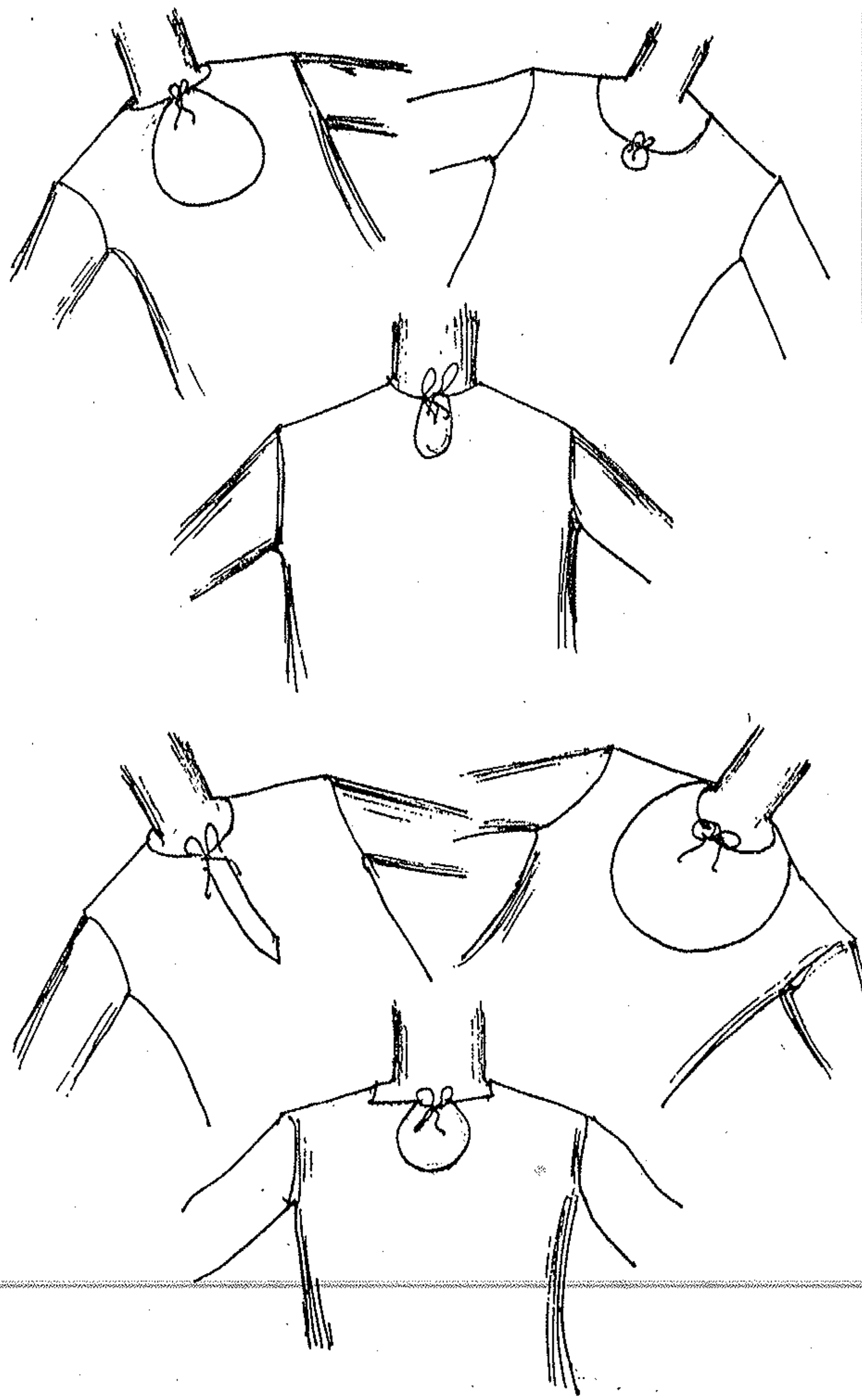

TYPES OF NECKLINES

BOAT NECKLINE & HALTER NECKLINE

TYPES OF NECKLINES

ROUND NECKLINE

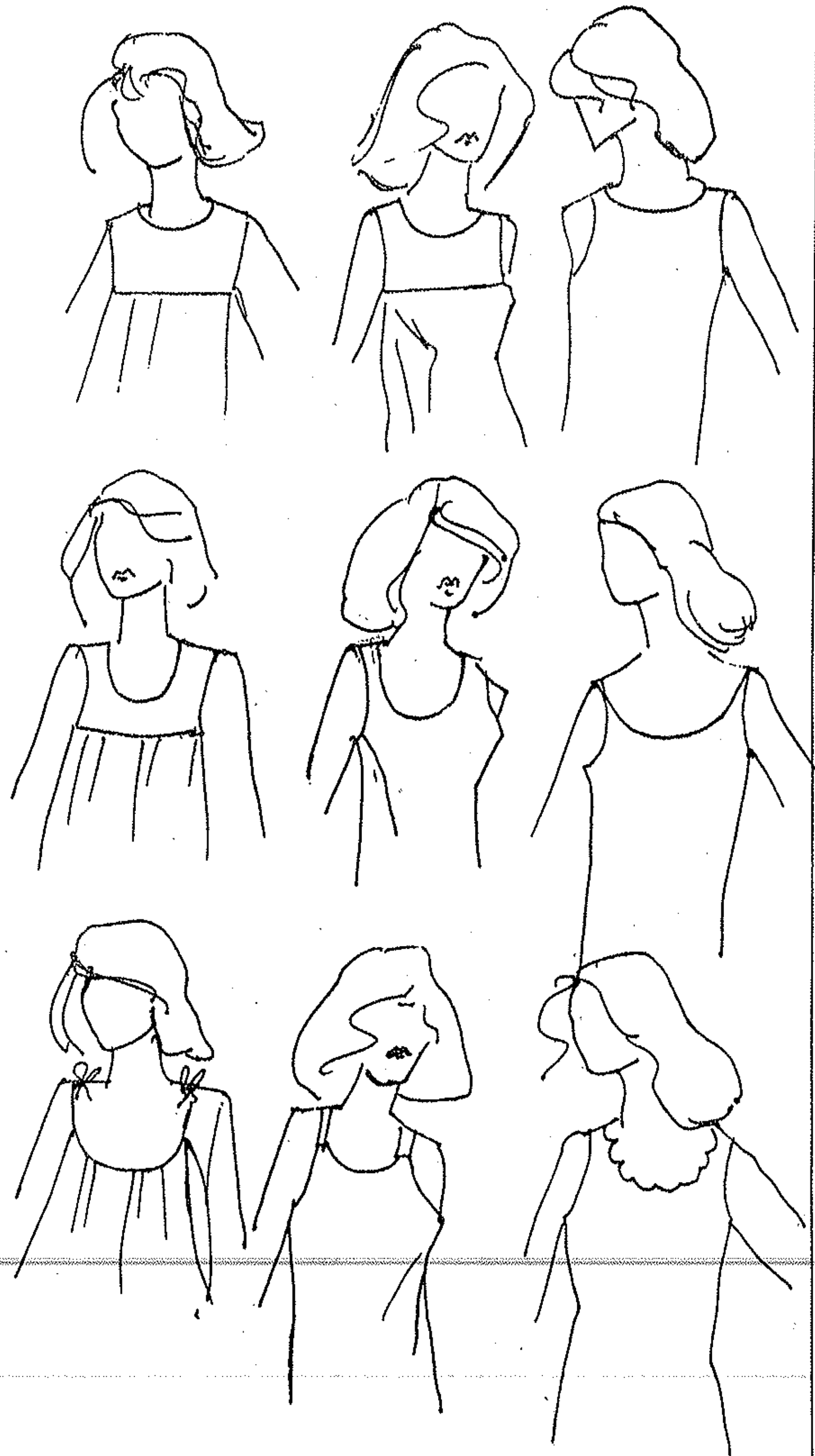

TYPES OF NECKLINES

V- NECKLINE

विभिन्न प्रकार की जेबें हैं-

पैच पॉकेट जिसे जेब के आकारानुसार विभिन्न नाम दिए जाते हैं, स्लिट पॉकेट्स और बाउन्डेड जेबें।

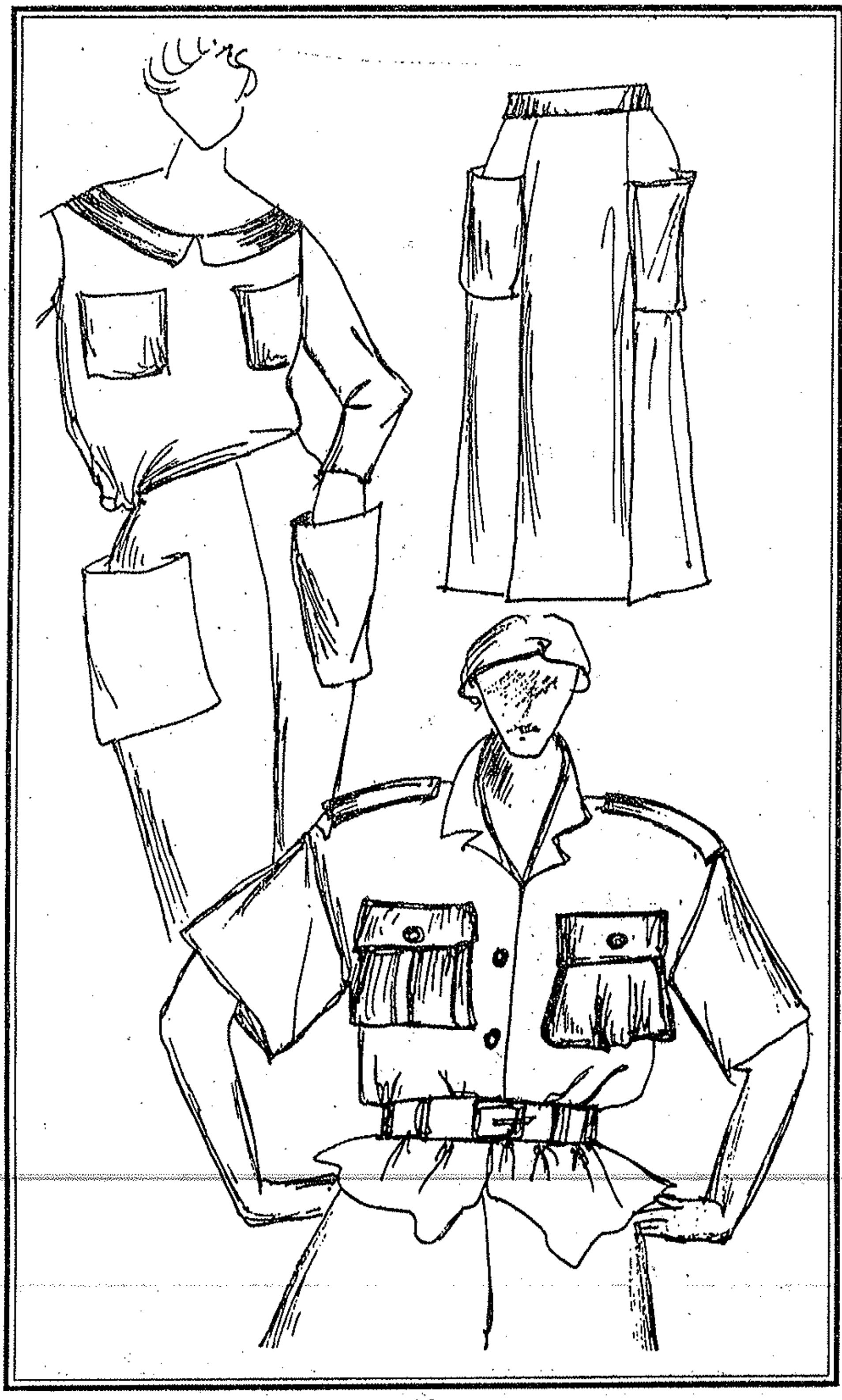

TYPES OF POCKETS

PATCH POCKETS

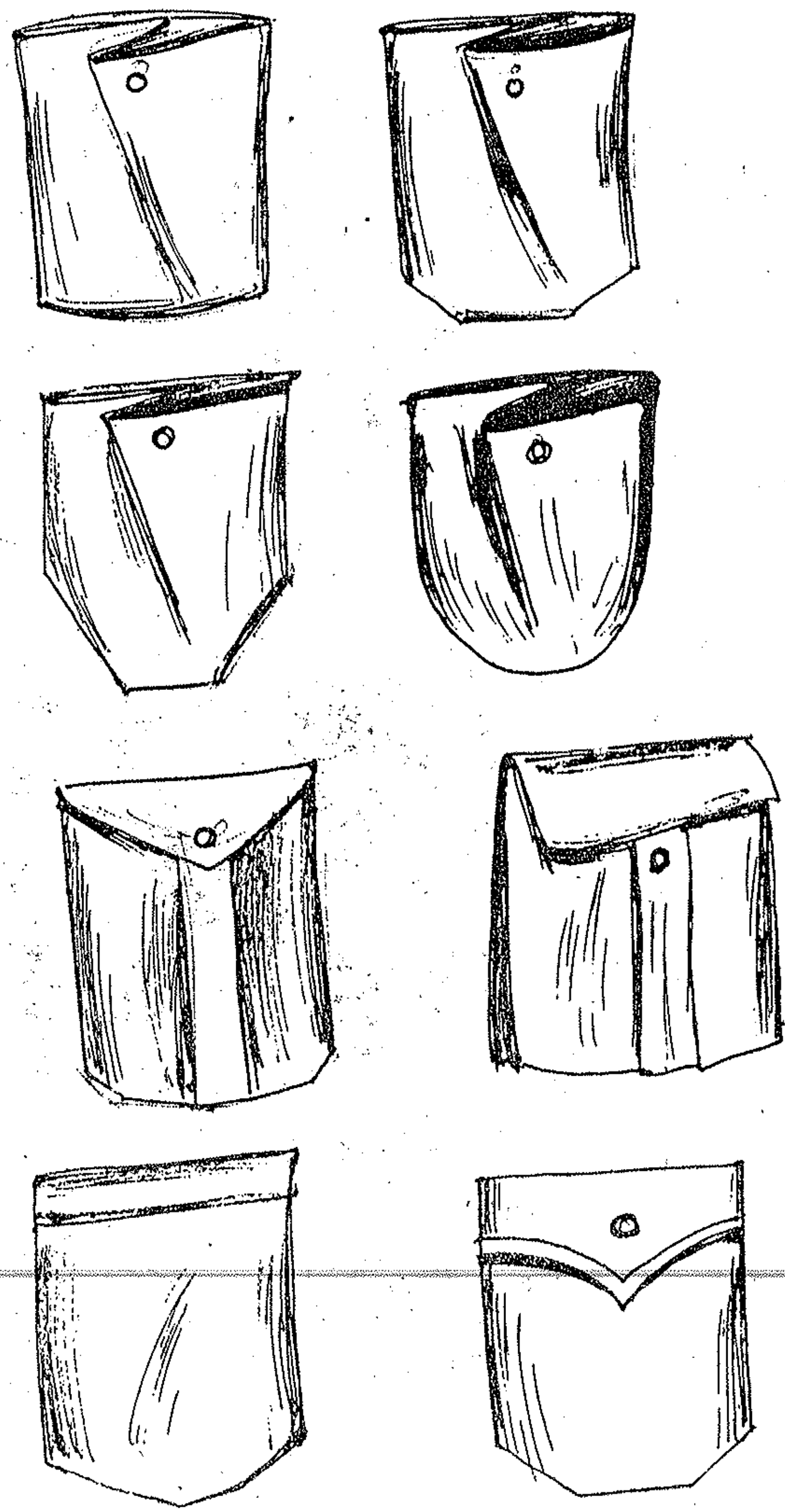

TYPES OF POCKETS

SLIT POCKETS & BOUNDED POCKETS

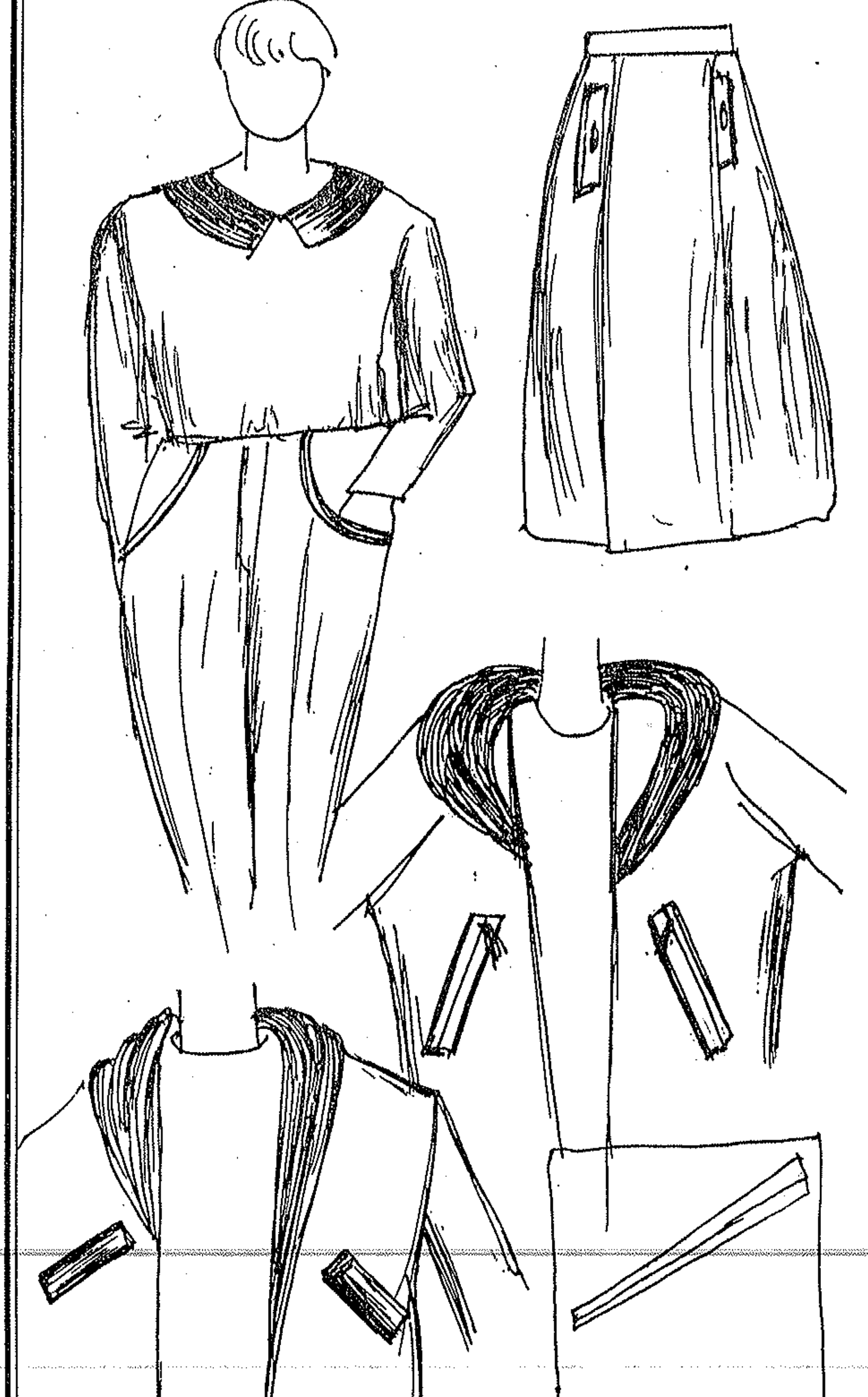

अभ्यास-

१— विभिन्न प्रकार की नेकलाइन अथवा गले का चित्र संग्रह तैयार करें।

२— विभिन्न प्रकार के कॉलर का चित्र संग्रह तैयार करें।

३— विभिन्न प्रकार की जेबों का चित्र संग्रह तैयार करें।

५.४ सारांश-

गले, कॉलर तथा पॉकेट, पोशाक का रूचिकर भाग होते हैं। कॉलर तीन प्रकारों में विभाजित किये जा सकते हैं— फ्लैट कॉलर जिसमें पीटरपैन कॉलर तथा केप कॉलर, आते हैं, रोल आन कालर जैसे हाई नेक तथा शॉल कॉलर और तीसरे स्टैन्डिंग कॉलर, जैसे शर्ट कॉलर, व चाइनीज बैण्ड कॉलर।

विभिन्न प्रकार की नेकलाइन्स हैं— गोल गला, वी—गला, वर्गाकार गला, ग्लास गला, की—होल गला, भटका गला, स्वीटहार्ट गला, बोट गला तथा हॉल्टर नेकलाइन।

विभिन्न प्रकार की जेबें हैं— पैच पॉकेट जिसे जेब के आकारानुसार विभिन्न नाम दिए जाते हैं, स्लिट पॉकेट्स और बाउन्डेड जेब।

५.५ स्वनिधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न—१ पॉच प्रकार के गोल गले रेखांकित करें।

प्रश्न—२ पॉच प्रकार के स्वीटहार्ट गले रेखांकित करें।

प्रश्न—३ पॉच प्रकार के गोल कॉलर रेखांकित करें।

प्रश्न—४ पॉच प्रकार के स्टैन्डिंग कॉलर रेखांकित करें।

प्रश्न—५ पॉच प्रकार के पैच पॉकेट रेखांकित करें।

५.६ स्वाध्ययन हेतु

१— इन्साइक्लोपीडिया आफ फैशन डिटेल्स, द्वारा पैट्रिक जॉन आयरलैण्ड प्रकाशक— बी०टी० बैट्सफोर्ड लि० लन्दन।

संरचना

६.१ यूनिट प्रस्तावना

६.२ उद्देश्य

६.३ बो, कफ तथा योक के प्रकार

६.४ सारॉश

६.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

६.६ स्वाध्ययन हेतु

६.१ यूनिट प्रस्तावनाः–

यह यूनिट आपको विभिन्न प्रकार के कफ, बो तथा योक से परिचित कराता है।

६.२ उद्देश्यः-

इस यूनिट का अध्ययन विद्यार्थियों को प्रचलित कफ, बो व योक के प्रकारों की जानकारी देगा। इस पर आधारित वे अपने मौलिक डिजाइन बनाने में सक्षम हो पायेगें।

६.३ कफ, बो व योक के प्रकारः-

बो पोशाक का एक सजावटी गुण है और इसका आकार, नाप, स्थिति इत्यादि विविध हो सकती है।

आस्तीनों को साधारण किनारी अथवा कफ द्वारा अन्तिम रूप दिया जा सकता है। ट्रिमिंग्स, प्लीटिंग्स, टक्स, गैदर्स और शियरिंग द्वारा डिजाइन में विविधता लाई जा सकती है।

योक पोशाक का सपाट क्षेत्र है। यह प्रायः विरोधाभासी कपड़े में होता है। इस पर कढाई प्लीट या टक्स इत्यादि दिये जा सकते हैं। योक दो प्रकार के होते हैं। पैच योक्स तथा सेट इन योक्स। यह पोशाक को फुलनेस देने में सहायक होते हैं।

TYPES OF NARROW CUFFS

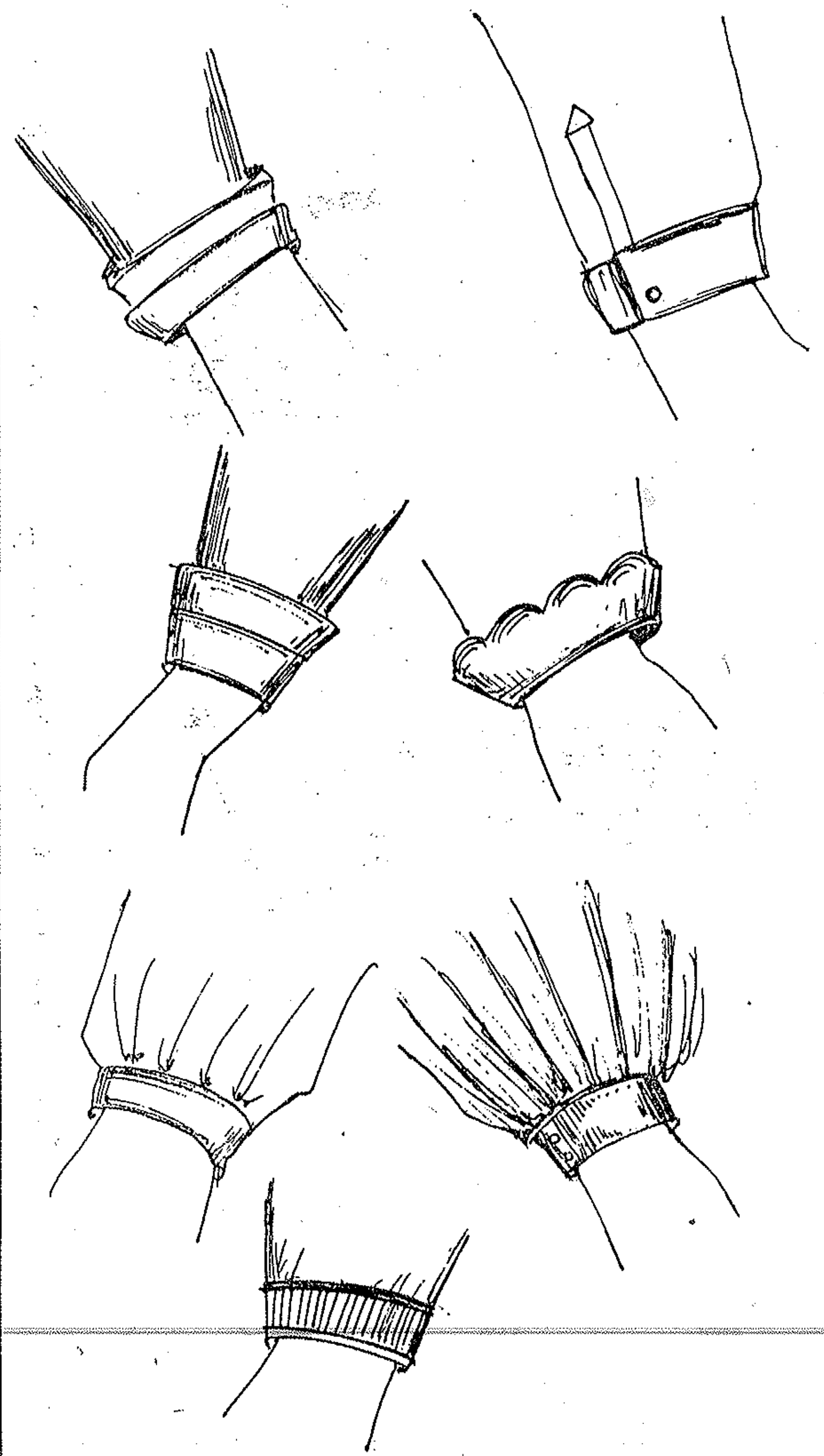

TYPES OF BROAD CUFFS

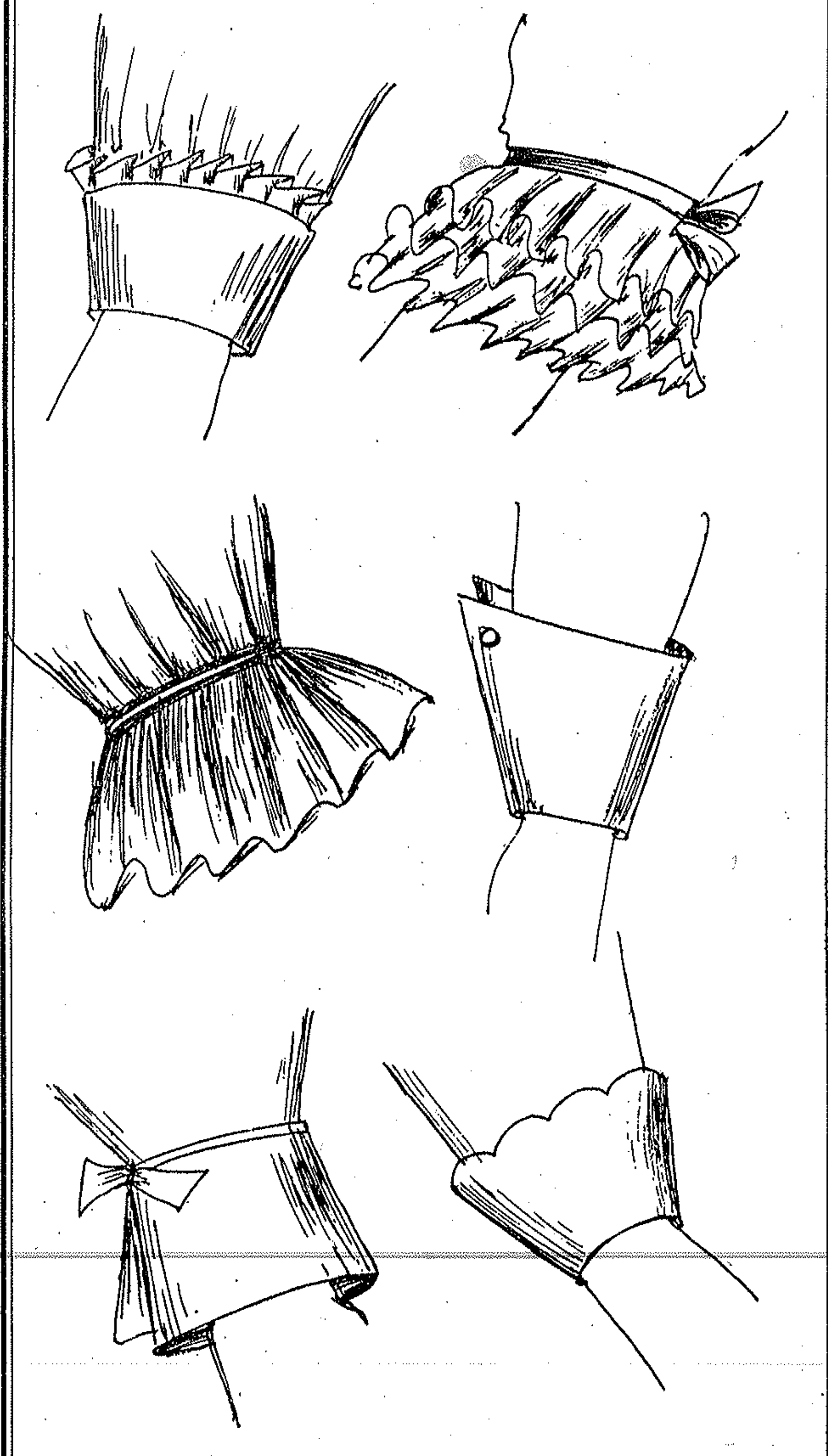

TYPES OF NECK BOWS

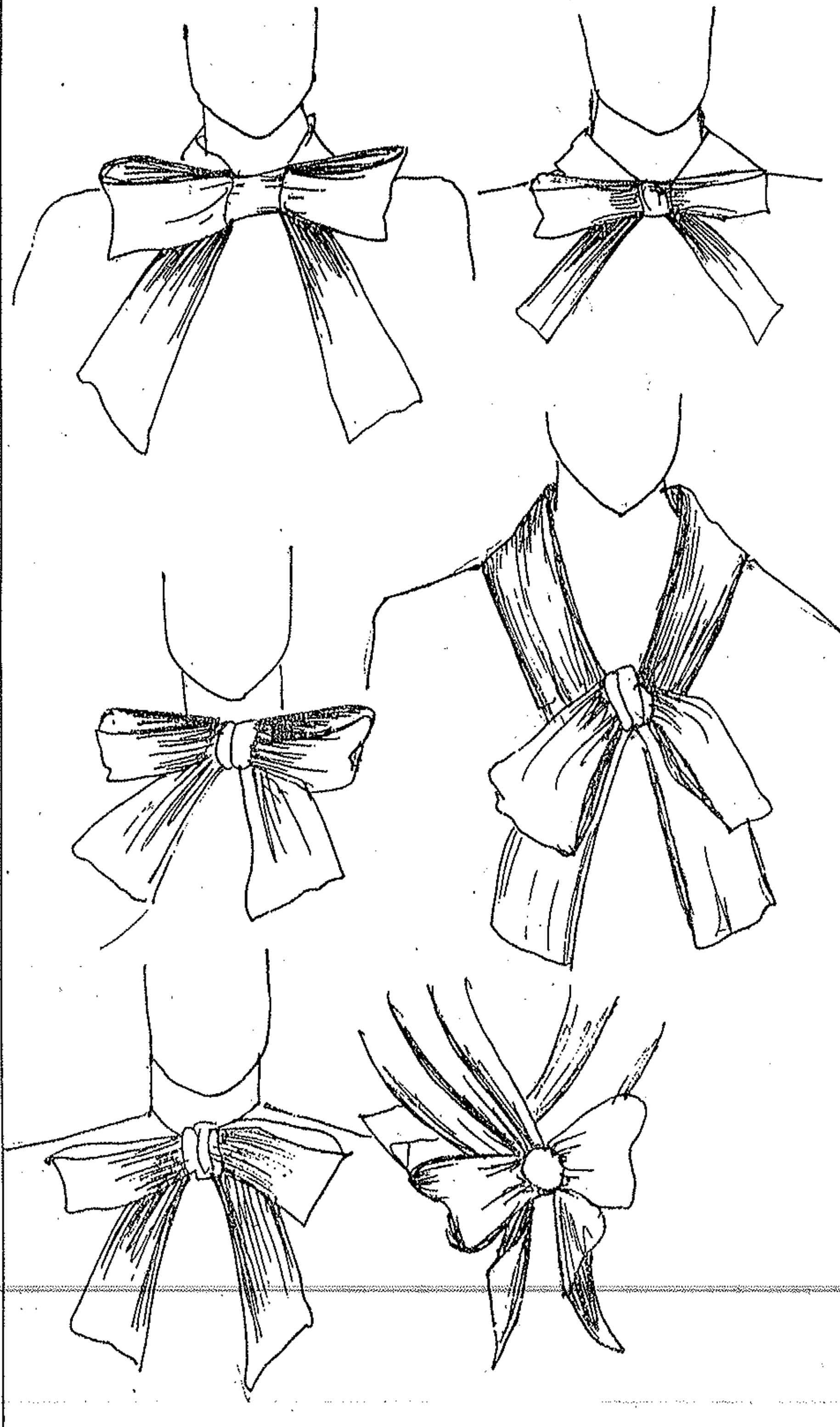

TYPES OF WAIST BOWS

TYPES OF BACK BOWS

TYPES OF SQUARE PATCH YOKES

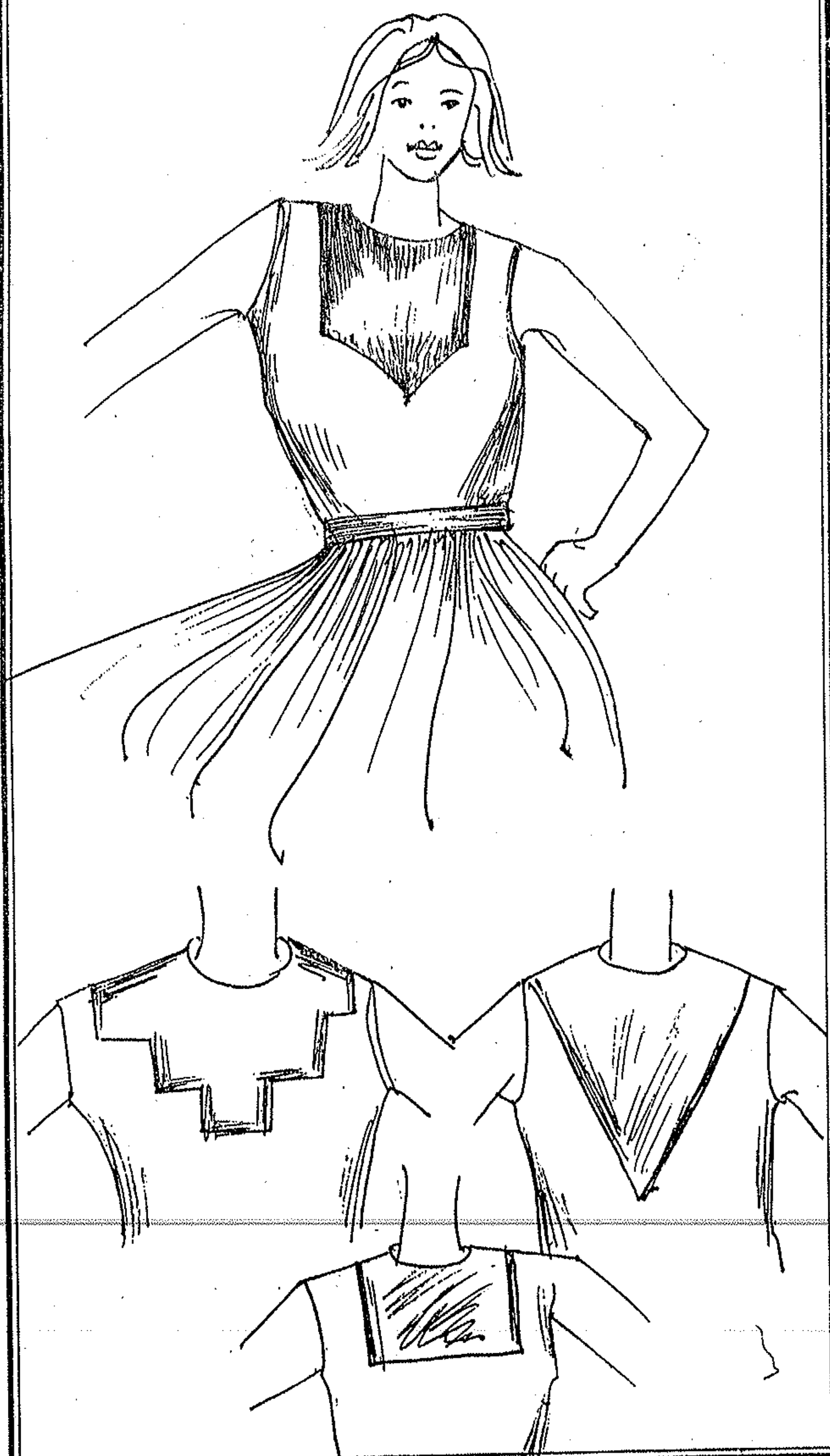

TYPES OF ROUND PATCH YOKES

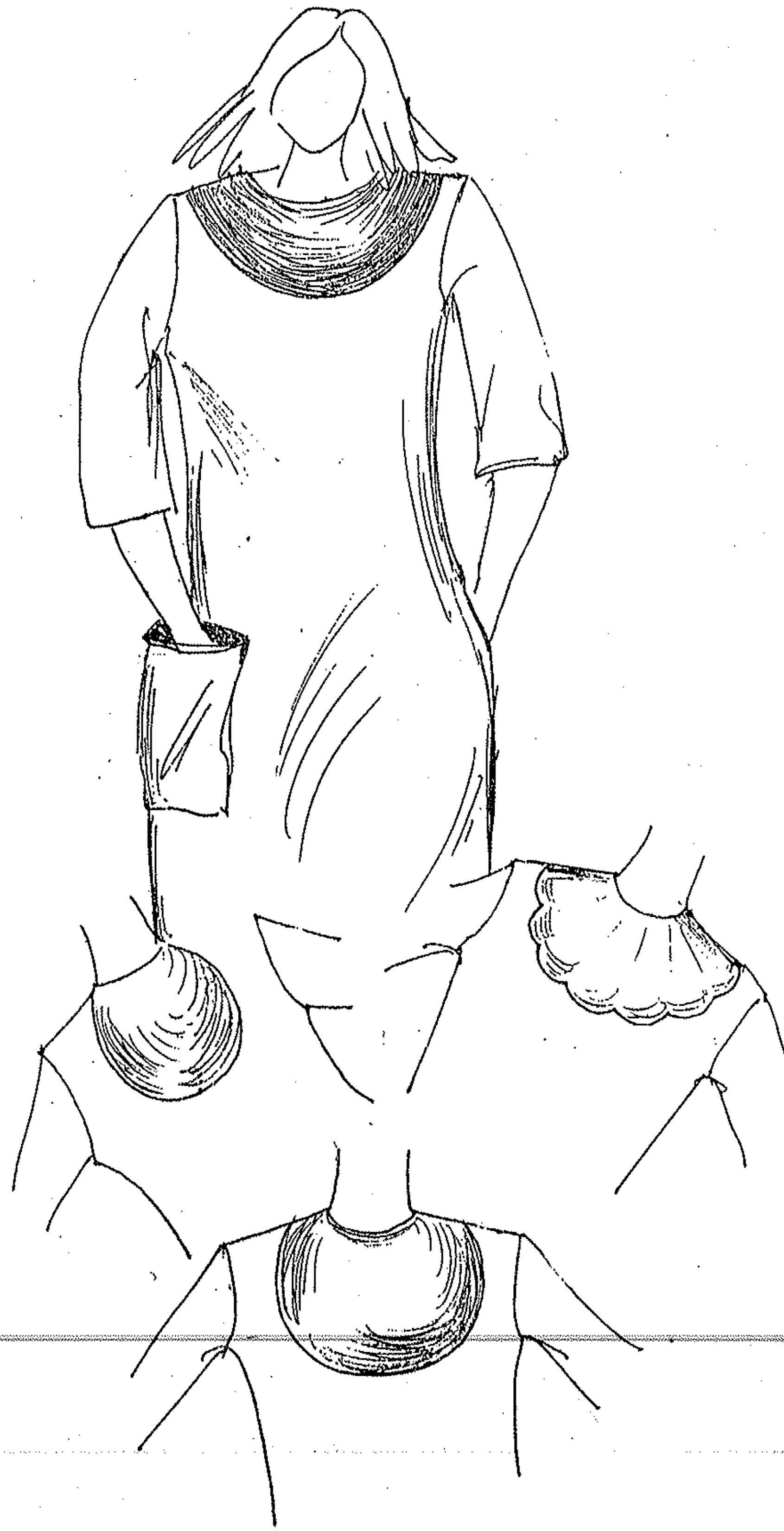

TYPES OF SET IN YOKES IN BABY FROCKS

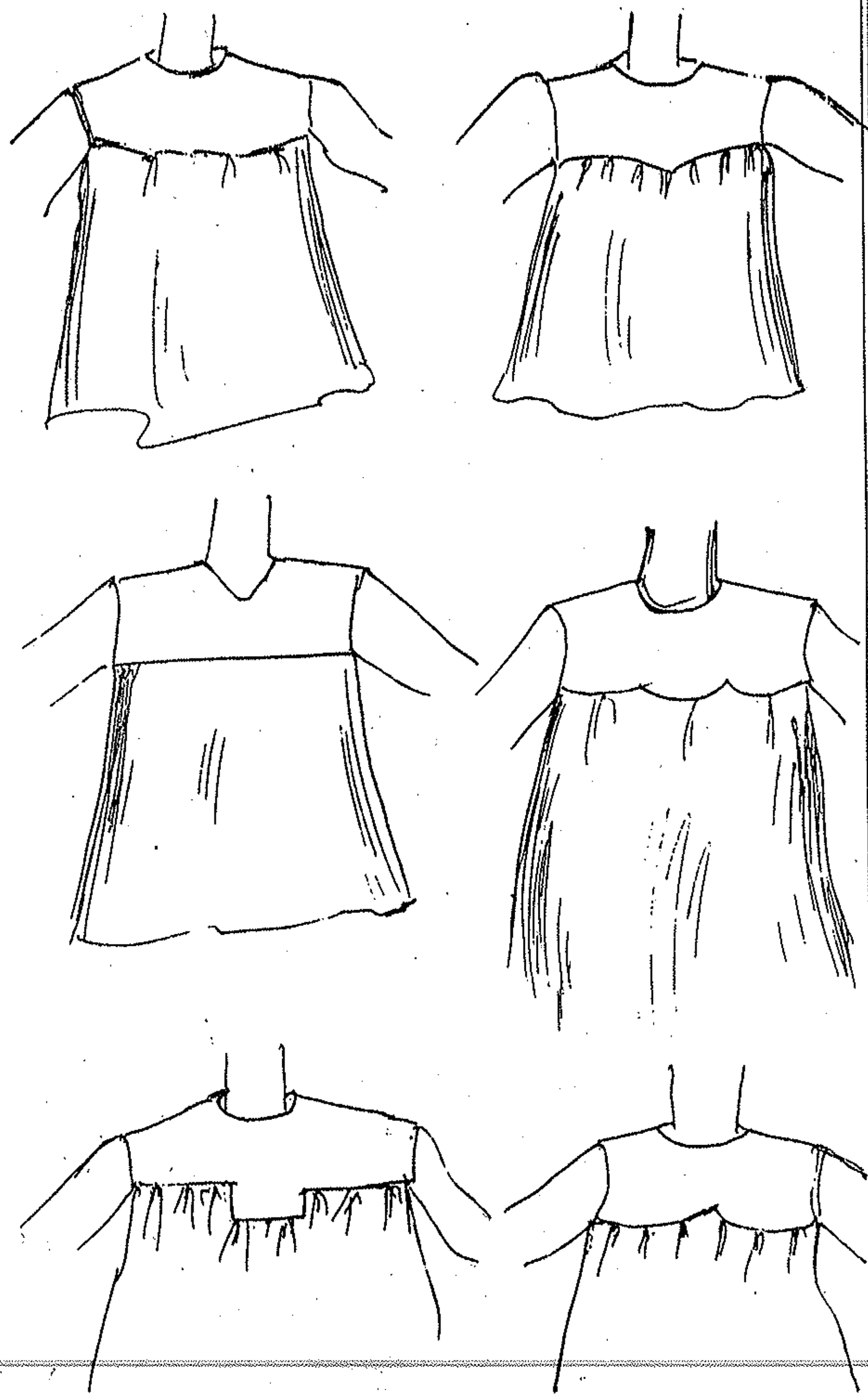

TYPES OF SET IN YOKES IN NIGHTIES

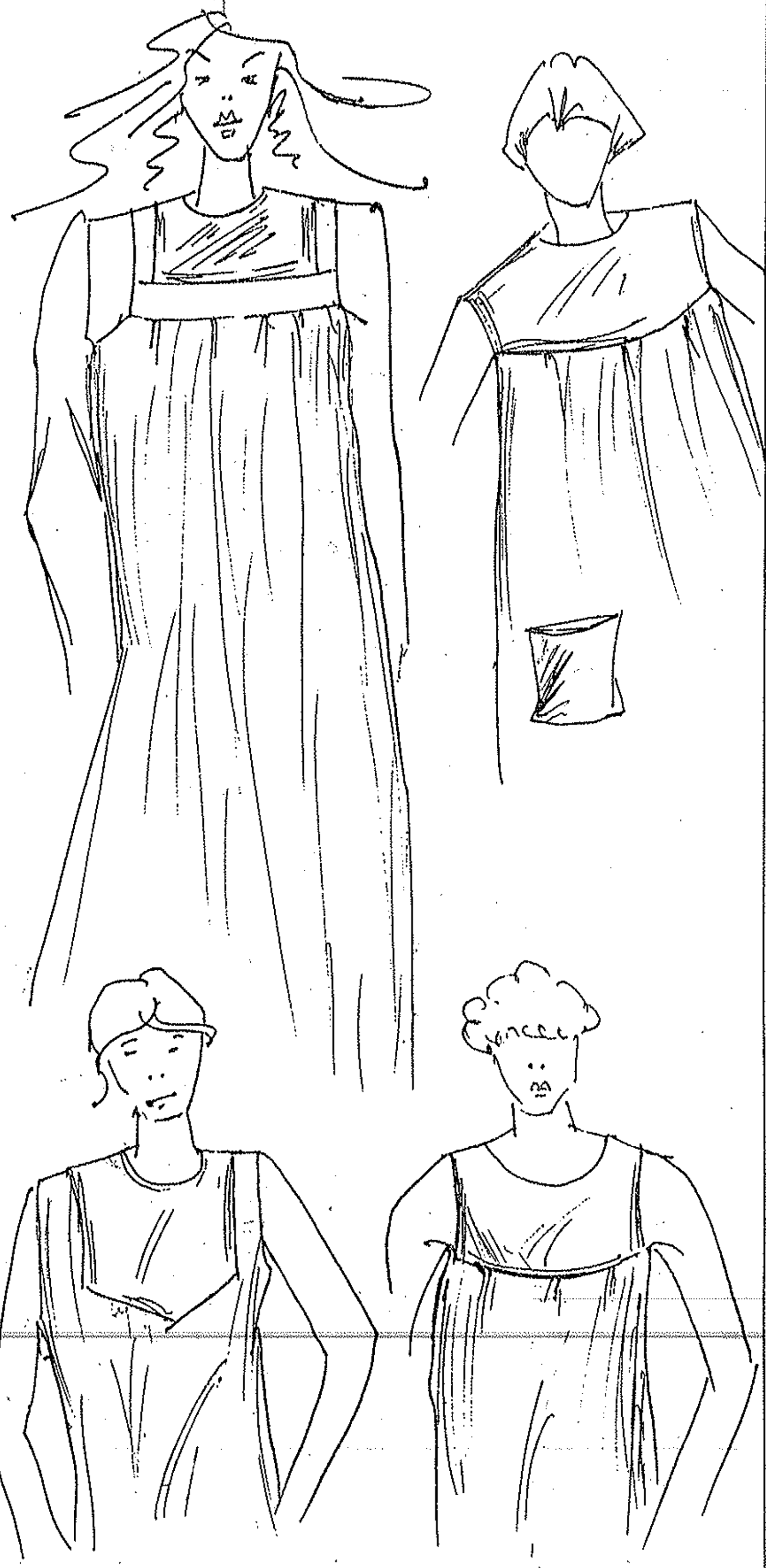

TYPES OF SET IN YOKES IN GENTS SHIRTS.

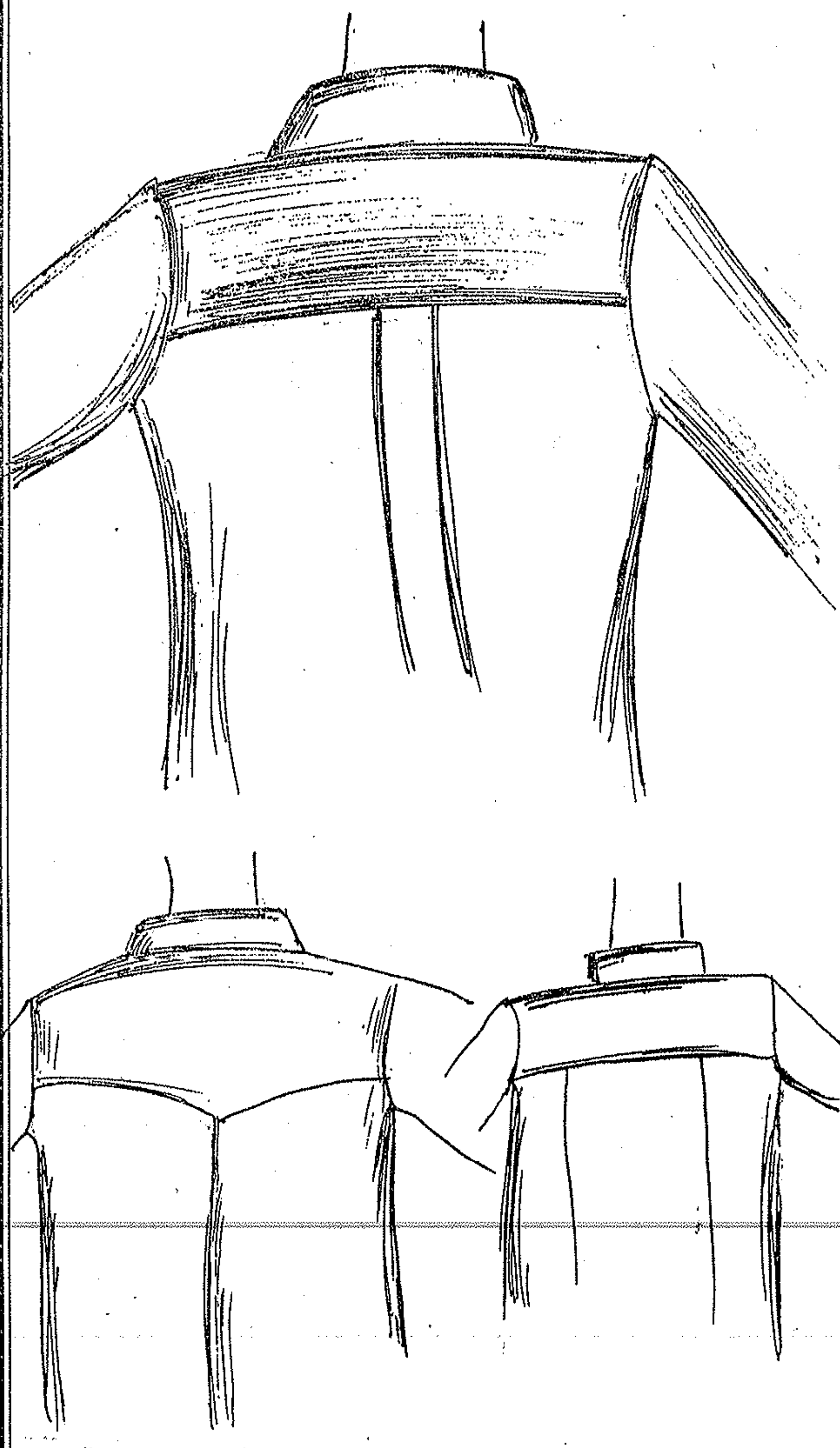

TYPES OF SCALLOPED YOKES

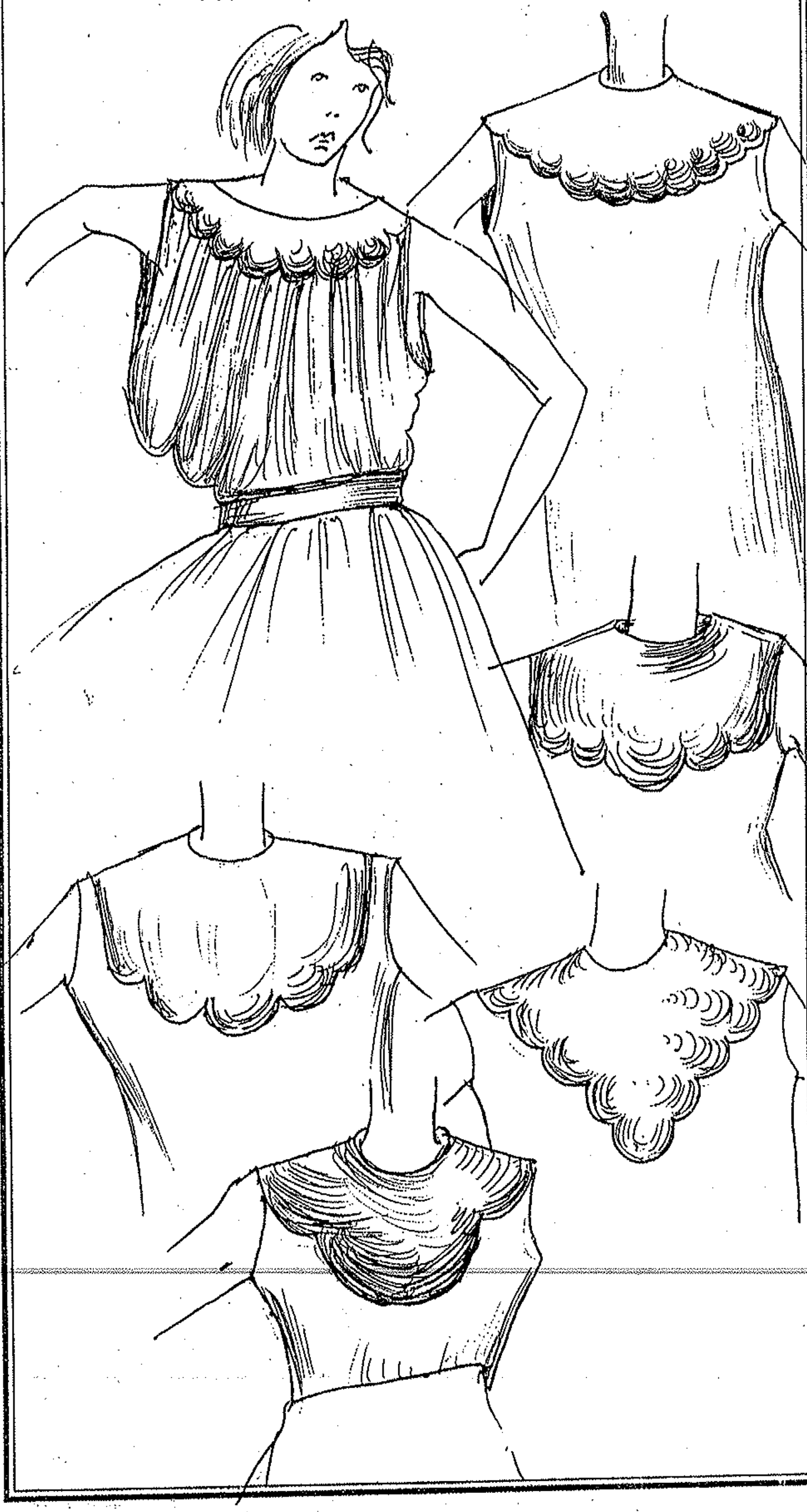

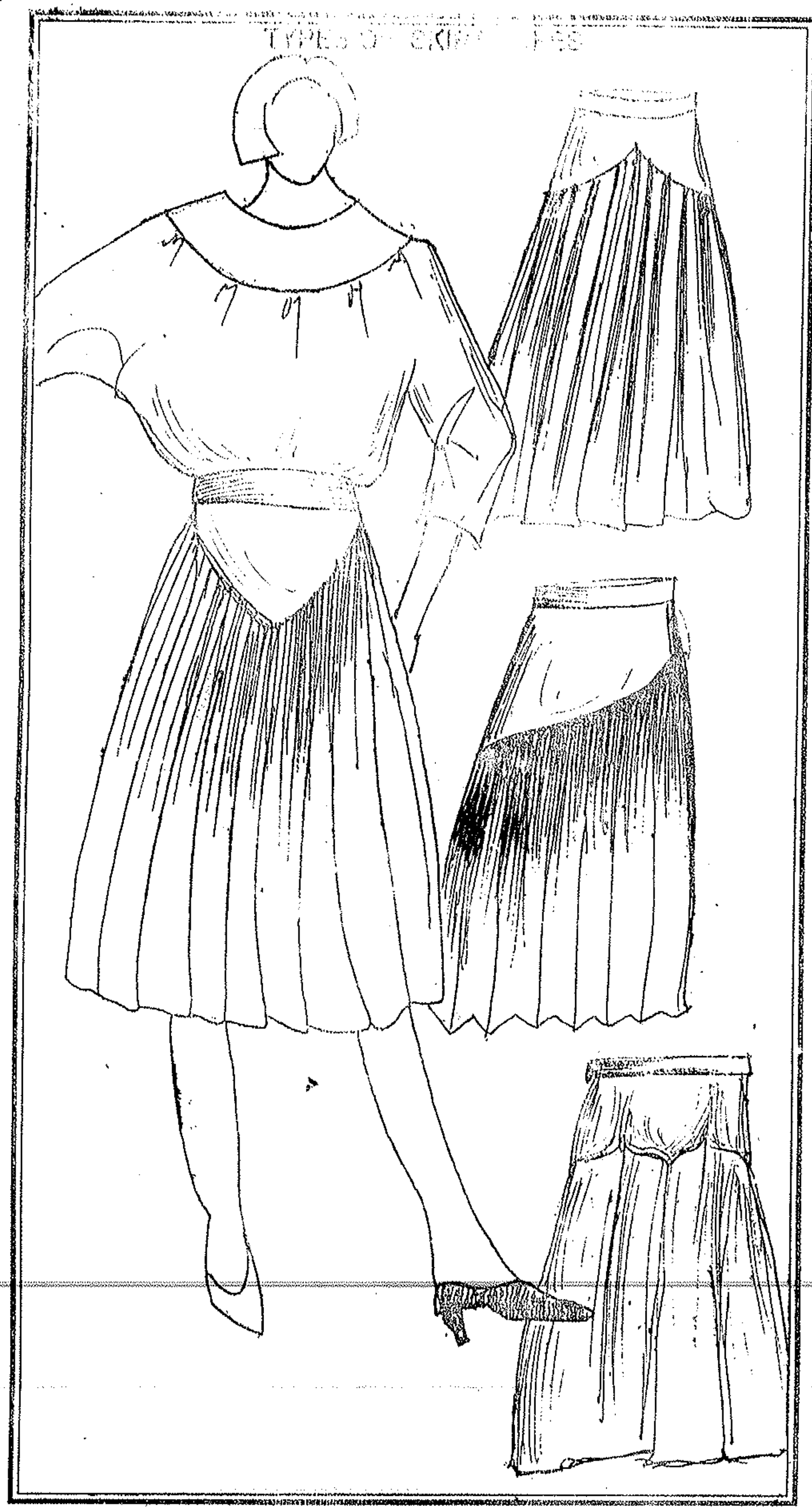
TYPES

TYPES OF PANT YOKES

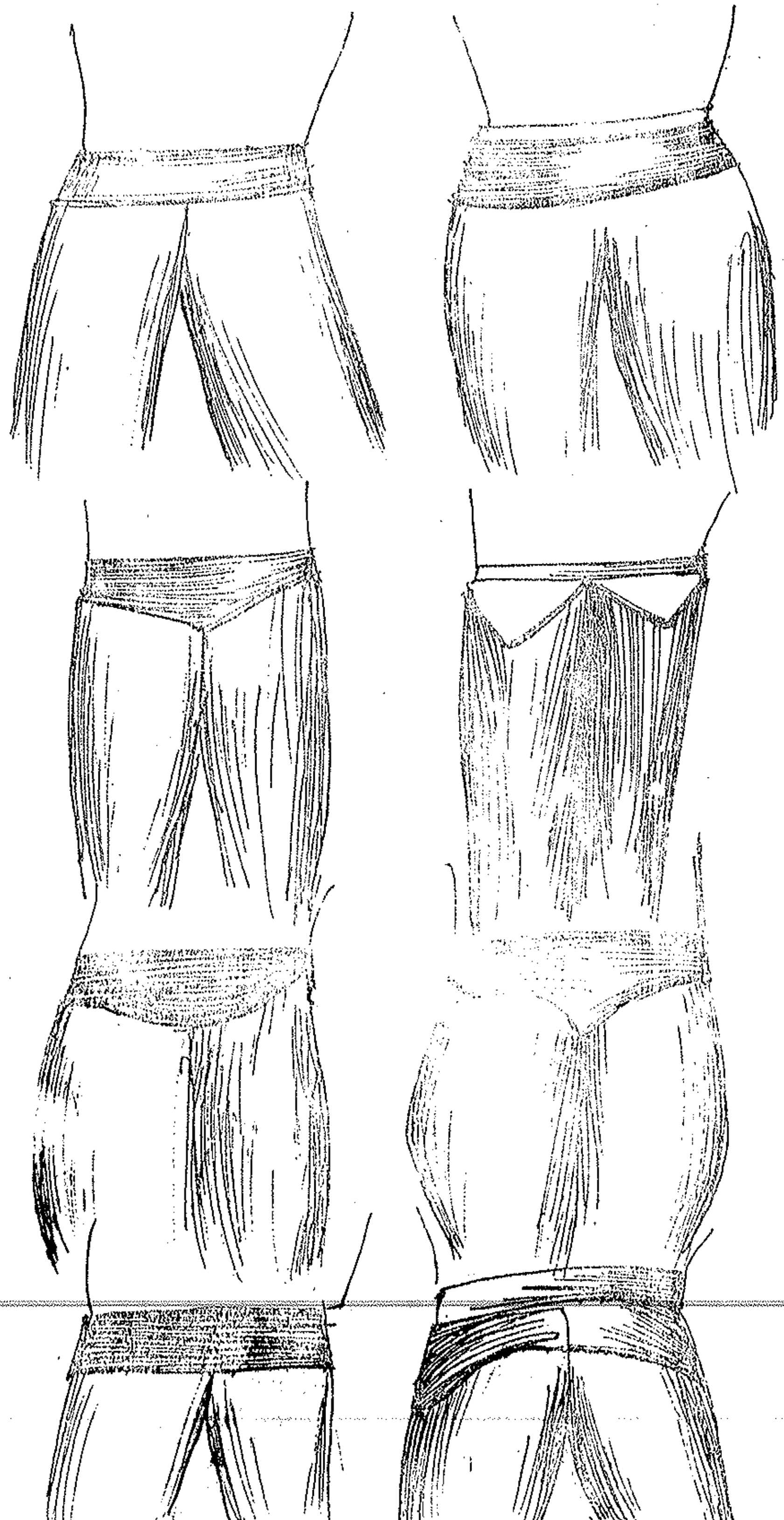

TYPES OF SHOULDER YOKES

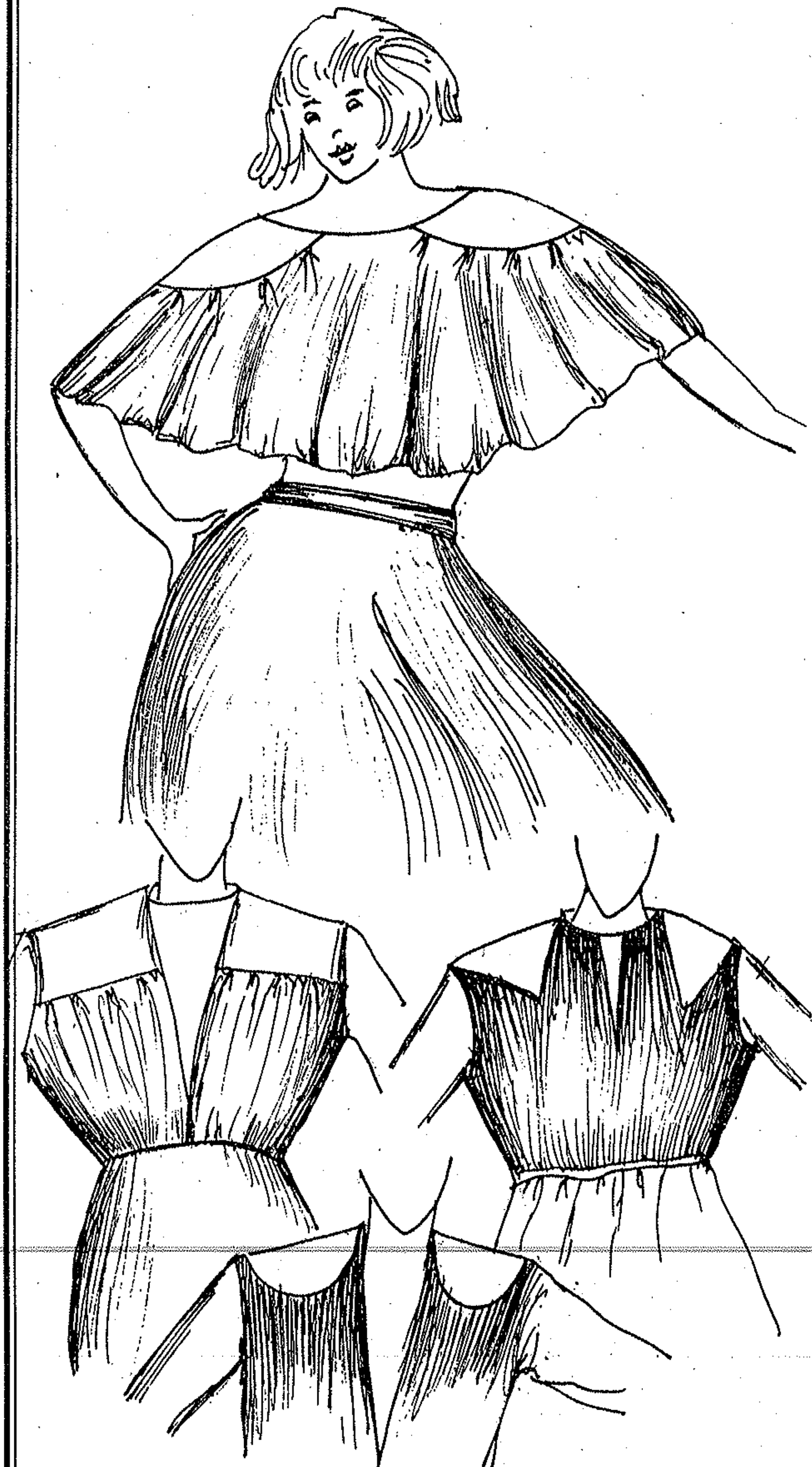

TYPES OF PLEATED YOKES

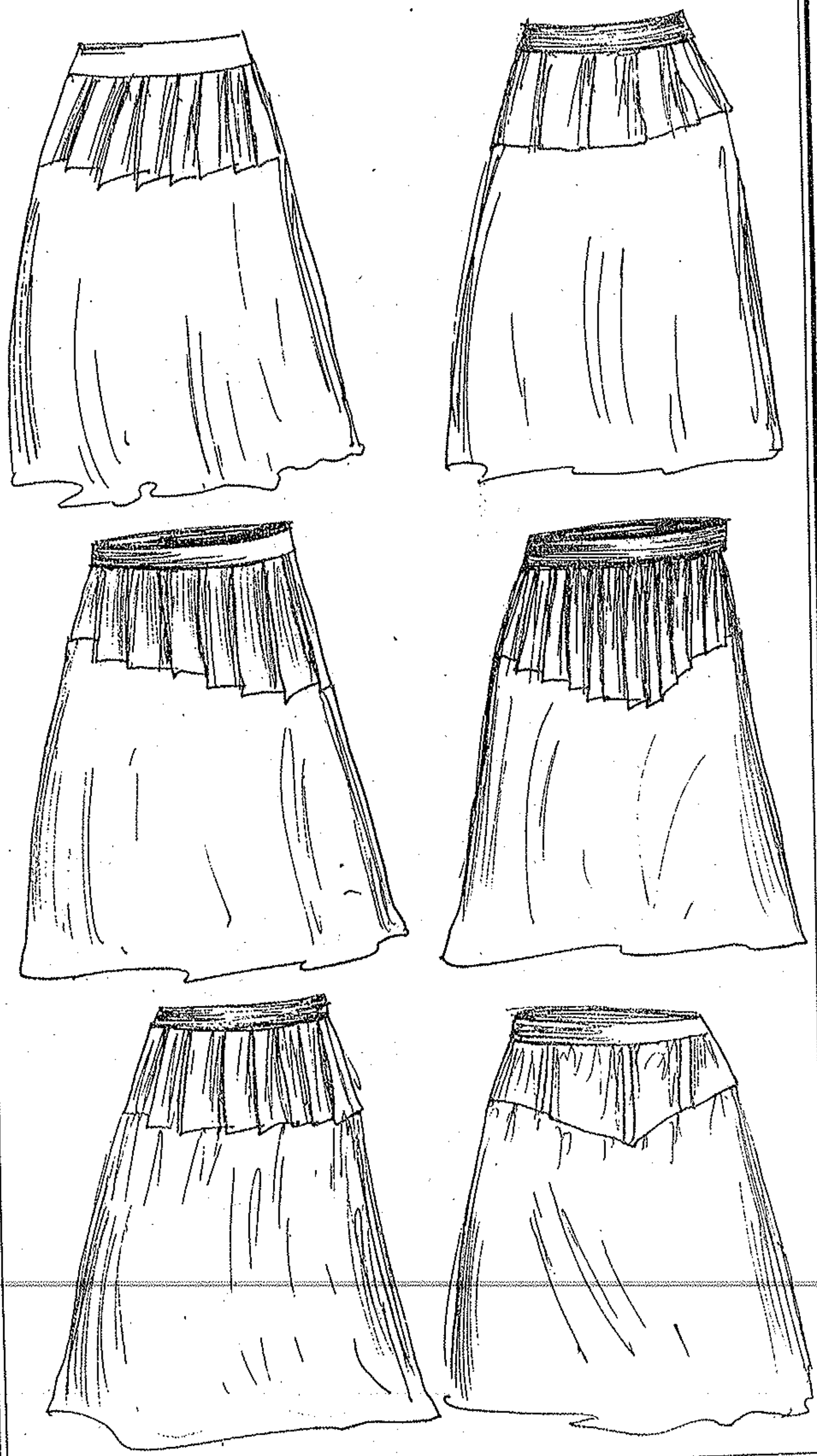

TYPES OF TUCKED YOKES.

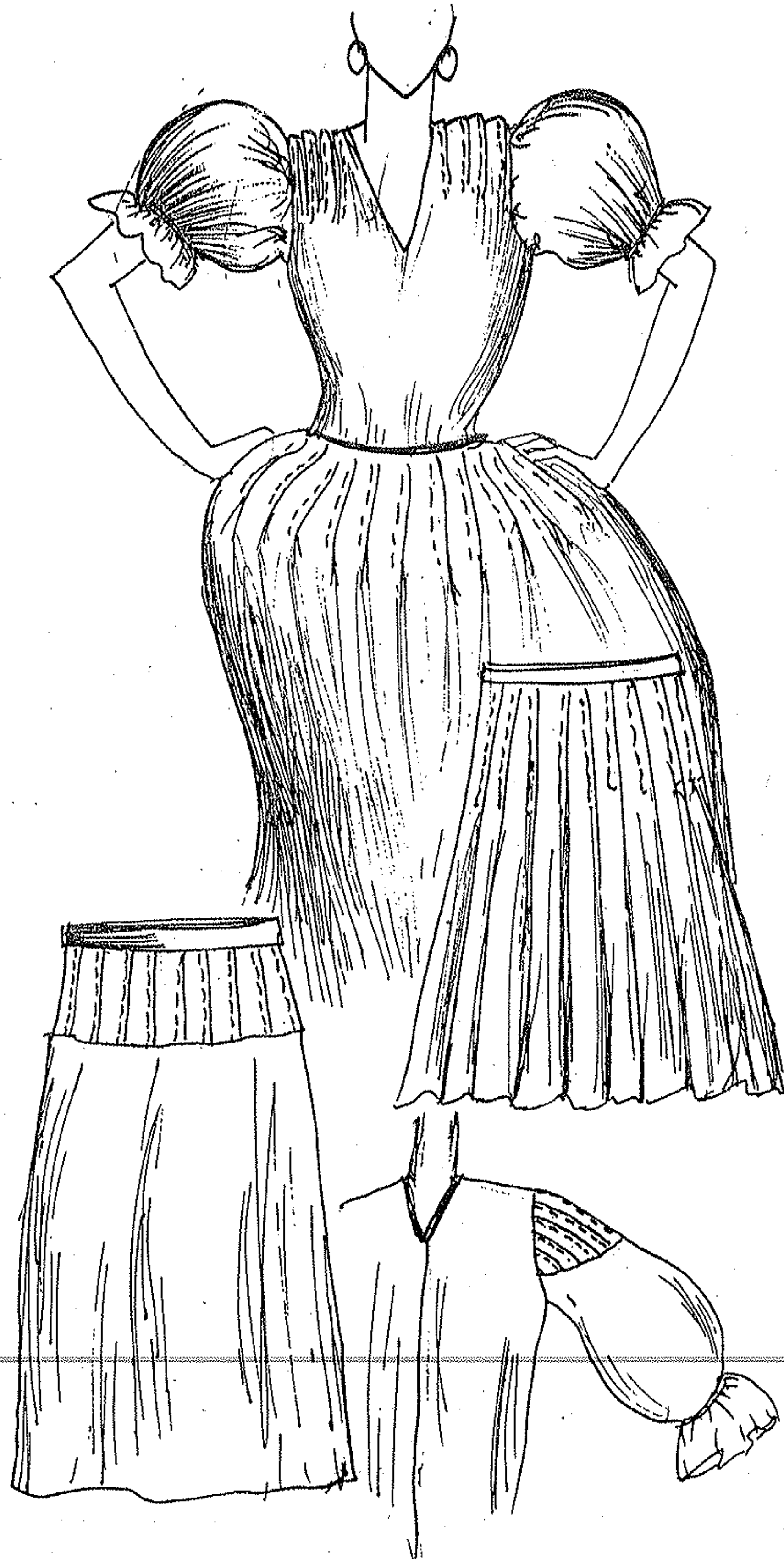

अभ्यास-

१— विभिन्न प्रकार के योक का चित्र संग्रह तैयार करें।

२ विभिन्न प्रकार के कफ बो का चित्र संग्रह तैयार करें।

६.४ सारांश:-

बो, पोशाक का सजावटी गुण होता है तथा आकार, नाप व स्थिति इत्यादि में विविध हो सकते हैं।

आस्तीनों को अन्तिम रूप, साधारण किनारी या कफ द्वारा दिया जाता है।

योक, पोशाक का सपाट क्षेत्र होता है। यह कढ़ाईदार, प्लीटेड अथवा टक्ड इत्यादि हो सकता है। योक दो प्रकार के होते हैं— पैच योक तथा सेट—इन योक।

६.५ स्वनिधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न—१ पॉच प्रकार के कफ रेखांकित करें।

प्रश्न—२ पॉच प्रकार के बो रेखांकित करें।

प्रश्न—३ पॉच प्रकार के पैच योक रेखांकित करें।

प्रश्न—४ पॉच प्रकार के सेट—इन योक रेखांकित करें।

प्रश्न—५ पॉच प्रकार के वर्गाकार योक रेखांकित करें।

६.६ स्वाध्ययन हेतु

१— इन्साइक्लोपीडिया आफ फैशन डिटेल्स, द्वारा पैट्रिक जॉन आयरलैण्ड, प्रकाशक— बी०टी० बैट्सफोर्ड लि० लन्दन।

संरचना

७.१ यूनिट प्रस्तावना

७.२ उद्देश्य

७.३ आस्तीन, प्लीट व ड्रॉ–स्ट्रिंग्स के प्रकार

७.४ सारॉश

७.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

७.६ स्वाध्ययन हेतु

७.१ यूनिट प्रस्तावना:-

यह यूनिट आपको विभिन्न प्रकार की आस्तीनों, प्लीट्स व ड्रॉ–स्टिंग्स से परिचित कराता है जिनका पोशाकों में प्रयोग किया जा सकता है।

७.२ उद्देश्य:-

इस यूनिट के अध्ययन से विद्यार्थियों को प्रचलित प्रकार के आस्तीन, प्लीट व ड्रॉ–स्ट्रिंग्स के विषय में जानकारी मिलेगी। इसको आधार बनाकर वह अपने मौलिक डिजाइनों की रचना कर सकेगें।

७.३ आस्तीन, प्लीट व ड्रॉ-स्ट्रिंग्स:-

मुख्यतः दो प्रकार के आस्तीन होते हैं। एक है–सेट–इन स्लीव और अन्य है– बॉडिस ब्लॉक को बढ़ाकर बनाई गई आस्तीन जो इसी कारणवश एक्सटेन्डेड स्लीव कहलाती है।

विभिन्न प्रकार की सेट–इन आस्तीनें हैं प्लेन आस्तीन, तीन/चौथाई आस्तीन, फुल आस्तीन, पफ आस्तीन, फैन्सी पफ आस्तीन, लेग 'ओ' मटन आस्तीन, कैप आस्तीन, फ्लेर्ड आस्तीन और आस्तीन फ्रिल। विभिन्न प्रकार की एक्सटेन्डेड आस्तीन हैं– मैगयार आस्तीन, डॉलमन, किमोनो, बटरफ्लाई तथा रैगलान आस्तीन।

SET IN SLEEVES

PAIN SLEEVES, THREE QUARTER SLEEVES, FULL SLEEVES, FULL SLEEVES WITH A CUFF

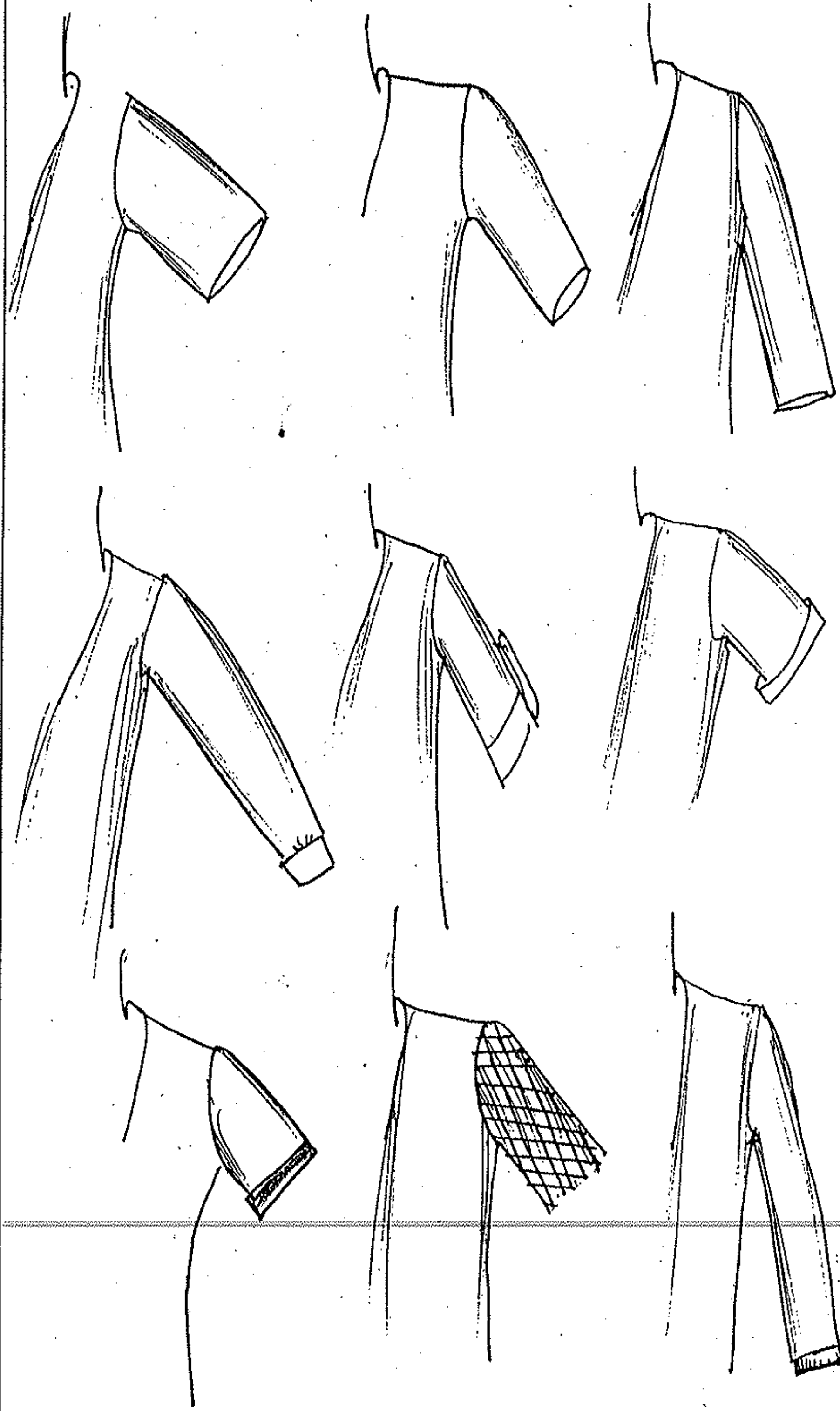

SET IN SLEEVES

PUFF SLEEVES, FANCY PUFF SLEEVES

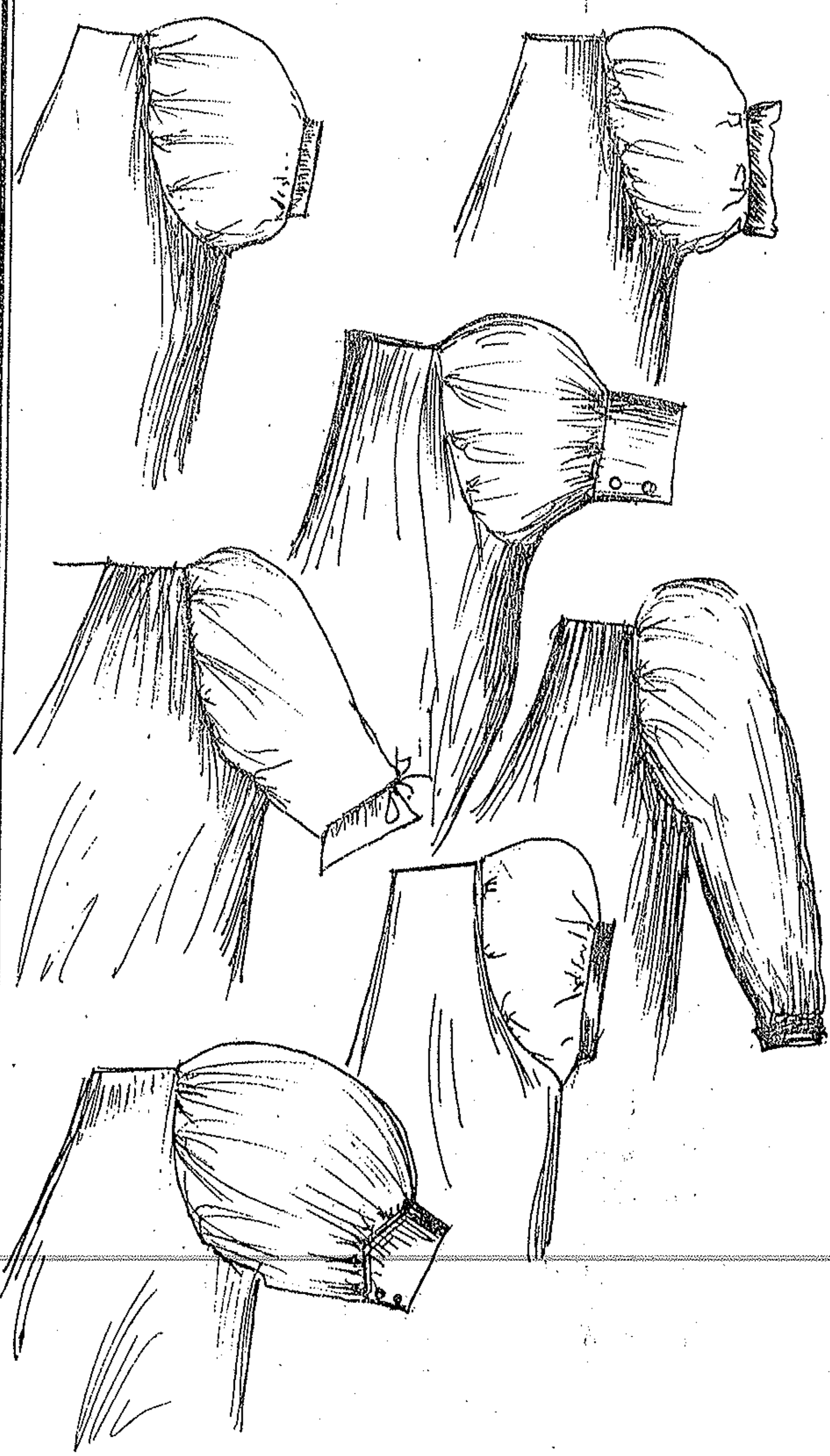

SET IN SLEEVES

LEG O' MUTTON SLEEVES, CAP SLEEVES

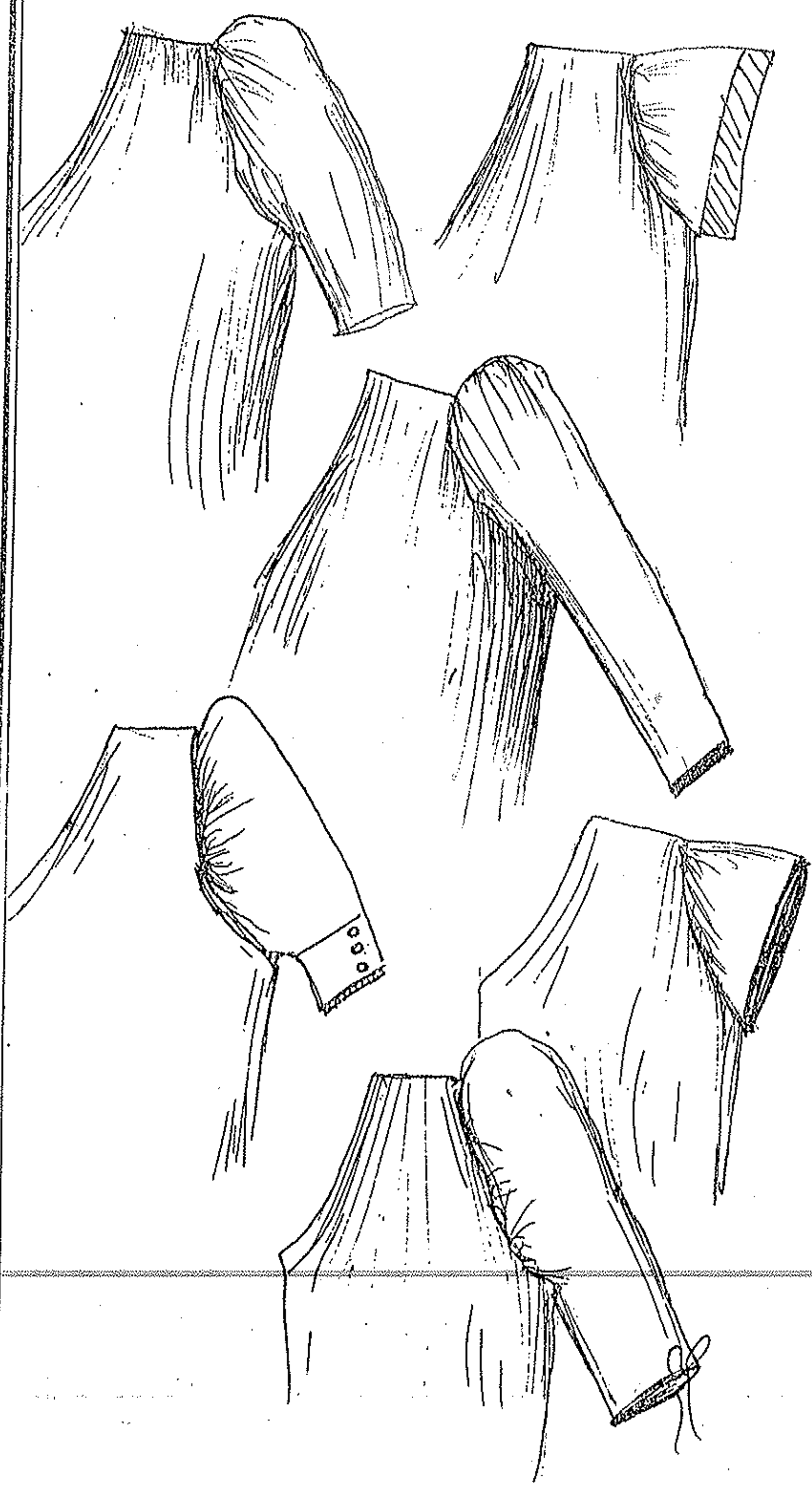

SET IN SLEEVES

FLARED SLEEVES AND SLEEVE FRILLS

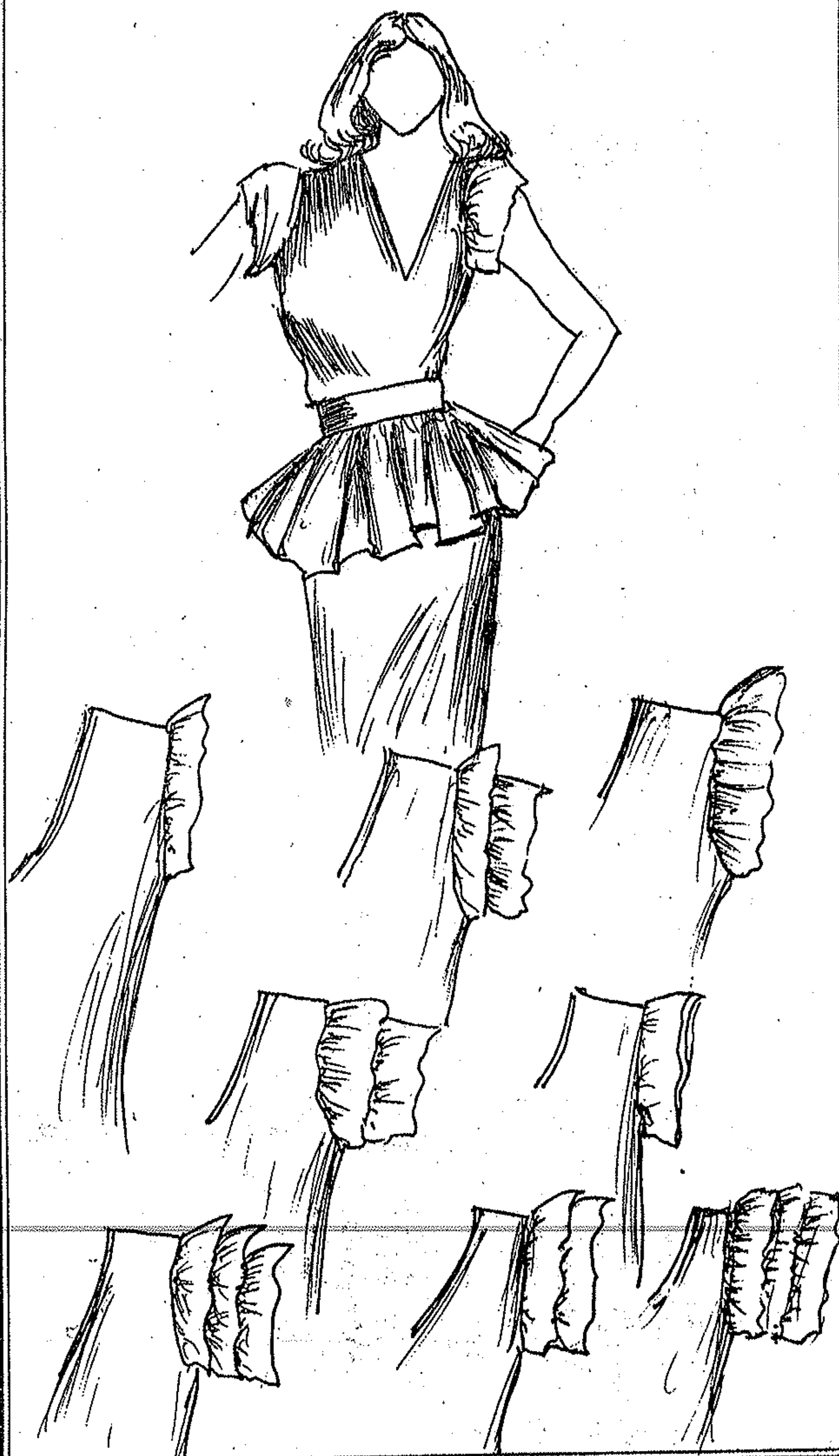

EXTENDED SLEEVES

MAGYAR SLEEVES, DOLMAN SLEEVES

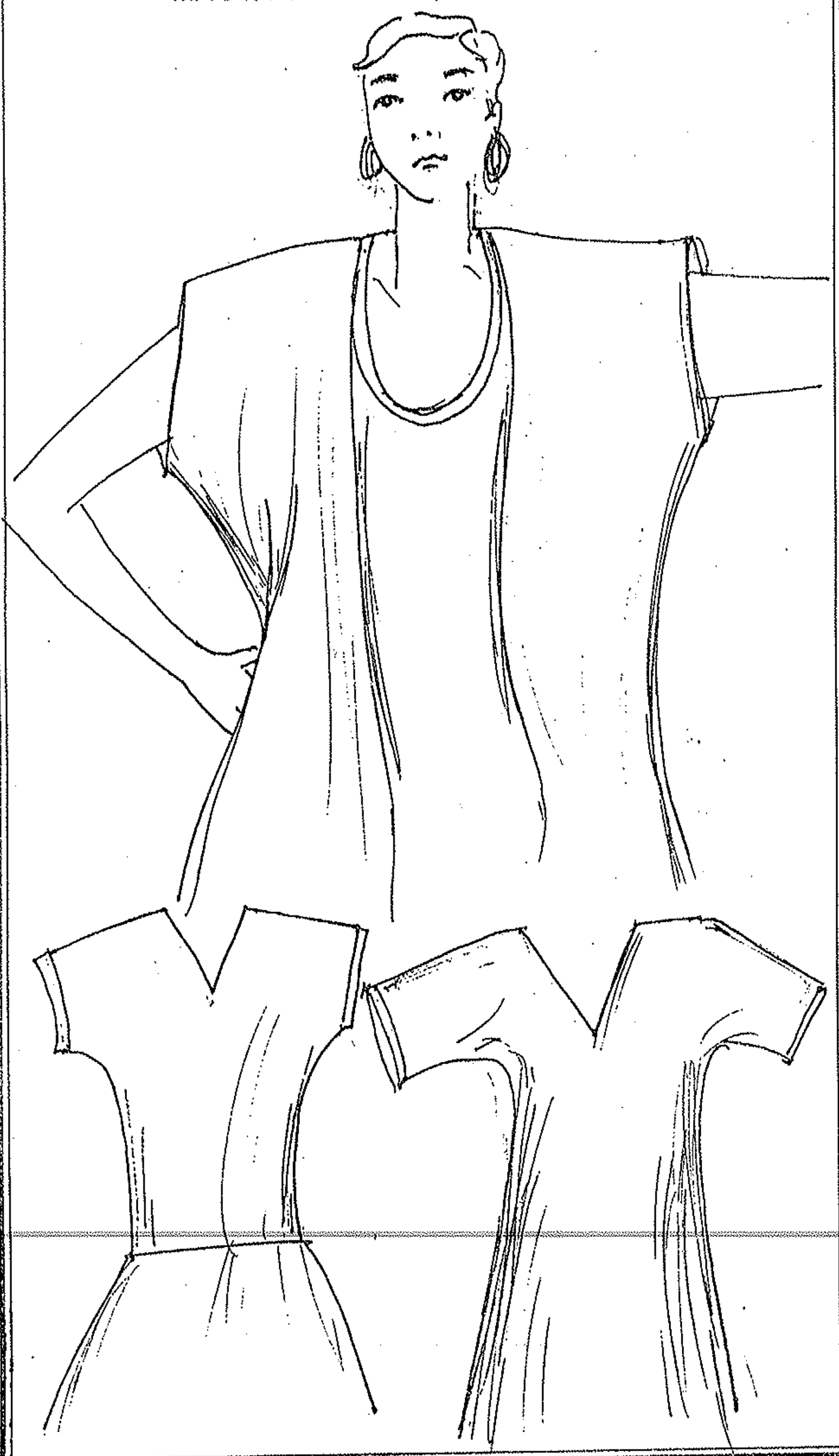

EXTENDED SLEEVES

KIMONO SLEEVES, BUTTERFLY SLEEVES

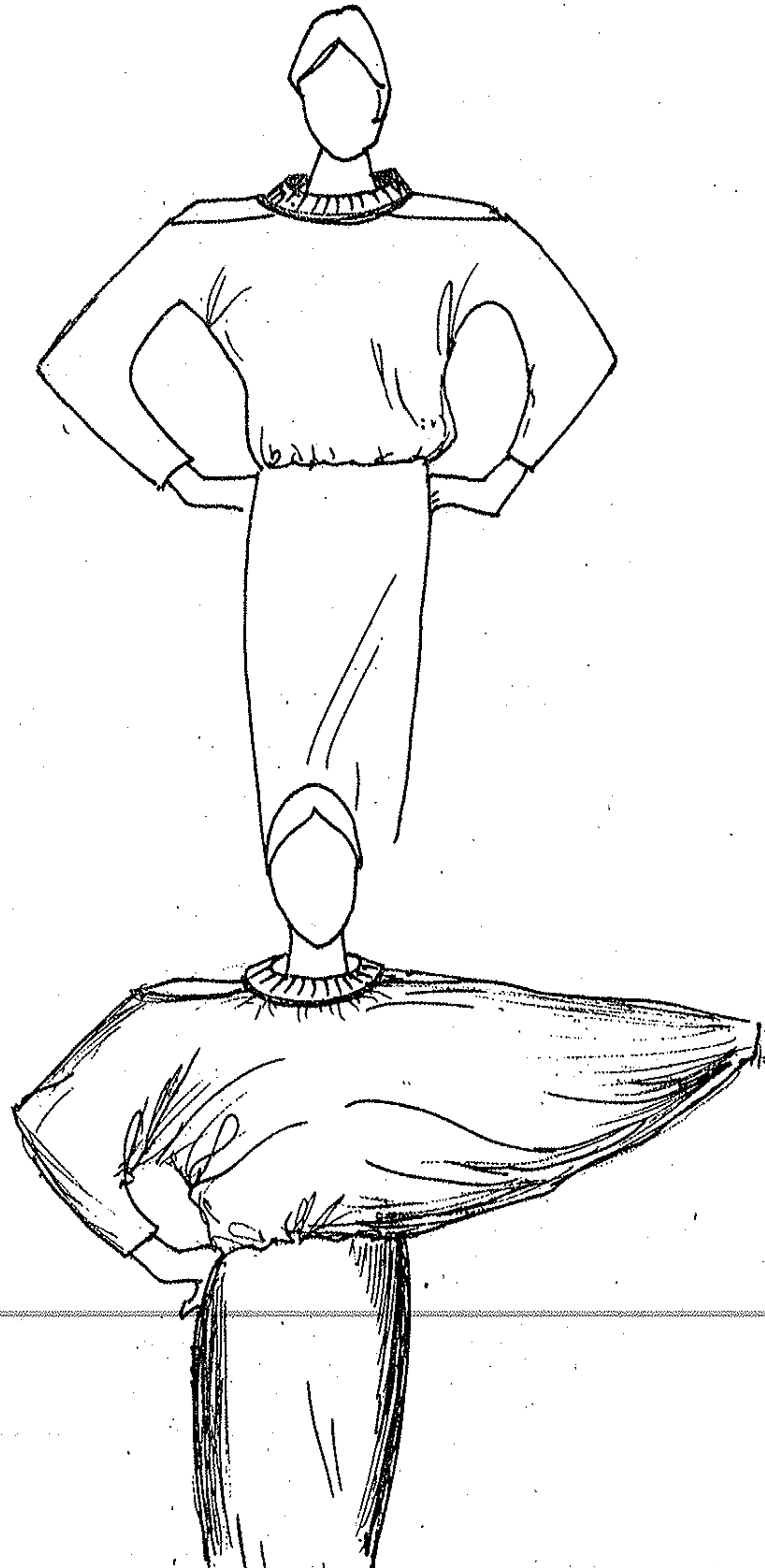

EXTENDED SLEEVES

RAGLAN SLEEVES

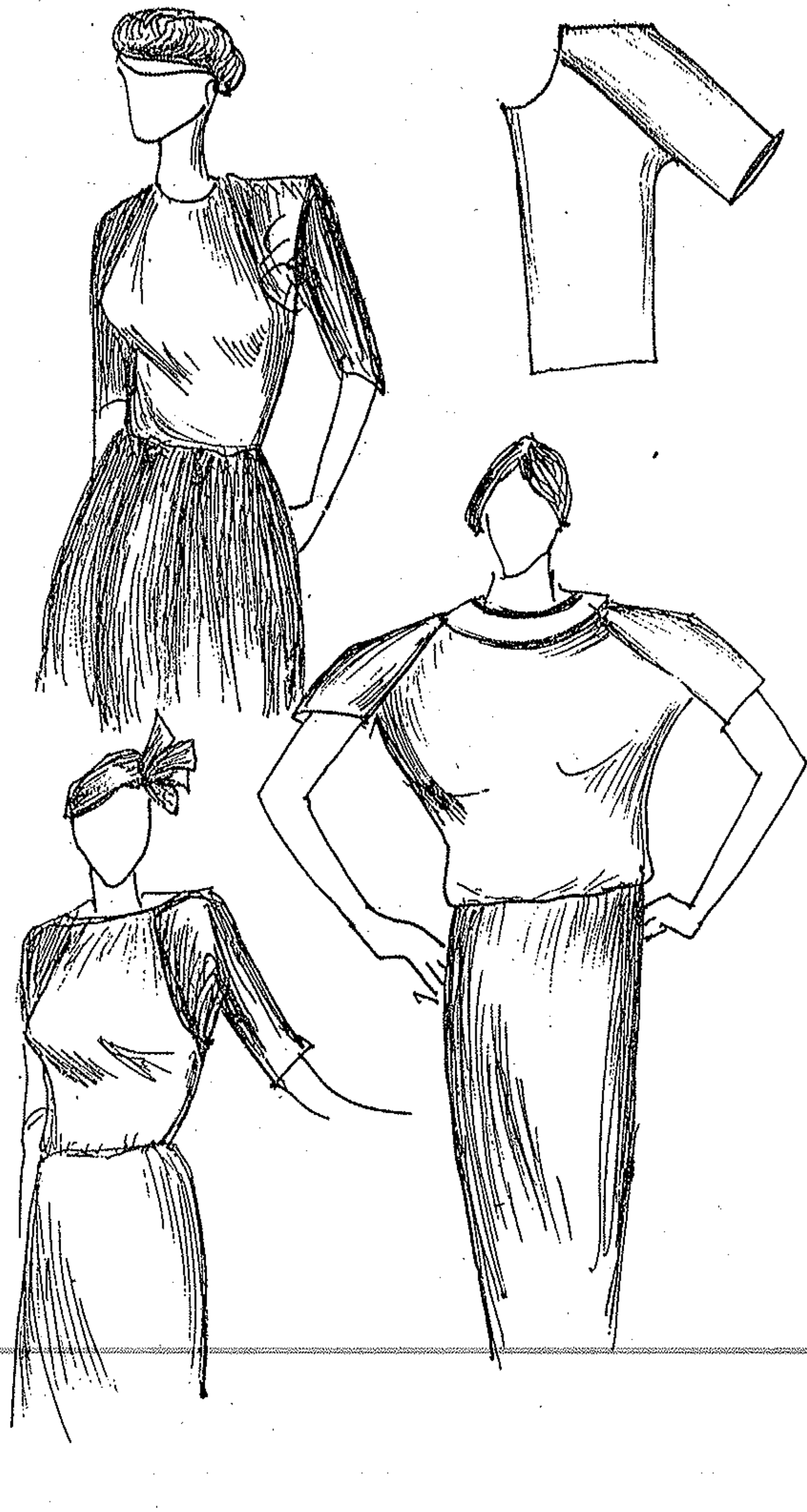

प्लीट्स मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं– नाइफ प्लीट, बॉक्स प्लीट व इनवर्टेड प्लीट। यह कपड़े को मोड़कर बनाई जाती है तथा पोशाक को फुलनेस देने के लिये प्रयोग की जा सकती हैं तथा सज्जा के लिये भी उपयोग में लाई जा सकती हैं। साथ ही यह पोशक को गति देने में भी सहायक होती है। इनको डालने व सिलनें के तरीके के अनुसार इन्हें निम्न नाम दिए जा सकते हैं– अकोर्डियन प्लीट्स, किक प्लीट्स, सनरे प्लीट्स, तथा साड़ी प्लीट्स।

KNIFE PLEATS

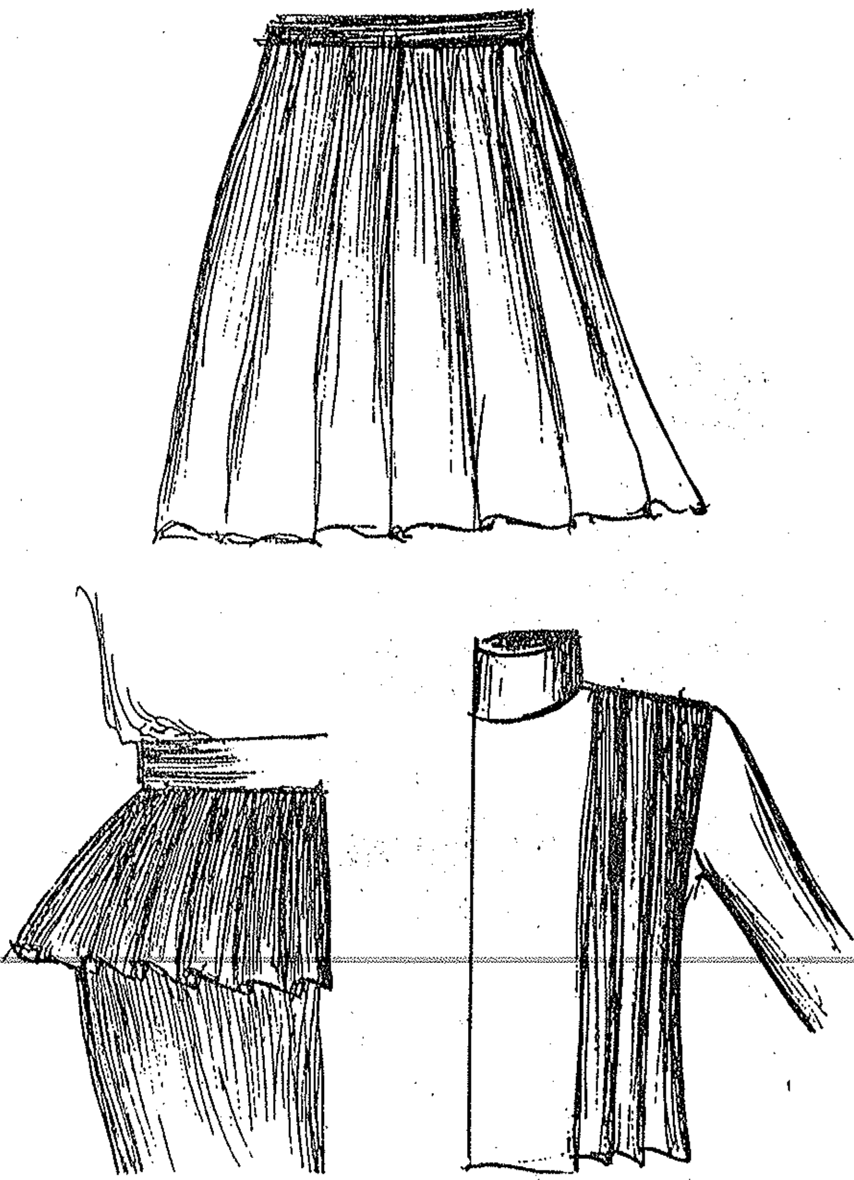

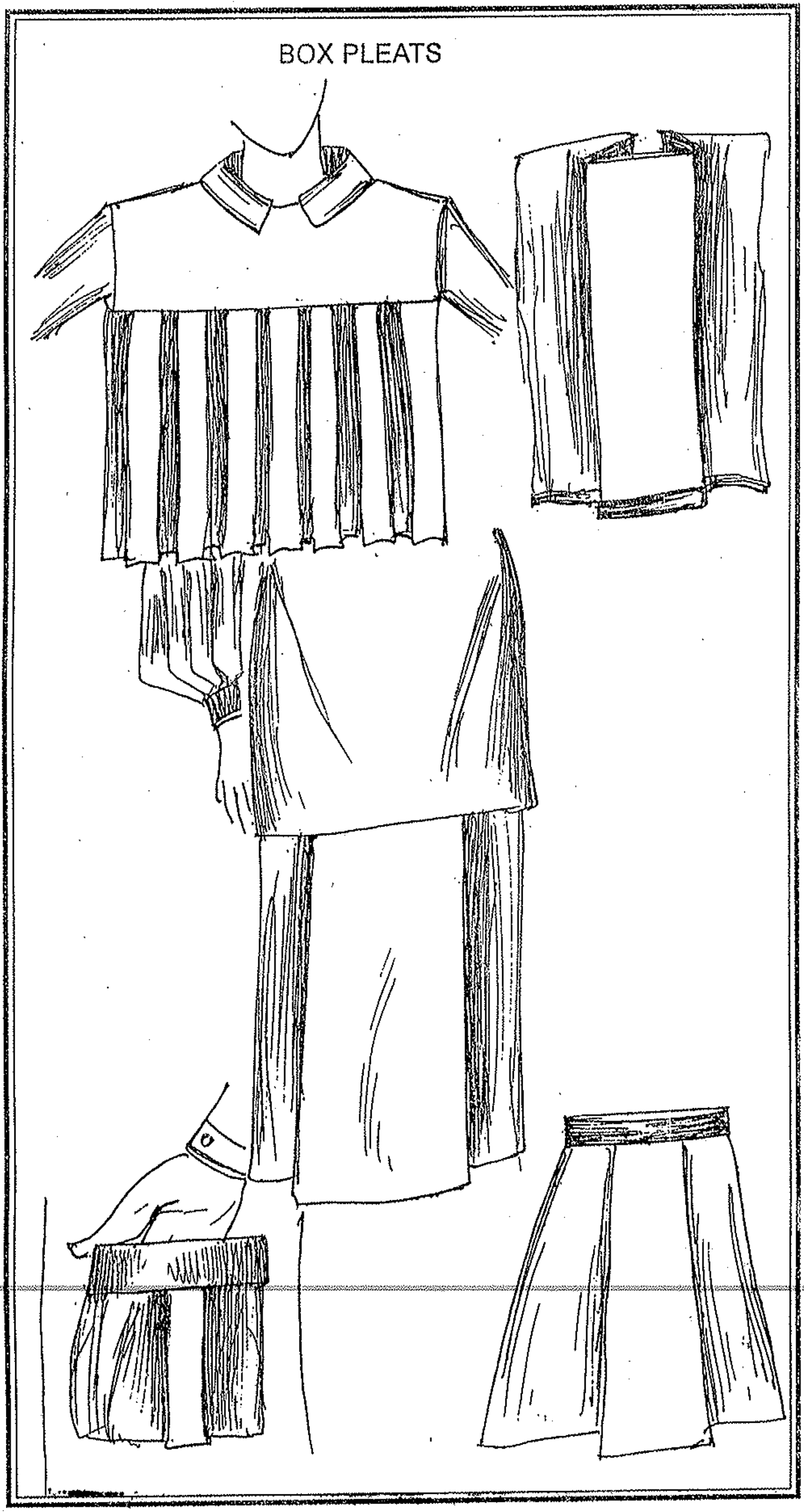
BOX PLEATS

INVERTED PLEATS

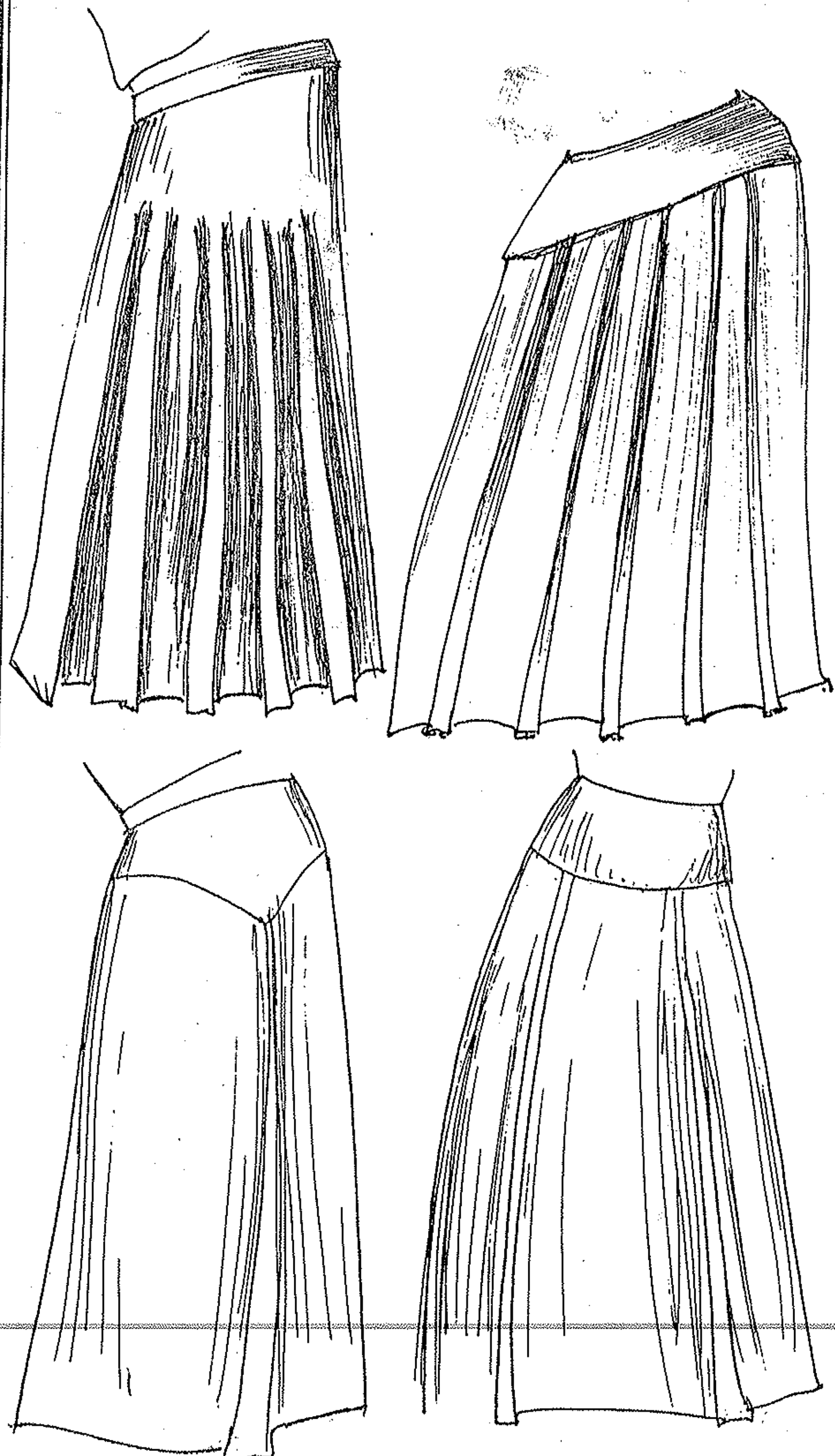

ACCORDIAN PLEATS

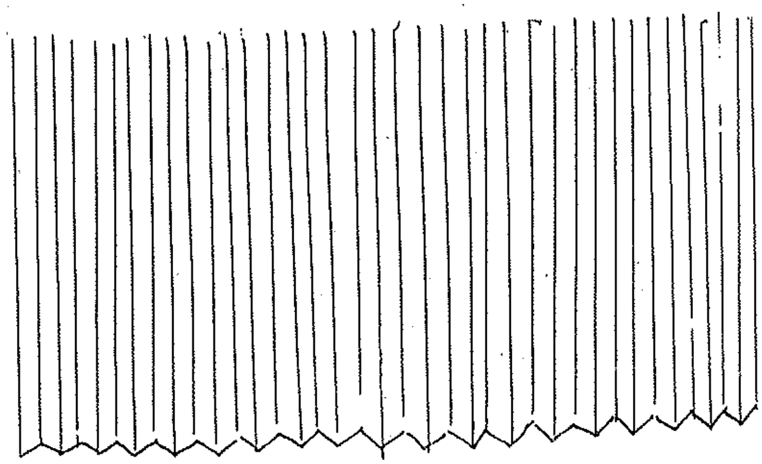

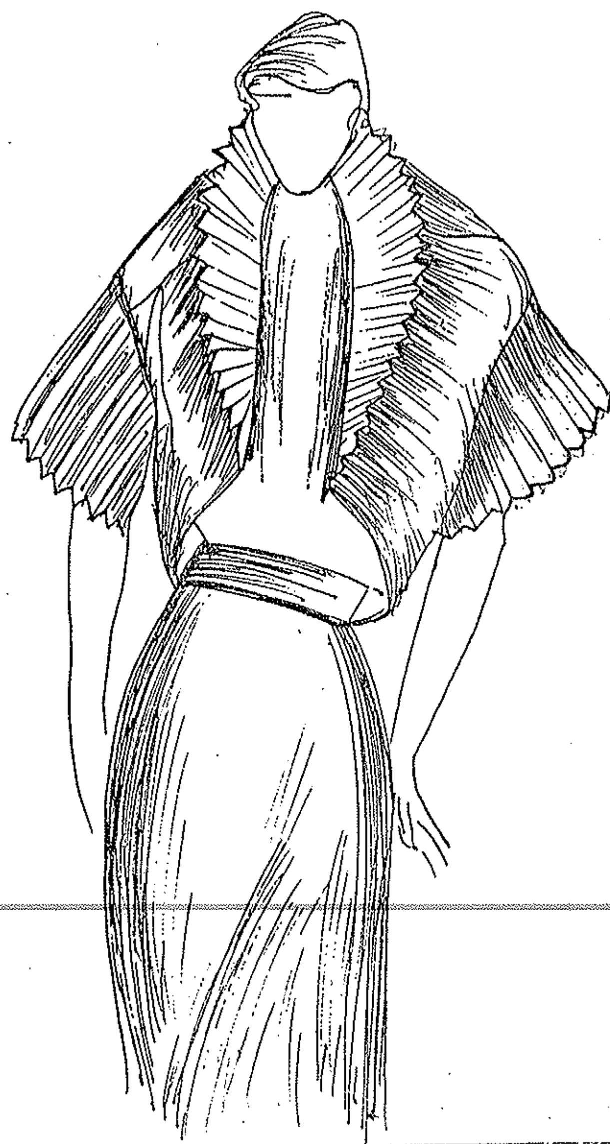

KICK PLEATS

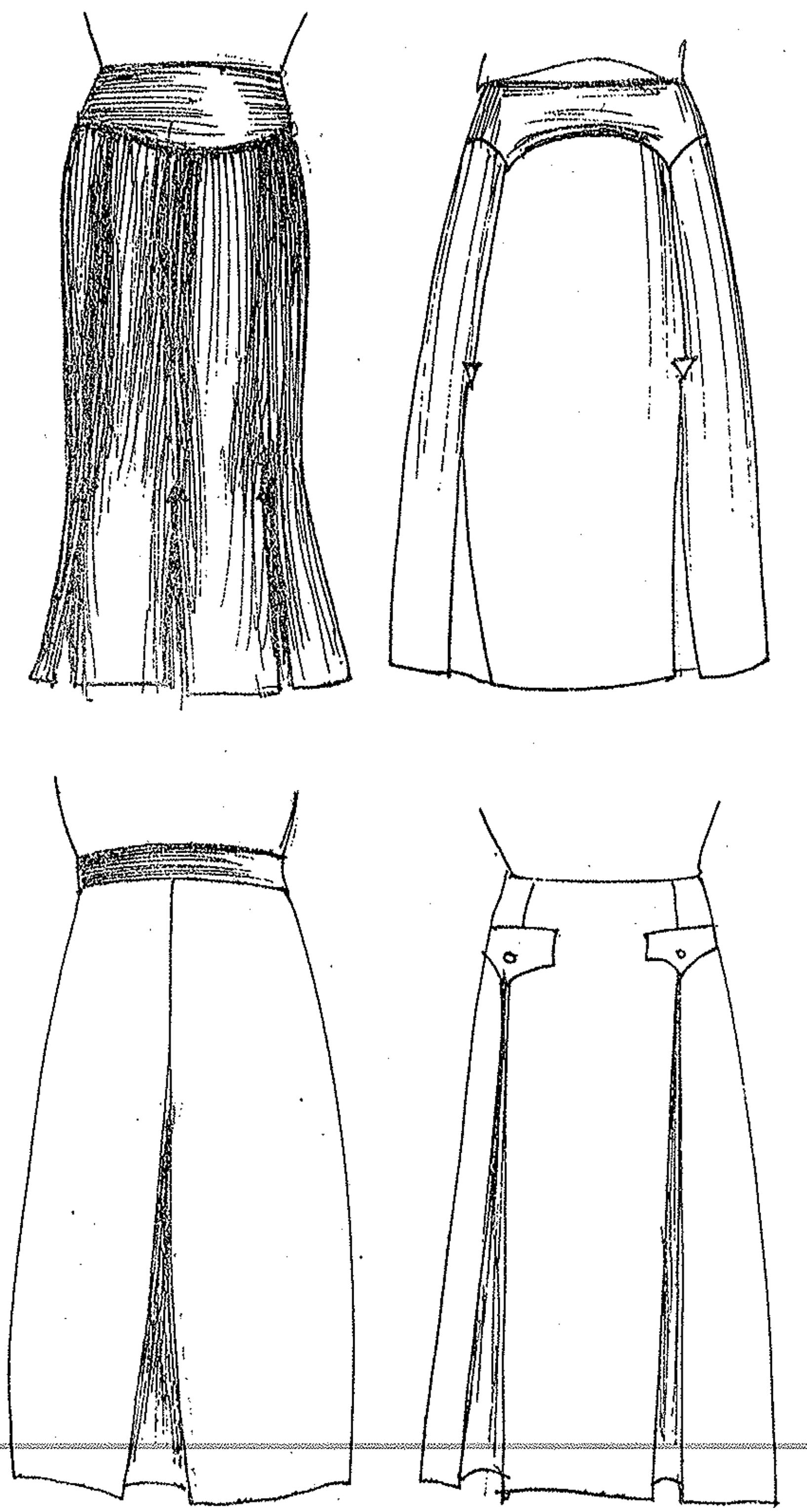

SUNRAY PLEATS AND SAREE PLEATS.

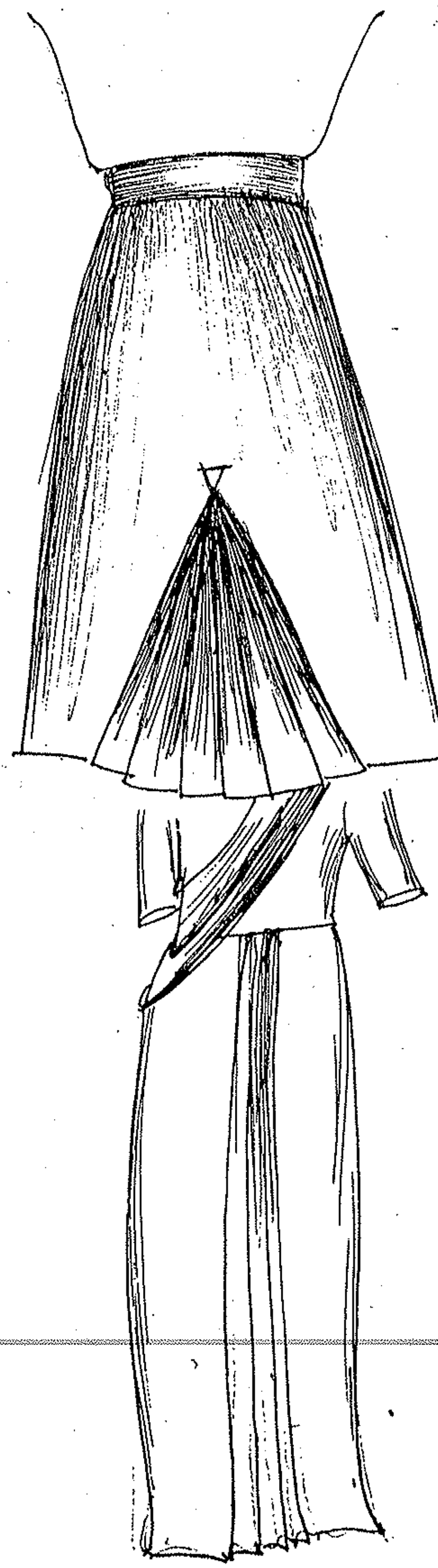

Draw strings are effectively used on many areas of the garment. On the hems of jackets, blouses, necklines, sleeves and trousers A cord is inserted inside a casing and pulled to give gathers.

DRAW STRINGS ON SLEEVES

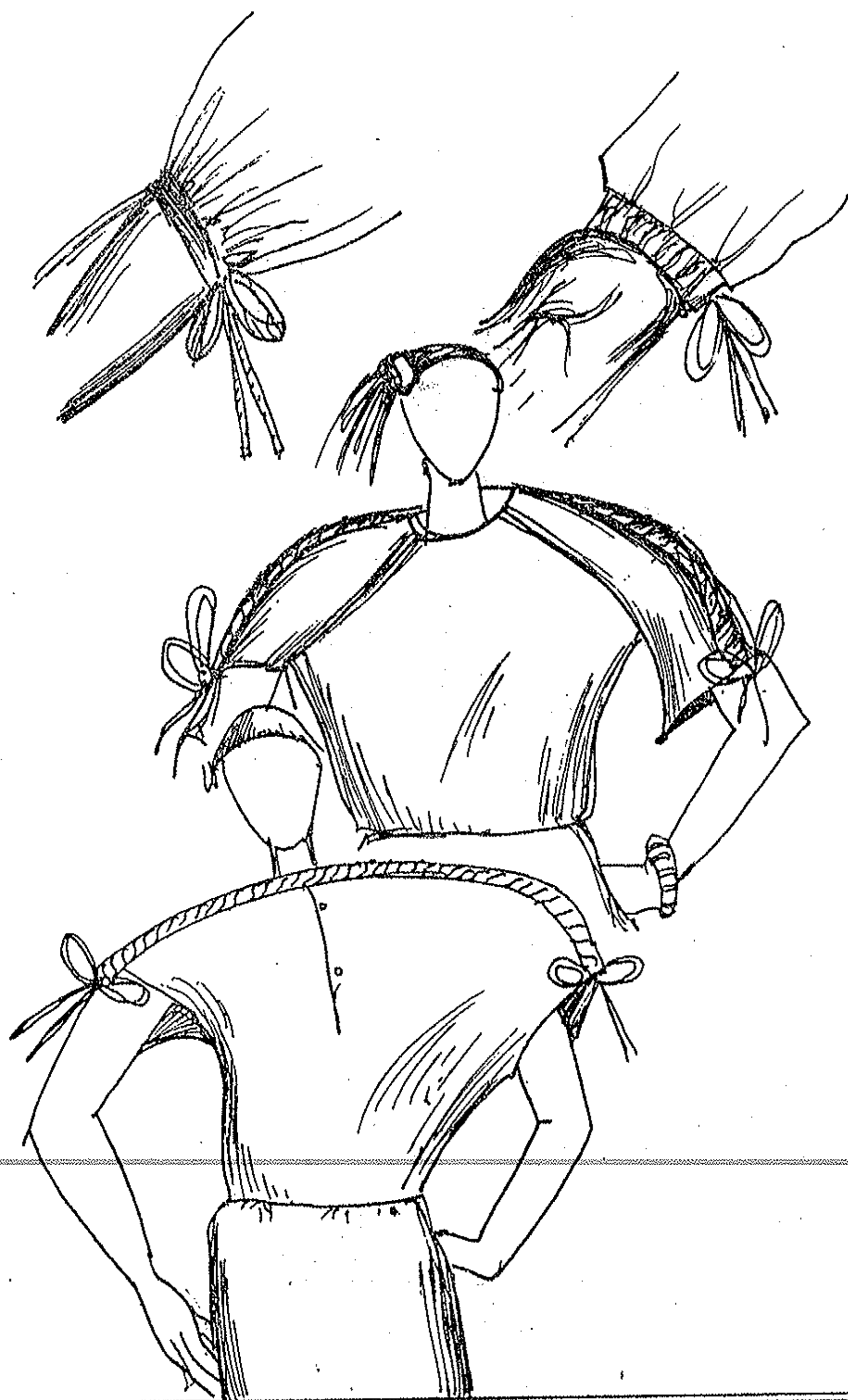

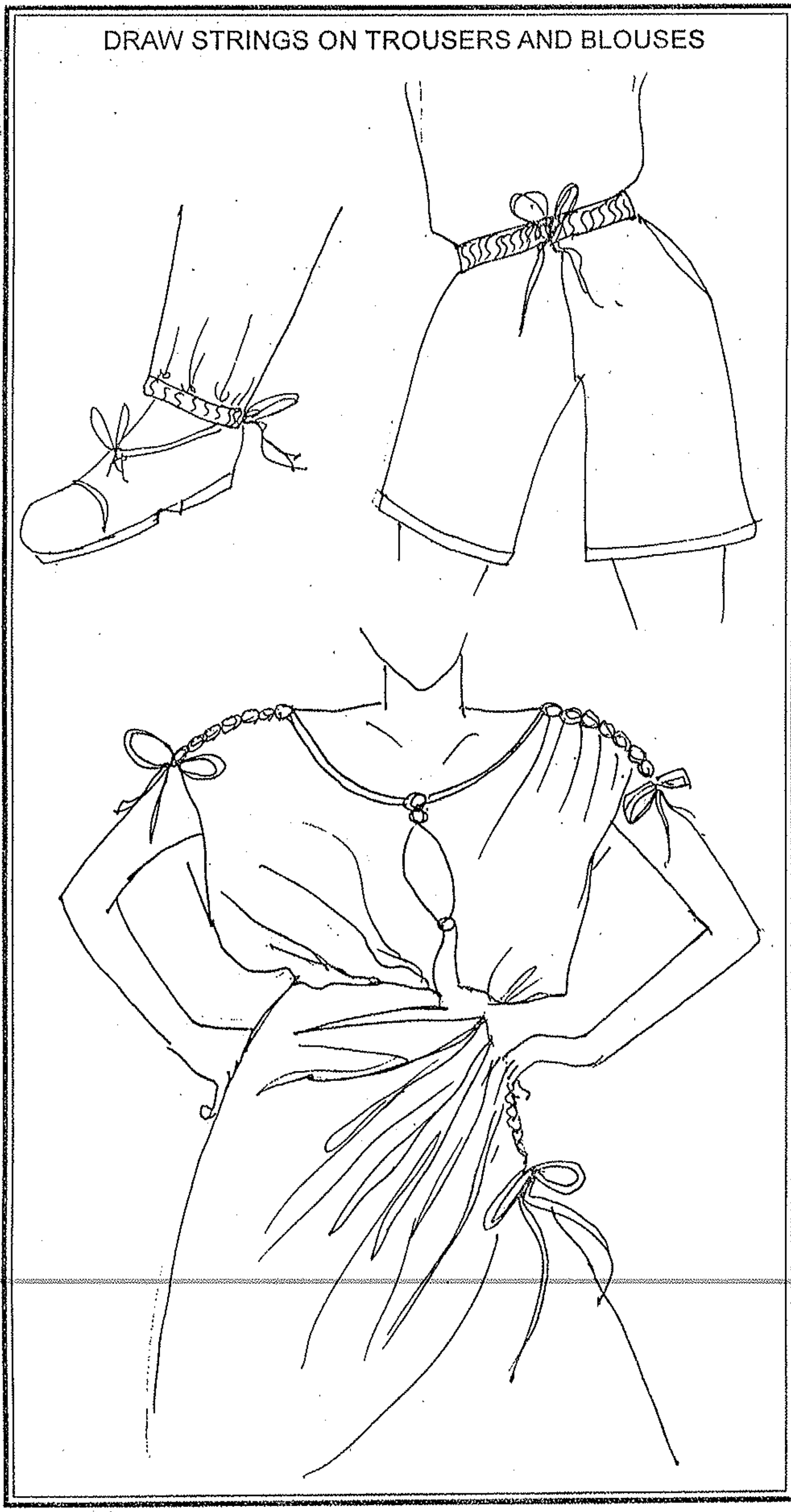
DRAW STRINGS ON TROUSERS AND BLOUSES

DRAW STRINGS ON HEMS OF JACKETS ANDNECKLINES

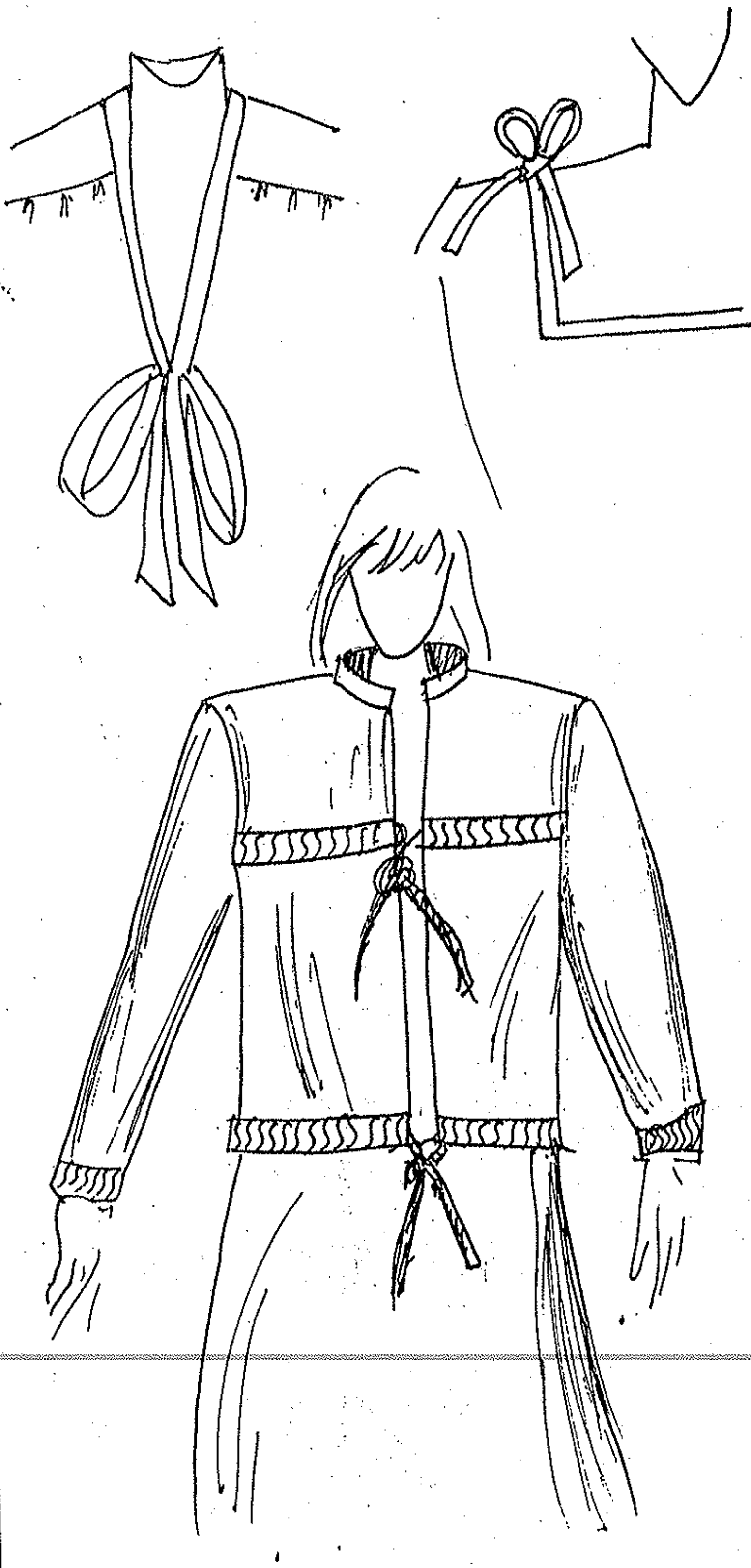

अभ्यास-

१— विभिन्न प्रकार की आस्तीनों का चित्र संग्रह करें।

२— विभिन्न प्रकार की प्लीट्स व ड्रा—स्ट्रिंग्स का चित्र संग्रह तैयार करें।

७.४ सारांशः-

मुख्यतः दो प्रकार की आस्तीनें होती हैं— सेट—इन व एक्सटेन्डेड आस्तीनें। सेट—इन आस्तीनों में प्लेन, तीन—चौथाई, फुल, कफ के साथ फुल आस्तीन, पफ, फैन्सी पफ, लेग 'ओ' मटन, कैप, फ्लेर्ड तथा फ्रिल शामिल हैं। एक्सटेन्डेड स्लीव्स में मैगयार, डॉलमन, किमोनो, बटरफ्लाई तथा रैगलान शामिल हैं।

प्लीट्स में नाइफ, बॉक्स, इनवर्टेड, अकोर्डियन, किक, सनरे, तथा साड़ी प्लीट्स आती हैं।

ड्रा—स्ट्रिंग्स का प्रयोग जैकेट, ब्लाउज, गले, आस्तीन तथा ट्राउजर के किनारे पर किया जाता है।

७.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न—१ पाँच प्रकार के प्लीट्स रेखांकित करें।

प्रश्न—२ पाँच प्रकार के आस्तीन रेखांकित करें।

प्रश्न—३ पाँच प्रकार के ड्रा—स्ट्रिंग्स रेखांकित करें।

प्रश्न—४ पाँच विविध प्रकार की प्लेन आस्तीन रेखांकित करें।

प्रश्न—५ पाँच विविध प्रकार की नाइफ प्लीट्स रेखांकित करें।

७.६ स्वाध्ययन हेतु

१— इन्साइक्लोपीडिया आफ फैशन डिटेल, द्वारा पैट्रिक जॉन आयरलैण्ड, प्रकाशक बी०टी० बैटस्फोर्ड लि० लन्दन।

संरचना

८.१ यूनिट प्रस्तावना

८.२ उद्देश्य

८.३ स्कर्ट व शियरिंग के प्रकार

८.४ सारॉश

८.५ स्वनिर्धार्य प्रश्न/अभ्यास

८.६ स्वाध्ययन हेतु

८.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

यह यूनिट आपका परिचय विभिन्न प्रकार की स्कर्ट व शियरिंग से करायेगा जिनका प्रयोग वस्त्रों में किया जा सकता है।

८.२ उद्देश्यः-

इस यूनिट के अध्ययन से विद्यार्थियों को प्रचलित स्कर्ट व शियरिंग के विषय में जानकारी मिलेगी। इसको आधार बनाकर वह अपने मौलिक डिजाइनों की रचना कर पायेगें।

८.३ स्कर्ट व शियरिंग के प्रकारः-

स्कर्ट विविध डिजाइनों की होती है। यह स्ट्रेट स्कर्ट, स्लिट के साथ स्कर्ट, शॉर्ट स्कर्ट, लम्बी स्कर्ट, प्लीटिड स्कर्ट, हाफ सरकुलर स्कर्ट, फुल सर्कुलर स्कर्ट, गोरेड स्कर्ट, पैनल्ड स्कर्ट, योकड् स्कर्ट, नोवेल्टी गैदर्ड स्कर्ट या गैदर्ड स्कर्ट हो सकती है।

वस्त्र को सज्जापूर्ण फुलनेस देने के लिये शियरिंग इलास्टिक की कई लाइनों का प्रयोग किया जाता है। इस तरह मिली इलास्टिसिटी से वस्त्र फैलकर, शरीर की गति अनुसार फिट हो जाता है। इसके लिये हल्के भार वाले कपड़ों का प्रयोग किया जाता है। यह पूरे वस्त्र में या उनके किसी एक भाग में प्रयोग किया जा सकता है।

STRAIGHT SKIRTS

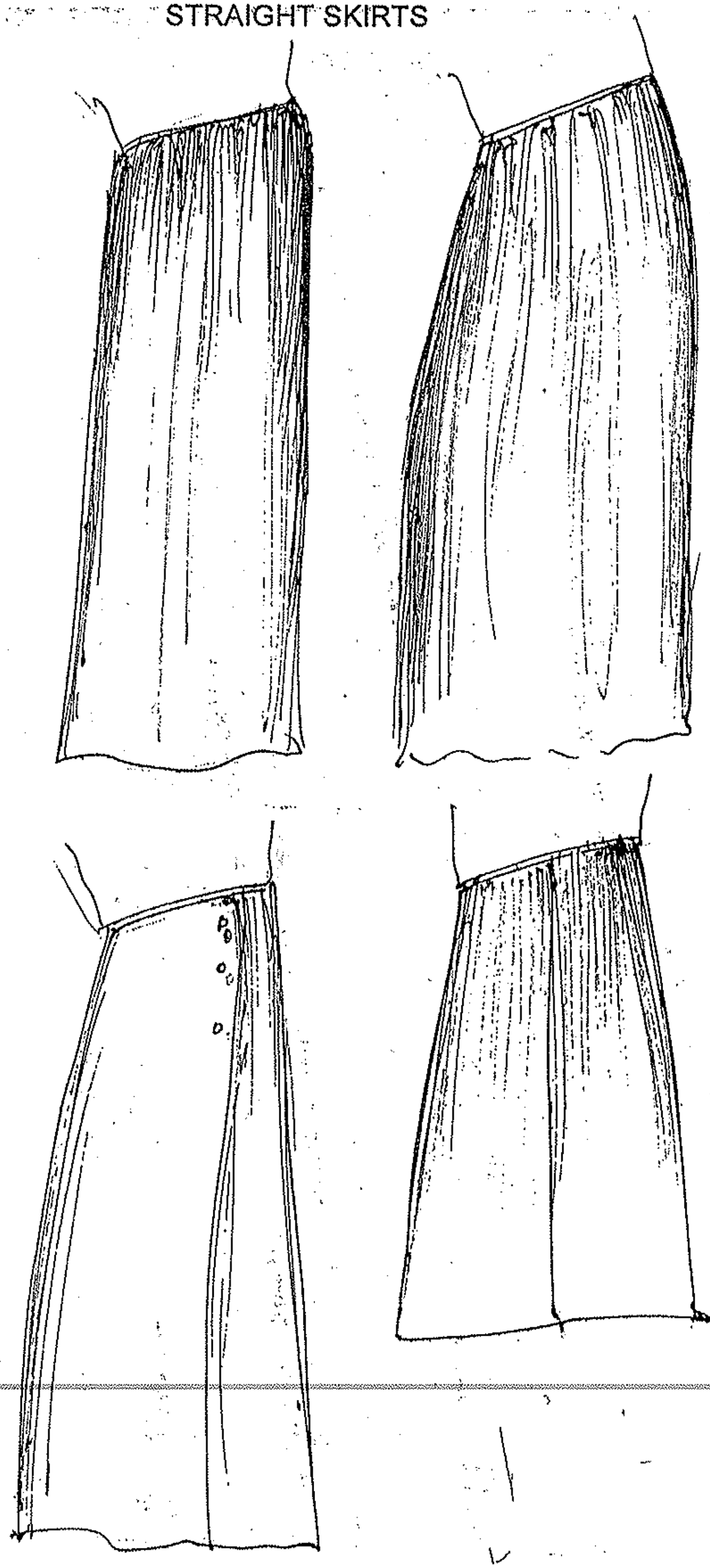

SKIRTS WITH SLITS

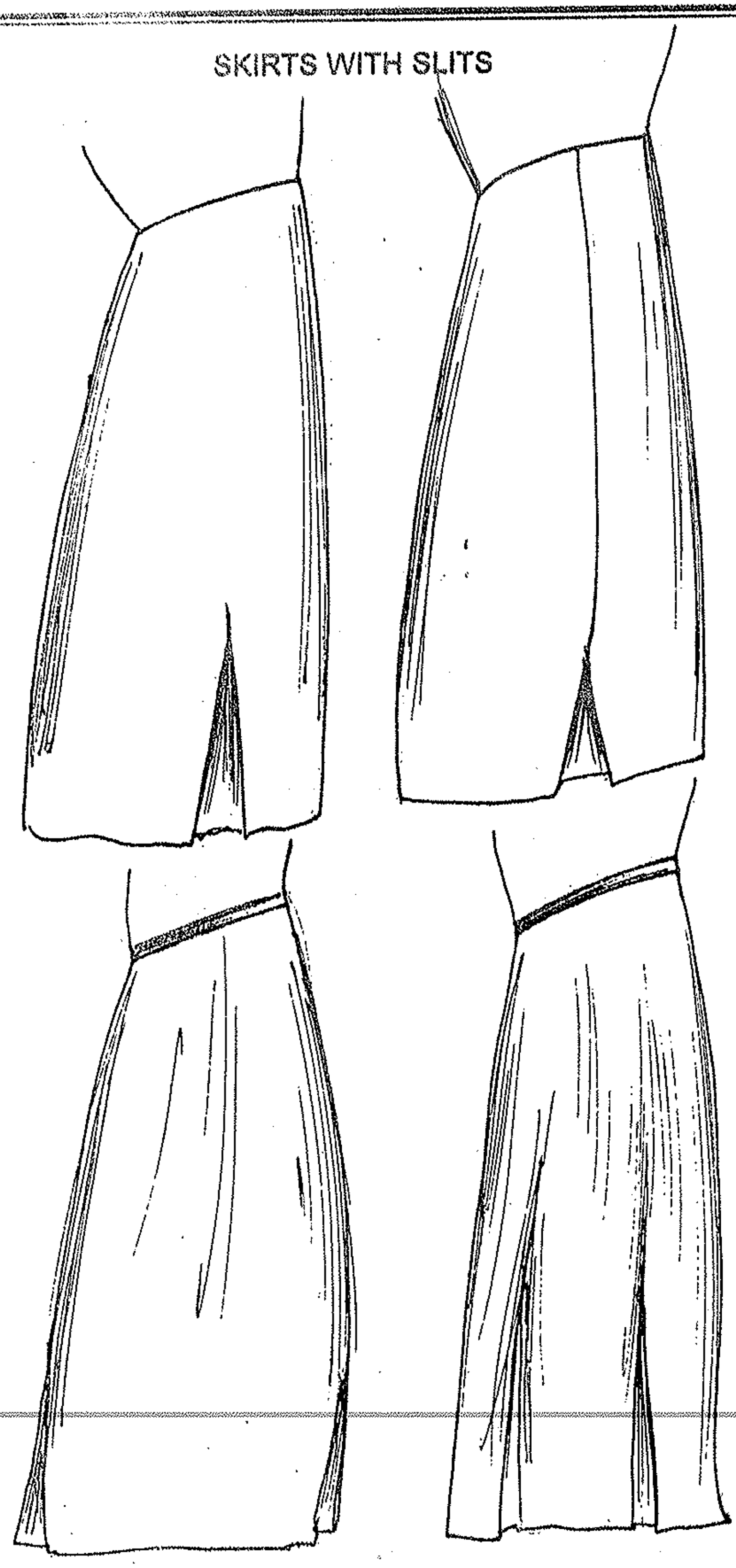

SHORT SKIRTS

LONG SKIRTS

PLEATED SKIRTS

HALF CIRCULAR SKIRTS AND CIRCULAR SKIRTS

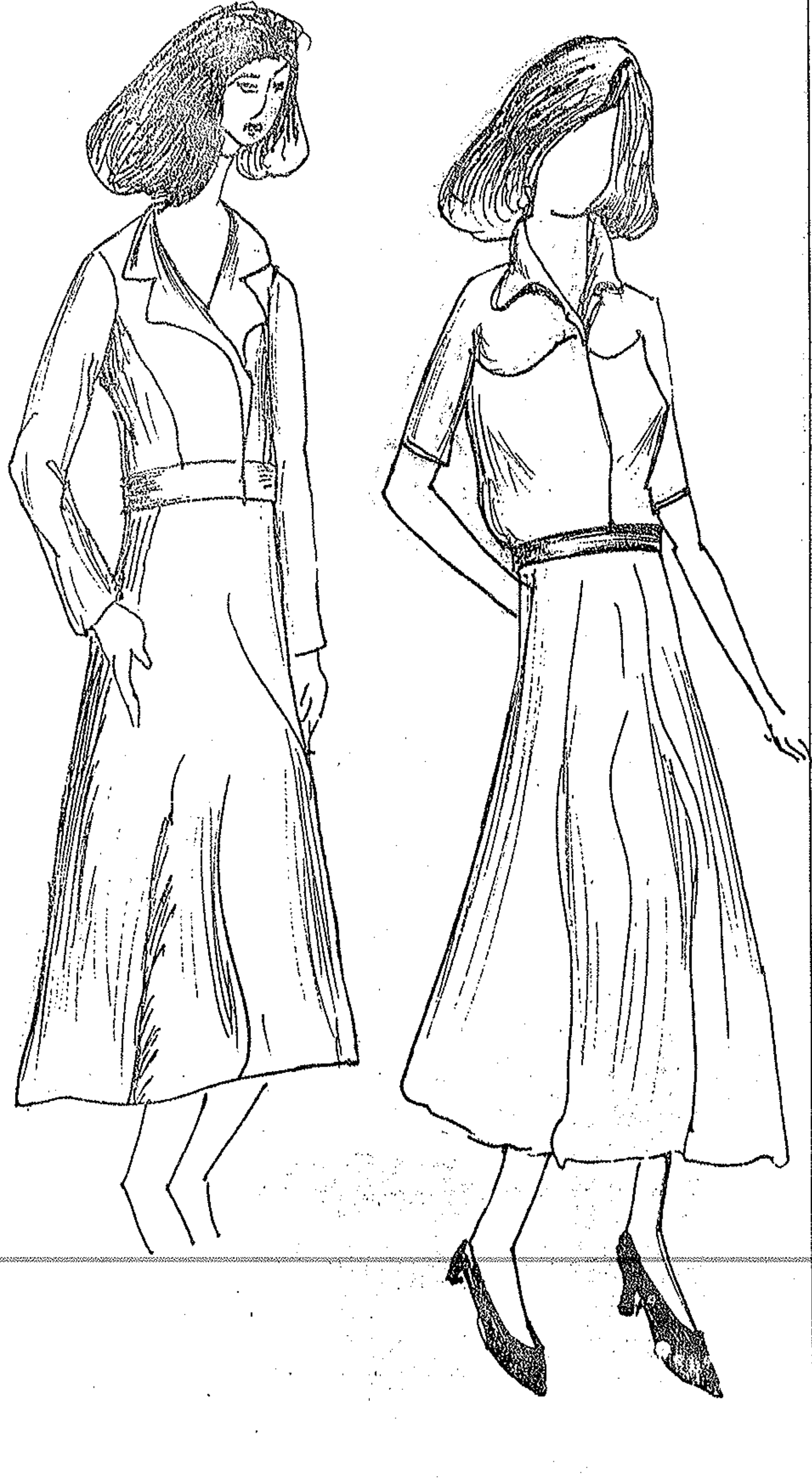

GORED SKIRTS OR PANNELED SKIRTS

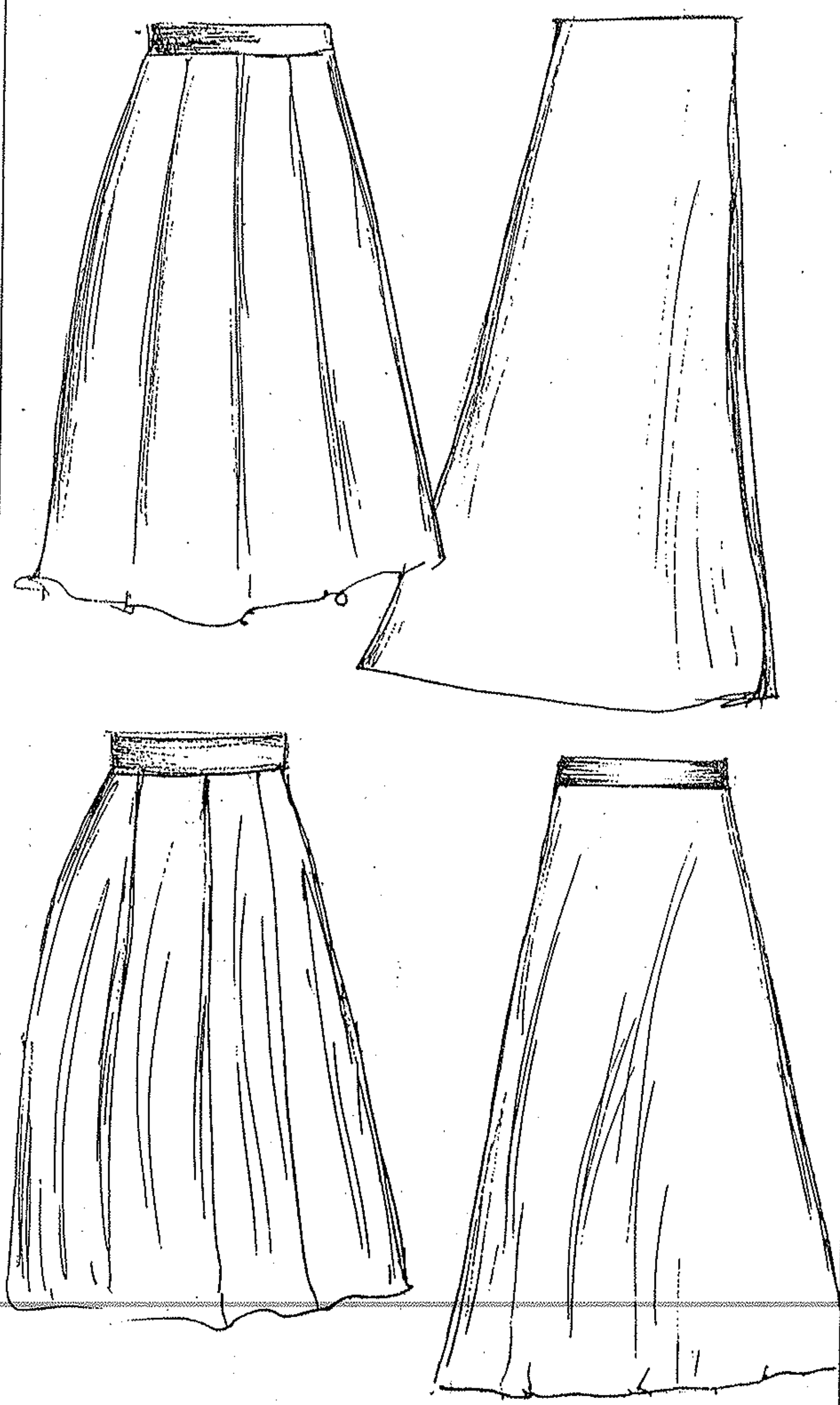

YOKED SKIRTS

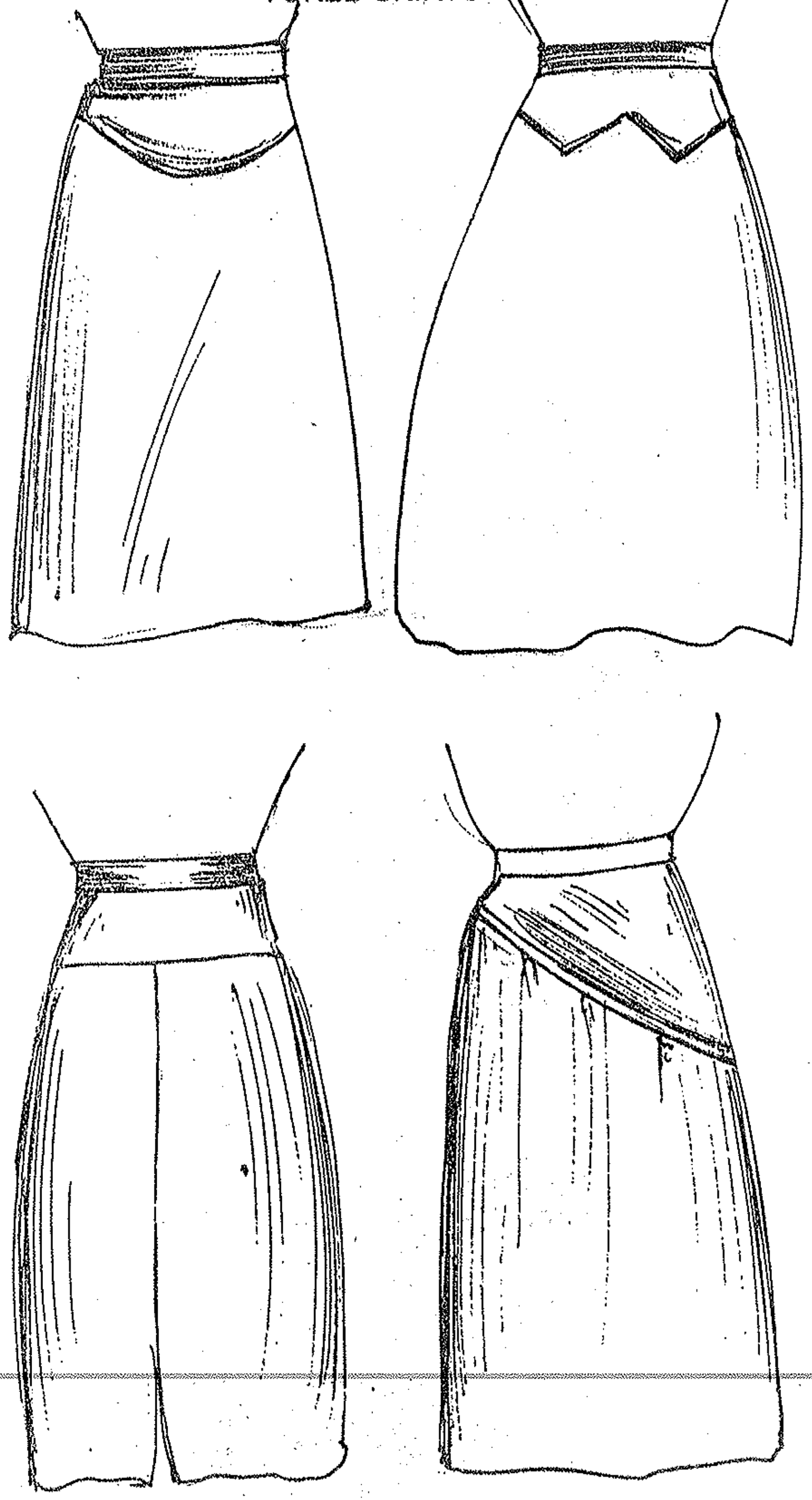

NOVELTY GATHERED SKIRT

GATHERED SKIRTS

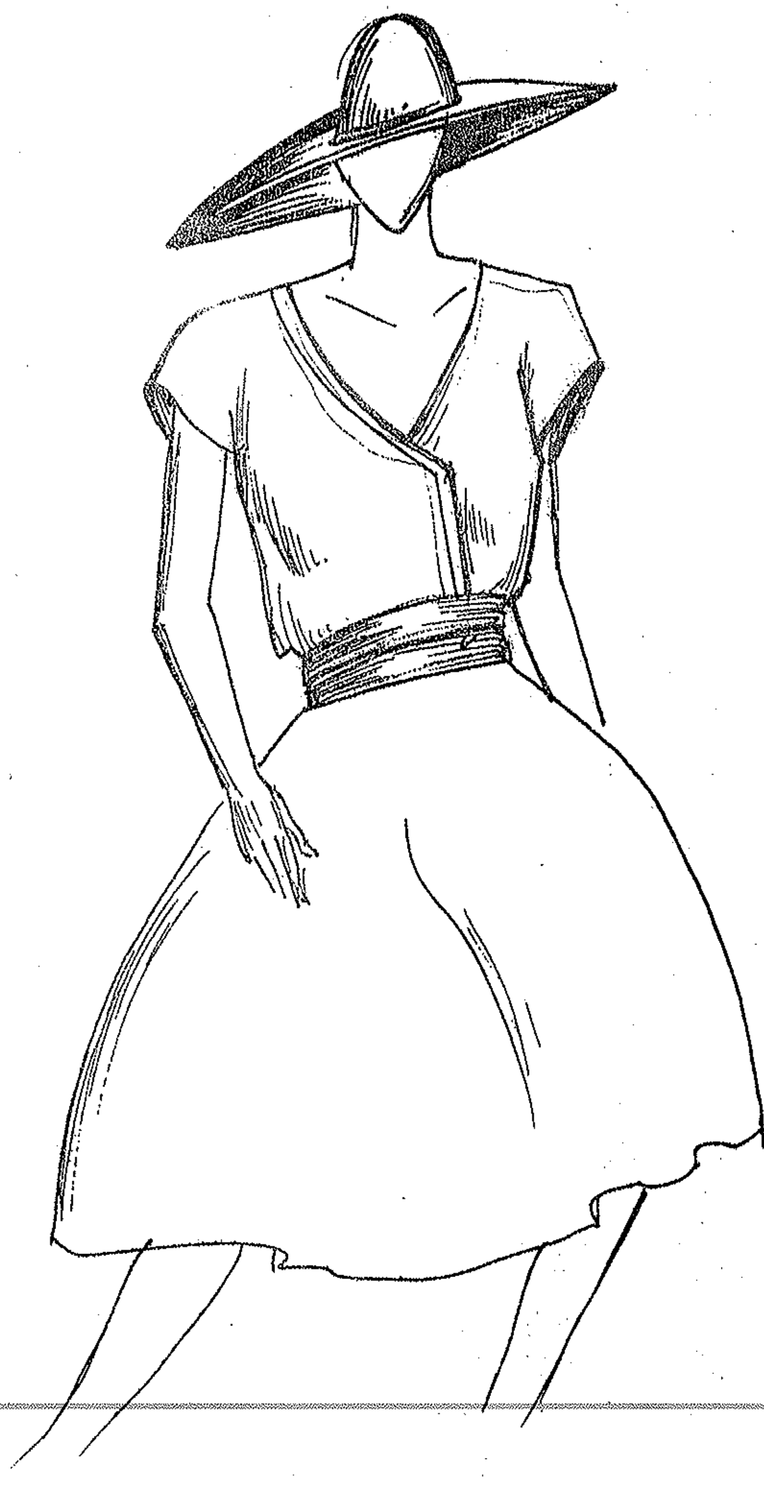

ROWS OF SHEARING AT THE WAIST

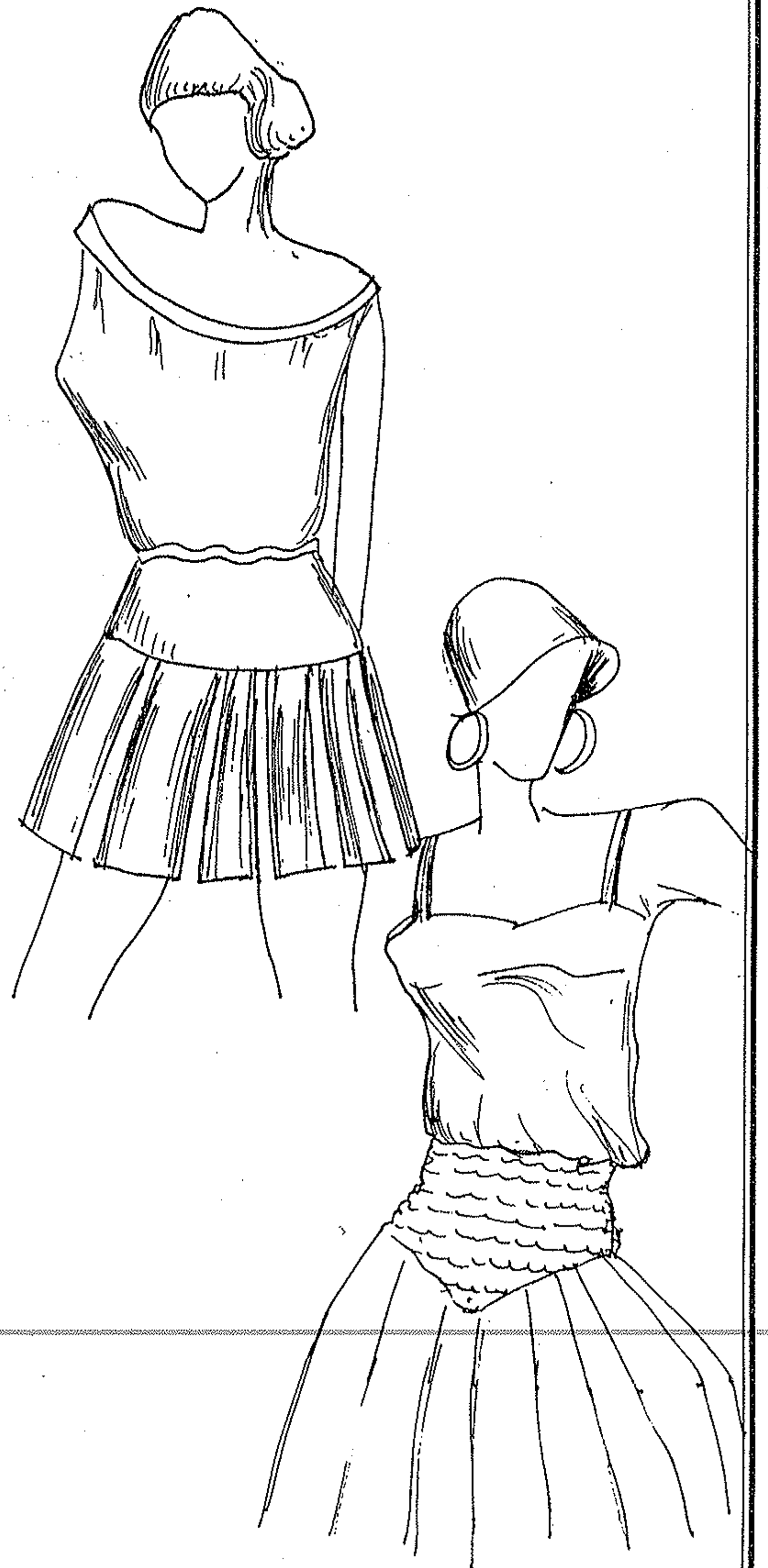

ROWS OF SHEARING AT THE BODICES

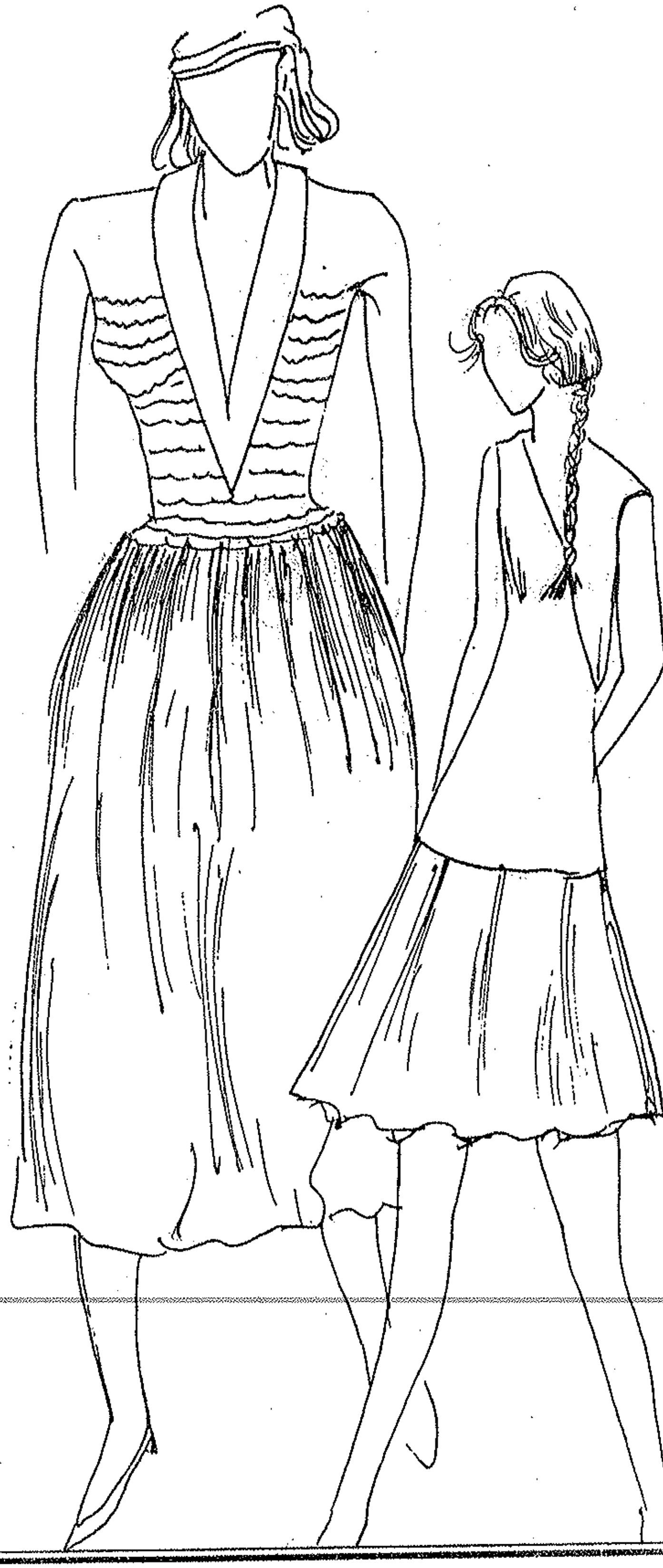

ROWS OF SHEARING AT THE YOKES

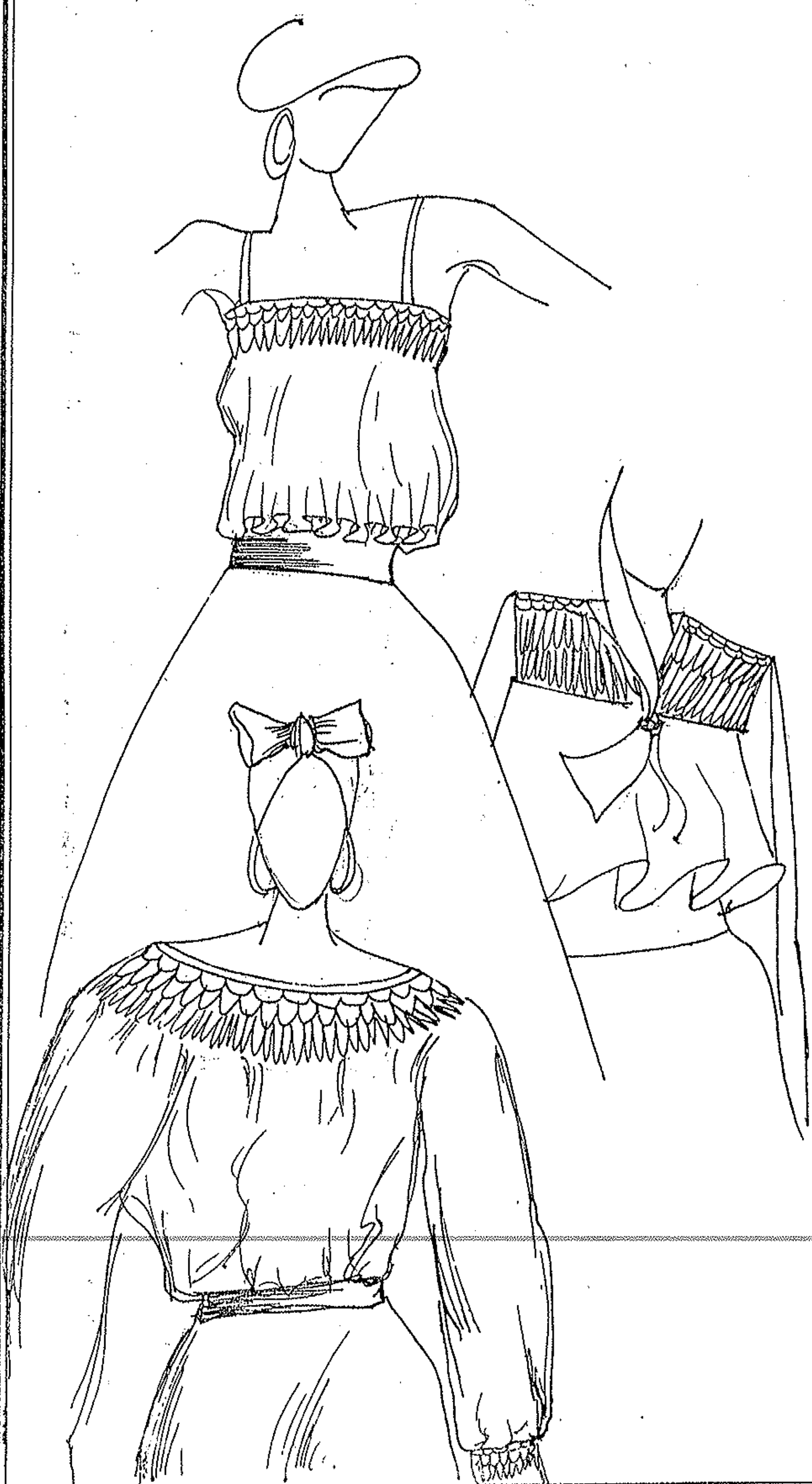

ROWS OF SHEARING AT THE TROUSER HEM

ROWS OF SHEARING AT THE NECKLINE

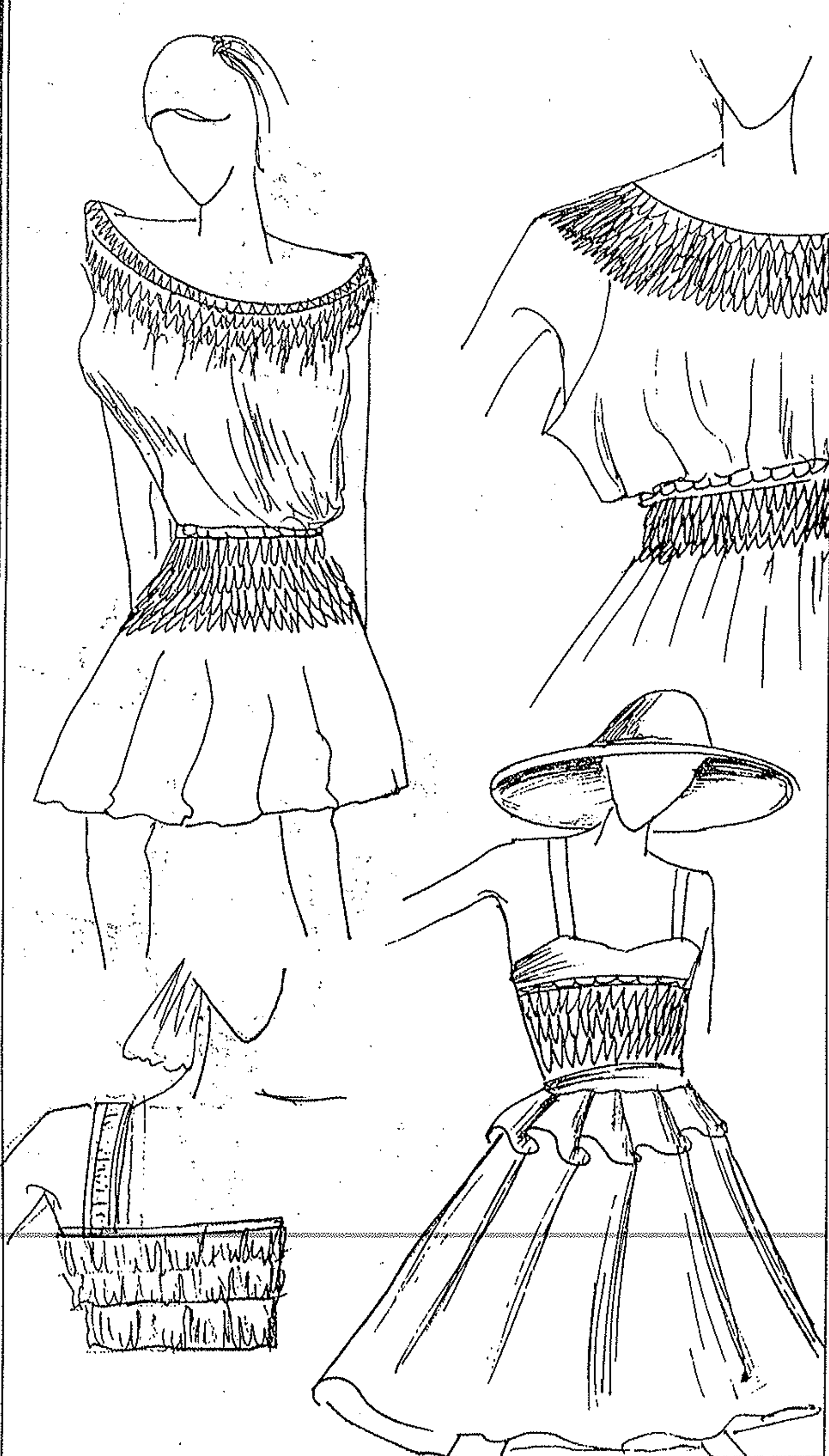

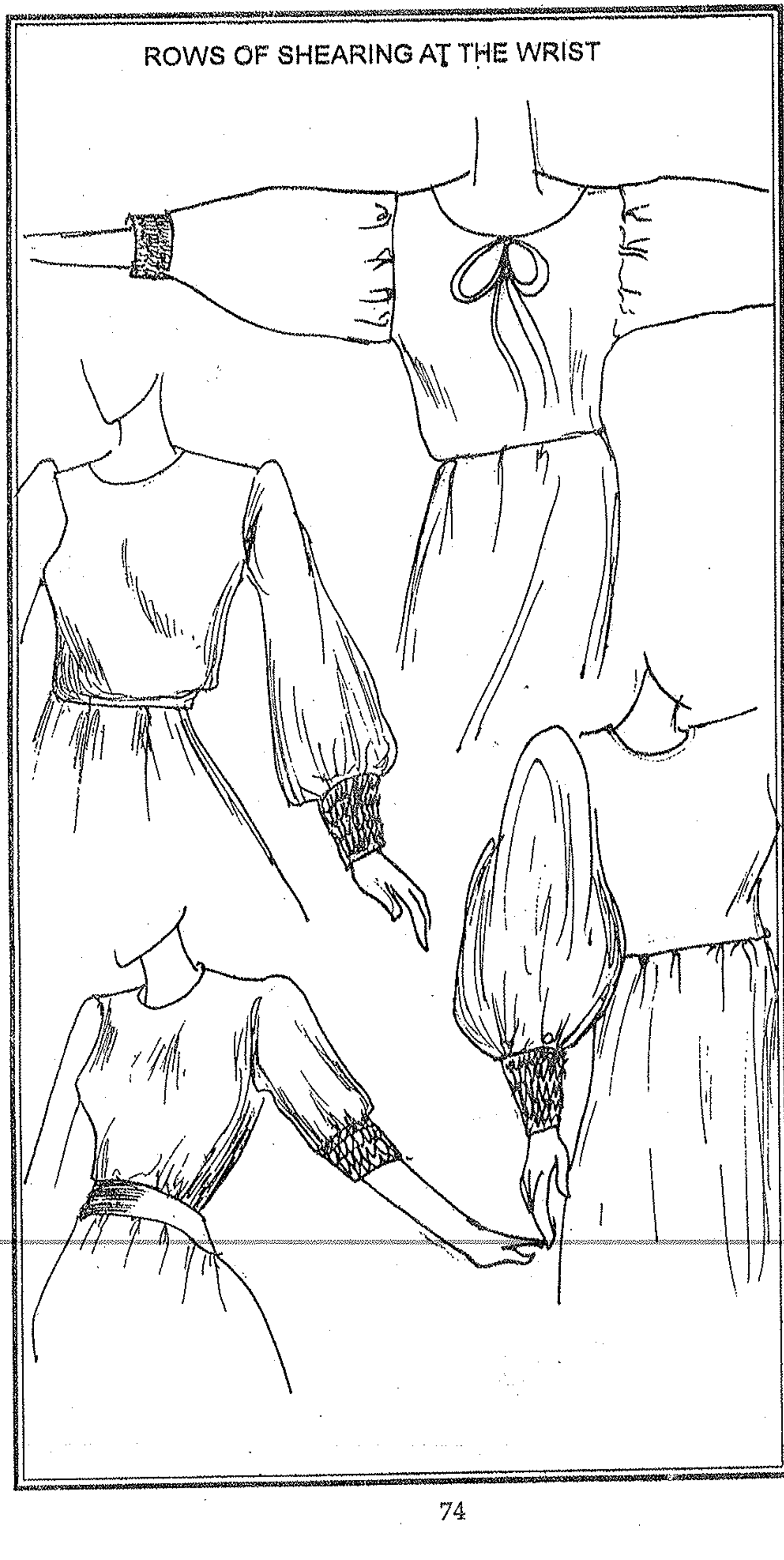
ROWS OF SHEARING AT THE WRIST

अभ्यास-

१– स्कर्ट के विभिन्न प्रकारों का एक चित्र–संग्रह तैयार करें।

२– विभिन्न प्रकार की शियरिंग का चित्र–संग्रह तैयार करें।

८.४ सारांश:-

विभिन्न प्रकार की स्कर्ट में स्ट्रेट स्कर्ट, स्लिट वाली स्कर्ट, शॉर्ट स्कर्ट, लॉग स्कर्ट, हाफ सर्कुलर स्कर्ट, सर्कुलर स्कर्ट, गोर्ड या पैनल्ड स्कर्ट, योक्ड स्कर्ट, नोवेल्टी गैदर्ड स्कर्ट, तथा गैदर्ड स्कर्ट आती हैं।

वस्त्र को सज्जापूर्ण फुलनेस देने के लिये शियरिंग की कई लाइनों का प्रयोग किया जाता है।

८.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न–१ पॉच प्रकार के प्लीट्स स्कर्ट रेखांकित करें।

प्रश्न–२ पॉच प्रकार के सर्कुलर स्कर्ट रेखांकित करें।

प्रश्न–३ पॉच प्रकार के स्ट्रेट स्कर्ट रेखांकित करें।

प्रश्न–४ पॉच विविध प्रकार की फ्रिल्ड स्कर्ट रेखांकित करें।

प्रश्न–५ शियरिंग के पॉच विविध रूप रेखांकित करें।

८.६ स्वाध्ययन हेतु

१– इन्साइक्लोपीडिया आफ फैशन डिटेल, द्वारा पैट्रिक जॉन आयरलैण्ड, प्रकाशक बी०टी० बैटस्फोर्ड लि० लन्दन।

DFD/[redacted] - 03

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

फैशन डिजाइनिंग

डिजाइन आइडिया-१

ब्लाक

७

सिलहौटीज की रचना

यूनिट-९

को-ऑर्डिनेट्स

यूनिट-१०

मिक्स एण्ड मैच

यूनिट-११

भूलभूत सिलहौटीज

यूनिट-१२

प्रेरणात्मक उत्पाद डिजाइन

ब्लाक-३

विषय परिचय

सिलहौटी का अर्थ किसी परिधान के प्रोफाइल, ड्रेस शैली के बाहरी रेखा से होता है। जो कि गैदर्ड, फ्लोइंग, हाई वेस्टेड, 'एस' आकार, नैरो आदि हो सकता है। उदाहरण के लिए, जिस समय नए सिन्थेटिक कपड़े प्रचलन में लाए जा रहे थें उसी समय चौड़े कंधे, छोटी कोर्सटेड कमर और भारी नितम्ब आदि चलन मे हुआ करते थे। कपड़े अत्यधिक हल्के और फ्लोवी हुआ करते थे।

यूनिट-९

को-ऑर्डिनेट्सः- एक सम्पूर्ण पोशाक की कल्पना करने की ओर उठा पहला कदम को–ऑर्डिनेट्स करना है। यह यूनिट आपको सिखाता है कि नेकलाइन्स को नेक लाइन्स के साथ, कॉलर को कॉलर के साथ, किनारी को किनारी के साथ और आस्तीन को आस्तीन के साथ कैसे को–आर्डिनेट अर्थात समायोजित करते हैं।

यूनिट-१०

मिक्स एण्ड मैचः-

जब हम एक पोशाक पहनते हैं तो सामान्यतः वस्त्रों को समायोजन करके पहनते हैं। ट्राउजर को टॉप से, स्कर्ट को ब्लाउज से समायोजित करते हैं। यह यूनिट आपको सिखाएगा कि मिक्स एण्ड मैच करके कैसे नये प्रभाव की रचना कर सकते हैं।

यूनिट-११

बेसिक सिलहौटीजः-

बदलते फैशन के साथ परिधानों के सिलहौटीज भी बदलते रहते हैं। यह यूनिट, १६ वीं सदी के बदलते सिलहौटीज में झाँकने का प्रयास है।

यूनिट-१२

प्रेरणात्मक उत्पाद डिजाइनः-

फैशन डिजाइनिंग एक उच्च तकनीकी क्षेत्र बन गया है और हर अवसर के लिये पोशाकें डिजाइन की जाती है। प्रेरणात्मक उत्पाद डिजाइन विद्यार्थियों को सिखाता है कि बाजार में विक्रय होने वाले उत्पादों के लिए पोशाकें कैसे डिजाइन की जाएँ।

संरचना

६.१ प्रस्तावना

६.२ उद्देश्य

६.३ को–आर्डिनेट्स

६.४ सारॉश

६.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

६.६ स्वाध्ययन हेतु

६.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

एक सम्पूर्ण पोशाक की कल्पना की ओर उठा पहला कदम कोऑर्डिनेट्स करना है। यह यूनिट आपको बताता है कि गले को गले के साथ, कॉलर को कॉलर, किनारी को किनारी और आस्तीन को आस्तीन के साथ कैसे को–ऑर्डिनेट अर्थात समायोजित करते हैं।

६.२ उद्देश्यः-

एक फैशन डिजाइनर के लिए पूर्ण पोशाक की कल्पना कर पाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह यूनिट पोशाक के हर भाग को अलग–२ केन्द्रित कर चर्चा करता है।

६.३ को-ऑर्डिनेट्सः-

फैशन अध्ययन में को–ऑर्डिनेट्स का अर्थ है, पोशाक के किसी एक भाग पर डिजाइनिंग के एक से अधिक तत्वों का प्रयोग करना।

यदि किसी विशिष्ट पोशाक में दो गले हों तो उसे कैसे पहना जाना चाहिए। यदि आप अधिक गहरे गले, ऊँचे गले के अन्दर पहन लेगें, तो गहरा गला दिखेगा नहीं जब तक कि ऊपर वाले वस्त्र का कपड़ा पारदर्शी न हो। फिर आपको यह निश्चय करना होगा कि आपके पास क्या विकल्प हैं। व आपका उद्देश्य कौन सा रूप लाना

है।

तो अब हम देखते हैं कि विभिन्न प्रकार के को–ऑर्डिनेट्स कौन से हैं.........

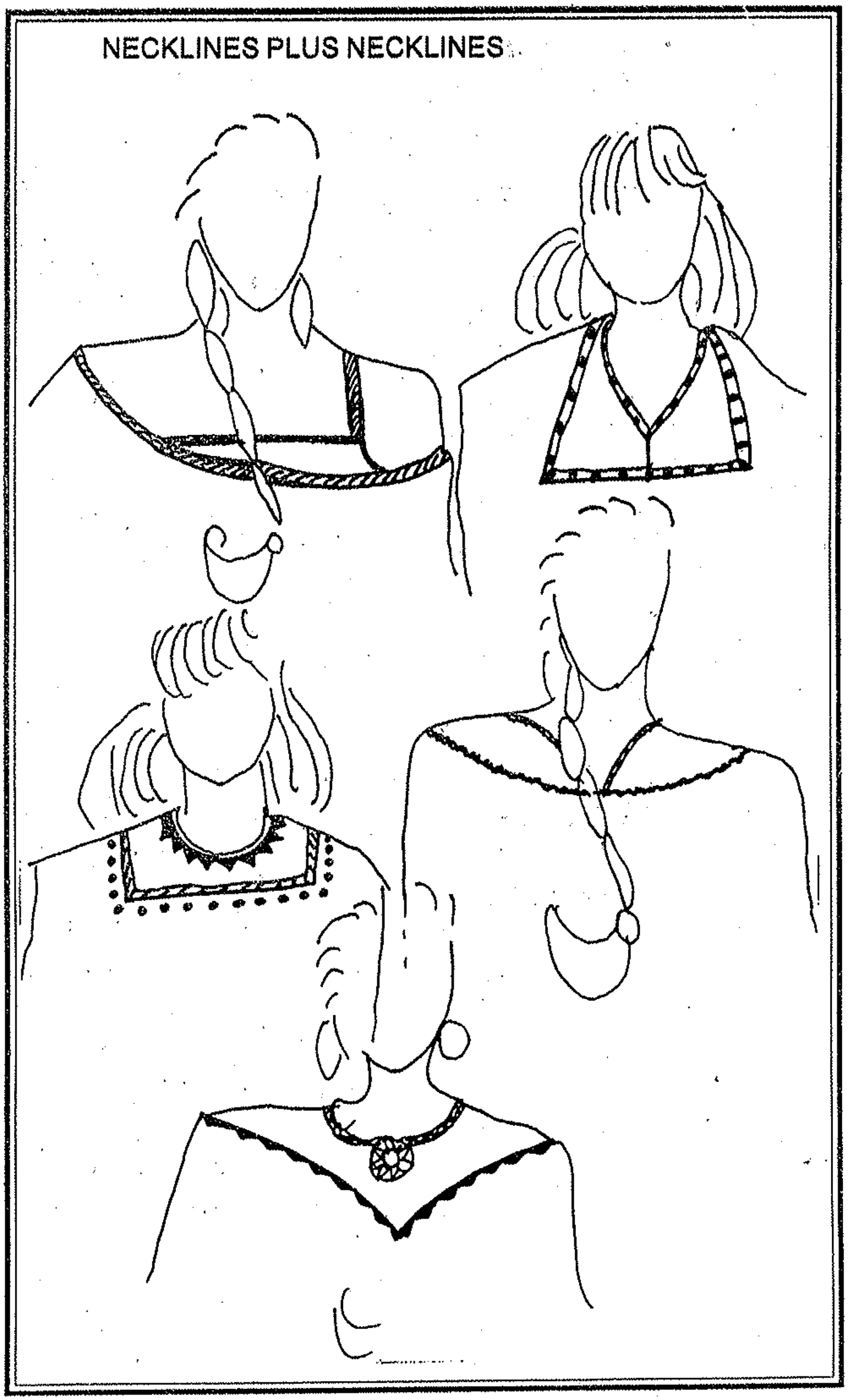

NECKLINES PLUS NECKLINES PLUS NECKLINES

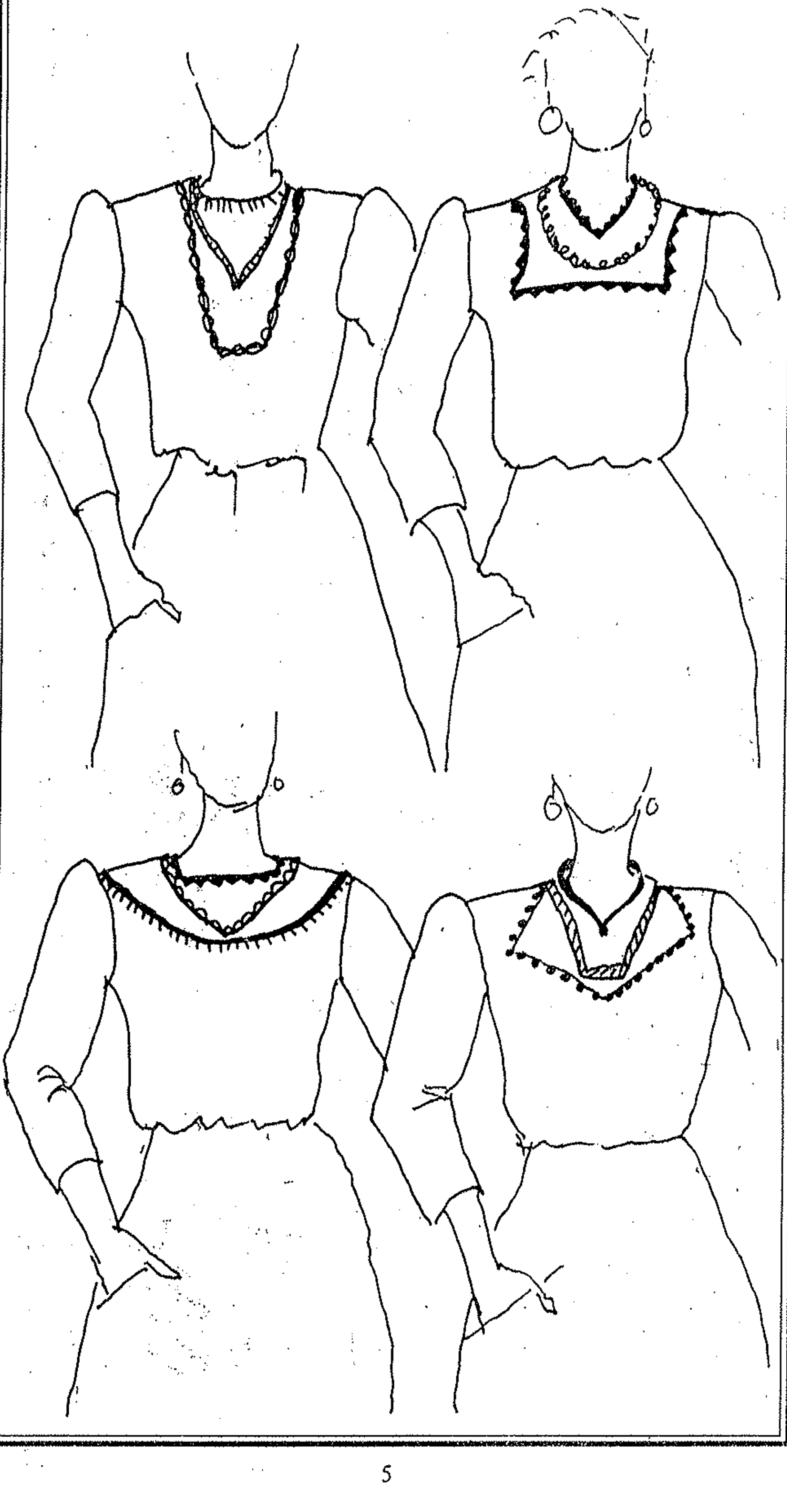

COLLARS PLUS COLLARS

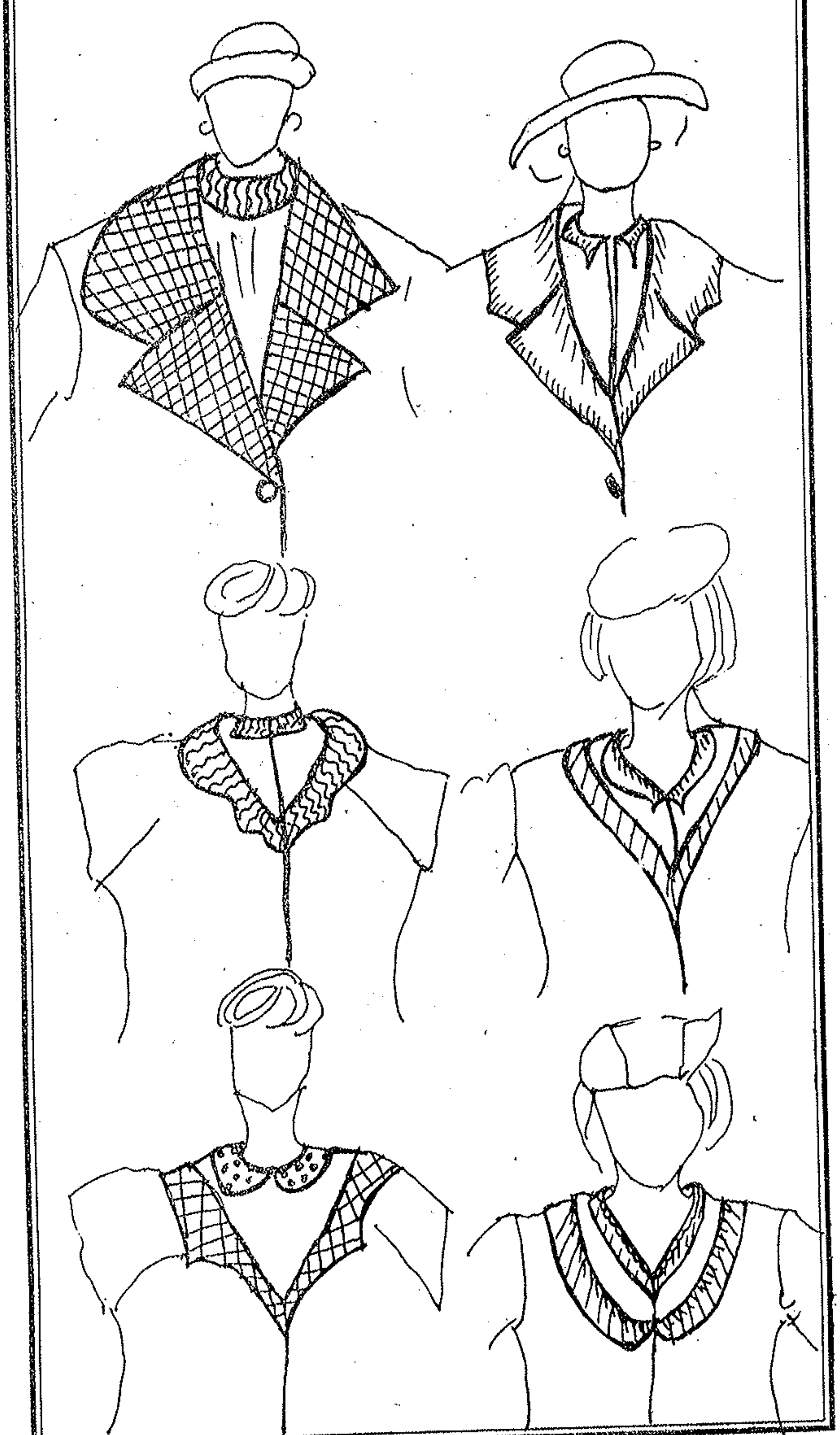

COLLARS PLUS COLLARS PLUS COLLARS

NECKLINES PLUS COLLARS

NECKLINES PLUS NECKLINES PLUS COLLARS

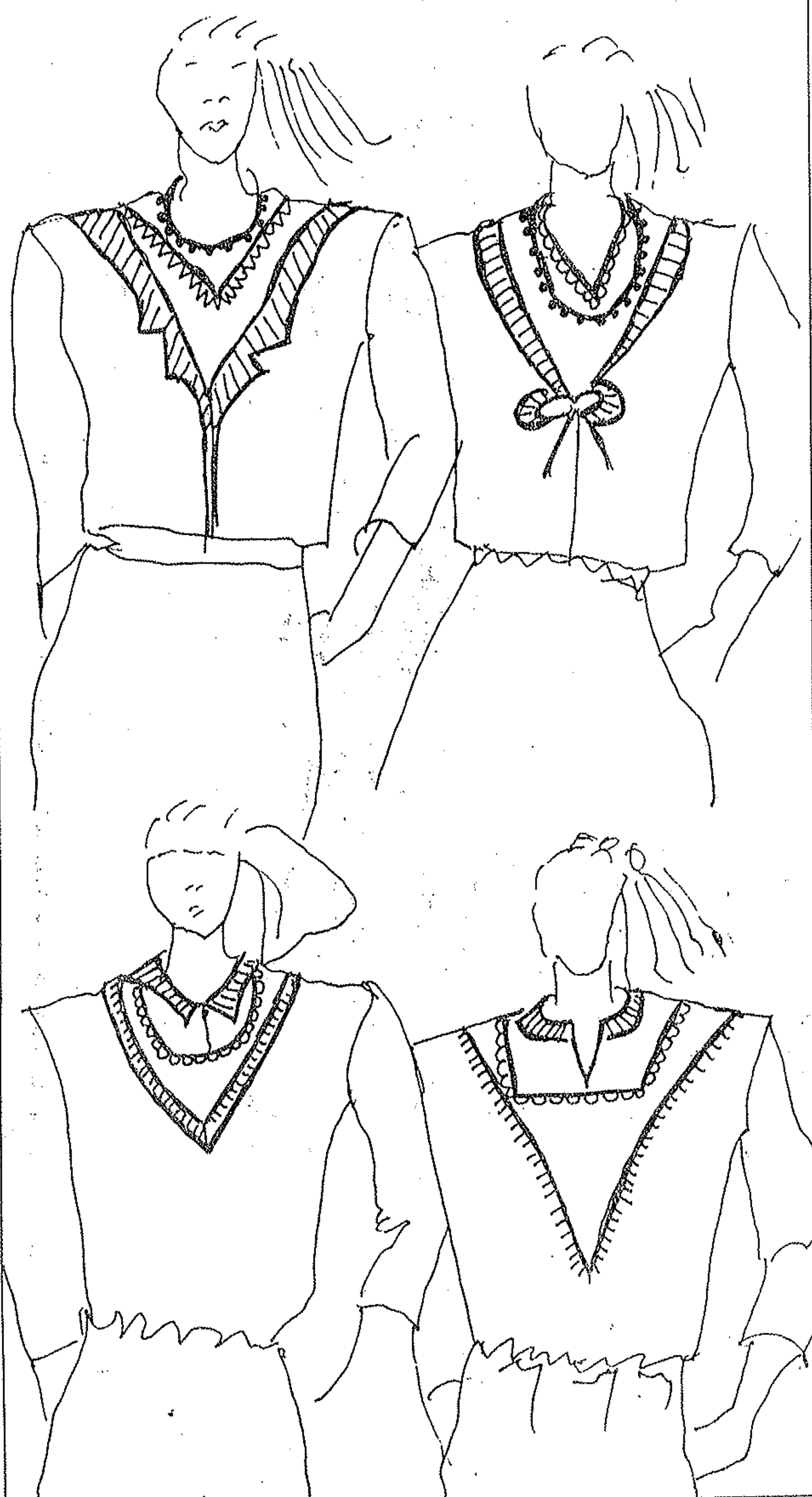

COLLARS PLUS NECKLINES PLUS COLLARS

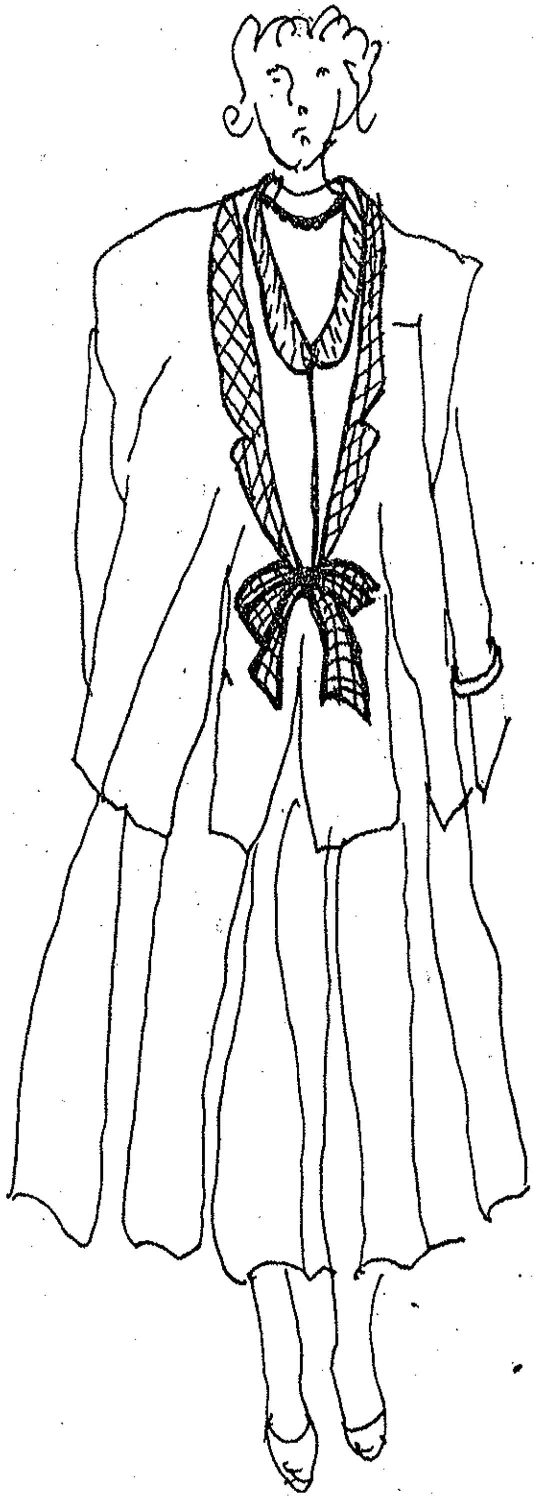

HEMLINES PLUS HEMLINES

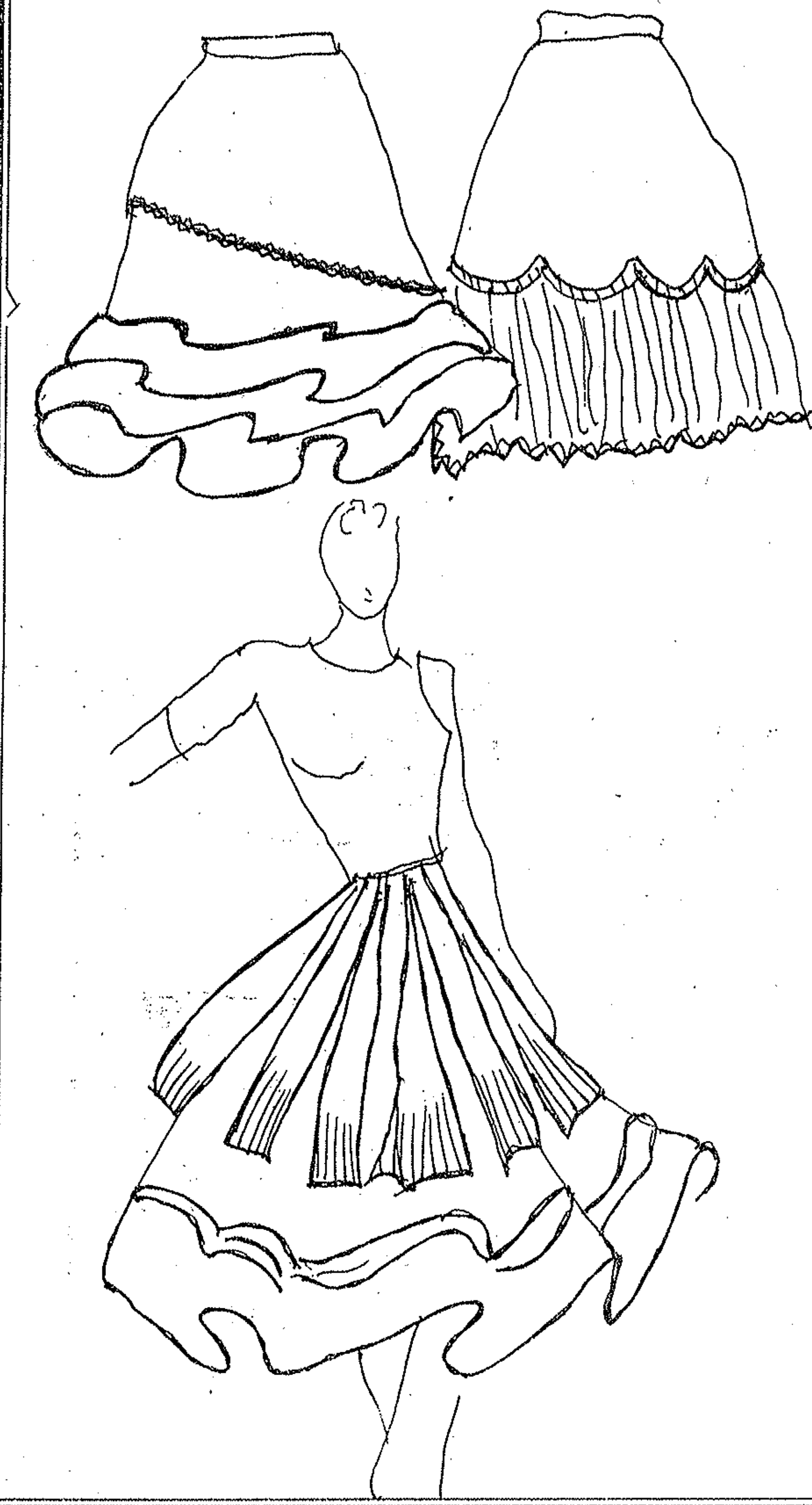

HEMLINES PLUS HEMLINES PLUS HEMLINES

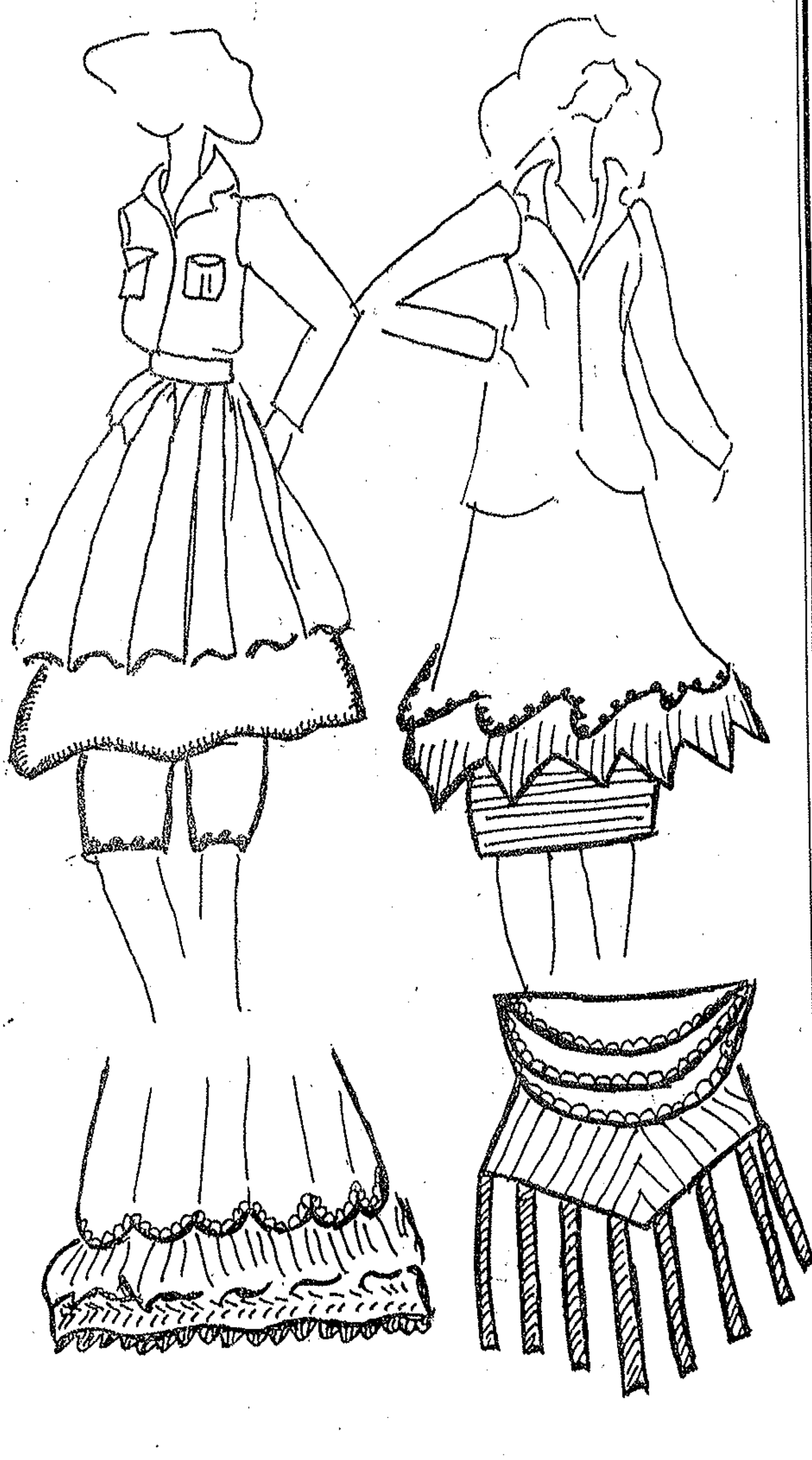

SLEEVES PLUS SLEEVES

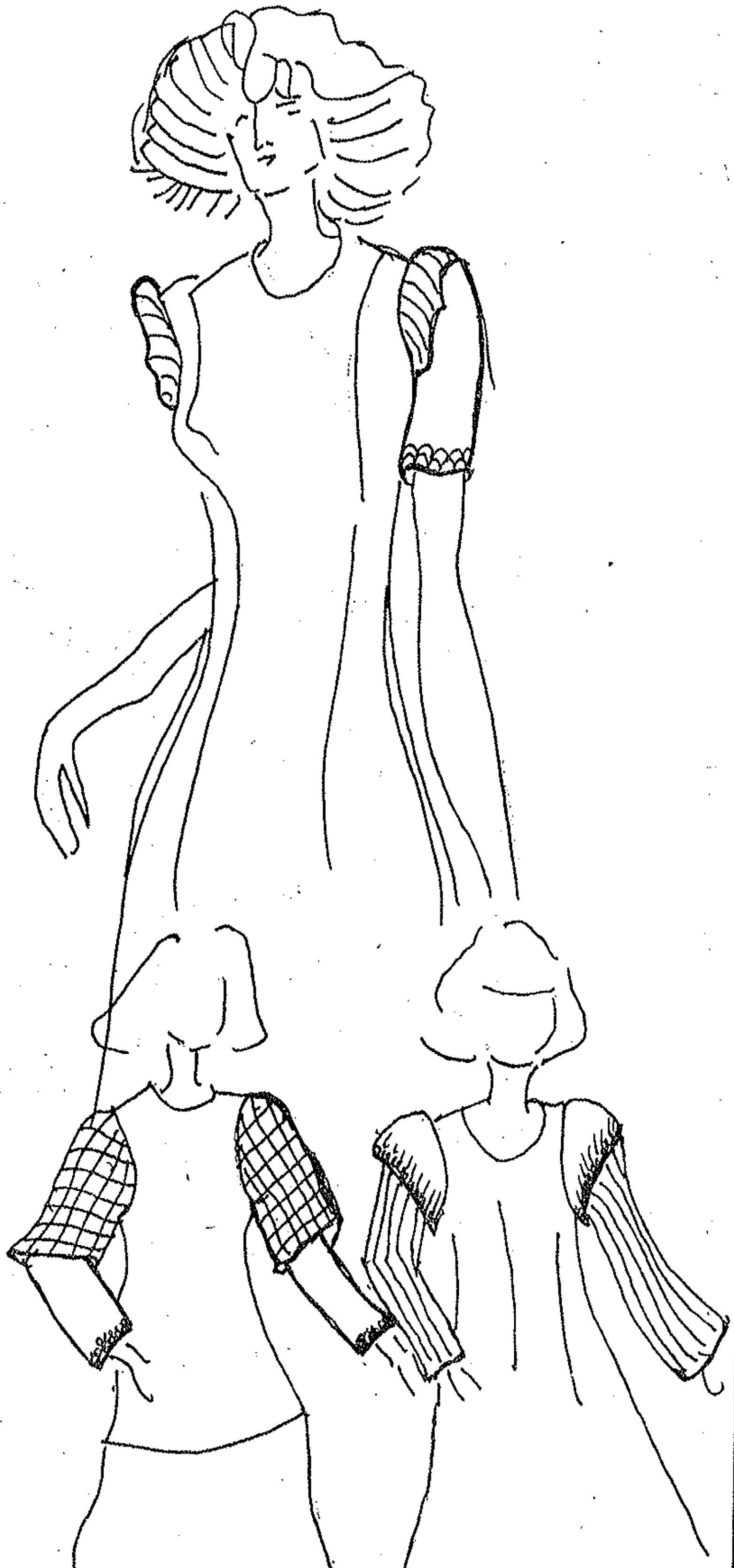

SLEEVES PLUS SLEEVES PLUS SLEEVES

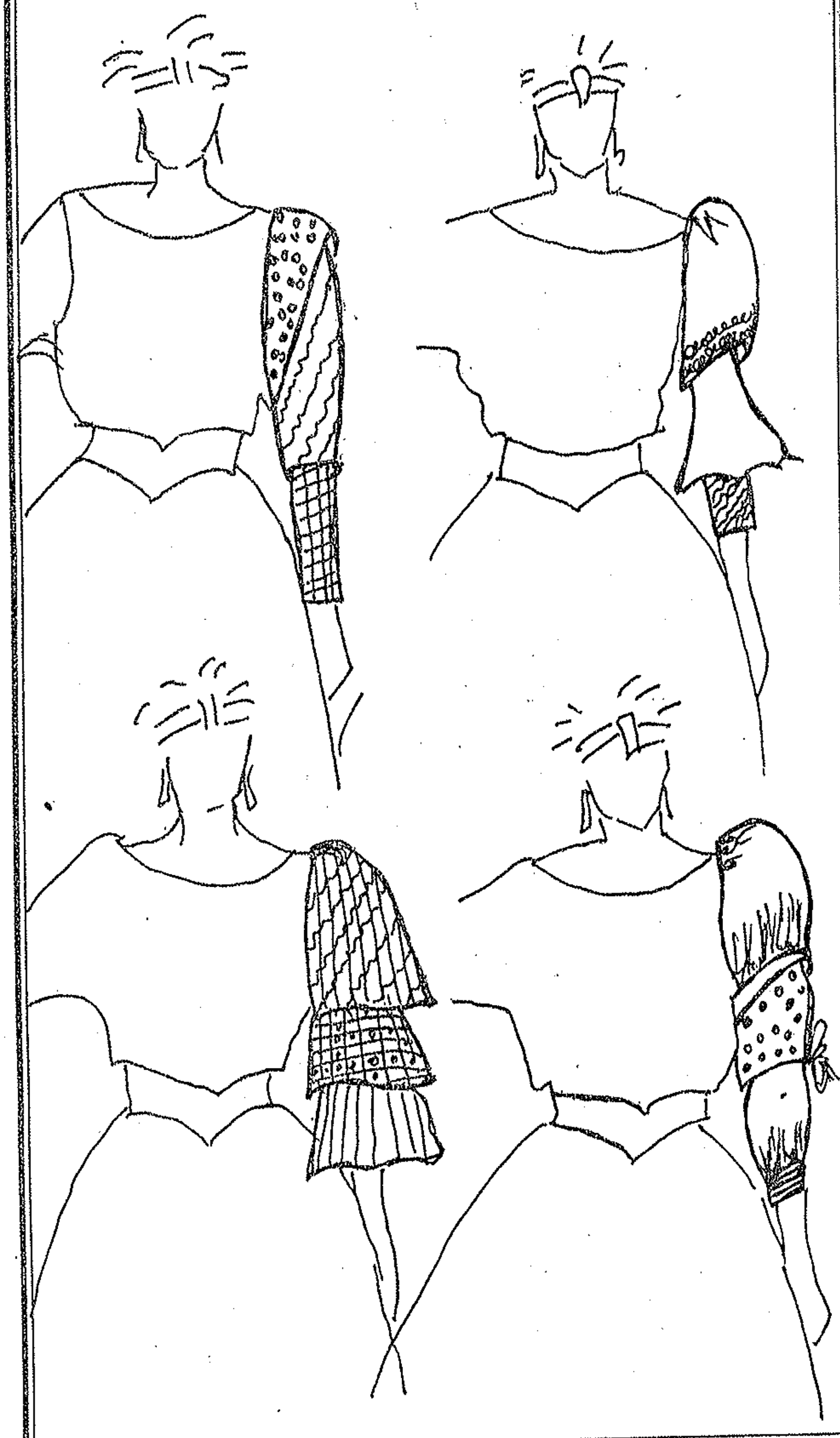

FRILLS PLUS SLEEVES

FRILLS PLUS SLEEVES PLUS SLEEVES

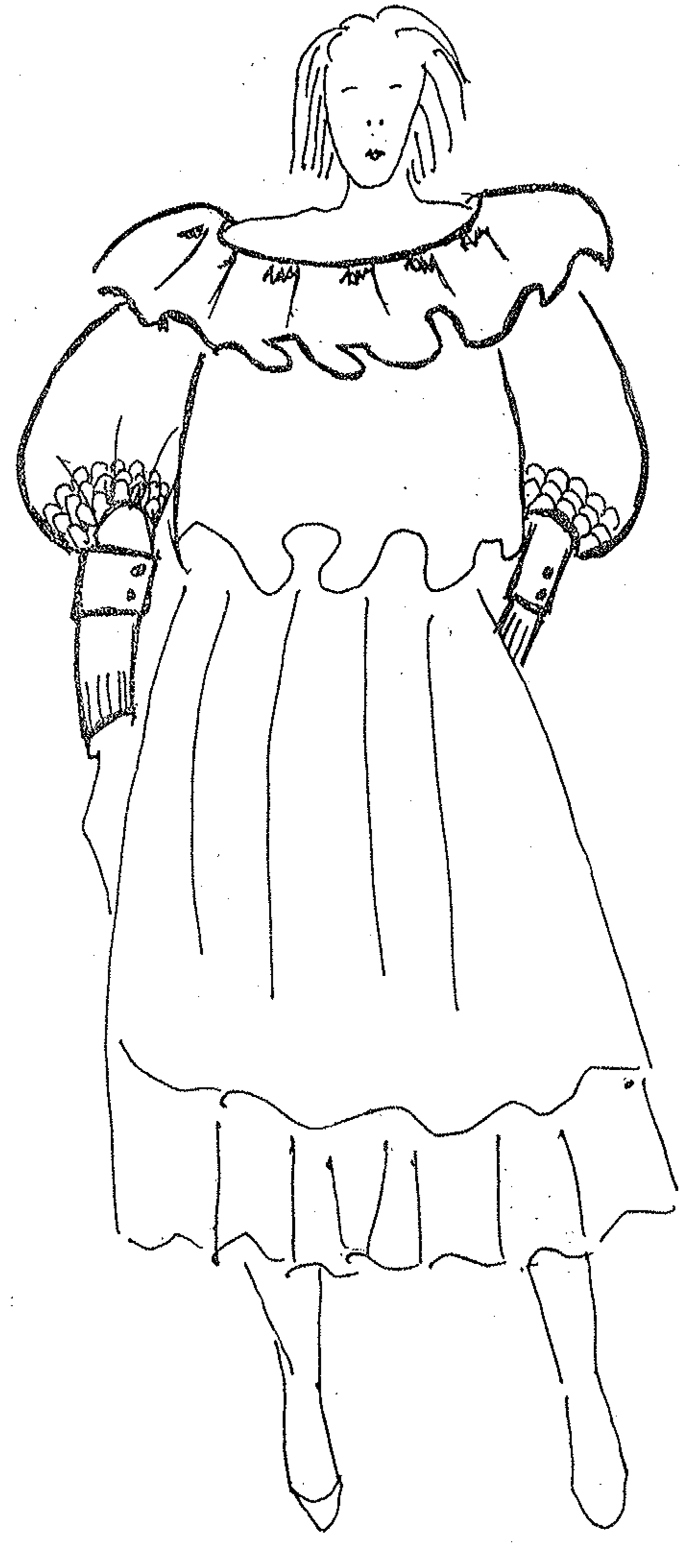

FRILLS PLUS FRILLS PLUS SLEEVES

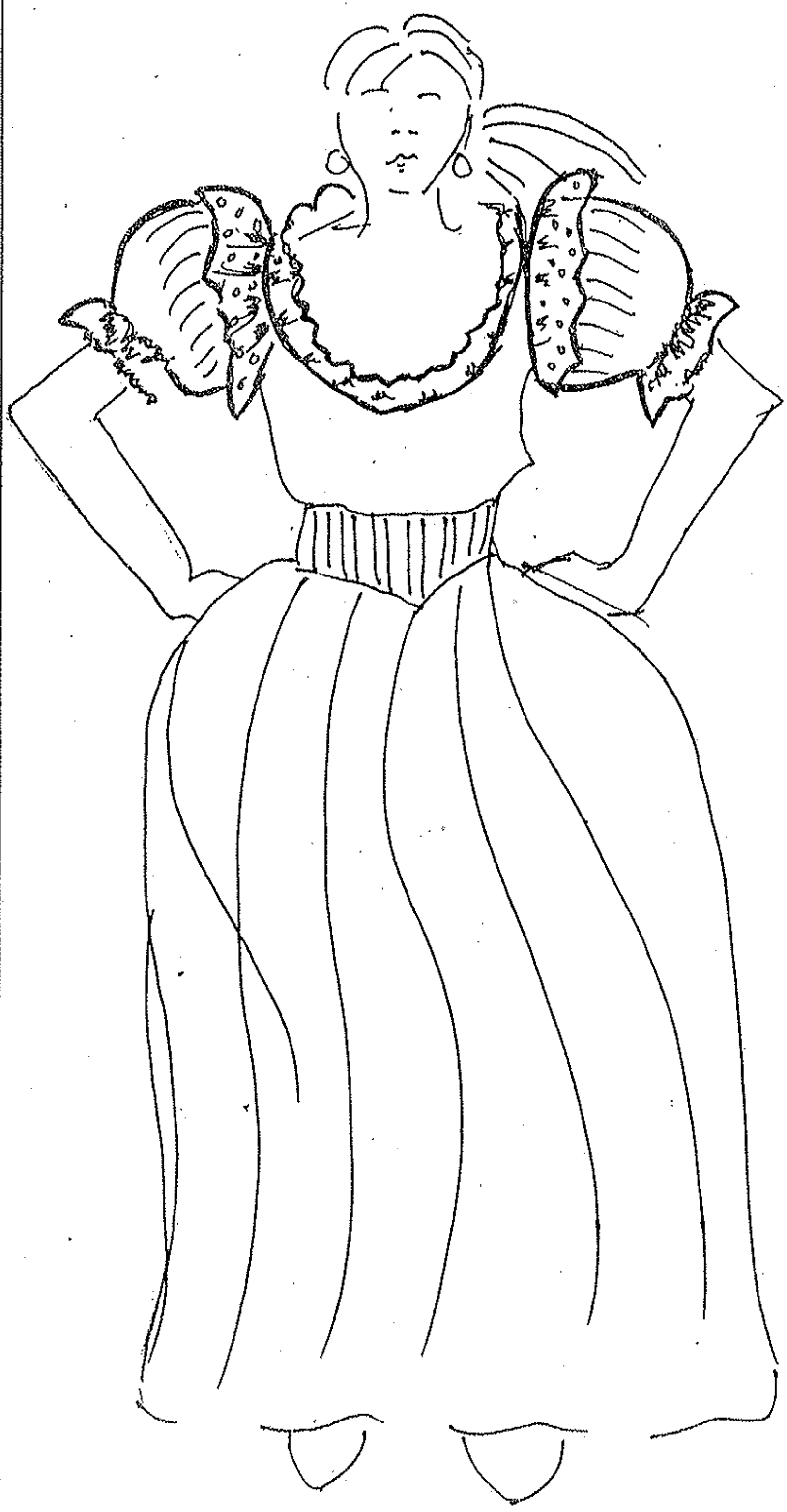

WAISTLINE PLUS WAISTLINE

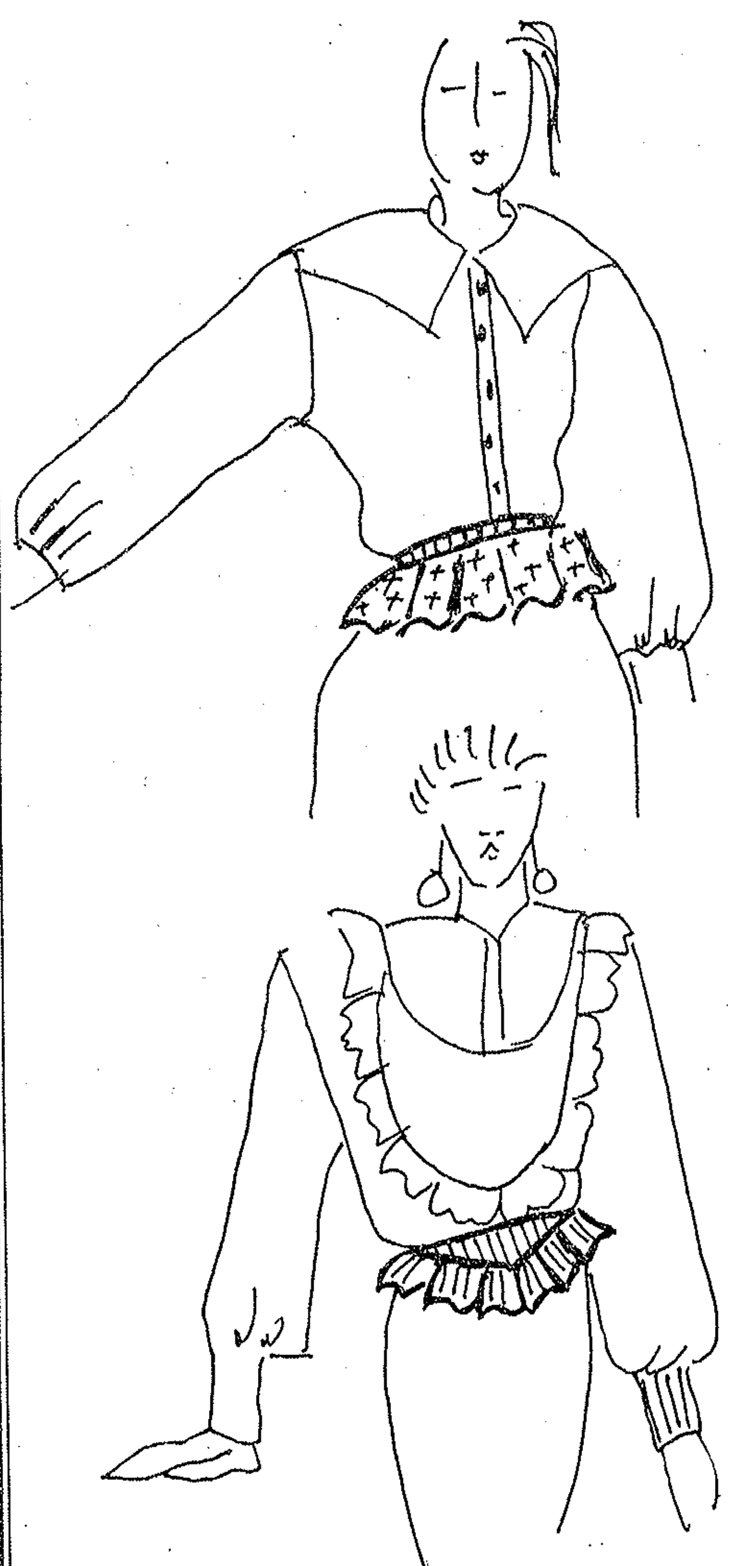

WAISTLINE PLUS WAISTLINE PLUS WAISTLINE

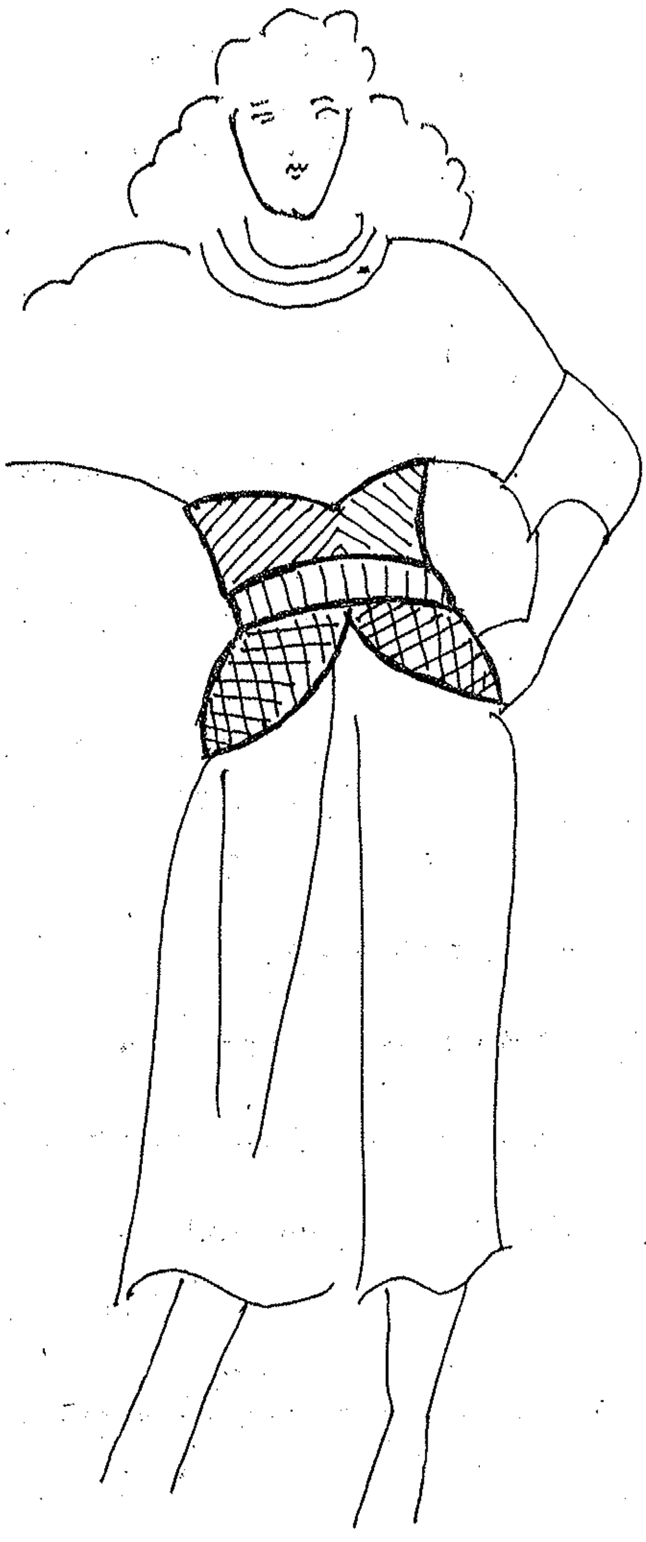

अभ्यास-

१— अपना वार्डरोब देखें व अपने कपड़ों में को–ऑर्डिनेट्स खोजें।

२— फैशन पत्रिकाओं को देखें व को–आर्डिनेट्स की पहचान करें।

६.४ **सारांशः-**

को–ऑर्डिनेट्स करना, सम्पूर्ण पोशाक की कल्पना करने की ओर पहला कदम बढ़ाने जैसा है।

फैशन डिजाइनर के लिए एक सम्पूर्ण पोशाक की कल्पना कर पाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

फैशन अध्ययन में को–ऑर्डिनेट्स का अर्थ, पोशाक के किसी एक भाग में डिजाइनिंग के एक से अधिक तत्वों का प्रयोग करना है।

६.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न–१ को–ऑर्डिनेट्स से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न–२ गले के साथ गले के चार को–ऑर्डिनेट्स रेखांकित करें।

प्रश्न–३ कॉलर के साथ कॉलर के चार को–ऑर्डिनेट्स रेखांकित करें।

प्रश्न–४ हेम लाइन के साथ हेम लाइन के चार को–ऑर्डिनेट्स रेखांकित करें।

प्रश्न–५ आस्तीन के साथ फ्रिल के चार को–ऑर्डिनेट्स रेखांकित करें।

६.६ **स्वाध्ययन हेतु**

१— इन्साइक्लोपीडिया आफ फैशन डिटेल, द्वारा पैट्रिक जॉन आयरलैण्ड, प्रकाशक बी०टी० बैटस्फोर्ड लि० लन्दन।

संरचना

१०.१ यूनिट प्रस्तावना

१०.२ उद्देश्य

१०.३ मिक्स एण्ड मैच

१०.४ सारॉश

१०.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

१०.६ स्वाध्ययन हेतु

१०.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

जब हम कोई परिधान पहनते हैं, हम प्रायः कपड़ों को समायोजित करके पहनते हैं। ट्राउजर के साथ मेल खाते टाप्स, ब्लाउज के साथ मेल खाते स्कर्ट। यह यूनिट आपको बताता है कि मिक्स और मैच करके नए रूप की रचना कैसे की जाती है।

१०.२ उद्देश्यः-

अपने ग्राहक को अच्छी पोशाक पहनाना अधिक मेहनत का कार्य नहीं है और न ही इसे मूल्यवान होने की आवश्यकता है। इस यूनिट का उद्देश्य आपको यह सिखाना है कि वस्त्रों को मिक्स व मैच करके नया रूप कैसे दे सकते हैं।

१०.३ मिक्स एण्ड मैचः-

अच्छी ड्रेसिंग के लिए कुछ योजना बनाने तथा समायोजन का अच्छा बोध होने की आवश्यकता होती है। अपनी आलमारी को व्यवस्थित कर, पुराने कपड़ों का ही प्रयोग करके नया रूप रचा जा सकता है।

ऐसा करने के लिए, व्यवस्था व कैपसूल कान्सेप्ट, दो तरीके हैं, अर्थात कई आध ाारभूत तत्वों को रंग, कपड़े, आकार व शैली के आधार पर को–ऑर्डिनेट अर्थात समायोजित करना। उदाहरणार्थ–कार्यालय के लिए व्यक्ति को कैसे वस्त्र पहनने चाहिए

अथवा किसी यात्रा के लि । क्या ले जाना चाहिये या इवनिंग वियर के लिए कौन से रंग व तौलियाँ बेहतर होंगी।

एक कार्यकारी वार्डरोब फास्ट व फैशन से परे होती है। यह दर्शाती है कि वस्त्रों में अपने निवेश का अच्छा लाभ आप किस प्रकार उठा सकते हैं। यह वार्डरोब निर्माण का सुझाव तथा मेक–अप टिप्स लेकर, एक कैपसूल कान्सेप्ट का निर्माण करता है, एक सरल डिजाइन जो बहुत सारे समय, पैसा व दृढ़ता की स्थिति की बचत करता है।

कार्यकारी वार्डरोब के साथ आप किसी भी स्थिति के लिये तैयार रह सकते हैं और सुनिश्चित रह सकते हैं कि आप अवसरानुसार ड्रेस्ड हैं।

पोशाक हमारे आस–पास के लोगों के लिए एक क्यू है। यह अजनबियों को हमें पहचानने में सहायक होता है तथा हमारे परिचितों तथा दोस्तों को हमारी छवि को सशक्त करते हैं। लोग पहले इसे ही देखते तथा याद रखते हैं। यह जान लेना कि जो छवि आप बनाना चाहते हैं, उसके लिये कैसे कपड़े पहनने से उस छवि को जल्दी बना पायेगें। हम कान्सेप्ट कैपसूल को एक उदाहरण द्वारा समझने का प्रयास करते हैं। एक बार यदि आप कॉलेज या कार्यालय जाना प्रारम्भ कर दें तो आपको कम से कम पॉच दिन के लिये अच्छी पोशाकें चाहिए।

यह मानकर कि आप अपना अधिकतम समय कॉलेज या कार्यालय में व्यतीत करते हैं, आप हर रोज एक से ही लोगों से घिरे होगें। इसके लचीलेपन के लिये, न्यूनतम कार्यकारी कैपसूल में १४ कपड़े होने चाहिये। एक जैकेट, एक स्कर्ट, एक ब्लाउज, चार कुर्ते या टॉप, एक शेयर्ड ब्लाउज, चार पैन्ट या चूड़ीदार या सलवार व तीन चुन्नी।

इनके साथ अलग–अलग कार्य करने से आपको पूरे महीने के लिये बिना दोहराये, पोशाकें मिल जायेगी। हलॉकि, महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि हर वस्त्र का अपना, स्वतंत्र गुण होना चाहिये, जिससे वह अपने आप में आकर्षक दिखे और साथ ही रंग कपड़े तथा आकार का भी साथ साथ कार्य करना आवश्यक है।

अतः कैपसूल ड्रेसिंग का पहला कदम है, रंग संयोजन सुनिश्चित करना। अतः ग्राहक को उसके मनपसंद रंगों का चुनाव कराएँ। यह प्राकृतिक रंगों का चटख रंगों से संयोजन कराने में मदद करेगा तथा एसेसरीज अच्छी तरह चुनने में भी सहायक होगा।

यह उदाहरण पॉच कार्यकारी दिनों को ध्यान में रखकर दिया गया है।

अब हम देखते हैं कि पोशाकें कैसी लगती हैं.............................

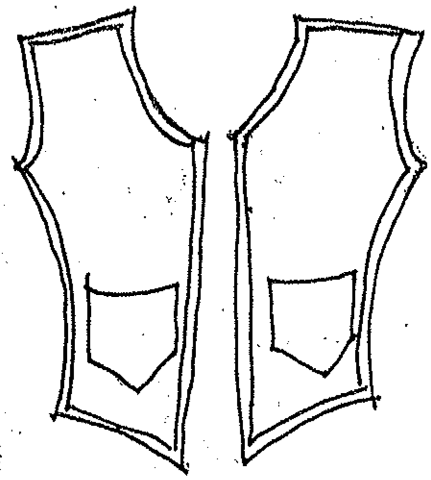

A- Jacket

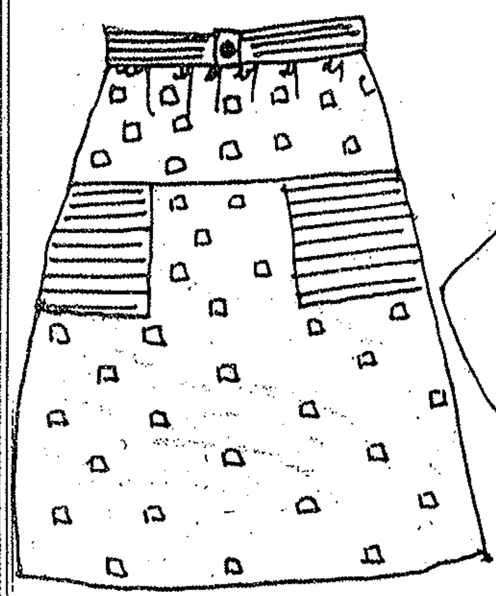

B - Skirt

C- Shearing top

D- Shirt

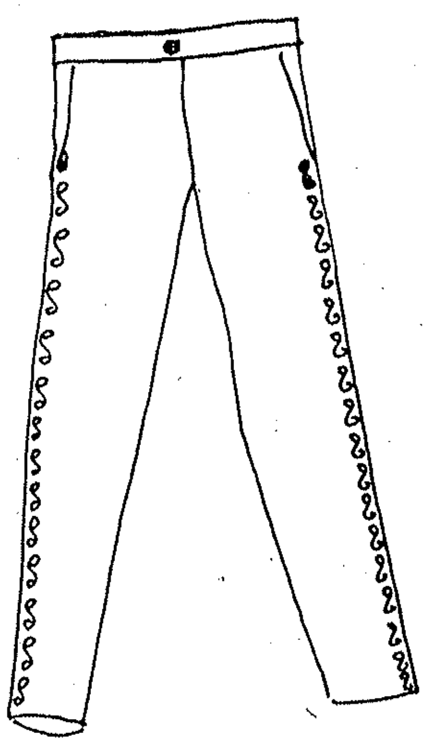

F- Pant

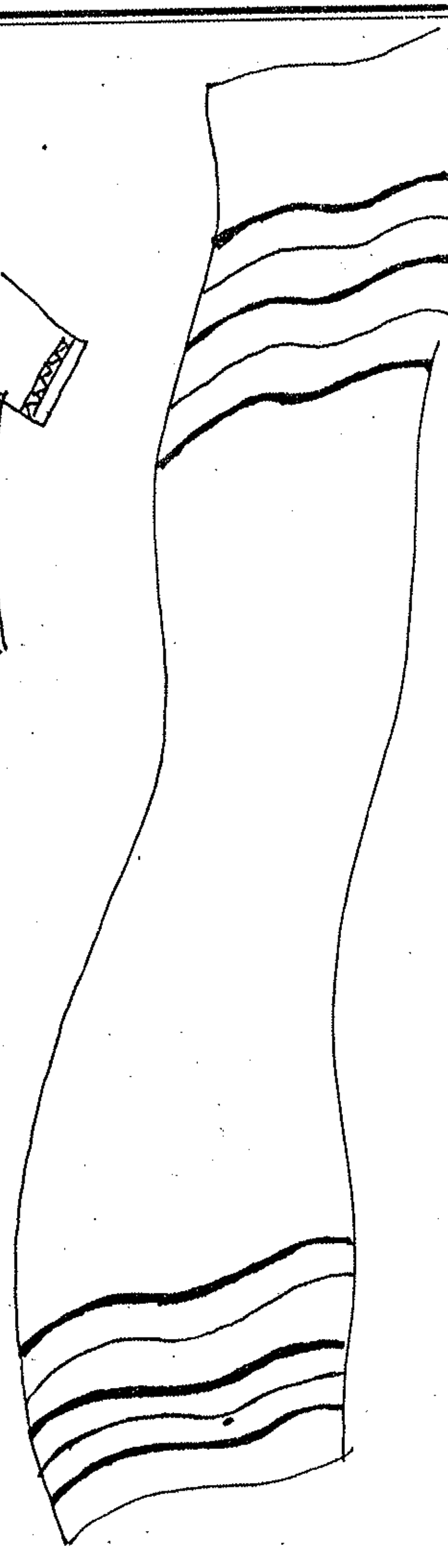

E - Duppatta

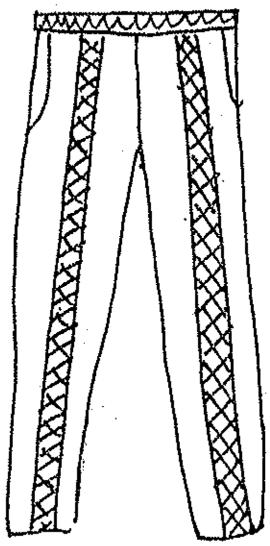

G- Lowers

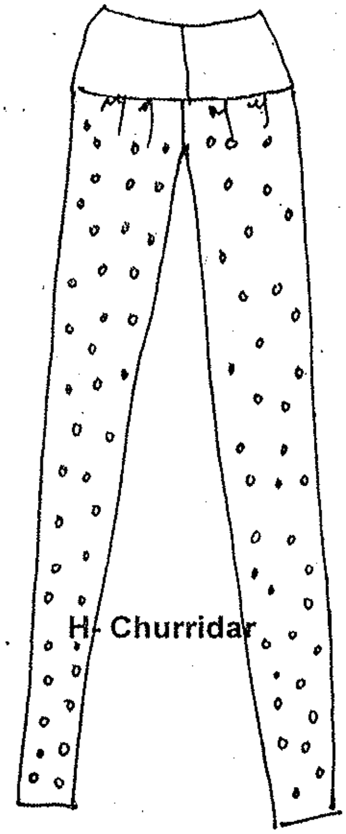

H- Churridar

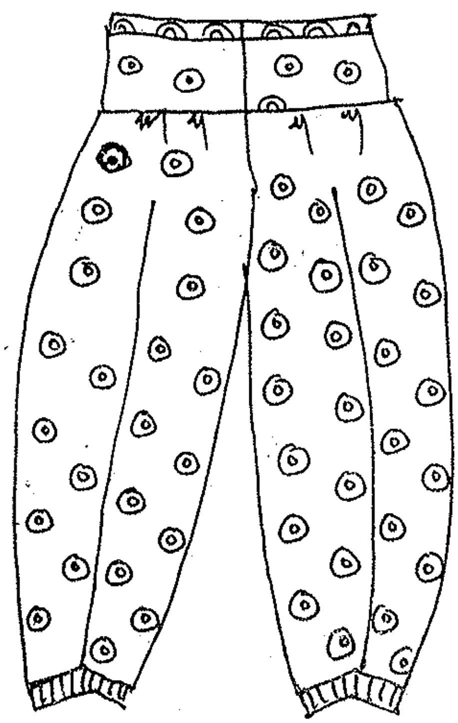

I - Salwar

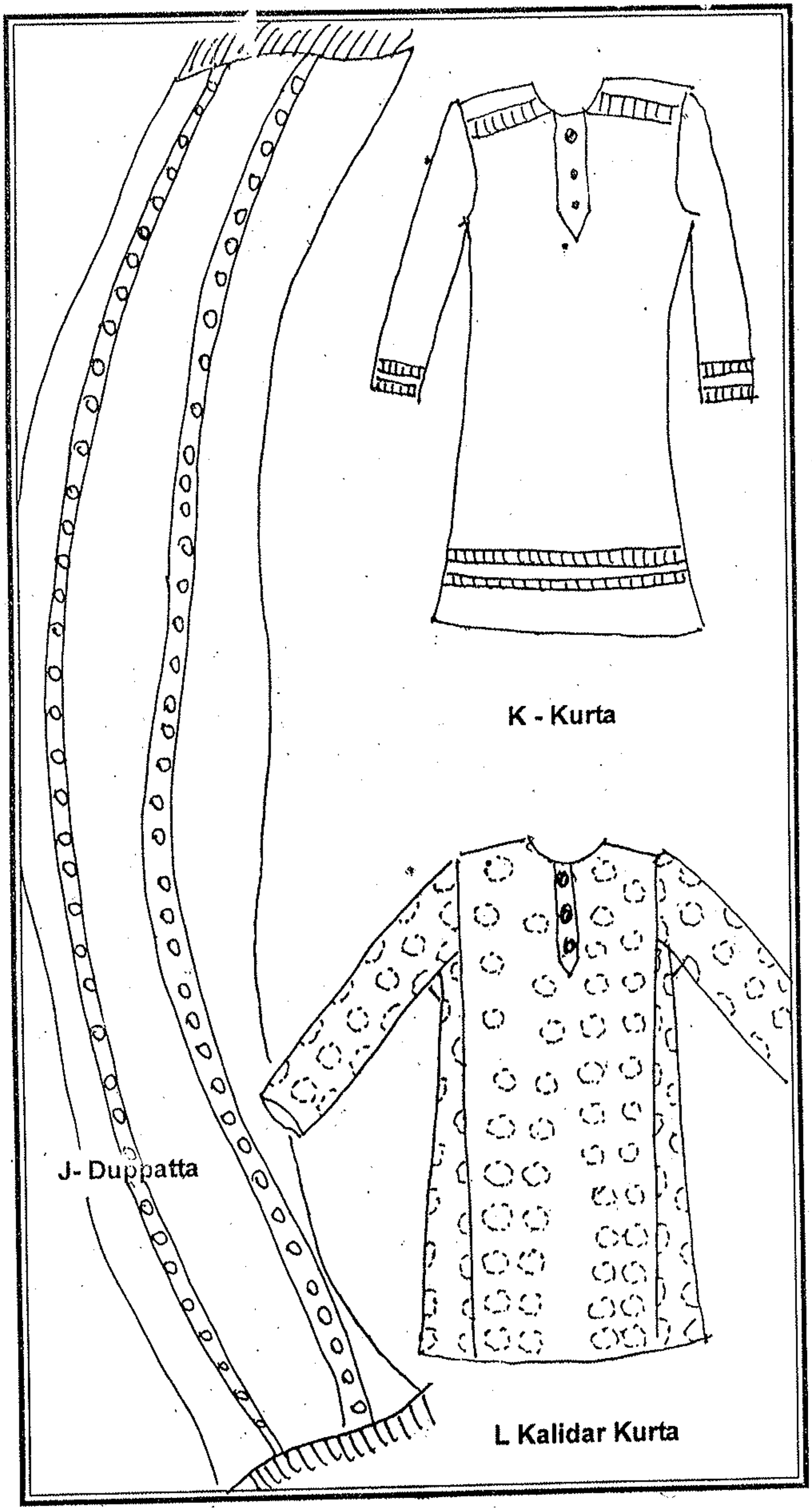
K - Kurta
J- Duppatta
L Kalidar Kurta

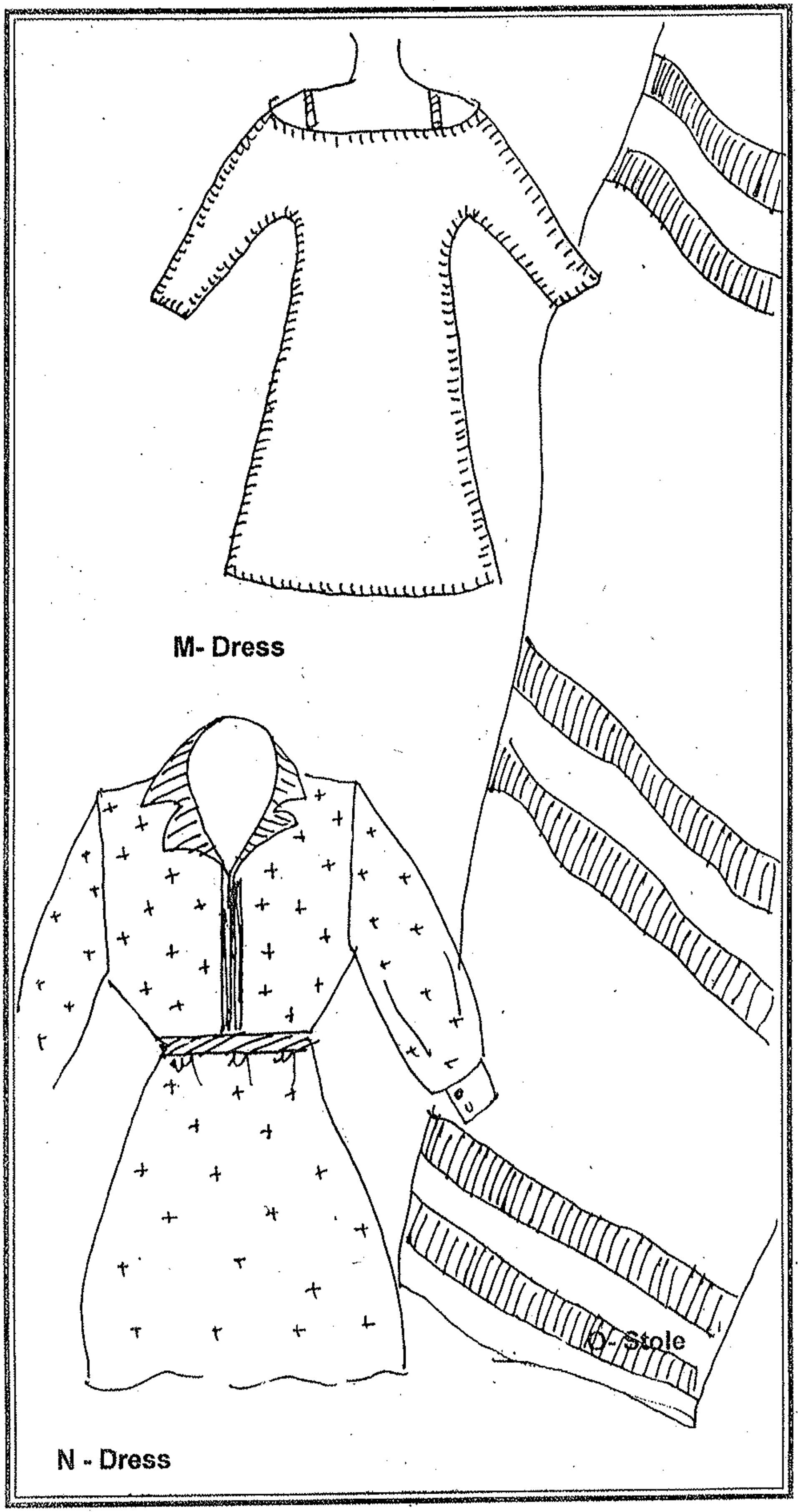
M- Dress
O- Stole
N - Dress

अब हम देखते हैं कि माह के पहले सोमवार तथा मंगलवार के लिये हम क्या विकल्प चुन सकते हैं..............................

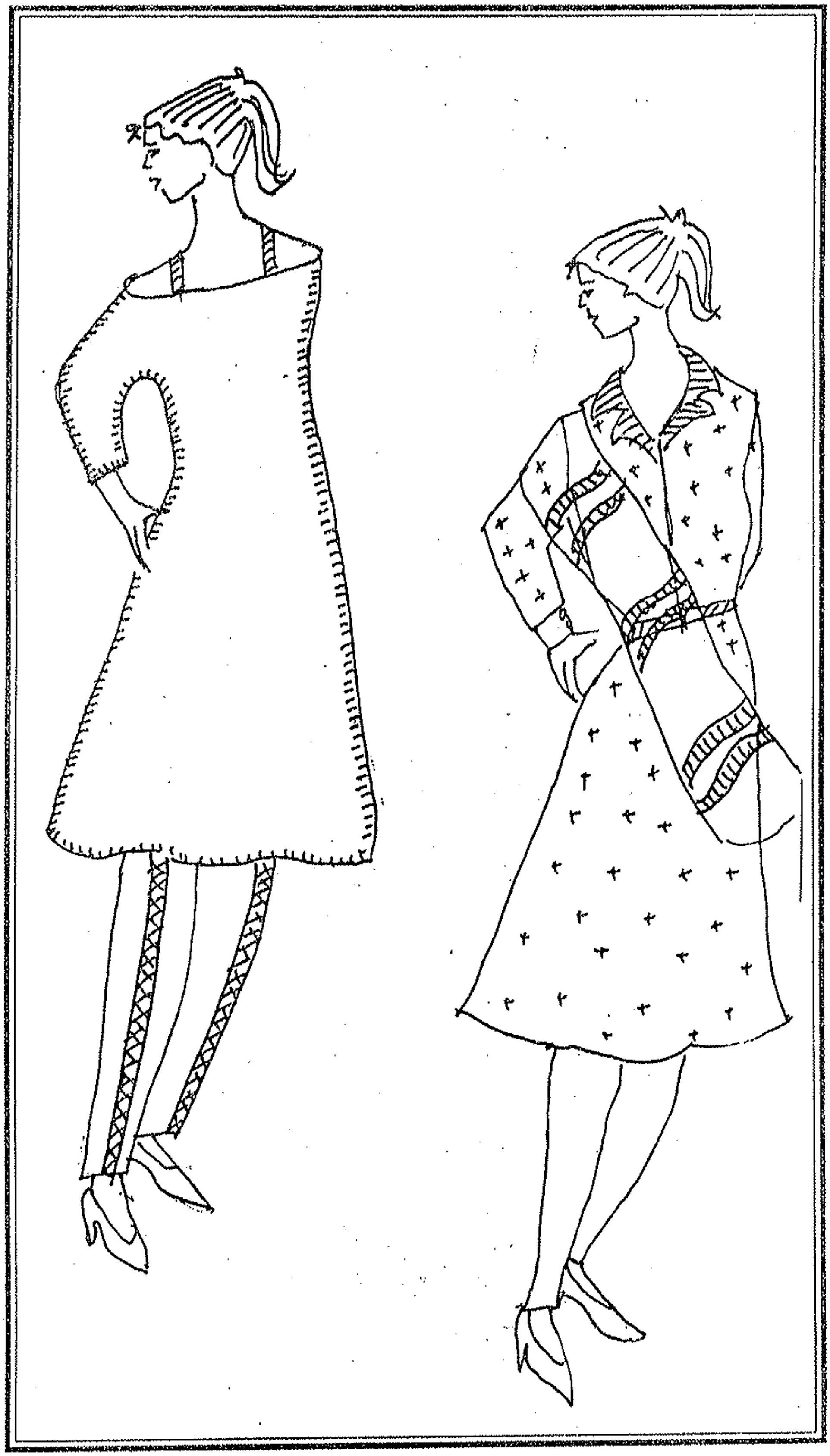

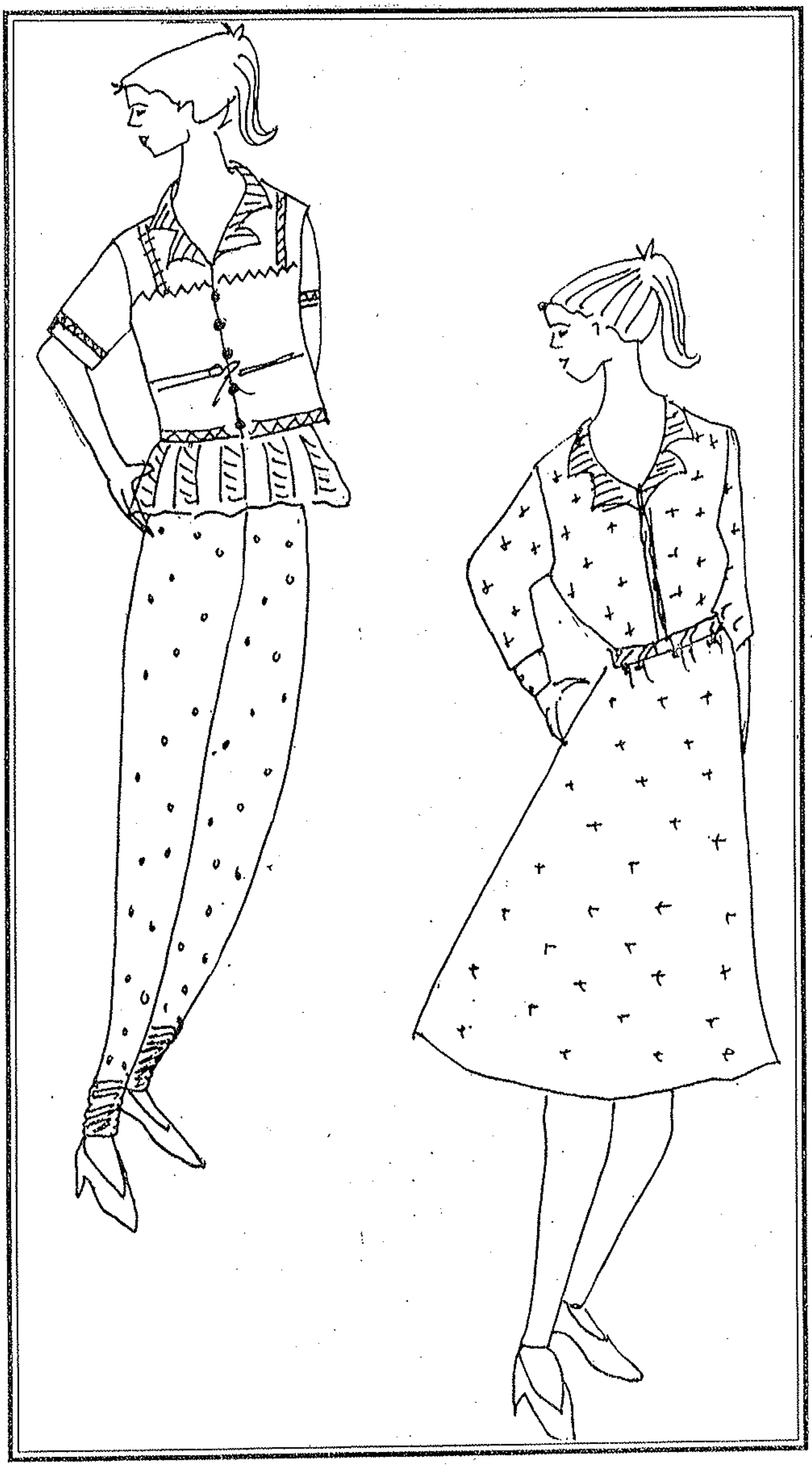

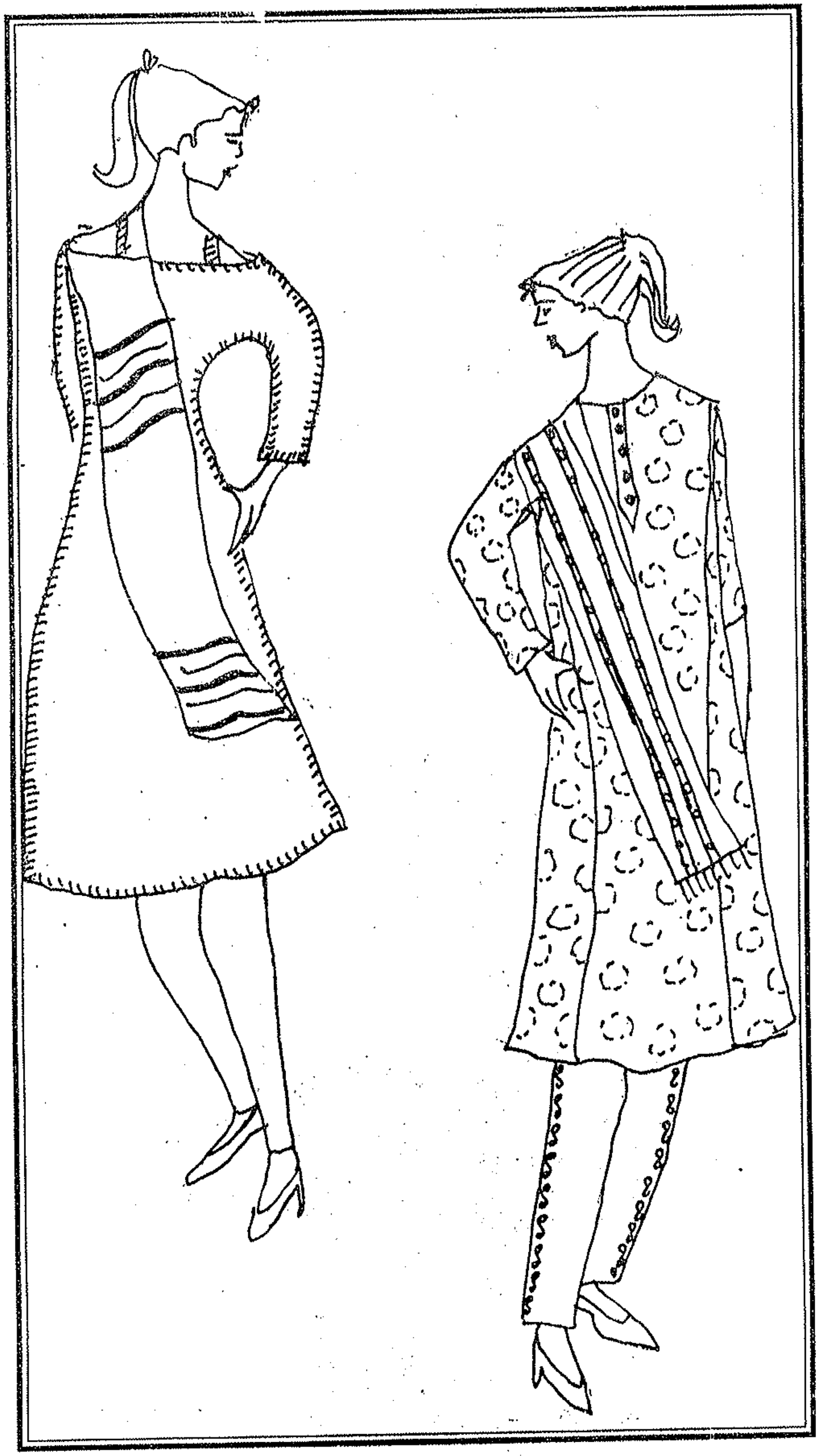

माह के दूसरे मंगलवार और बुधवार के लिए विकल्प....................

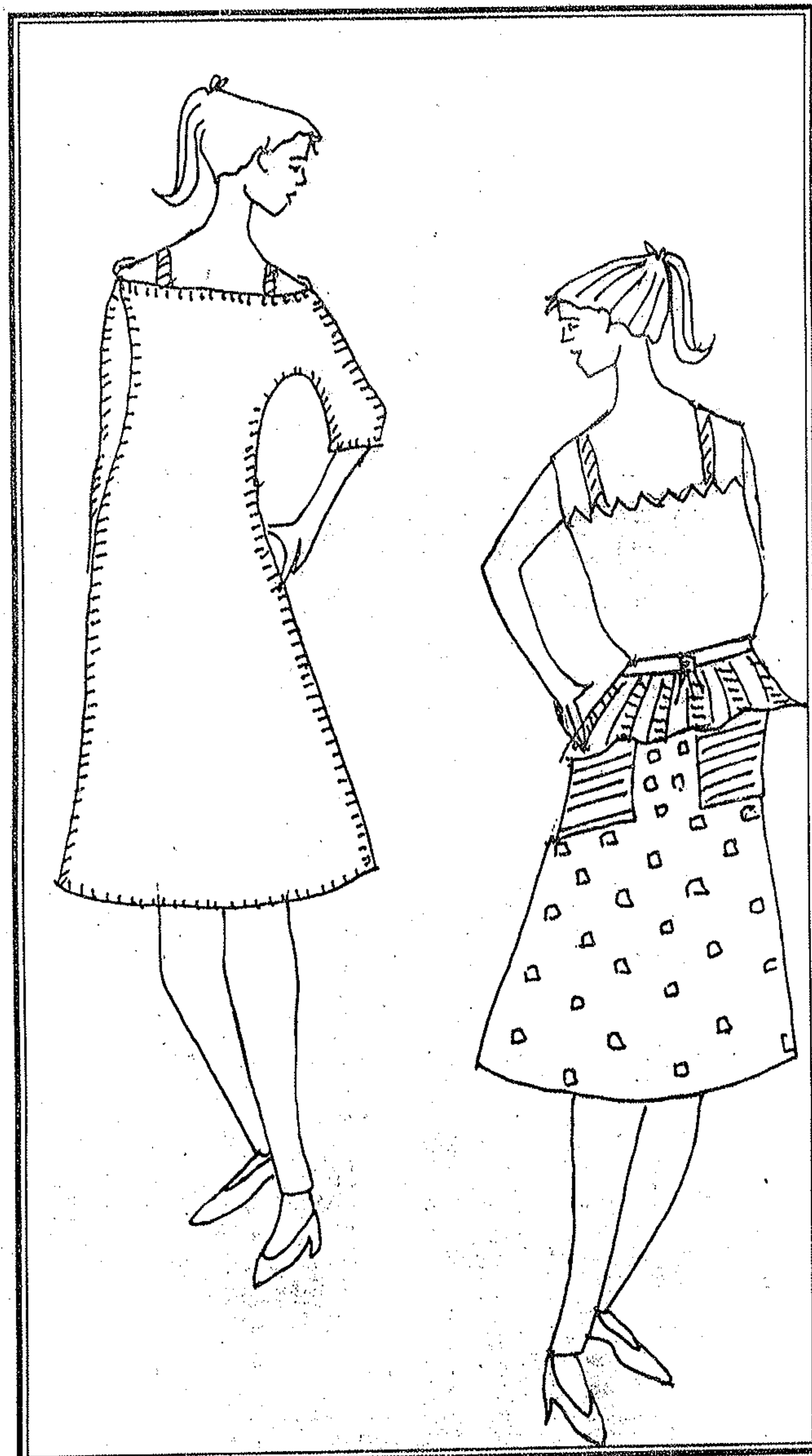

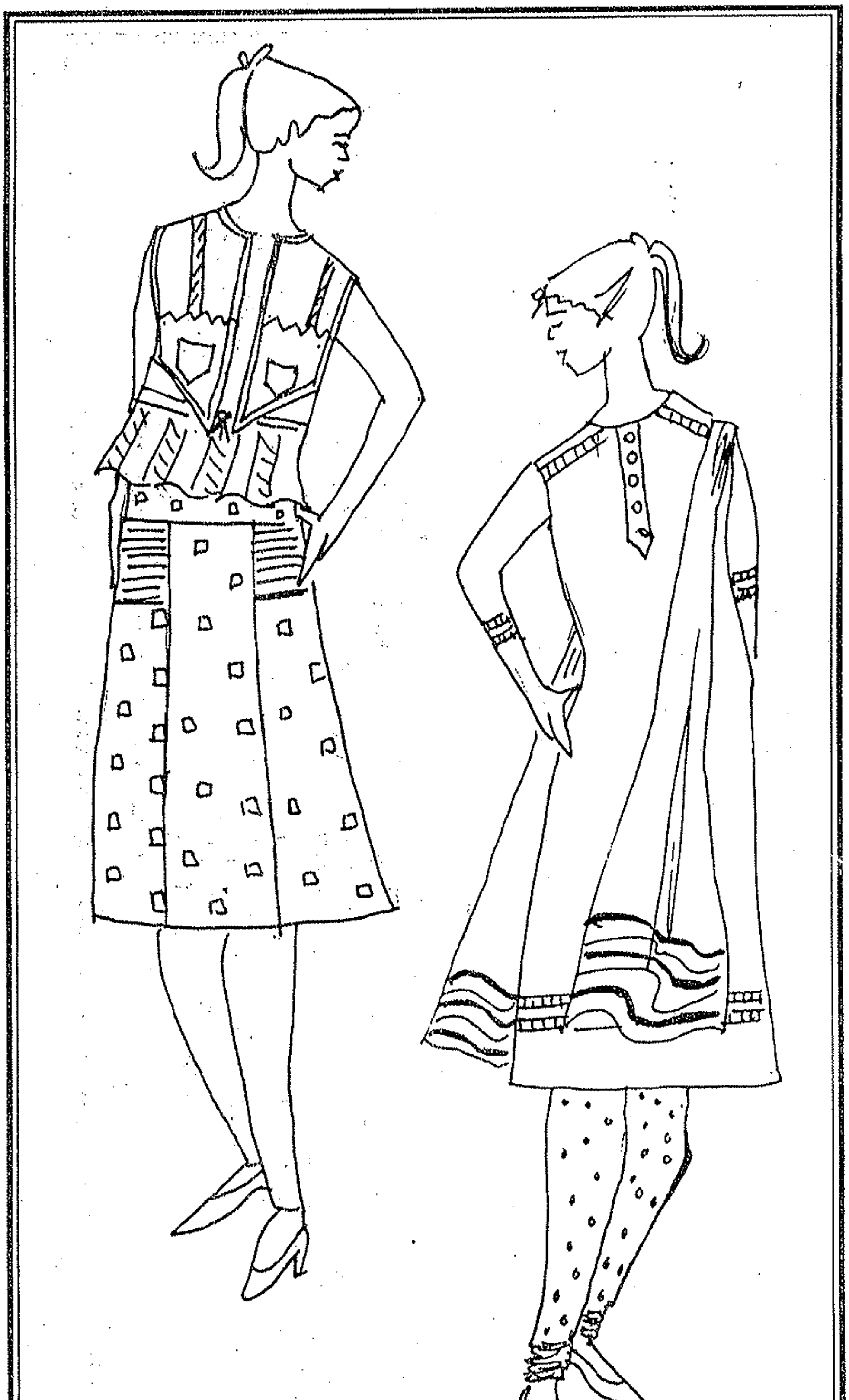

माह के चौथे मंगलव: ' तथा बुधवार के लिए विकल्प..............................

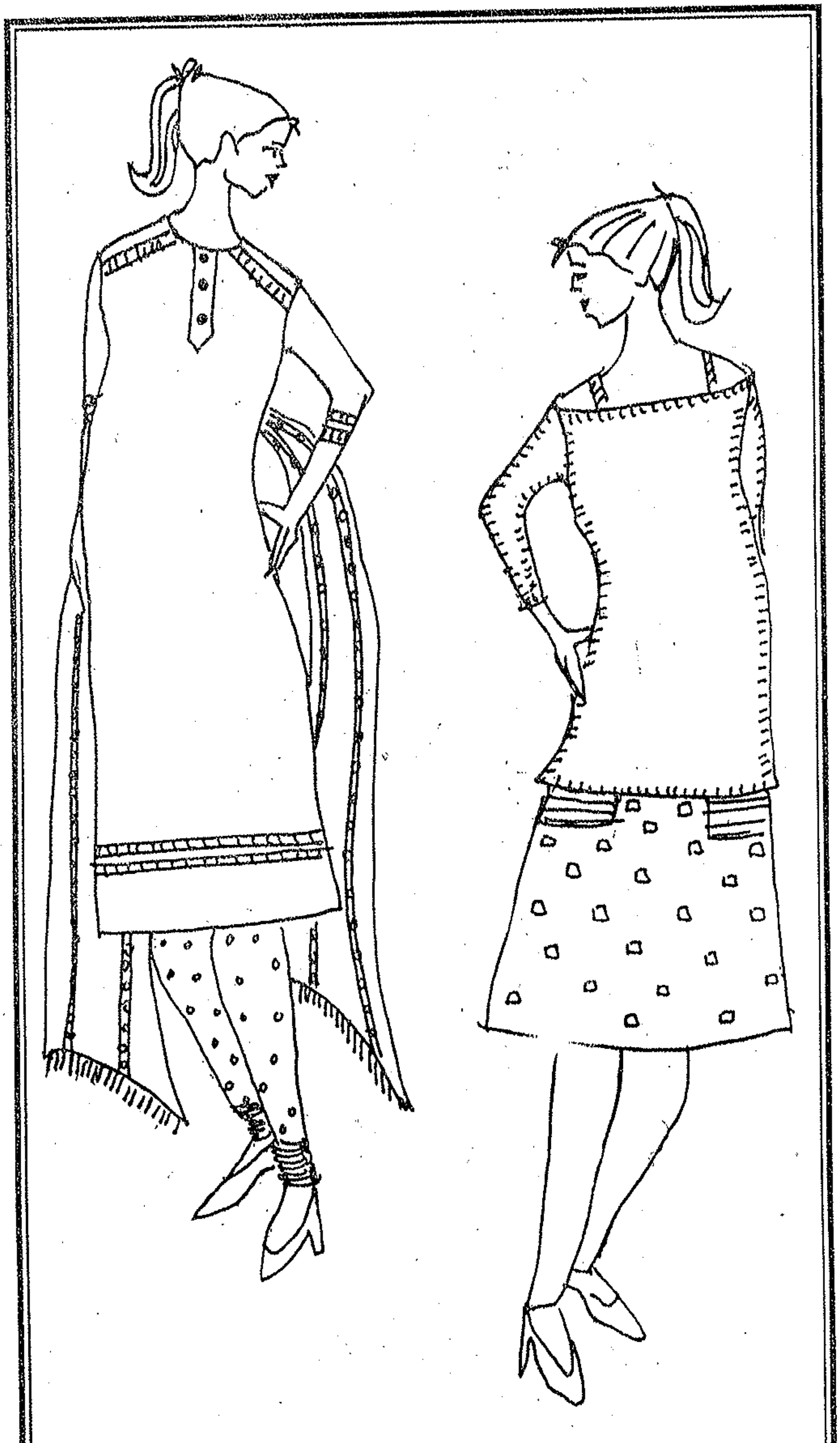

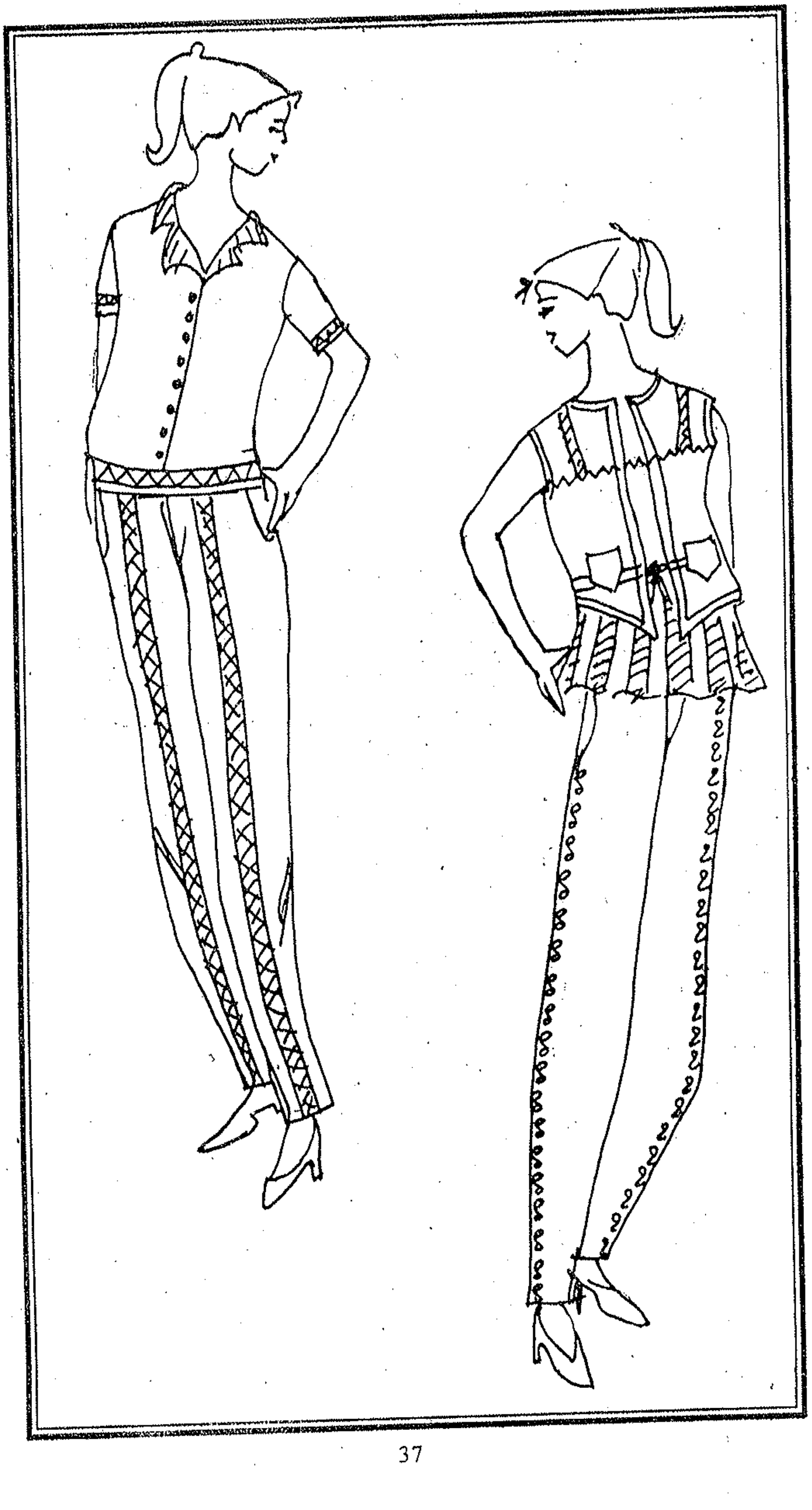

अभ्यास-

१— अपनी आलमारी के कपड़ों को केवल रंगों के अनुसार व्यवस्थित करें। सभी पैन्ट, कुर्तो, चूड़ीदार सलवार, दुपट्टे इत्यादि शामिल करें। देखें कि कौन सा रंग सबसे अधिक आ रहा है (वही आपका मनपसंद रंग है)।

२— ऐसे कपड़े जो आप सामान्यतः नहीं पहनते अलग कर दें। देखें कि कौन सा रंग सबसे अधिकतर आता है। यह आपके रंग चुनाव को सुनिश्चित कर देगा।

१०.४ सारांश:- अच्छे पहनावे के लिए योजना व समायोजन की आवश्यकता होती है। ऐसा करने के लिए कई मूलभूत तत्वों को रंग, कपड़ा, शैली व आकार के आधार पर व्यवस्थित व समायोजित करना आवश्यक है।

कार्यकारी वार्डरोब फास्ट व फैशन से परे होती है। यह दर्शाती है कि कपड़ों पर अपने निवेश का अच्छा लाभ कैसे उठाएँ। कार्यकारी वॉर्डरोब के साथ आप किसी भी स्थिति के लिये तैयार रह सकते हैं और सुनिश्चित रह सकते हैं कि आप हर अवसर के लिए उपयुक्त रूप से ड्रेस्ड हैं। पहनावे हमारे आस—पास के लोगों के क्लू उपलब्ध कराता है। यह अजनबियों को हमें पहचानने में सहायता करता है तथा परिचितों और मित्रों के बीच हमारी छवि को सशक्त बनाता है।

१०.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न—१ कार्यकारी वॉर्डरोब का क्या महत्व है?

प्रश्न—२ कैपसूल ड्रेसिंग की ओर पहला कदम क्या है?

प्रश्न—३ आप अपने पसन्दीदा रंग की पहचान कैसे करेगें?

प्रश्न—४ कोई चार परिधान लीजिये और उससे दो आउटफिट बनाइयें।

प्रश्न—५ कोई छः परिधान लीजिये और उससे चार आउटफिट बनाइयें।

६.६ स्वाध्ययन हेतु

१— इन्साइक्लोपीडिया आफ फैशन डिटेल, द्वारा पैट्रिक जॉन आयरलैण्ड, प्रकाशक बी०टी० बैटस्फोर्ड लि० लन्दन।

संरचना

११.१ यूनिट प्रस्तावना

११.२ उद्देश्य

११.३ आधारभूत सिलहौटीज

११.४ सारॉश

११.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

११.६ स्वाध्ययन हेतु

११.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

अब आप फैशन के इतिहास का अध्ययन करेगें तो देखेगें कि विभिन्न युगों के दौरान व विभिन्न सभ्यताओं में परिधानों के सिलहौटीज बदलते हैं।

यह यूनिट विभिन्न सिलहौटीज के विषय में जानकारी देता है।

११.२ उद्देश्यः-

विभिन्न सिलहौटीज की जानकारी विद्यार्थियों की ड़िजाइनिंग क्षमताओं में वृद्वि करेगी।

११.३ आधारभूत सिलहौटीजः-

किसी परिधान का सिलहौटी, उसके प्रोफाइल, बाहरी रेखा अथवा पोशाक शैली के कन्टूर से सन्दर्भित होता है। ड्रेसिंग शैली के उद्‌भव के साथ, समय–समय पर विभिन्न सिलहौटियॉं उभर कर आई।

कभी वह चुन्नटदार व फ्लोरिंग था, तो कभी कमर ऊंची थी। कभी नितम्बों को उभार कर 'एस' आकार दिया जाता था, कभी कमर पतली कर दी जाती थी तो कभी पूरा रूप पतला कर दिया जाता था, आदि, आदि।

इस यूनिट मे हम केवल १६५० से ६० के दशक के नए रूपों से परिचित होगें।

स्त्रियों के लिये ४० के दशक से आधारभूत सिलहौटियॉं थी, चौड़े कंधे, छोटी कोर्सेटेड कमर और भारी नितम्ब। कपड़े भार में अत्यन्त हल्के व फ्लोवी होते थे क्योंकि कई नए सिन्थेटिक कपड़े आ रहे थे।

साथ ही हॉलीवुड की चमक धमक काफी प्रचलित थी, परन्तु उस वक्त अमरीका में युद्व चल रहा था, राश लगा हुआ था और कई स्त्रियॉं, पैन्टीहोज और स्टॉकिंग्स जैसी वस्तुऍं वहन नहीं कर पाती थीं।

एक चीज जो स्त्रियॉं करती थी, वह था पैर के पीछे की ओर एक रेखा खींच लेती थी, जिससे ऐसा लगता था कि वह स्टॉकिंग्स पहनी थी। चाहे वह न भी पहनी हों। (सिल्क के स्टॉकिंग्स में सिलाई होती थी)। जूतों में हील व हल्का प्लेटफार्म होता था। गोल पंजे, पीप पंजे और ऐन्कल स्ट्रेप्स प्रचलित थे।

४० के दशक के फैशन को संवहित करने का मेकअप तथा केश सज्जा एक प्रभावशाली तरीका है। केश लम्बे चिकने तथा बारीक फिंगर वेव्स में रखे जाते थे।

मेक--अप आकर्षक परन्तु सरल होता था। नाटकीय रूप से उठी भौंहें, तरल काला लाइनर (केवल ऊपरी पलक पर) और चटख, क्लासिक लाल लिपिस्टिक। लेकिन अत्यन्त मैट, चमक या ग्लोस नहीं। आपने नये रूप की बात की परन्तु वह ४० के दशक के अन्त में आया तो ५० के दशक में जाकर लोकप्रिय हुआ।

नए रूप के साथ, कंधे की सिलहौटी अधिक नर्म हो गई। कमर अधिक कसकर कोर्सटेड पहनी जाती थी, नितम्ब और भी उभर जाते थे। प्रायः पेटीकोट जोड़े जाते थे।

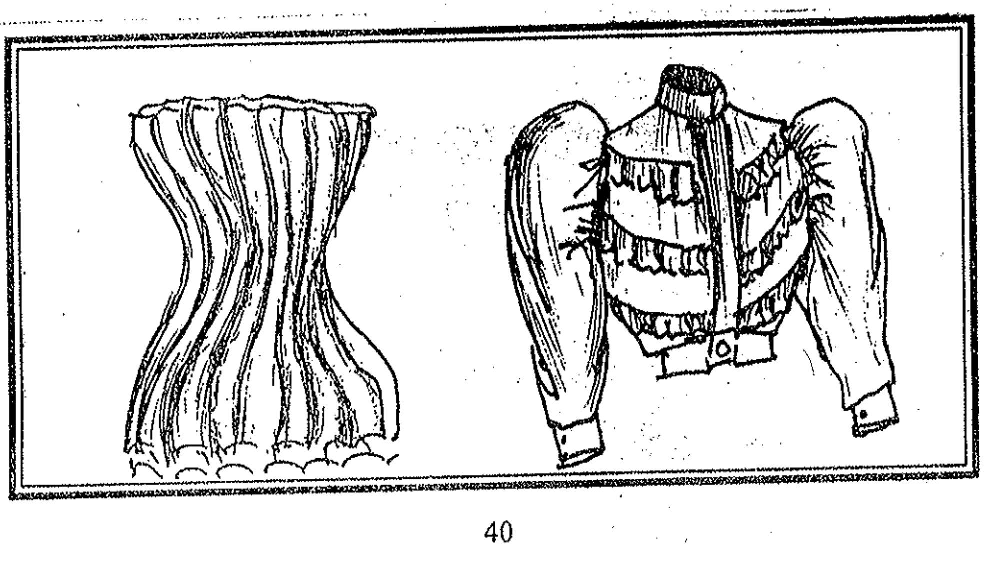

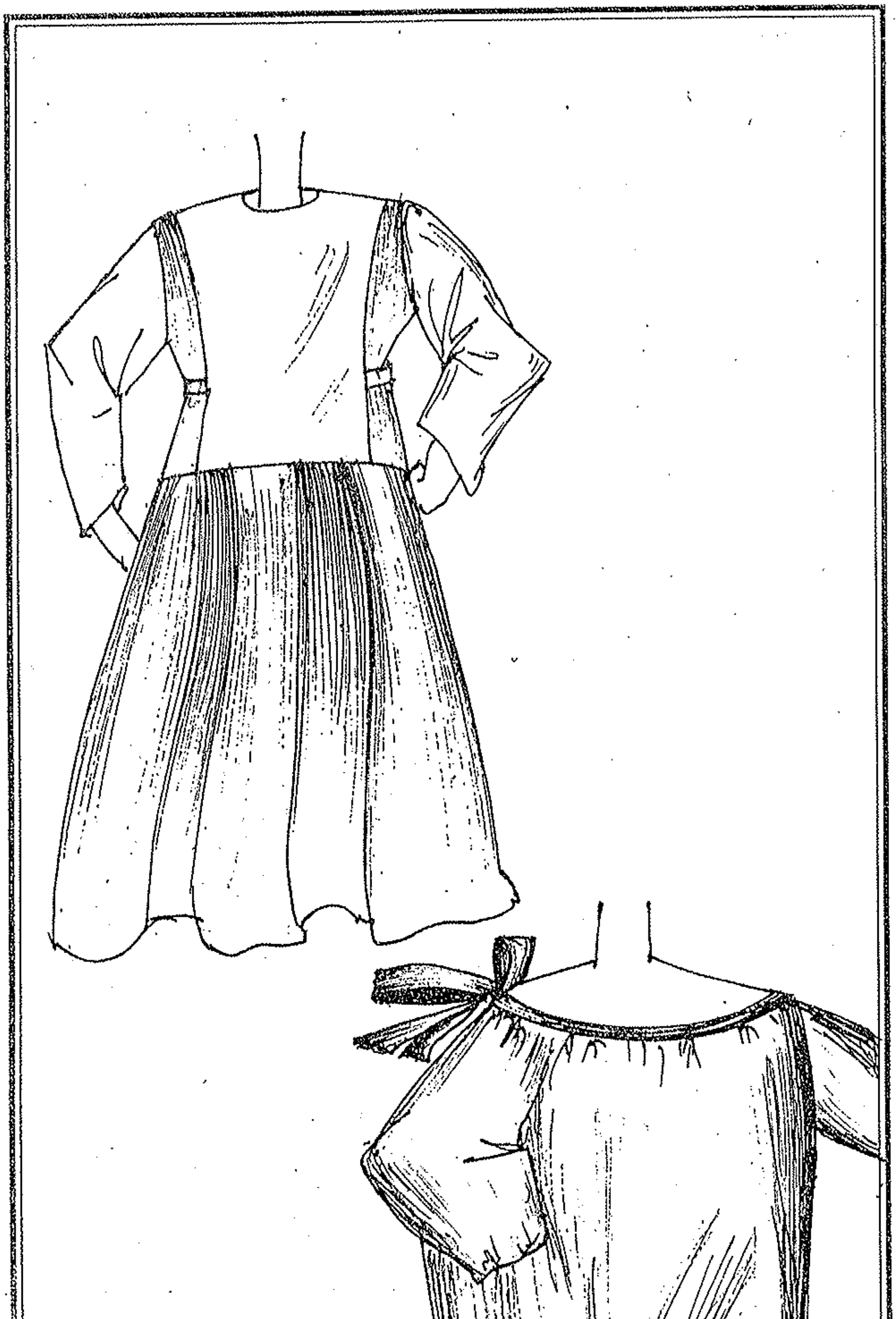

THE LOOK OF THE 40'S

१९५० के दशक म जो रूप लोकप्रिय थे, वे थे पूडल स्कर्ट, पीटरजॉन, कॉलर वाली शर्ट, सैंडल जूते, कैट्स आई चश्में, हवाईयन शर्ट, लेटरमैन जैकेट, सफेद टी शर्ट, नीली जींस (गहरे कफ), पूरे काले और सरकिल स्कर्ट्स।

हर एक भिन्न सिलहौटी होता था और हर किसी को आसानी से पहचाना जा सकता था। सिलहौटी की समझ केवल रेखांकनों द्वारा पाई जा सकती है। अगले कुछ पृष्ठ इन्हीं विभिन्न शैलियों को चित्रित करते हैं –

हम देखते हैं कि प्रत्येक कैसा दिखता था..............................

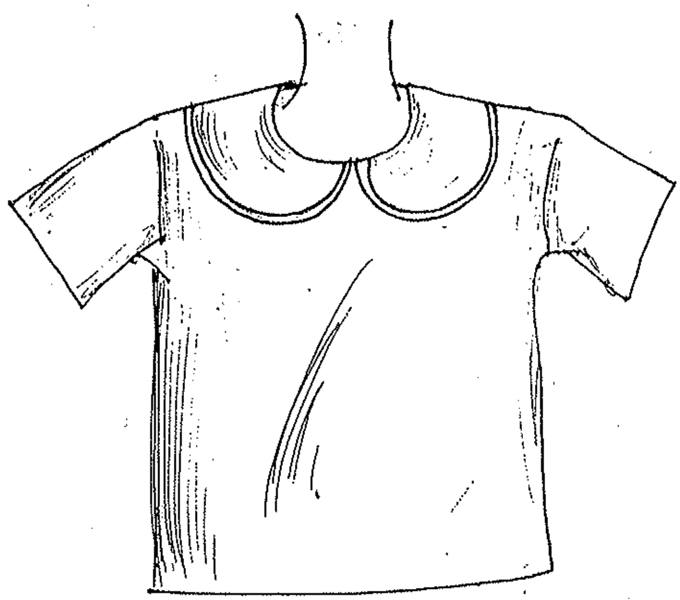

PETER PAN COLLARED SHIRTS

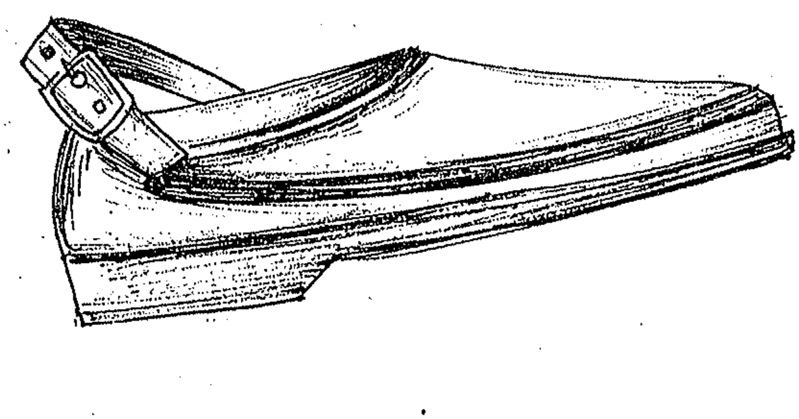

SADDLE SHOES

CAT'S EYE GLASSES

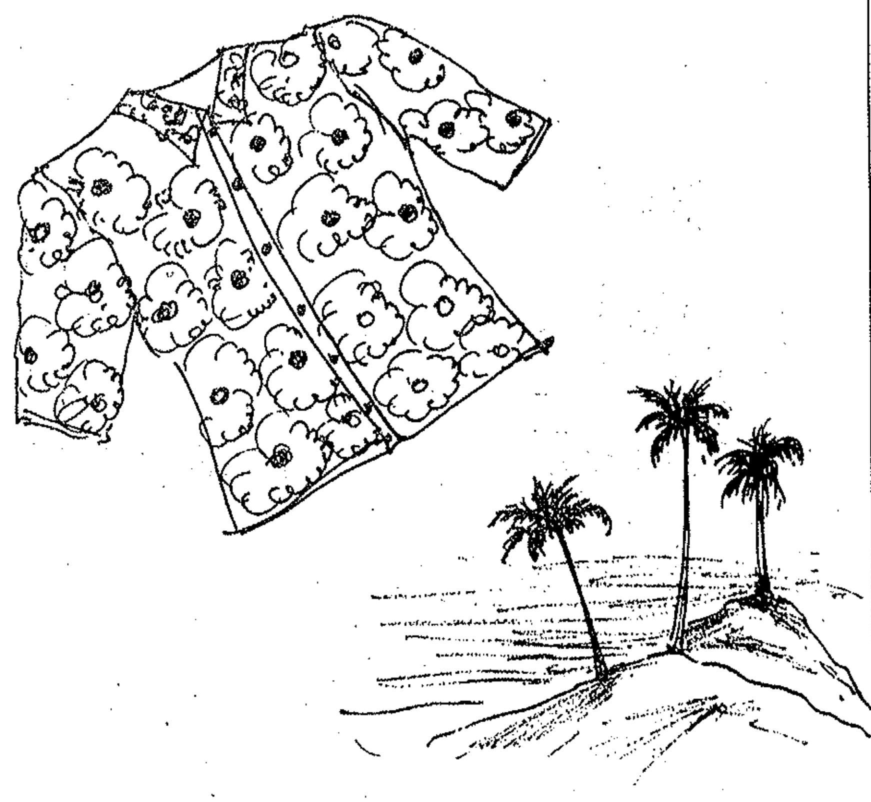

HAWAIIAN SHIRTS

एक लेटरमैन की जैकेट भारी, सर्दियों की शैली का कोट होता है जिसमें आदर्श रूप से कई स्कूल स्पोर्ट्स अक्षर, आगे की ओर सिले रहते हैं। लगभग हर हाई स्कूल में, कोच व एथलेटिक निर्देशक, किसी विशिष्ट क्रीड़ा में शामिल विद्यार्थी या खिलाड़ी को वह सेसन सफलतापूर्वक पूरा करने पर उनके द्वारा अर्जित 'अक्षर' इनाम के रूप में दिया करते थे। अक्षर, साधारणतः सेसन के पूर्ण होने पर एक स्पोर्ट्स बैंकेट में दिये जाते थे।

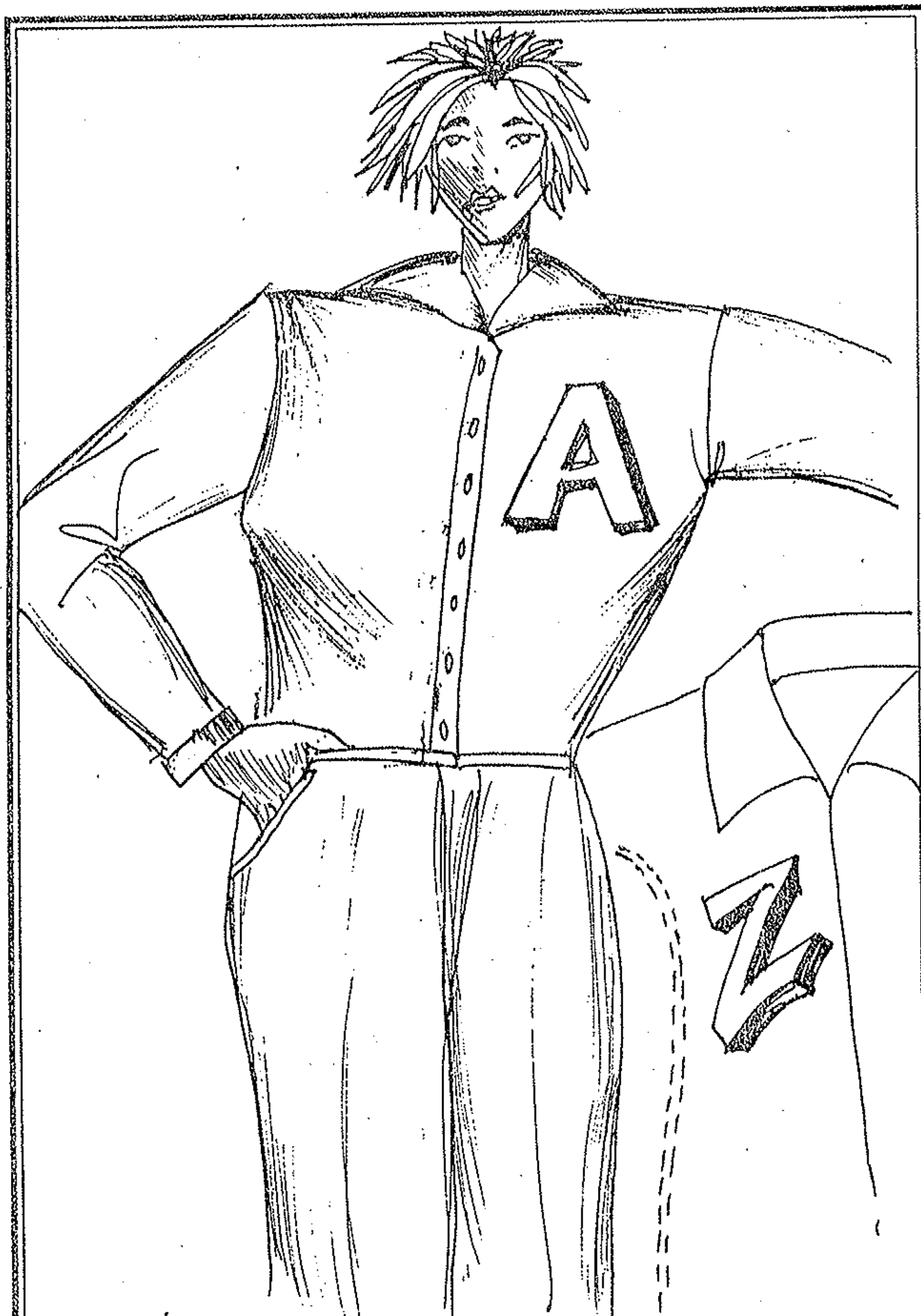

LETTERMAN JACKETS

बेली नृतकाओं के कस्टयूम वार्डरोब में सालों से सर्किल स्कर्ट सबसे पसंदीदा पोशाक रही है। इसमें नितम्ब रेखा पर न्यूनतम बल्क रहता है और तब भी नीचे की ओर अति फुल होती है। ऐसी नृतकाओं के लिये जो आधुनिक समय के नाइट क्लब शैली की पोशाक चाहती हैं, यह स्कर्ट पहनने में अति संतोषजनक होती है क्योंकि यह नृत्य के मूवमेंट्स सौन्दर्य में वृद्धि करती है। यदि सस्ते कपड़े जैसे नायलॉन ट्राईकोट से बनी हो तो कक्षा या रिहर्सल में पहनने के लिए अच्छी पोशाक है।

THE CIRCLE SKIRTS.

अब हम १९६० के दशक की सिलहौटियाँ देखते हैं। इनमें मिनी स्कर्ट, गो--गो बूट, पिल बॉक्स हैट, हॉट पैन्ट्स, शिफ्ट पोशाक, बेबी डॉल पोशाक, तीन चौथाई आस्तीन, टाई एण्ड डाई तथा नेहरू जैकेट थीं।

मिनी स्कर्ट जैसा कि नाम से जाहिर है लम्बाई में काफी छोटी होती थी अतः 'मिनी' कहलाई।

गो--गो बूट मिनी स्कर्ट के परिणाम थे। ६० के दशक में जैसे स्कर्ट लाइन, ऊपर उठी, वैसे ही फुट वियर की ऊँचाई भी बढ़ गई। ६० के दशक दौरान, फैशन पैरों

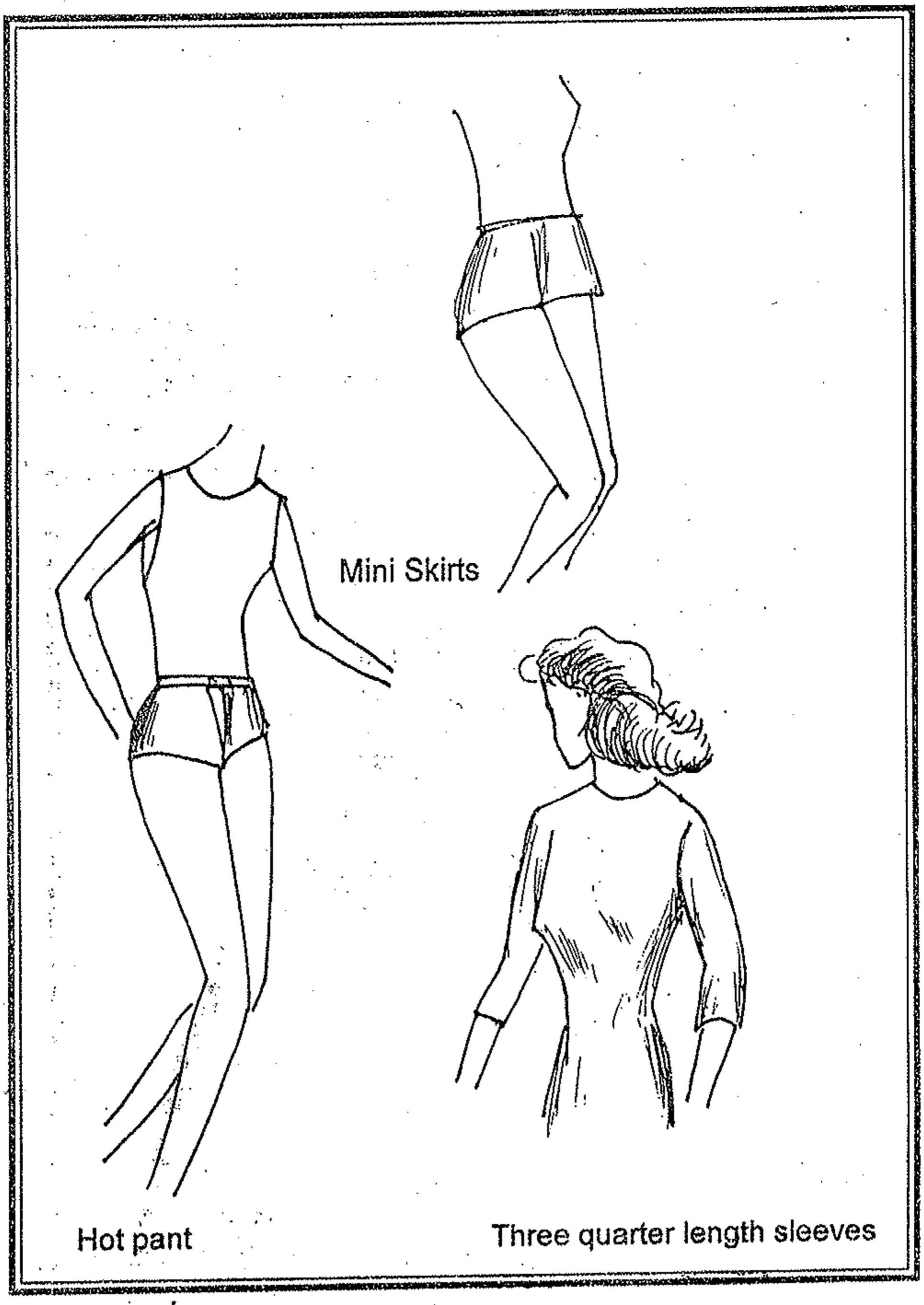

को उभारने का नाम था अं. बूट वह तीर थे जो उस ओर इशारा करते थे। जितनी छोटी स्कर्ट, उतने ही लम्बे व कसे जूते। बीसवीं सदी में अधिकतम मौसमानुसार पहने जाने वाले जूते अब फिर से फैशन के लिए पहने जा रहे थे। शुरू में छोटे जूते जो मुख्यतः युवा वर्ग द्वारा पहने जाते थे, काफी अंतरिक्ष युग जैसा रूप देते थे। ल्यूनर सफेद बूट जो कॉफ हाई होते थे, अंतरिक्ष यात्रियों के जूतों की याद दिलाते थे। यह उस समय प्रचलित स्पाइक हील्ड ड्रेस जूतों की तुलना में अधिक आरामदेह भी थे और लम्बे समय तक नृत्य करना भी सरल बना देते थे। युवा नृतकों द्वारा अपनाये जाने पर तथा सबसे पहले दोपहर के डिस्कोथेक टेलीविजन शो में देखे जाने पर, इन जूतों को जल्दी ही गो गो बूट्स का नाम मिल गया, यह 'गो–गो' नृतकों के नाम पर आधारित था जो इन्हें पहनते थे।

पिल बॉक्स हैट-

स्त्रियों की छोटी टोपी जिसका शीर्ष सपाट व सीधा होता था तथा साइड्स सीधी खड़ी होती थी, को पिल बॉक्स हैट कहा जाता था। ऐतिहासिक रूप से पिल बॉक्स एक सैन्य हिड्रेस भी था। हलॉकि सैन्य रूप में इसमें एक ठोड़ी पर बॉधने वाली पट्टी भी होती थी।

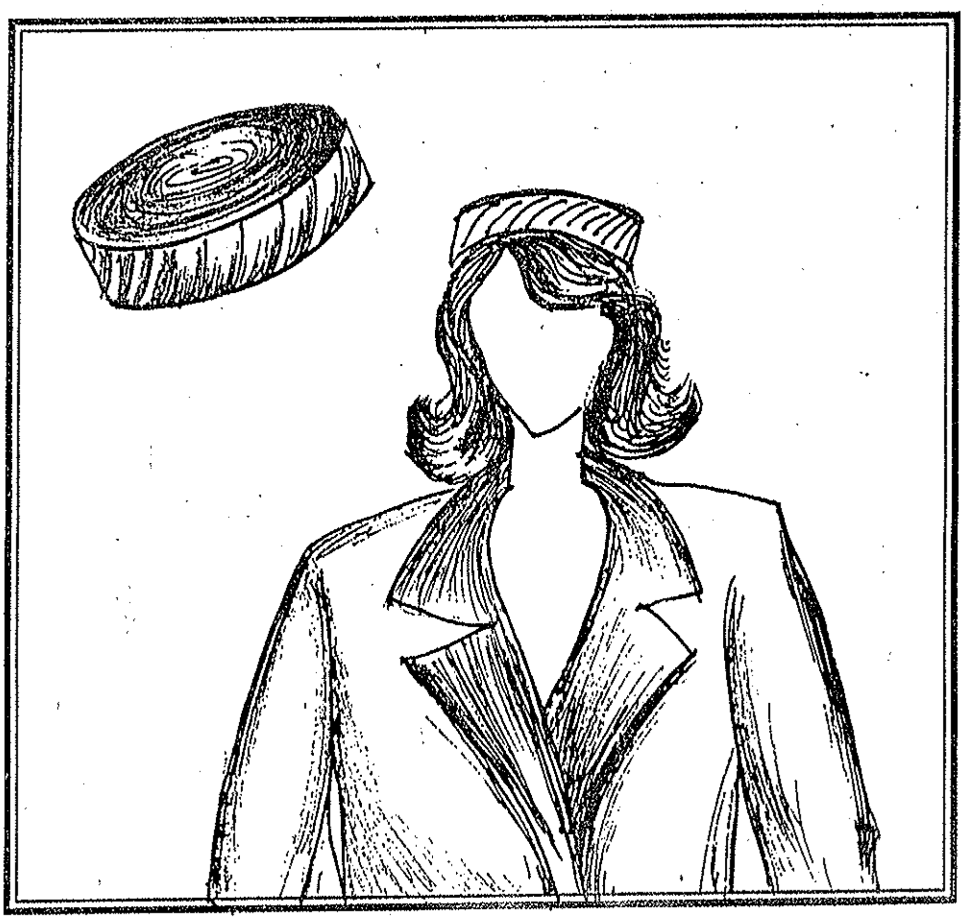

हॉटपैन्ट कसे हुए शार्टस थे। शिफ्ट ड्रेस एक सीधे कट वाली ड्रेस जो घुटनों से हल्का सा ऊँची रहती थी।

बेबी डॉल ड्रेस ऐसा प्रचलन है जहाँ ड्रेस बॉडीस के ऊपर तक काटी जाती है। कुछ विवरण इसे इम्पायर वेस्ट ड्रेस कहते हैं व कुछ इसे बेबी डॉल ड्रेस कहते हैं।

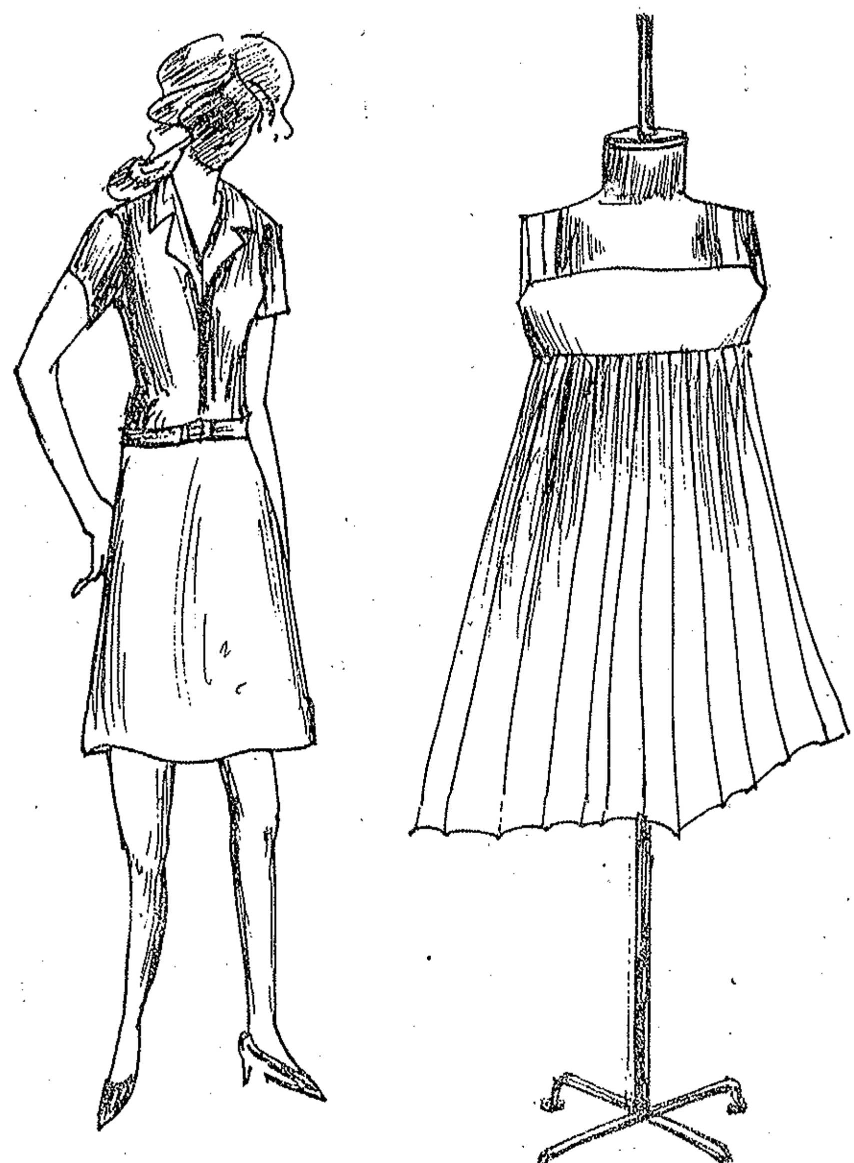

Shift dress

Baby doll dress

इस दशक के अन्य लोकप्रिय कट्स थे- तीन/चौथाई लम्बाई की आस्तीन, टाई एण्ड डाई तथा नेहरू जैकेट।

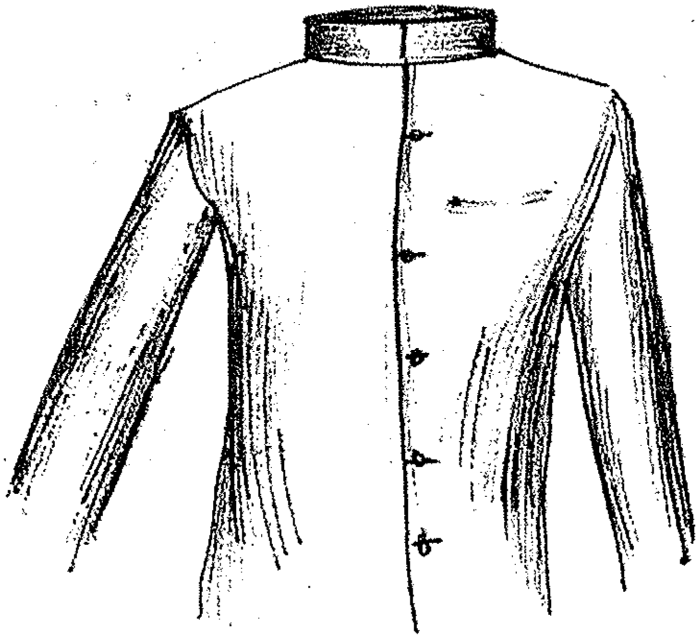

Nehru Jackets

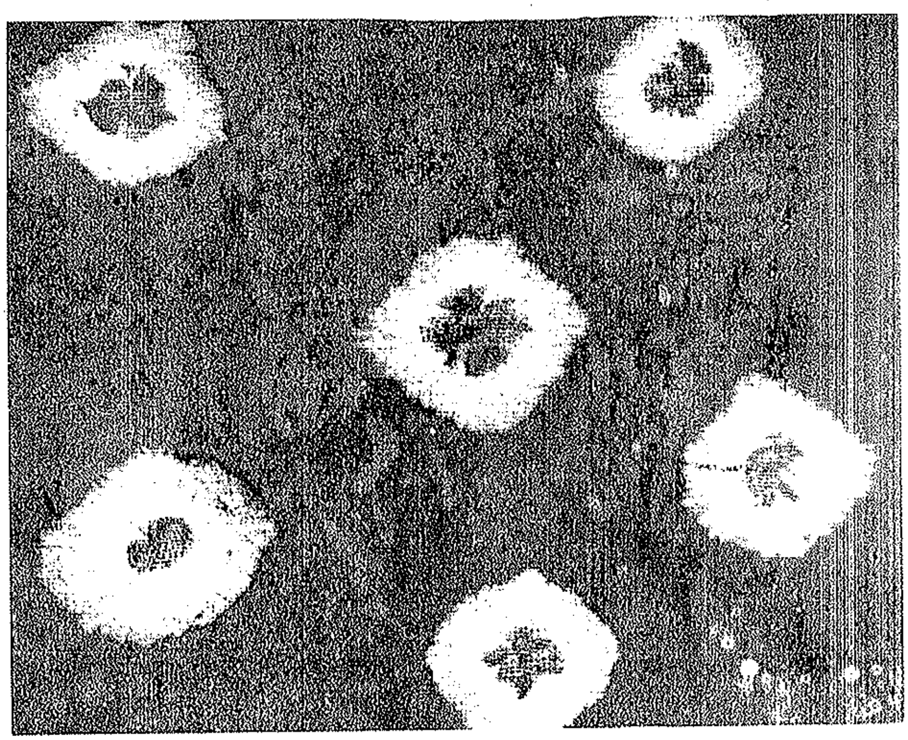

Tie-dye

अब हम १९७० के दशक के सिलहौटियाँ देखते हैं। ट्रैक सूट, मूड रिंग्स, अर्थ जूते, बेल–बाटम, प्लेटफार्म जूते, लेजर सूट, प्रिन्टेड नायलॉन तथा पोलीस्टर शर्ट और कॉर्डरॉय प्रचलित थे।

मूड रिंग, एक नोवेल्टी अंगूठी होती है जिसमें एक थिमोक्रोमिक द्रव्य क्रिस्टल का प्रयोग होता है जिसके कारण, शरीर के तापमान की प्रतिक्रिया में अंगूठी का रंग बदलता रहता है। यह एक तरह का बायोफीडबैक है ऐसा माना जाता है कि अंगूठी के रंग द्वारा पहनने वाले की प्रवृत्ति का संकेत मिलता है। मूड रिंग एक फैड था जिसकी लोकप्रियता १९७० के दशक के यूनाइटेड स्टेट्स में अपने चरम पर थी और आज इन्हें १९७० के रिवाज की प्रतिमूर्ति के रूप में देखा जाता है।

कई विभिन्न प्रकार की मूड रिंग होती है और यह सामान्यतः निर्माता पर निर्भर करता है कि रंगों का क्या 'अर्थ' है, परन्तु, सामान्य बालों की सूची निम्नलिखित है। यह गले के हार, कानों की बाली, बिछिए और अंगूठी में आते हैं। सामान्य रूप से अंगूठी व कानों की बाली सबसे अधिक लोकप्रिय हैं।

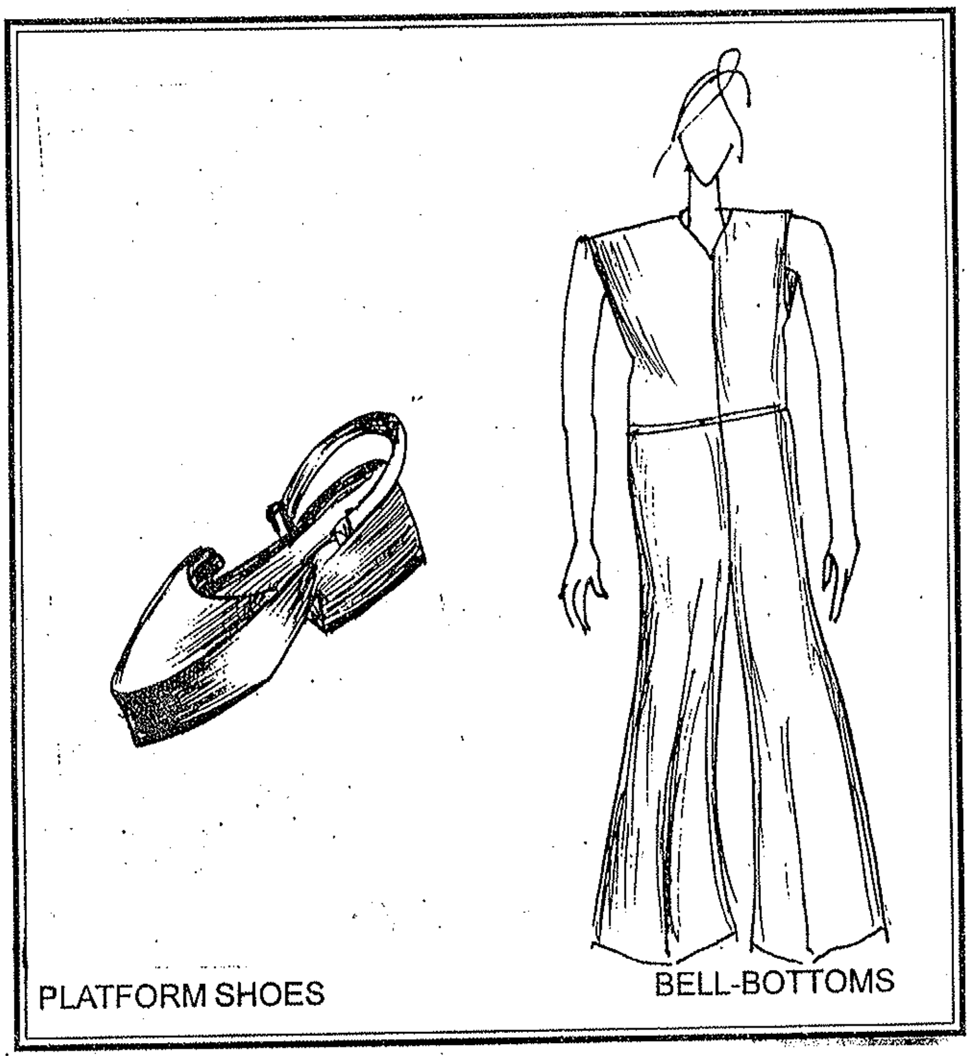

१९७५ के लेजर सूट में एक शर्ट जैकेट के साथ मेल खाता, ट्राउजर, अनौपचारिक पहनावे के लिये पहना जाता था। यह पुरूषों की पोशाक थी।

लेजर सूट्स का उद्‌भव, १७०० में यूरोप में हुआ था, परन्तु १९७० के दशक में इसके पोलीस्टर रूप का उद्‌भव हुआ जो अमेरीका भर में लॉग लीजर्ड द्वारा सपोर्टेड था।

स्पोर्टस कोट या सूट के लिये एक अनौपचारिक विकल्प के रूप में कार्य करते-करते लीजर सूट अन्त में उपहास का पात्र बन गया। जिसमें कुछ रेस्तरॉ व व्यापारिक संस्थाओं ने तो अपने स्थापत्यों में इनके पहने जाने तक पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

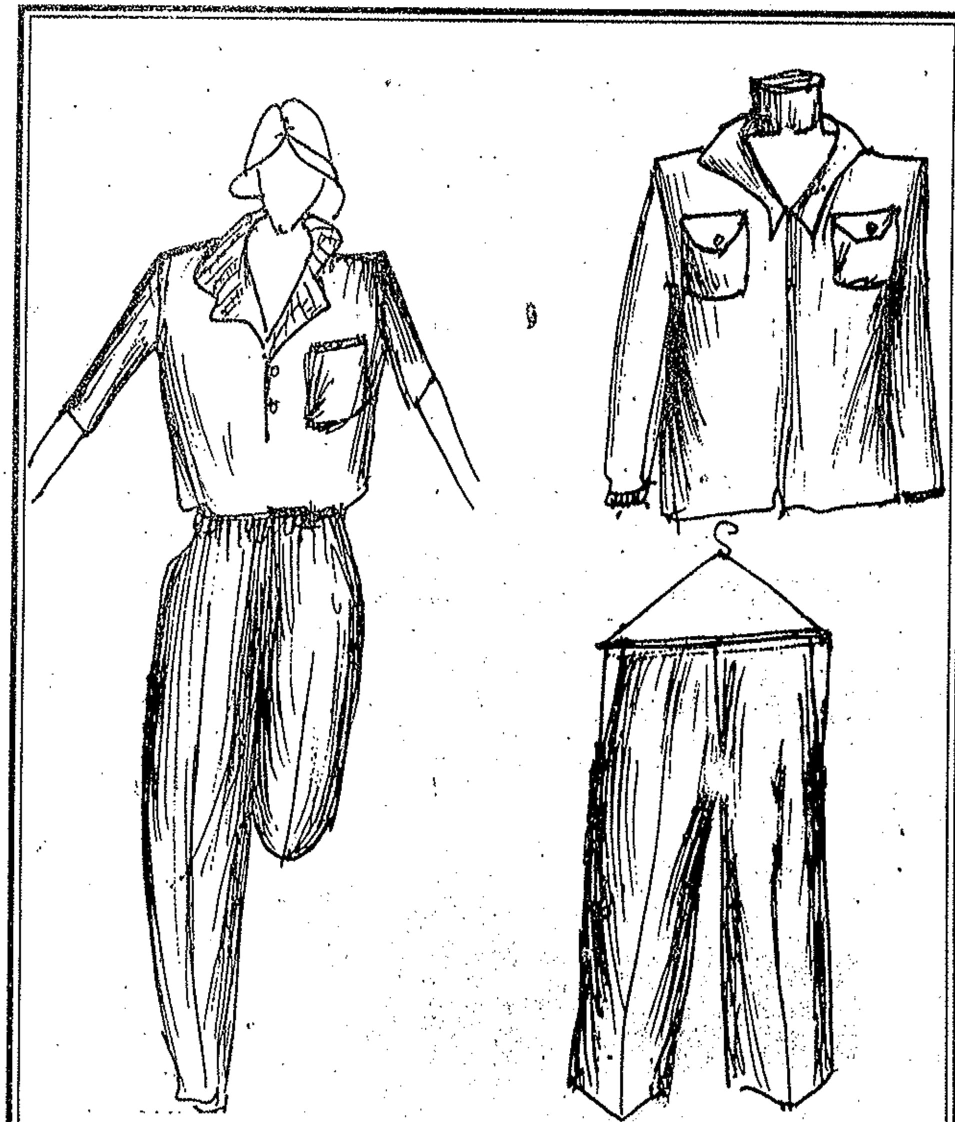

TRACK SUITS

LEISURE SUITS

अब हम १६८० के दशक के सिलहौटियाँ देखते हैं। पोलो शर्ट, पैरासूट पैन्ट, एसिड वॉश, जींस, बड़े सोल्डर पैड्स तथा पंक लुक फैशन में थे।

पैराशूट पैन्ट, ऐसे पैन्ट या ट्राउजर की शैली है जिसका विशिष्ट गुण है, सिन्थेटिक कपड़े का प्रयोग और अथवा अत्यधिक बैगी काटा जाना। मौलिक ढ़ीले तथा अत्यधिक जिप वाली शैली जो ८० के दशक के शुरू में प्रचलित थी में पैराशूट का संदर्भ, सिन्थेटिक नायलॉन के कपड़े की पैन्ट से था। ८० के दशक के दूसरे भाग में पैराशूट का संदर्भ पैन्ट की अत्यधिक बैगीनेस से हो सकता है। यह, आदर्श रूप से पुरूषों का परिधान है और प्रायः चटख रंगों के होते हैं। पैराशूट पैंट ने 'यू०एस० संस्कृति में १६८० के दशक में मीडिया का ध्यान आकर्षित किया, बेक नृत्य की ओर बढ़ती सॉस्कृतिक जागरूकता के एक भाग के रूप में।

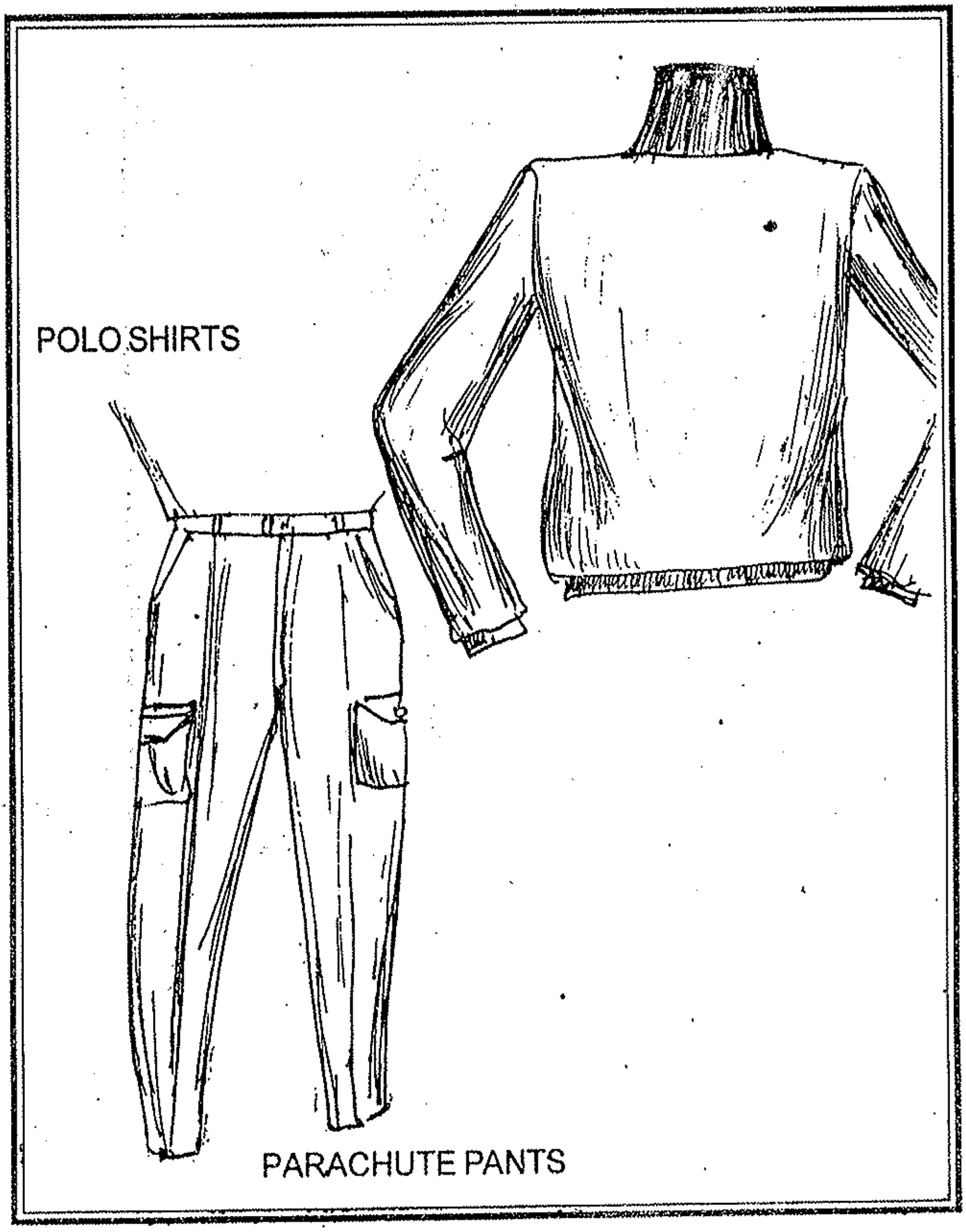

पंक:-

यह एक स्थापत्य–विरोधी रॉक संगीत आंदोलन है जिसका उद्‌भव अमरीका व इग्लैंड में १९७४ या १९७५ के आस–पास हुआ। पंक फैशन, पहनावे, केश सज्जा, कॉस्मेटिक इत्यादि की शैलियाँ हैं।

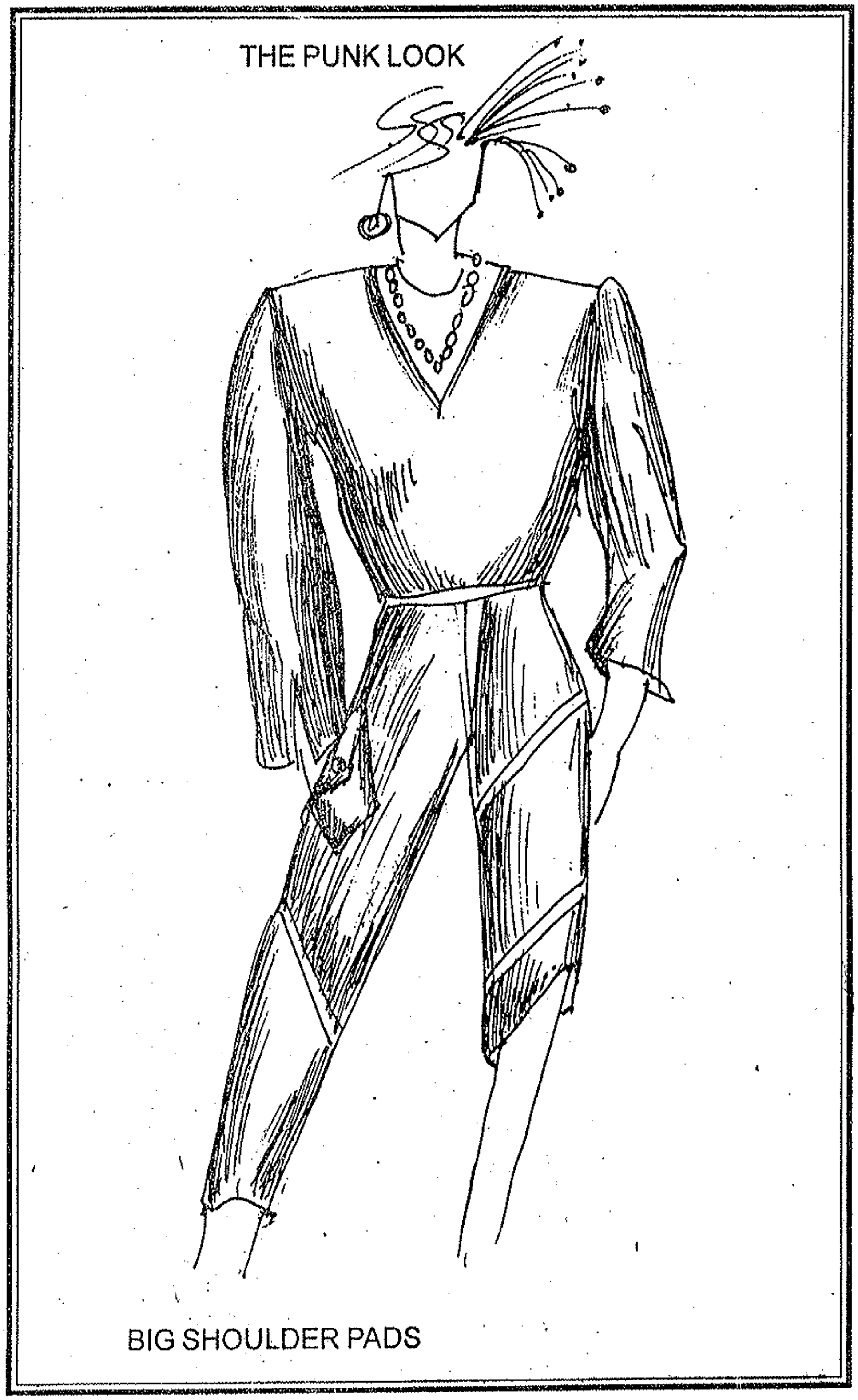

अब ६० के दशक के सिलहौटी देखिये—लम्बे सीधे बाल बीच से मांग निकालना, बीड, ब्रेसलेट, पश्मीना, टैटू, मिनिमलास्टिक डिजाइन आदि प्रचलन में थे।

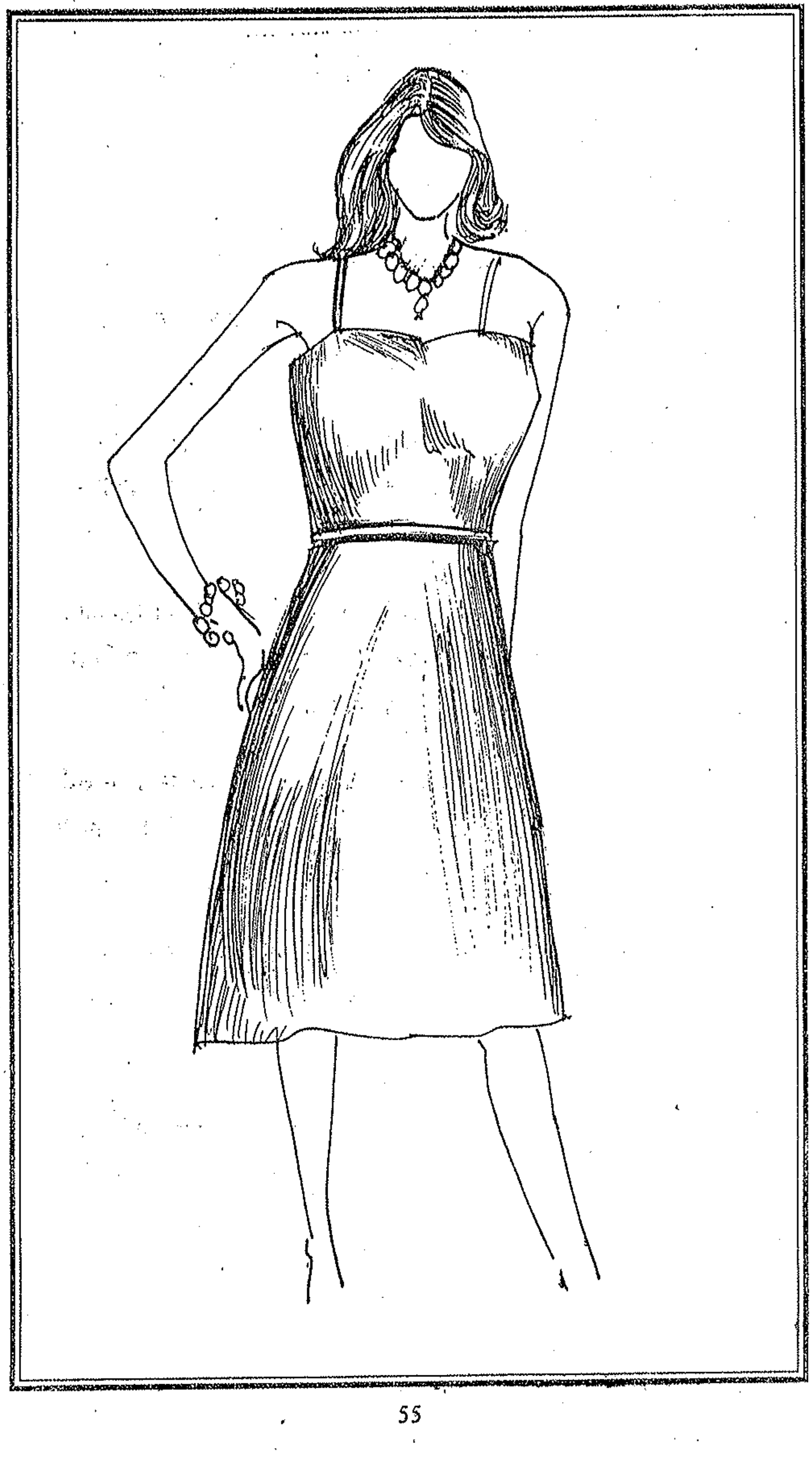

अभ्यास-

१– विभिन्न सिलहौटियों का चित्र–संग्रह तैयार करें।

२– पार्ट में दिए गए सिलहौटियों द्वारा कुछ आधुनिक युग की पोशाकें डिजाइन करने का प्रयास करें।

१०.४ सारांशः-

किसी परिधान का सिलहौटी का सन्दर्भ उसके प्रोफाइल, बाहरी रेखा या ड्रेस शैली के कन्टूर से होता है। यह गैदर्ड, फ्लोइंग, हाई वेस्टेड, 'एस' आकार, नैरो इत्यादि जितना विविध हो सकता है।

४० के दशक में स्त्रियों के लिए प्रमुख सिलहौटी था– चौड़े कंधे, छोटी कोर्सटेड कमर और भारी नितम्ब। कपड़े अत्यधिक हल्के और फ्लोवी हुआ करते थे क्योंकि नए सिन्थेटिक कपड़े प्रचलन में लाए जा रहे थे।

मेकअप आकर्षक परन्तु सरल होता था। नए रूप के साथ कंधे का सिलहौटी अधिक 'नर्म' हो गया, कमर पर और भी अधिक कसे कोर्सटेड पहने जाते थे तथा नितम्ब और उभारे जाते थे। प्रायः पेटीकोट भी जोड़ दिये जाते थे।

१९५० के दशक में लोकप्रिय रूप थे– पूडल स्कर्ट, पीटर पैन कॉलर वाली शर्ट, सैडल जूते, कैट्स आई चश्में, हवाईयान शर्ट, लेटरमैन जैकेट, सफेद टी शर्ट, नीली जींस (गहरे कफ), बीटनिक्स (पूरे काले) तथा सरकिल स्कर्ट।

१९६० के दशक में लोकप्रिय रूप थे, मिनी स्कर्ट, गोगो बूट, पिल बॉक्स हैट, हॉटपैंट, शिफ्ट ड्रेस, बेबी डॉल ड्रेस, ३/४ लम्बाई की आस्तीन, टाई एण्ड डाई तथा नेहरू जैकेट।

१९७० के दशक में लोकप्रिय सिलहौटी थे ट्रैक सूट, मूड रिंग्स, अर्थ जूते, बेल–बॉटम्स, प्लेटफार्म जूते, लेजर सूट, डिस्को–ग्लैम रॉक, प्रिन्टेड नायलॉन या पोलीस्टर शर्ट तथा कॉर्डरॉय।

१९८० के दशक में लोकप्रिय सिलहौटी थे पोलो शर्ट, पैराशूट पैंट, एसिड वॉश जींस, बड़े शोल्डर पैड्स तथा पंक लुक।

१९९० के दशक में लोकप्रिय सिलहौटी थे लम्बे सीधे बीच की मॉग निकले केश, पावर बीड ब्रेसलेट, पशमीना, टैटू तथा मिनिमलास्टिक डिजाइन।

११.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न—१ सिलहौटी से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न—२ ४० के दशक के प्रमुख सिलहौटी क्या थे?

प्रश्न—३ ५० के दशक के प्रमुख सिलहौटी क्या थे?

प्रश्न—४ ६० के दशक के प्रमुख सिलहौटी क्या थे?

प्रश्न—५ ७० के दशक के प्रमुख सिलहौटी क्या थे?

११.६ स्वाध्ययन हेतु

१— कस्ट्यूम १०६६—१९९०, द्वारा जॉन पीकॉक, प्रकाशक—थेम्स एण्ड हडसन।

यूनिट-१२

सहस्वरूप

१२.१ यूनिट प्रस्तावना

१२.२ उद्देश्य

१२.३ प्रेरणात्मक उत्पाद डिजाइन

१२.४ सारॉश

१२.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

१२.६ स्वाध्ययन हेतु

१२.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

फैशन डिजाइनिंग एक अति विश्लेषणता वाला क्षेत्र बन गया है। हर एक अवसर के लिए ड्रेस डिजाइन की जाने लगी है और बाजारीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है। इन्सपाइरेशनल प्रोडक्ट डिजाइन्स विद्यार्थियों को शिक्षित करता है कि बाजारीकरण किए जाने वाले उत्पादों के लिए पोशाकें कैसे डिजाइन करें।

१२.२ उद्देश्यः-

यह यूनिट विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता करता है कि किसी विशेष उत्पाद का बाजारीकरण या विज्ञापन करते समय विशेष रंग संयोजन और पोशाक का पहना जाना क्यों अनिवार्य है।

१२.३ प्रेरणात्मक उत्पाद डिजाइनः-

इस यूनिट में हमने कुछ विज्ञापन उदाहरण स्वरूप लिए हैं जिसमें विज्ञापन सम्बन्धित लोग भी शामिल हैं। हमने उन पोशाकों पर चर्चा की है जो उन लोगों द्वारा पहनी गई है और क्यों पहनी गई है, चयनित रंग संयोजनों पर भी चर्चा की गई है। जिस प्रकार उत्पाद, मॉडल और उपभोक्ता के मस्तिष्कों के मध्य एक समन्वय स्थापित किया

गया है तथा इस समन्वय की स्थापना में मॉडल की पोशाक की भूमिका पर विस्तृत व्याख्या की गई है।

यह उन विद्यार्थियों के लिये सहायक होगा जो कॉरपोरेट डिजाइनिंग अथवा मॉडल्स के लिये डिजाइन करना आरम्भ करेगें।

नीचे दिखाया गया विज्ञापन एक हवाई उड़ान कम्पनी का है जिसका नारा है ''फ्लाई हाई''। यह विज्ञापन विश्व कप २००६ के लिये है, जो लोगों को अपनी हवाई उड़ानों द्वारा विश्व कप देखने जाने के लिये प्रेरित करता है।

इस विज्ञापन के लिये नीला व सफेद रंग के साथ कहीं कहीं पीला रंग चुना गया है। टी-शर्ट एक क्रीड़ा पोशाक है जहाँ मॉडल द्वारा पहनी गई जींस, सफर में पहने जाने वाली पोशाक की द्योतक है। नीला रंग आकाश का नीला रंग न होकर खेल का नीला रंग है।

यदि मॉडल ने किसी और रंग के कपड़े पहने होते तो विज्ञापन का वातावरण भिन्न हो जाता और इस विज्ञापन का उद्देश्य सिद्ध नहीं होता।

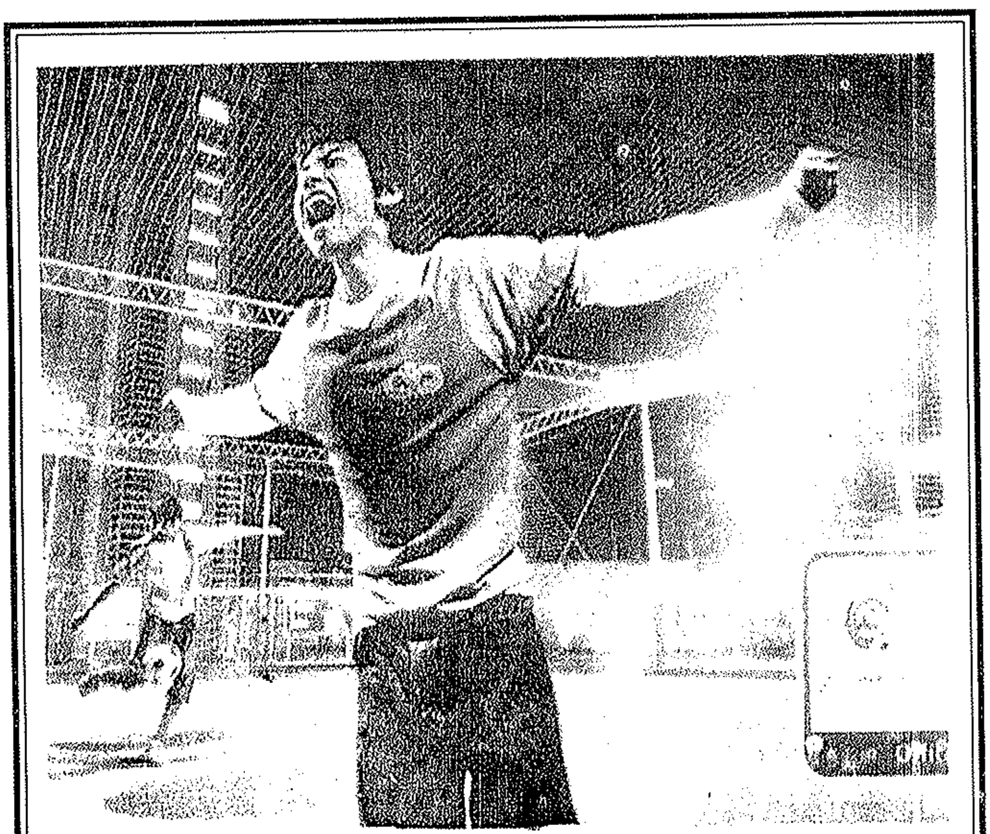

नीचे दिया गया उदाहरण लोगों को चिकेन खाने के लिये प्रेरित करने से सम्बन्धित है। यह विज्ञापन कैम्पेन, भारत में बर्ड फ्लू फैलने के बाद शुरू किया गया जब लोग फ्लू के डर से चिकेन खाने से परहेज करने लगे थे। यह विज्ञापन चूजे को डाक्टर के साथ दिखा कर उपभोक्ताओं में खोया हुआ विश्वास वापिस जगाने का प्रयास करता है।

चयनित रंग एनालोगस रंग है- लाल, नारंगी तथा पीला। यदि यह विज्ञापन किसी और रंग में होता तो चूजा, चूजे जैसा नहीं लगता। डाक्टर की कमीज के रंग का चुनाव भी उपयुक्त है क्योंकि यह कथावस्तु से मेल खाता है। सफेद कोट डाक्टर के कोट का द्योतक है और नारंगी कमीज, पीले चूजे से मेल खाते रंग में है।

अब जरा कल्पना करें कि क्या किसी अन्य संयोजन में बनाया गया यही विज्ञापन इतना प्रभावशाली व स्वव्याख्यात्मक होता।

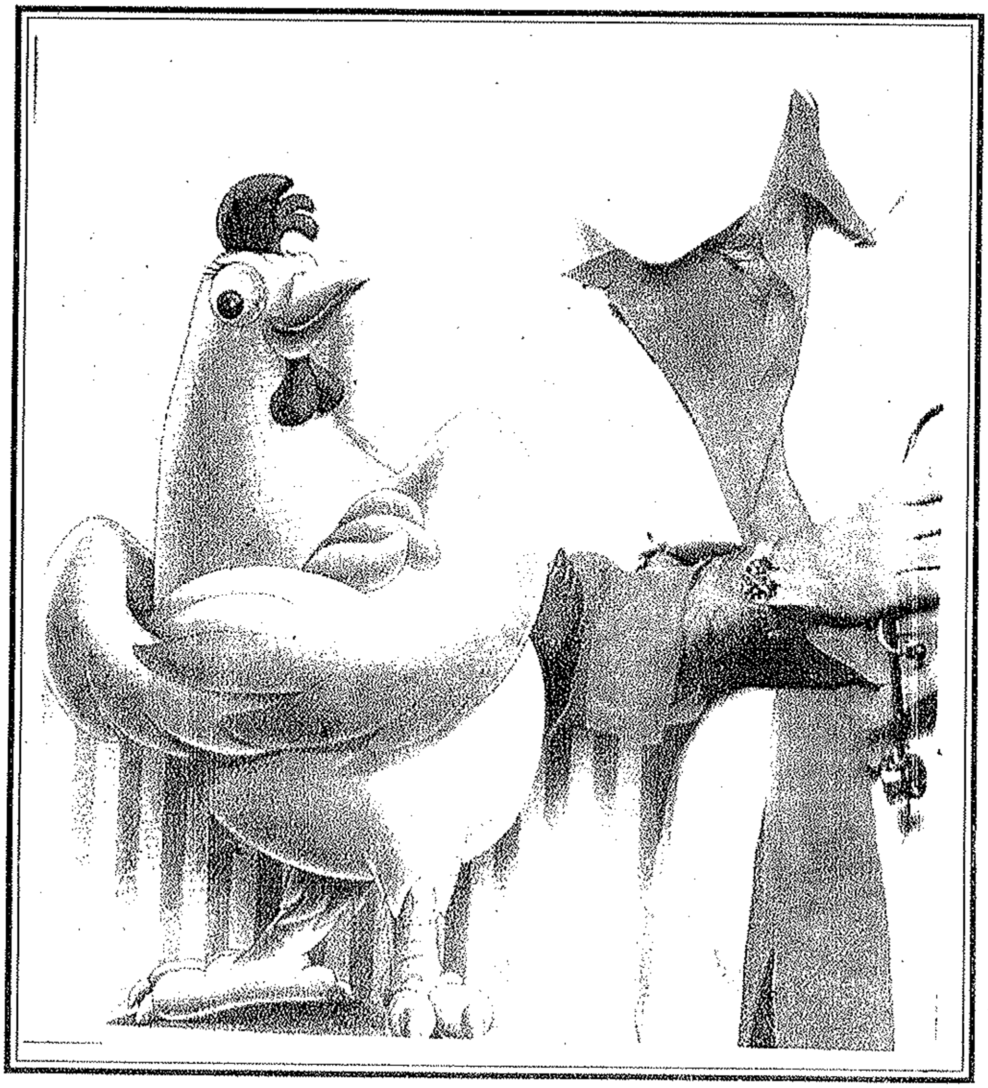

यह एक स्वास्थ्य टॉनिक का विज्ञापन है। विज्ञापन का वातावरण अति भारतीय पराम्परिक, सुरक्षित व घरेलू है।

यह विज्ञापन उम्र व समझदारी का महत्व समझाता है। माडल्स द्वारा पहनी गई साड़ियाँ उनकी उम्र पहचानने में सहायता करती है तथा स्पष्ट करती है कि कौन किसे सलाह दे रही है।

यदि यही रंग पलट दिये जाते तो इसका प्रभाव कम हो जाता।

पहनावे की शैली में कोई आधुनिक प्रभाव नहीं है। दोनों मॉडल्स ने पारम्परिक साड़ियाँ, पारम्परिक सरल ब्लाउज के साथ पहनी हैं। केश सज्जा व मेकअप भी अवसरानुसार है। पहनावे की शैली तथा सभी रंग, उत्पाद की गुणवत्ता व सत्यता सिद्ध करने में सहायक हो रहे हैं।

नीचे दिया गया विज्ञापन एक एयर कूलेन्ट का है। उत्पाद सफेद व ग्रे रंग का है। दिखाई गई मॉडल ने एक नीले रंग की आधुनिक पश्चिमी प्रभाव वाली पोशाक पहनी है। उत्पाद बाजार में उपलब्ध नवीनतम रूप का द्योतक हे जो अ.धुनिक पश्चिमी तकनीकों से बनाया गया है। अतः मॉडल का पहनावा पूर्णतः समकालिक है, जो उत्पाद के मूड से मेल खाता है।

नीला पानी का रंग है। प्रयुक्त गहरा नीला रंग ठंडक का द्योतक है और अन्यथा डल प्रजेन्टेशन में एक रूचिकर रंग डालने का काम कर रहा है।

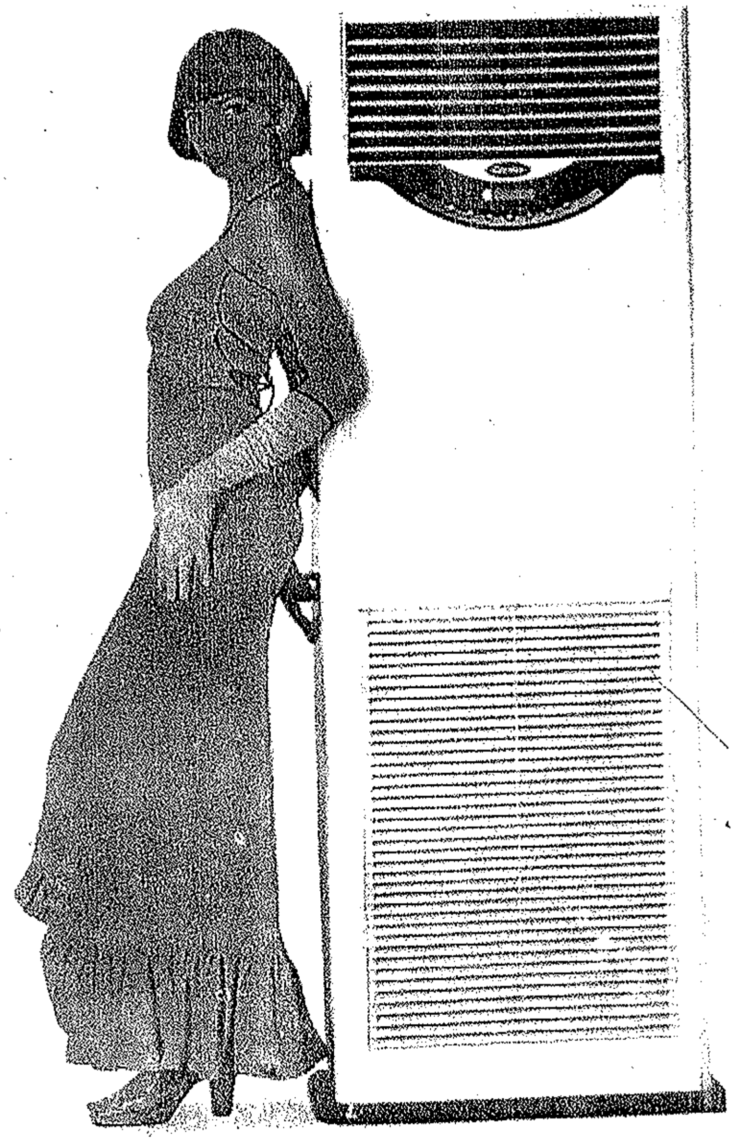

यह विज्ञापन, भारतीय बाजार के लिये एक विदेशी एयरलाइन का है। रंग एयरलाइन के प्रतीक चिन्ह का द्योतक है। परन्तु उसका अंग विन्यास भारतीय है। इसी से विज्ञापन में भारत व पश्चिम का सम्बन्ध प्रदर्शित होता है।

मॉडल की पोशाक एक व्यापारिक ड्रेस सूट है तथा गले में एक रंगीन स्कार्फ पहना गया है। पहनावा कलात्मकता, व्यावसायिकता तथा अति उत्तम सेवा का द्योतक है।

नीचे दिया गया विज्ञापन, कॉर्पोरेट जगत में कार्यरत एक वरिष्ठ इक्जीक्यूटिव की वर्किंग क्लास प्रदर्शित करता है। पृष्ठभूमि में एक हाईटेक उद्योग है जहाँ से विश्व स्तरीय वाहनों का निर्माण होता है।

मॉडल द्वारा पहनी गई पोशाक एक टू-पीस सूट है जिसके साथ सौम्य दिखने वाली कमीज पहनी गई है। चूँकि बिना टाई के पहना गया है, अतः पहनावा औपचारिक होते हुए भी कैजुअल दिख रहा है। हाथ में उपस्थित अतिरिक्त कमीज दर्शाती है कि उन्हें कितना समय वाहन में सफर करते गुजारना पड़ता है।

पुरुषों के पहनावे से एक आरामदेह कूल गाड़ी की भावना उत्पन्न की गई है।

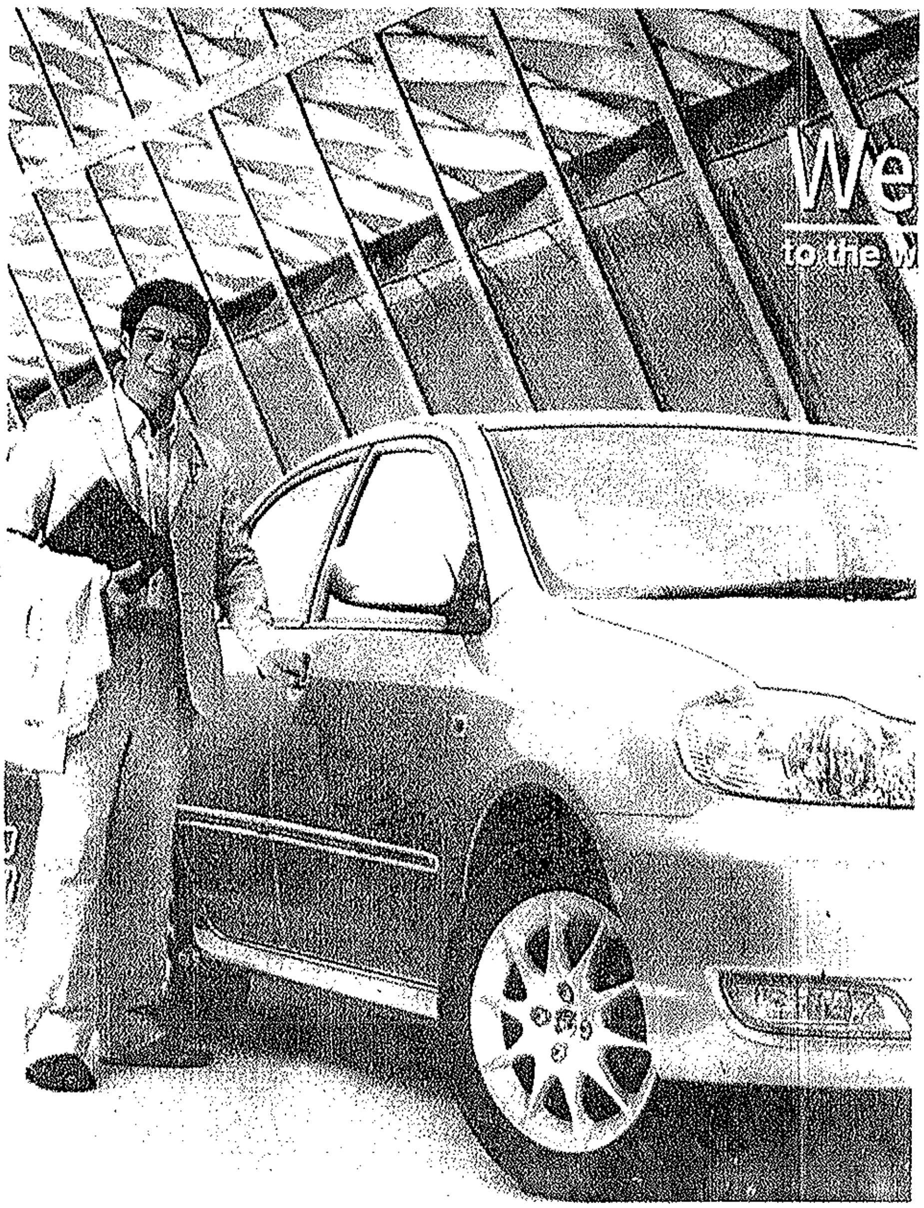

निम्न विज्ञापन सूचना तकनीकी जगत के वैश्विक वातावरण को प्रदर्शित करता है। यह एक विज्ञापन है जो व्यापार, मनोरंजन तथा जुड़ाव के विषय में एक ही समय पर बात करता है।

मॉडल द्वारा धारण की गई पोशाक, मानव निर्मित रेशों से बने कपड़े की बनी है जो रख-रखाव में आसान, क्रश-रोधक तथा अति व्यावसायिक रूप लिये है।

परम्परा, विश्वास, सुरक्षा, निश्चितता तथा समझदार व अनुभव वह शब्द हैं जो उम्र के साथ, अच्छे से प्रदर्शित किये जा सकते हैं।

पचास साल से ऊपर की उम्र वाले, भारतीय संस्कृति तथा मर्यादाओं से परिपूर्ण जोड़े की भावनाओं को पारम्परिक दक्षिणी रेशम की बुनी साड़ियाँ पहनाकर, अच्छी तरह प्रदर्शित किया जा सकता है। प्रयुक्त रंग चटख व शोभावान है। प्रयुक्त कपड़ा रेशों की महारानी है। यह भारत की सम्पन्न विरासत को प्रदर्शित करता है।

यह विज्ञापन आर्थिक रूप से सुरक्षित जीवन का विचार बेचने का प्रयास कर रहा है। यदि इस विज्ञापन में कोई अन्य पोशाक का प्रयोग किया गया होता तो भी क्या यही प्रभाव पड़ता?

नीचे दिया गया विज्ञापन युवा पीढ़ी के लिये बने उत्पाद को दर्शाता है। प्रयुक्त रंग चटख है।

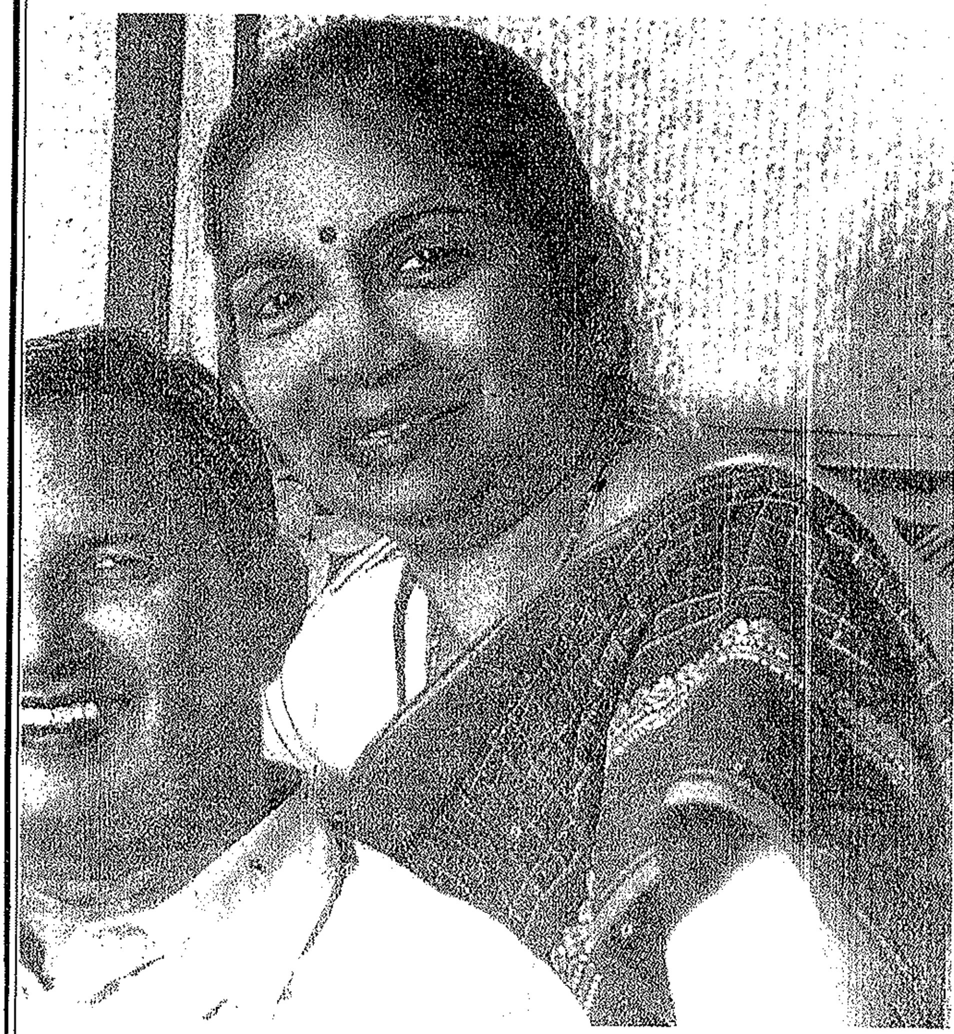

पृष्ठभूमि के भाव को देखते हुए एक क्रीड़ास्थल, आनन्दचित और पिक्निक के लिए उपयुक्त रचना की गई है।

मॉडल द्वारा पहनी गई पोशाक एक कैजुअल टी-शर्ट है जिसके नीचे चेक की स्कर्ट पहनी है जो उच्च मध्यम वर्ग के आज के युवा का द्योतक है जो वैश्विक बाजार में उतारने को तैयार है।

लाल रंग की स्पोर्ट्स जैकेट, जो नीली जींस के साथ पहनी गई है, व्यक्ति के खिलाड़ी प्रवृत्ति व गति को दर्शाती है।

पोशाक, पृष्ठभूमि व उत्पाद एक ऐसा वातावरण रचते हैं जो उपभोक्ता द्वारा उसी स्प्रिट में अपनाया जाता है।

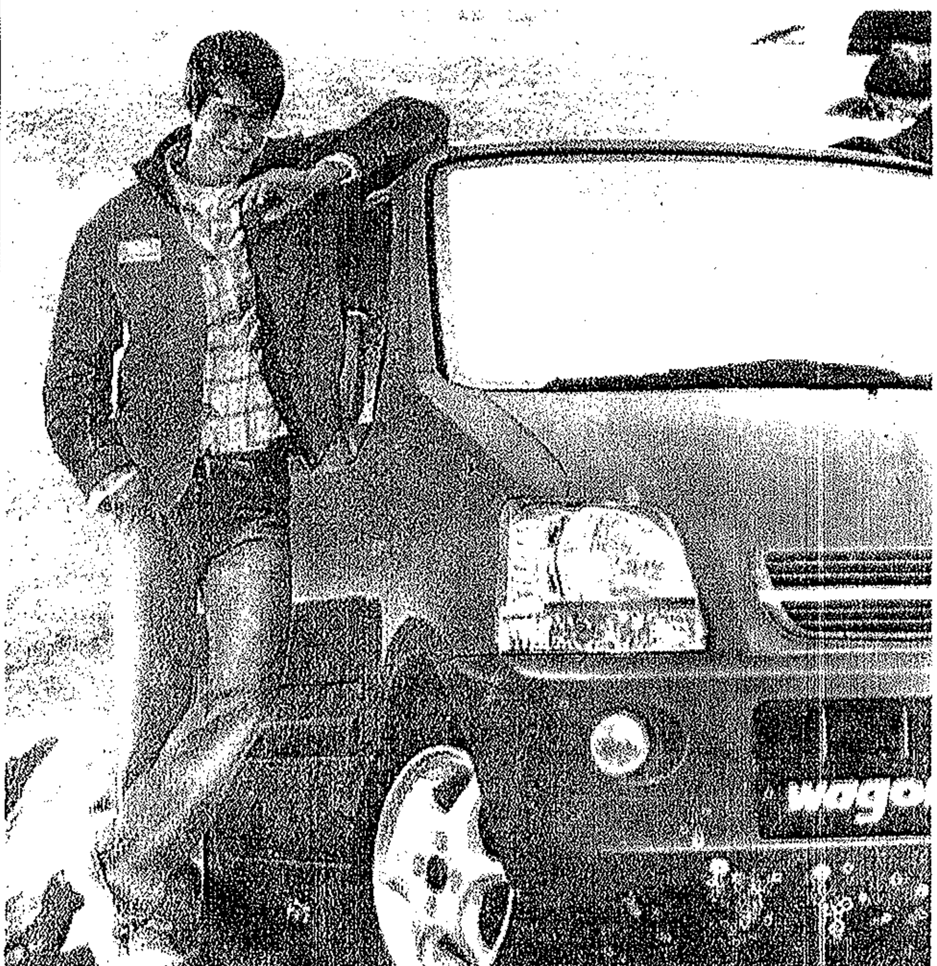

यह सेलफोन कम्पनियों द्वारा एक अन्य विज्ञापन है। इसमें एक आदमी अपने परिवार व मित्रों से दूर अकेला बैठा है। परन्तु फिर भी सेलफोन द्वारा सुनकर या देखकर उनसे जुड़ा है।

पृष्ठभूमि व पेड़ों की परछाई दर्शाती है कि समय दोपहर का है। मॉडल द्वारा पहनी गई पोशाक एक कार्यरत व्यक्ति की द्योतक है। रंग संयोजन ठंडा तथा शान्त है व मॉडल की पोशाक वातावरण बाँधने में सहायक है।

पूरे विज्ञापन का कुल स्वरूप, जहाँ कहीं भी हो, अपने लोगों से जुड़े रहने का है।

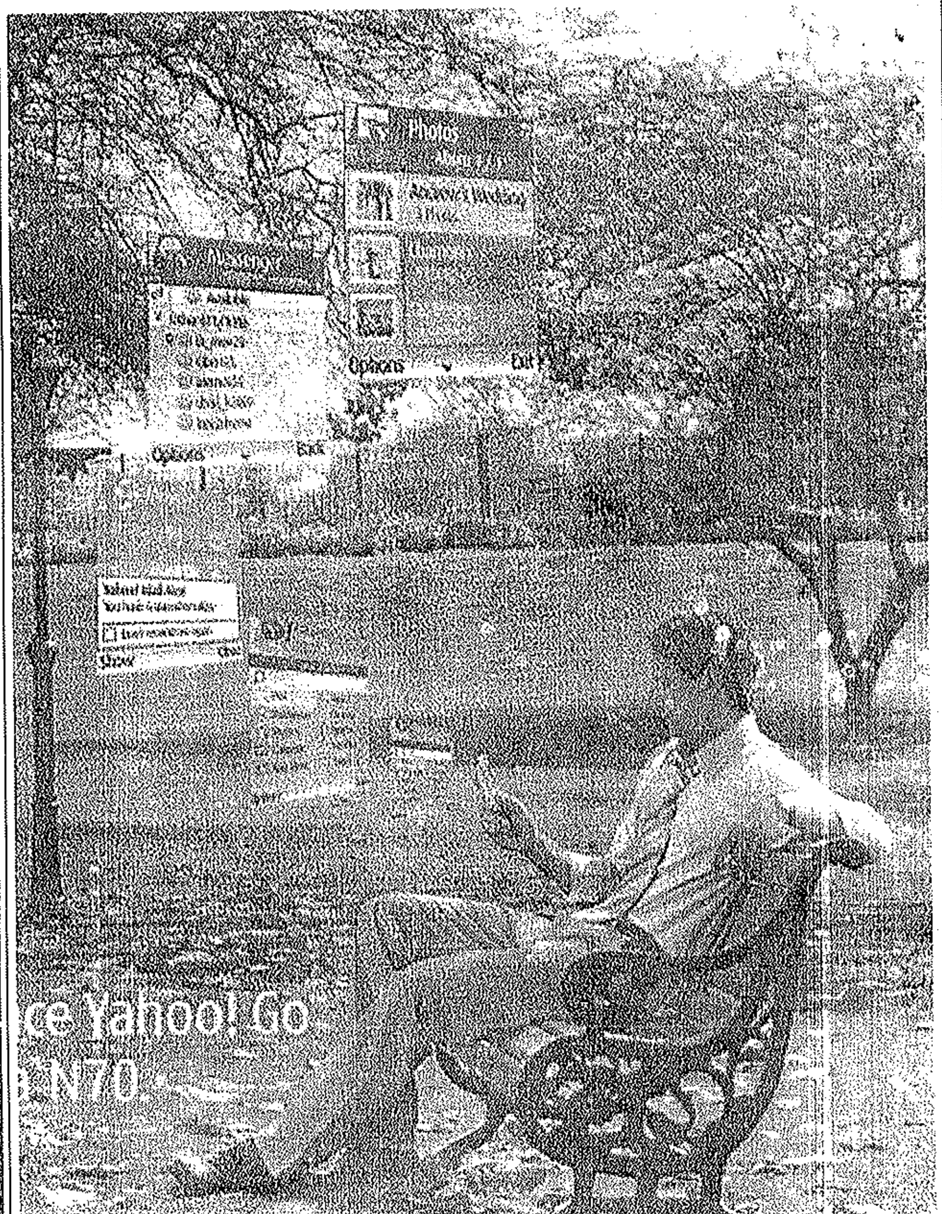

यह ट्रेवेल्स बैग्स का विज्ञापन है। ऐसा सामान जो आप स्वयं उठा सकें। मॉडल की पोशाक पूरी तरह अवसर अनुसार है। इस विज्ञापन में मॉडल द्वारा पहनी गई पोशाक पर पारम्परिक मोटिफ छपे हैं। यह देश की सम्पन्न संस्क ति का भाव देता है।

इस विज्ञपन का उच्च स्तरीय फैशन से कोई सरोकार नहीं है। परन्तु फिर भी अवसरवादी कस्टूयम डिजाइनिंग को दर्शाता है। जिसमें पहनने वालों के क्रियाकलापों को ध्यान में रखा जाता है। यह चिन्हात्मक ही नहीं, व्यवहारिक और सत्यतापूर्ण भी है।

''रफ एण्ड टफ'' जीन्स जिसमें अनगिनत जेबें हैं, कार्य की प्रकृति सुझाती हैं। जूते भी स्थायी व भारी हैं। टोपी सुरक्षात्मक और सूर्य से छाया की तरह कार्य कर रही है।

पोशाक से उस ऊँचाई का भी अन्दाजा मिलता है जिस पर कार्य किया जा रहा है।

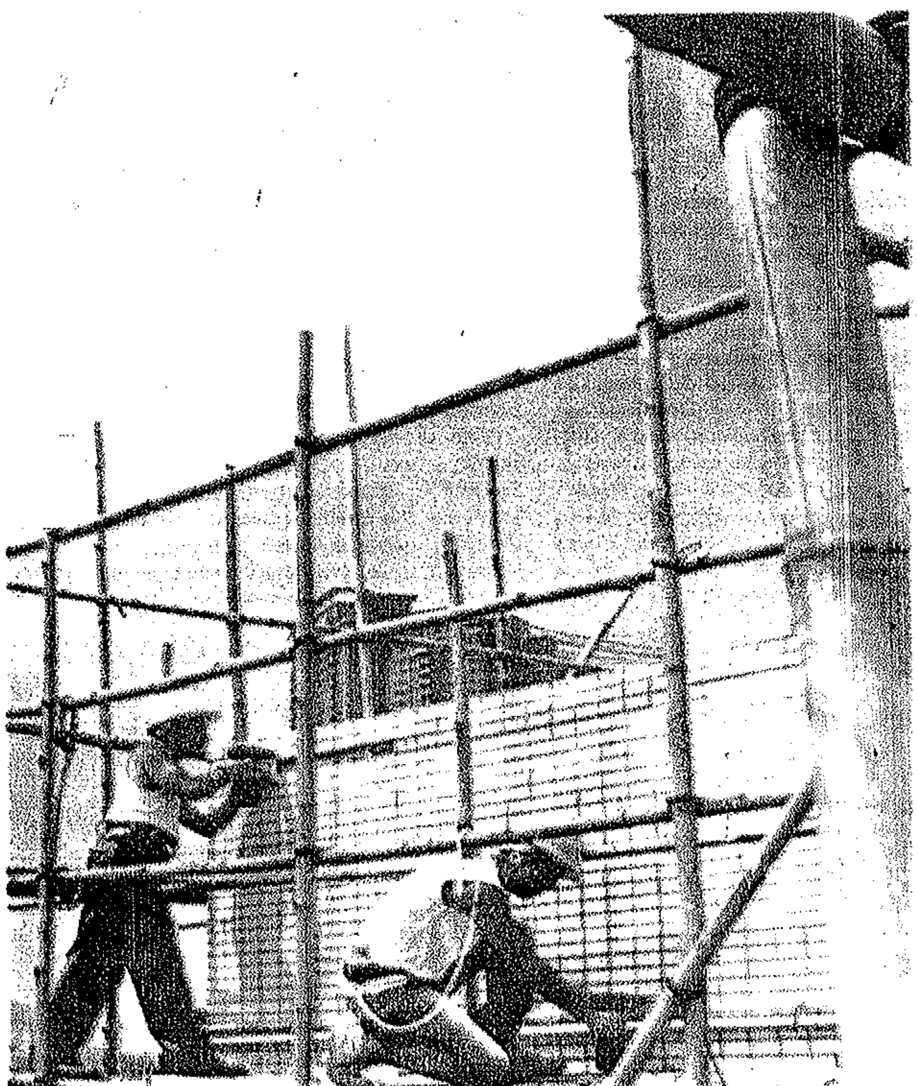

इस विज्ञापन में मॉडल द्वारा पहनी गई पोशाक छपाई की गई व्यवसायिक मोटिफ की है। यह देश की समृद्ध संस्कृति को दर्शाता है।

यह दर्शक को उस देश का दौरा करने के लिये प्रेरित करता है। कला, भवन-निर्माण, धर्म, शिल्प, हस्तशिल्प की झलक देती पृष्ठभूमि के साथ-साथ, मॉडल द्वारा पहनी गई पोशाक का उच्च कपड़ा भी उच्च कारीगरी से बना है।

इस विज्ञापन का भाव आज के हाईटेक व्यावसायिक जगत से कार्यरत स्त्री का है।

मॉडल की पोशाक द्वारा वर्किंग कल्चर दिखाया गया है जबकि पृष्ठभूमि भूमिका बाँधती है।

अभ्यास-

१ - पत्रिकाओं का अध्ययन करें तथा विज्ञापनों में मॉडल्स खोजें व उनके द्वारा पहनी गई पोशाकों का विश्लेषण करें।

२ - टेलीविजन के विज्ञापन देखें तथा मॉडल द्वारा पहनी गई पोशाकों का निरीक्षण करें।

१२.४ सारांश-

व्यावसायिक जगत के विज्ञापन में मॉडल द्वारा पहने गये कपड़ों की समझ होना महत्वपूर्ण है। मॉडल्स के लिये पोशाकें डिजाइन करना विज्ञापन का महत्वपूर्ण पक्ष है।

१२.५ स्वार्निधार्य प्रश्न/अभ्यास-

प्रश्न-१ दिये गये विज्ञापन का रंग संयोजन के संदर्भ में विश्लेषण करें।

प्रश्न-२ दिये गये विज्ञापन का मॉडल की पोशाक के संदर्भ में विश्लेषण करें।

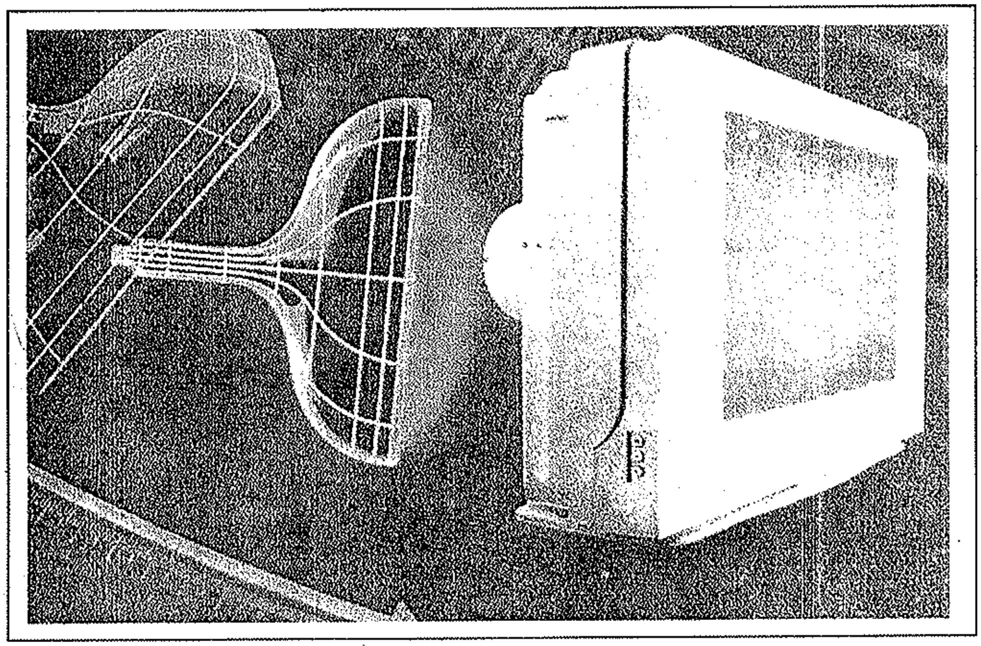

प्रश्न-३ दिये गये विज्ञापन का मॉडल की पोशाक तथा रंग संयोजन के संदर्भ में विश्लेषण करें।

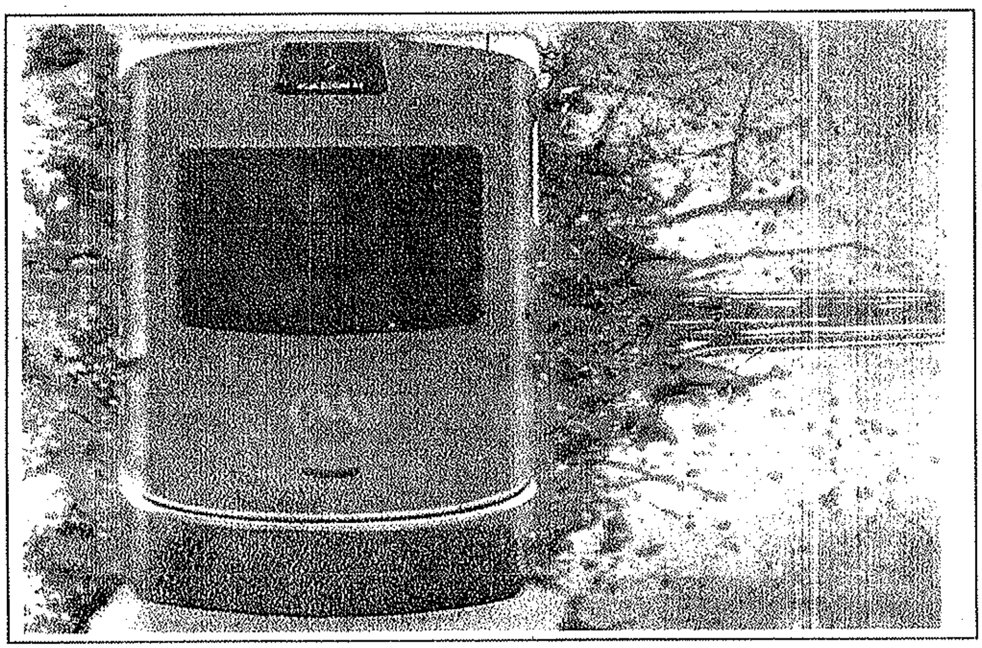

प्रश्न-४ दिये गये विज्ञापन का रंग संयोजन के संदर्भ में विश्लेषण करें।

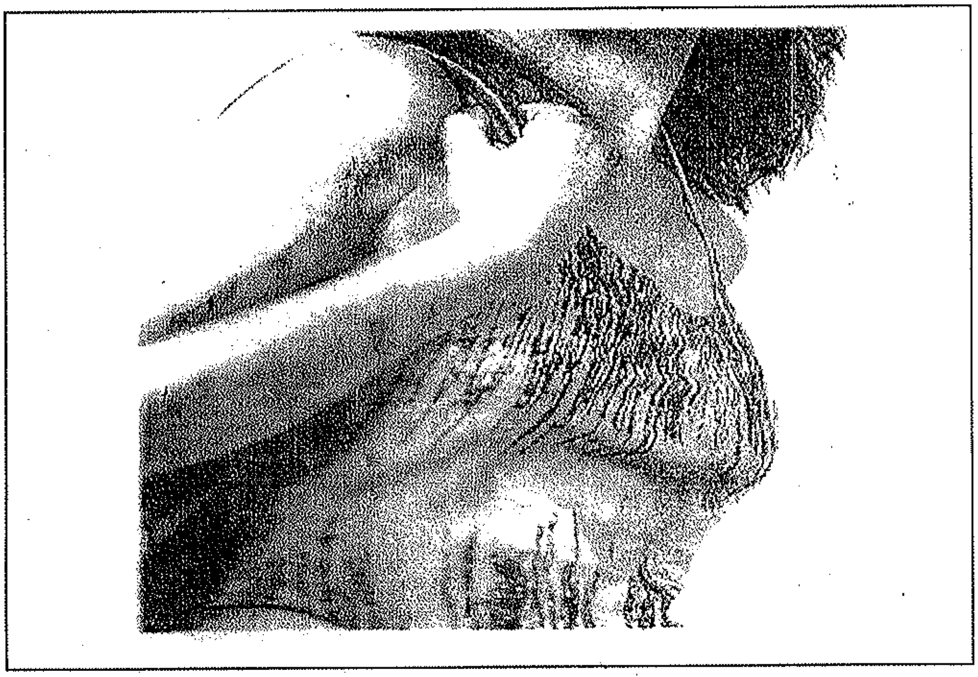

प्रश्न-५ दिये गये विज्ञापन का रंग संयोजन के संदर्भ में विश्लेषण करें।

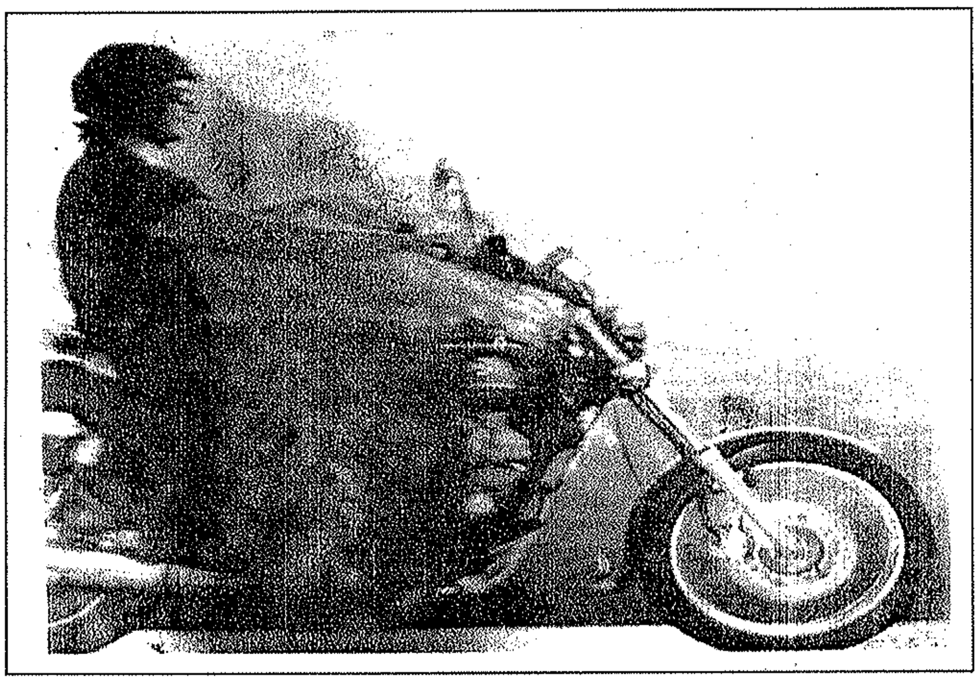

१२.५ स्वाध्ययन हेतु

१ - करस्ट्यूम १०६६-१६६०, द्वारा जॉन पीकॉक, प्रकाशक-थेम्स एण्ड हडसन।

NOTES

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

DFD/[redacted] - 03

फैशन डिजाइनिंग

डिजाइन आइडिया-१

ब्लाक

८

डिजाइन प्रेरणा

यूनिट-१३

फिगर पर प्रिन्ट का प्रभाव

यूनिट-१४

राज्यों की पोशाकें

यूनिट-१५

विभिन्न कथावस्तुओं पर आधारित डिजाइन

यूनिट-१६

फैशन शो के लिये डिजाइनिंग

ब्लाक-४

विषय परिचय

डिजाइनिंग क्षमता में वृद्वि में सहायक हर वस्तु व स्थान और विचान का बहुत महत्व है। जो कि डिजाइनिग के क्षेत्र मे पैठ बनाने केलिए बहुत आवश्यक है।

डिजाइन प्रेरणाः-

डिजाइनर का उद्देश्य होता है, कथावस्तु का चयन करना, प्रेरित होना और किसी ऐसे संग्रह पर कार्य करना जो अन्त में बाजारीकरण के अनुरूप हो, यह खण्ड बताता है कि यह सब कैसे करें।

यूनिट-१३
फिंगर पर प्रिन्ट का प्रभावः-

किस प्रकार की फिगर पर किस प्रकार का चिन्ह जँचेगा, यह समझना अत्यन्त आवश्यक है। यह यूनिट इस विषय पर जानकारी तथा व्यावहारिक सुझाव देता है।

यूनिट-१४
राज्यों की पोशाकें:-

भारत के विभिन्न राज्यों में पहनी जानी वाली विभिन्न प्रकार की पोशाकों से यह यूनिट आपका परिचय करायेगा।

यूनिट-१५
विभिन्न कथावस्तुओं पर आधारित डिजाइनिंगः-

जब हम पोशाकें डिजाइन करते हैं तो प्रेरणा के लिये हम विभिन्न कथावस्तुओं को खोजते हैं। किसी विशिष्ट कथावस्तु, वस्तु अथवा दृश्य को मस्तिष्क में रखकर कैसे डिजाइन कर सकते हैं, यही इस यूनिट में चर्चा का विषय है।

यूनिट-१६
फैशन शो के लिए डिजाइनिंगः-

जब डिजाइनर को अपना कार्य एक जनसमूह के सामने प्रदर्शित करना होता है तो यह प्रायः फैशन शो द्वारा किया जाता है। फैशन शो के लिए डिजाइनिंग कैसे करें, इस यूनिट में चर्चा की गई है।

संरचना

१३.१ प्रस्तावना

१३.२ उद्देश्य

१३.३ फिंगर पर प्रिन्ट का प्रभाव

१३.४ सारॉश

१३.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

१३.६ स्वाध्ययन हेतु

१३.१ यूनिट प्रस्तावनाः-एक विशिष्ट प्रकार के शारीरिक आकार द्वारा पहना गया प्रिन्ट, उसे नाटकीय रूप में प्रभावित करता है, यह यूनिट इन प्रभावों से आपका परिचय कराता है।

१३.२ उद्देश्यः-एक फैशन डिजाइनर के रूप में विद्यार्थियों को यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि किसी विशेष प्रकार की फिगर क्या जॅचेगी, क्या नहीं जॅचेगी। इस यूनिट का उद्देश्य उस डिजाइनिंग कौशल का विकास करना है जिसके द्वारा सही प्रिन्ट का चुनाव किया जा सके।

३.३ फिगर पर प्रिन्ट का प्रभावः-

फैशन सामान्य ज्ञान, खण्ड–३ में हम विभिन्न प्रकार की फिगर पर अध्ययन कर चुके हैं। अब हम पढ़ेगें कि किसी विशेष प्रकार की फिगर पर प्रिन्ट क्या प्रभाव डालते हैं।

सामान्य तौर पर देखा जाए तो, हम फिगर प्रकार को आसानी से लम्बी, छोटी, मोटी व पतली प्रकारों में वर्गीकृत कर सकते हैं। माना किसी भी फिगर के सामान्य औसत नापे है– ऊँचाई= ५' ३", छाती=३४", कमर=२६" और नितम्ब=३६"।

फिर एक शार्ट फिगर की होगी, ऊँचाई=५", छाती=३४", कमर–२६" और

नितम्ब=३६" तथा एक ल .ी फिगर होगी, ऊँचाई= ५' ६", छाती=३४", कमर=२६" तथा नितम्ब=३६"।

इसी तरह एक मोटी फिगर होगी, ऊँचाई=५' ३", छाती=३८", कमर=३०", तथा नितम्ब=४०" और पतली फिगर होगी, ऊँचाई=५' ३", छाती=३२", कमर=२४", और नितम्ब=३२"।

अब इन फिगर के लिए यदि हमें इन्हें स्ट्रिप्स अर्थात धारियॉं, फ्लोराल अर्थात फूल–पत्ती वाले प्रिन्ट अथवा पोल्का डॉट पहनाना है तो यह कैसी दिखेगी?

एक लम्बी फिगर व धारियॉं

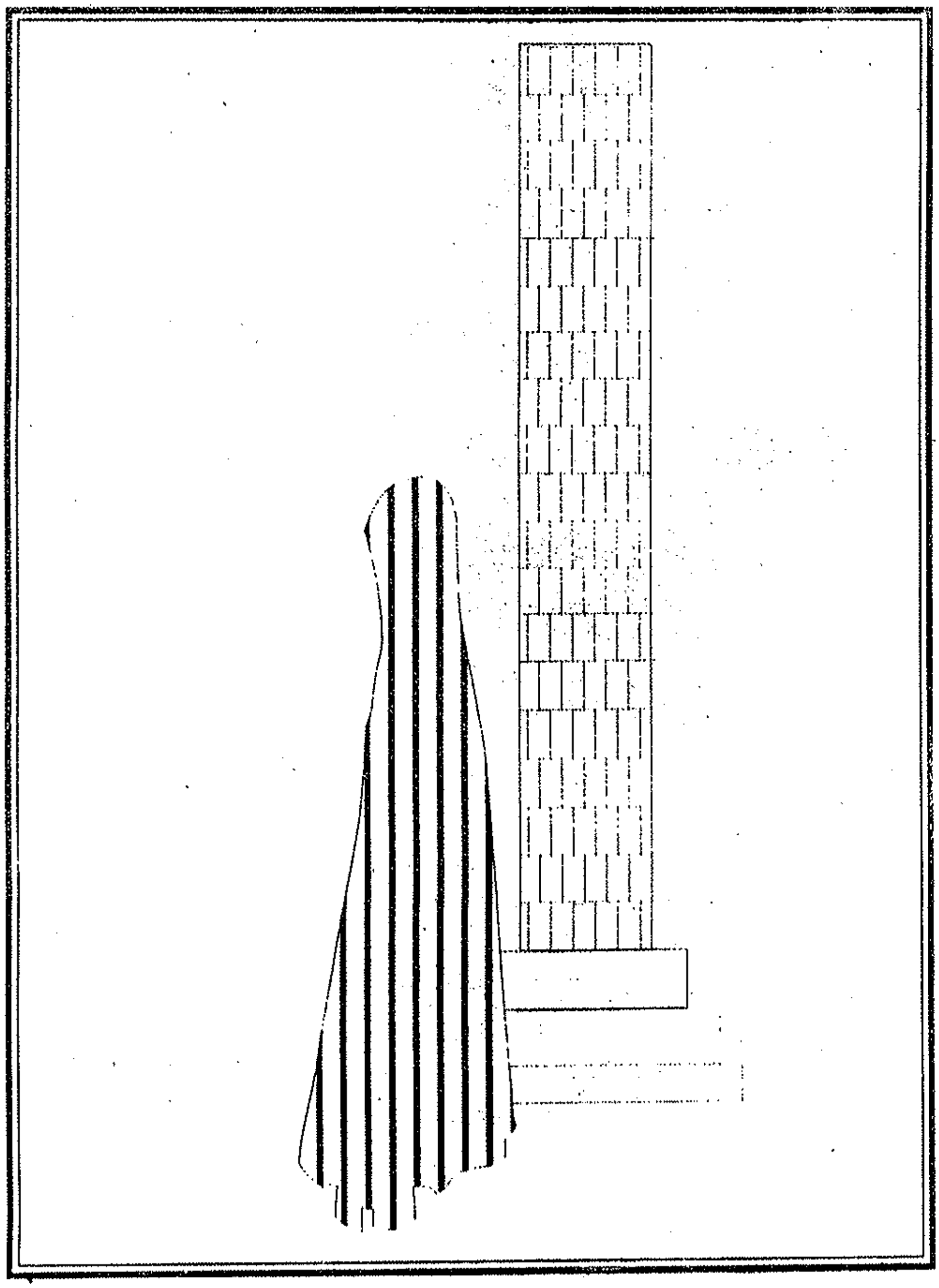

एक छोटी फिगर व धारियाँ

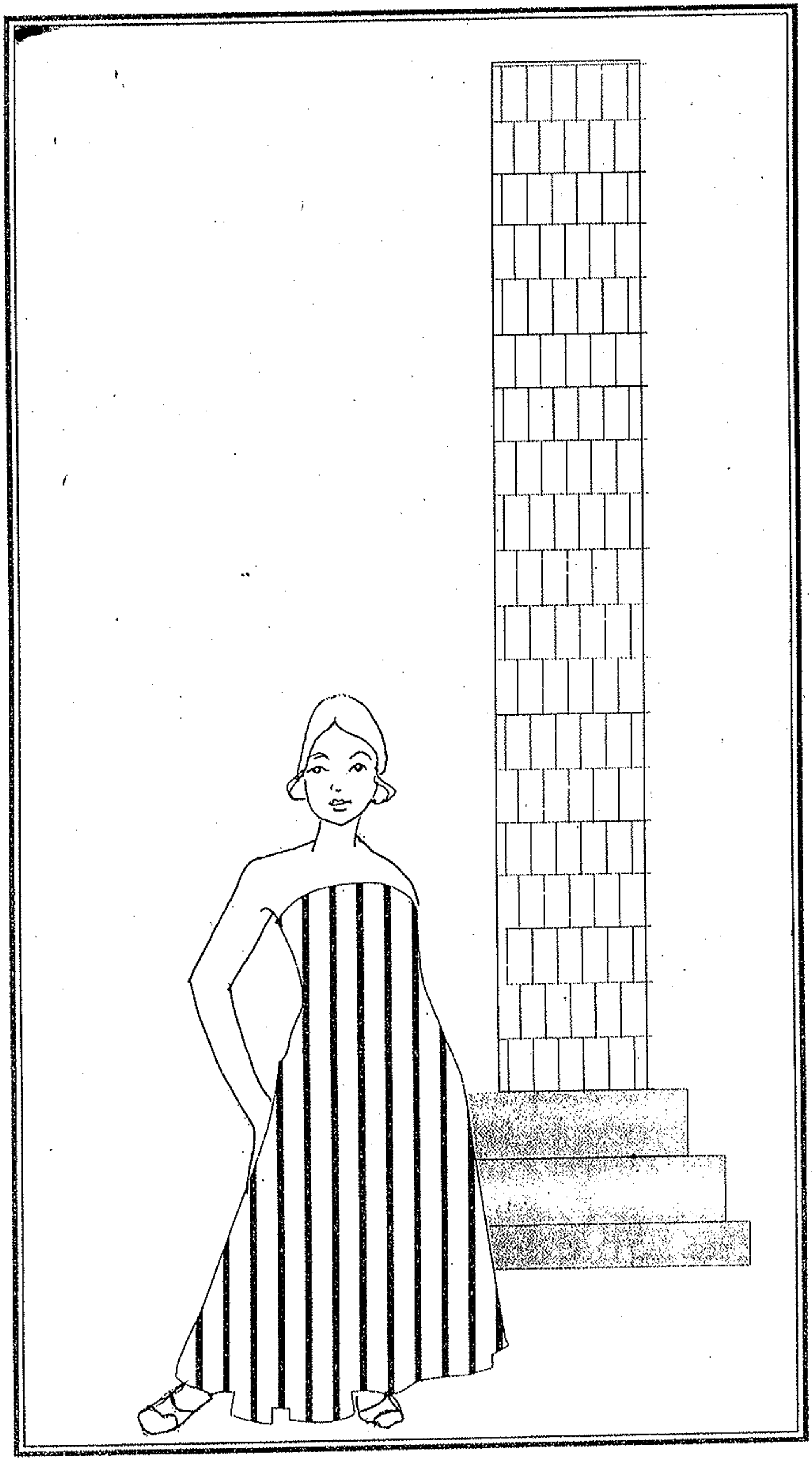

एक पतली फिगर व धारियाँ

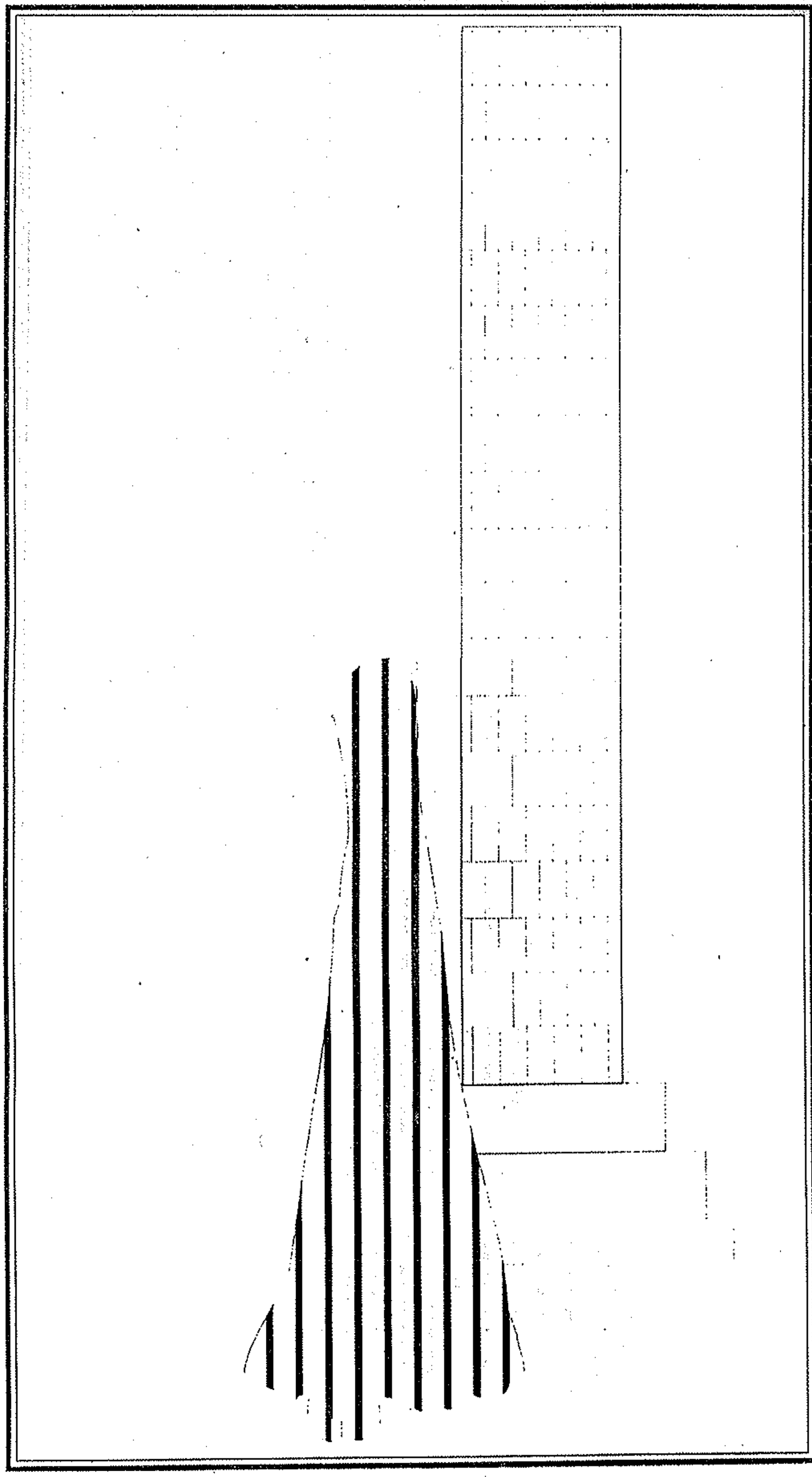

एक मोटी फिगर व धारियाँ

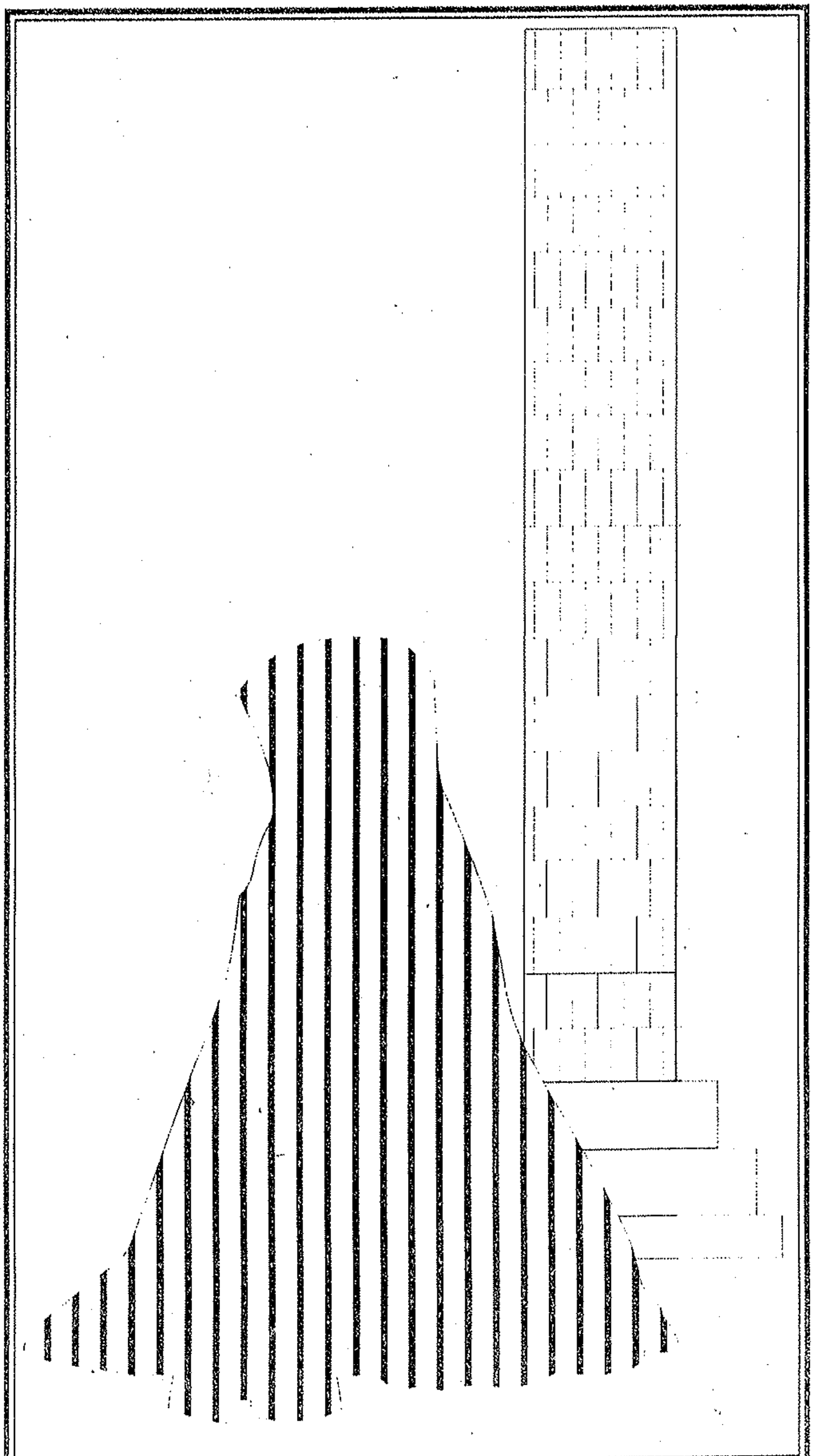

एक लम्बी फिगर और डॉट्स

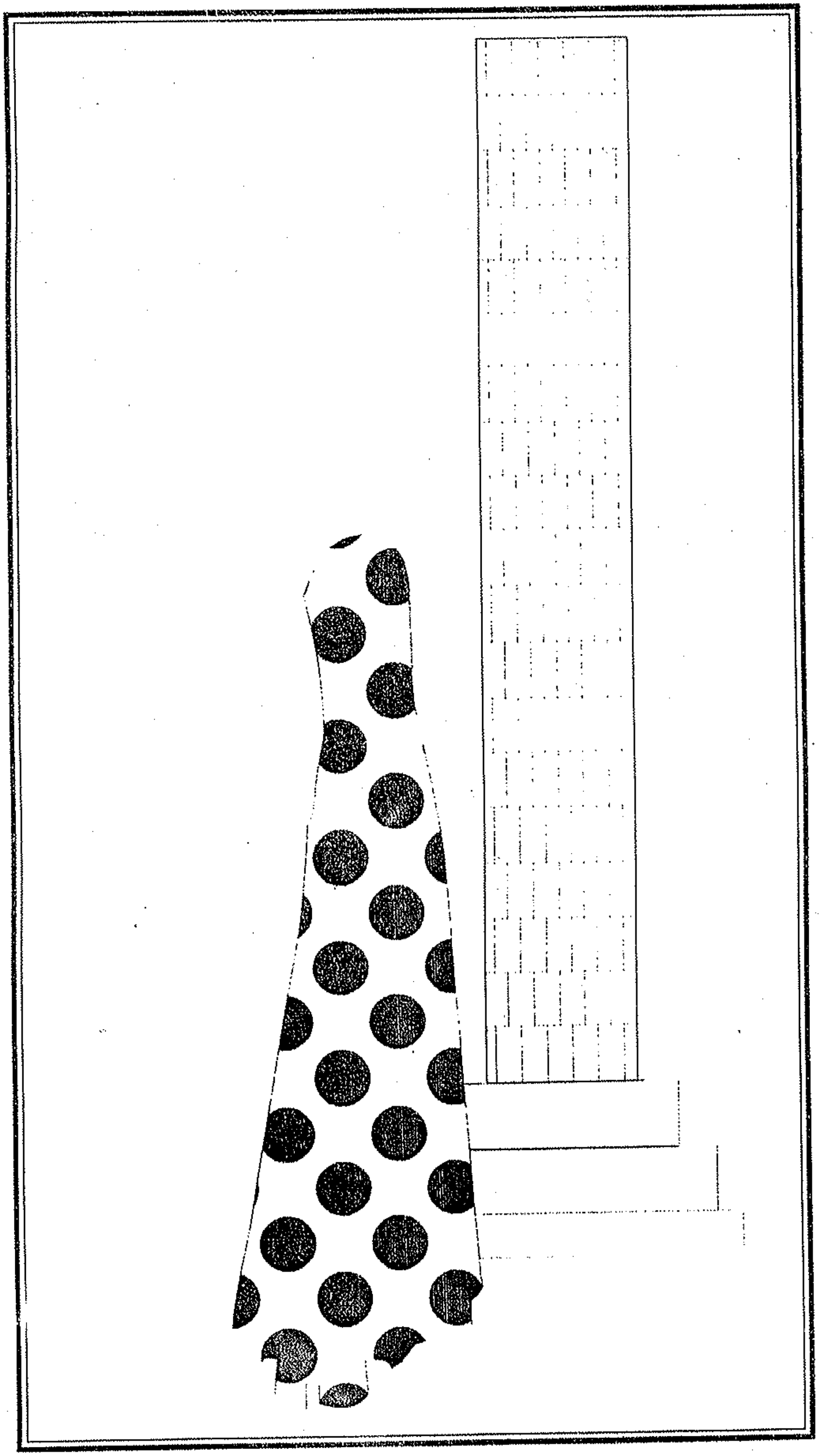

एक नाटी फिगर व डॉट्स

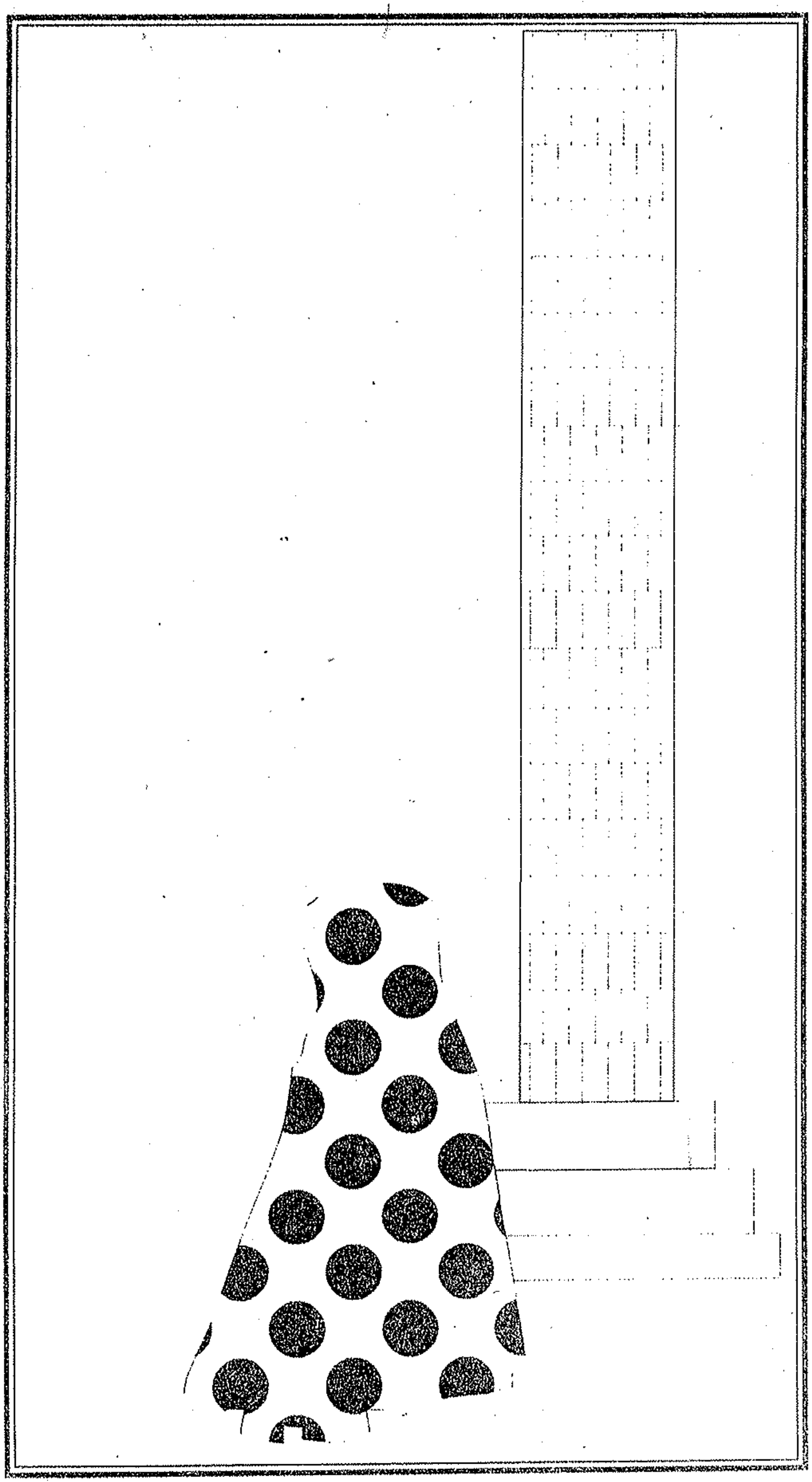

एक पतली फिगर ५ डॉट्स

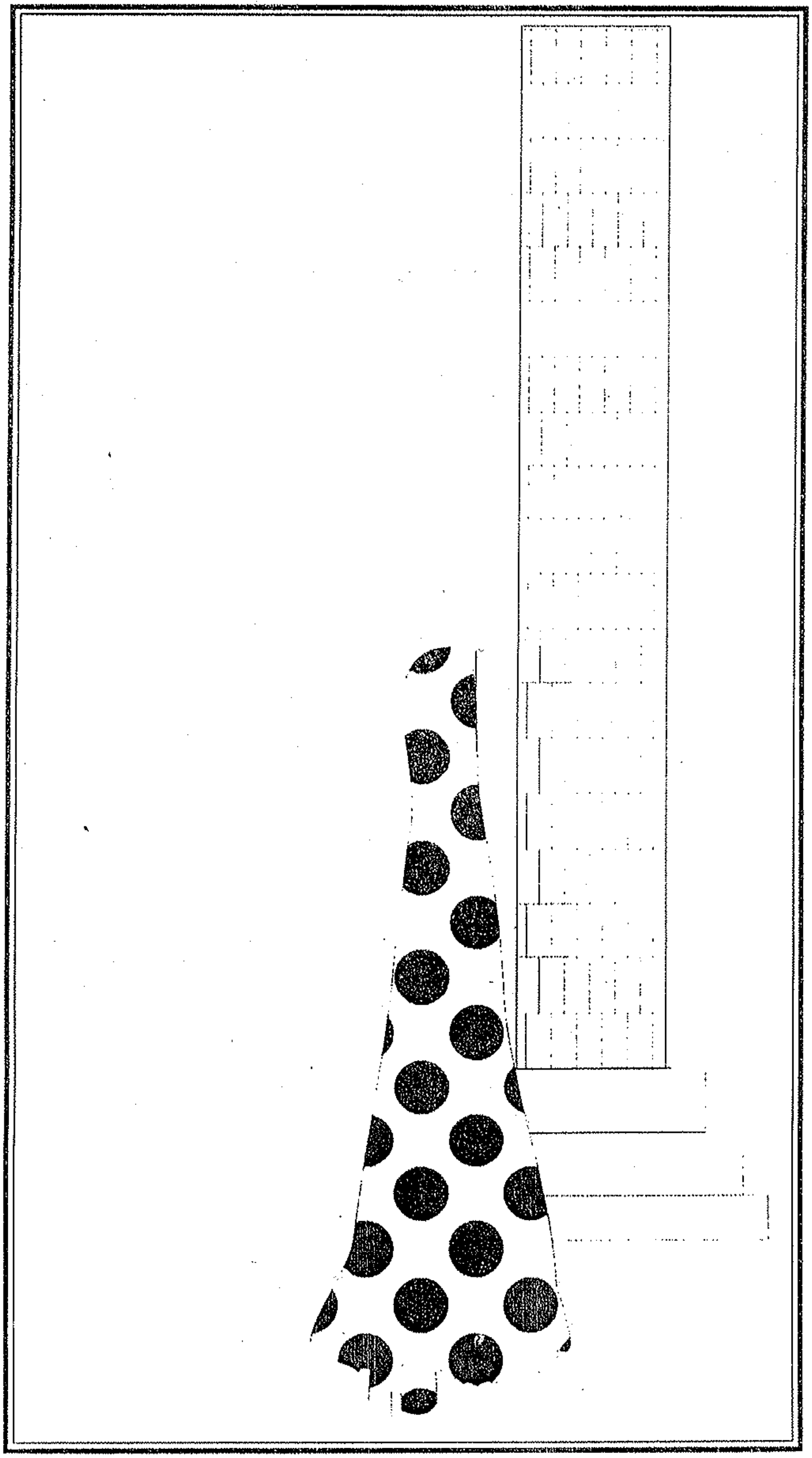

एक मोटी फिगर व डॉट्स

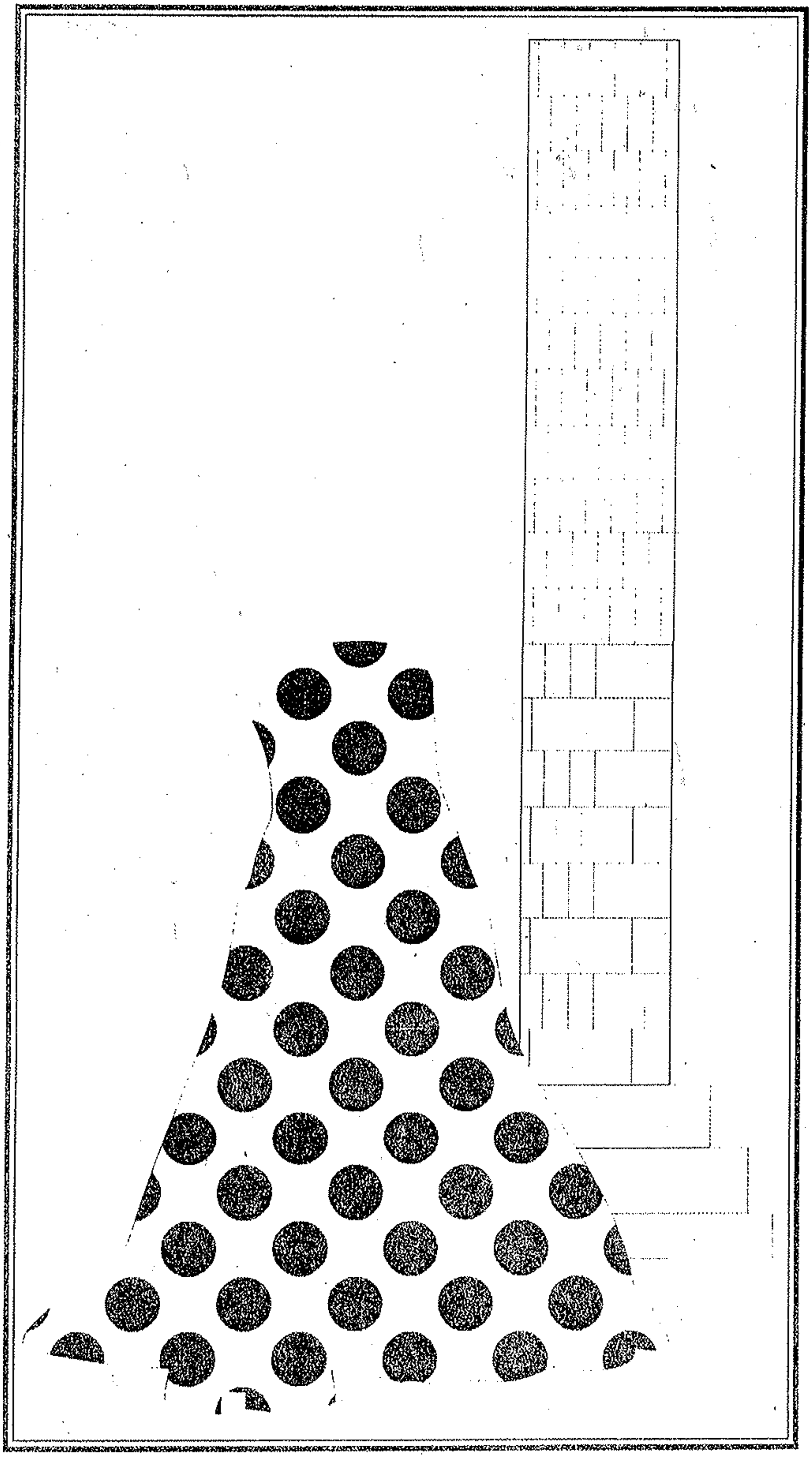

एक लम्बी फिगर व फ्लोराल प्रिन्ट

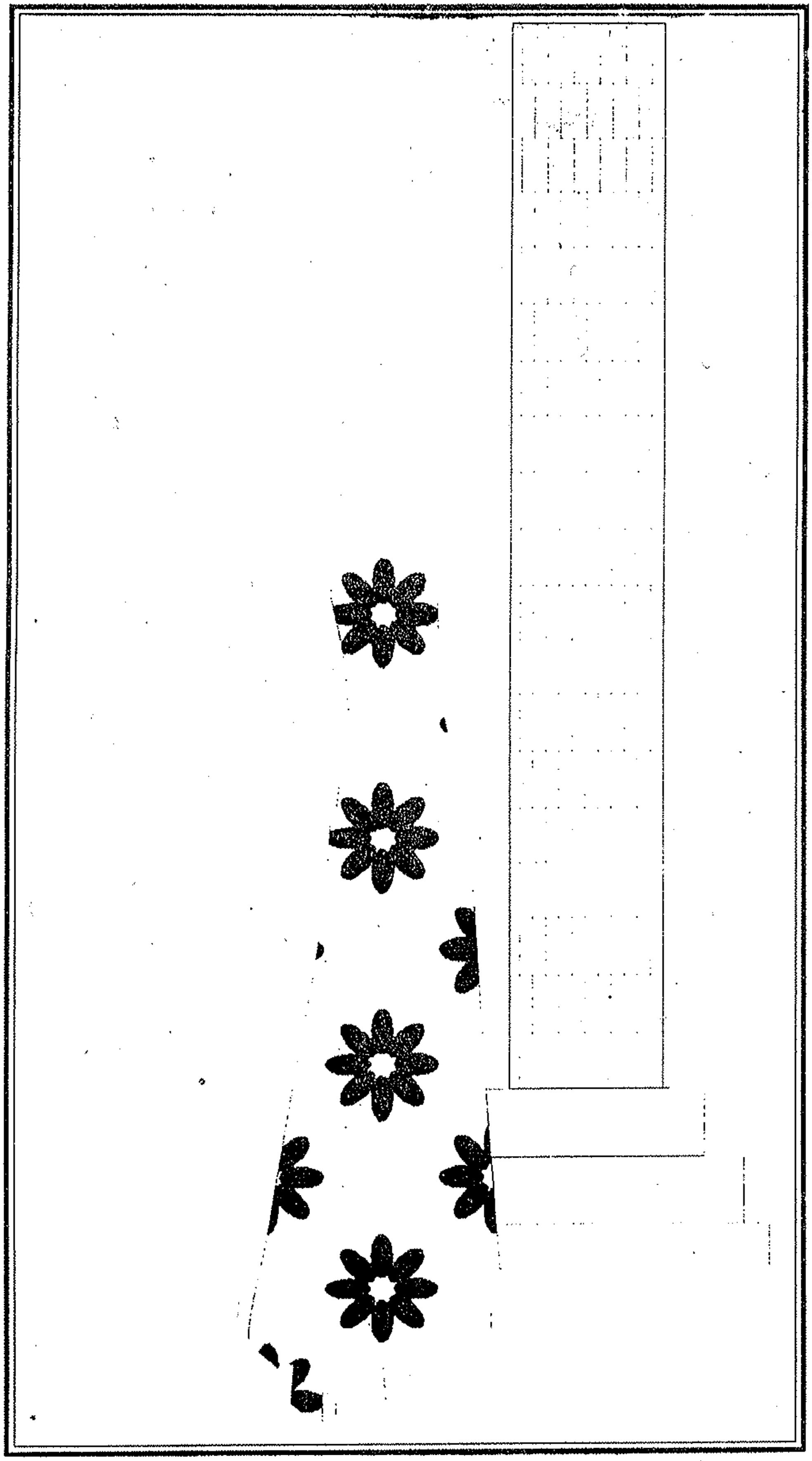

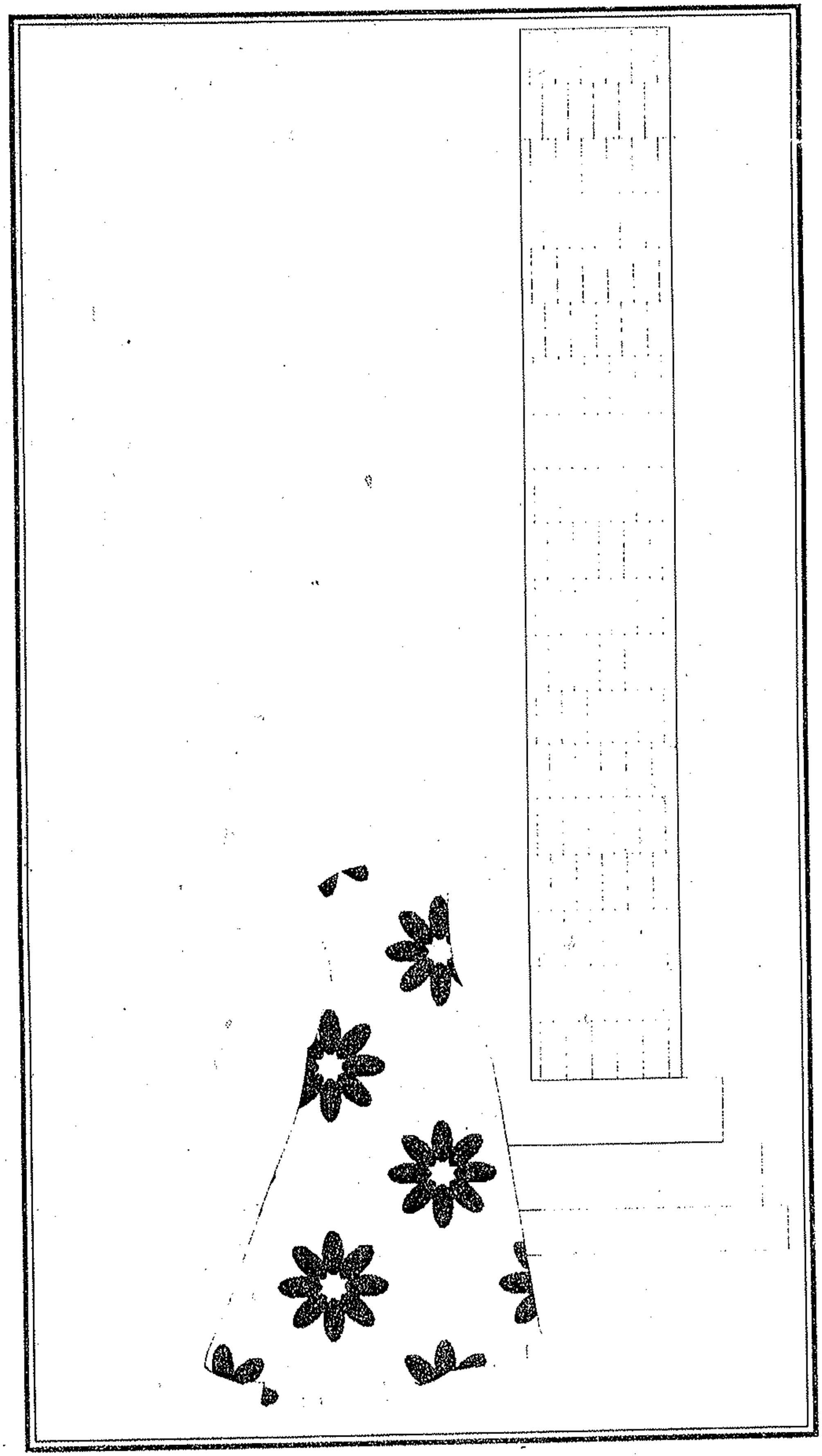

एक पतली फिगर प फ्लोराल प्रिन्ट

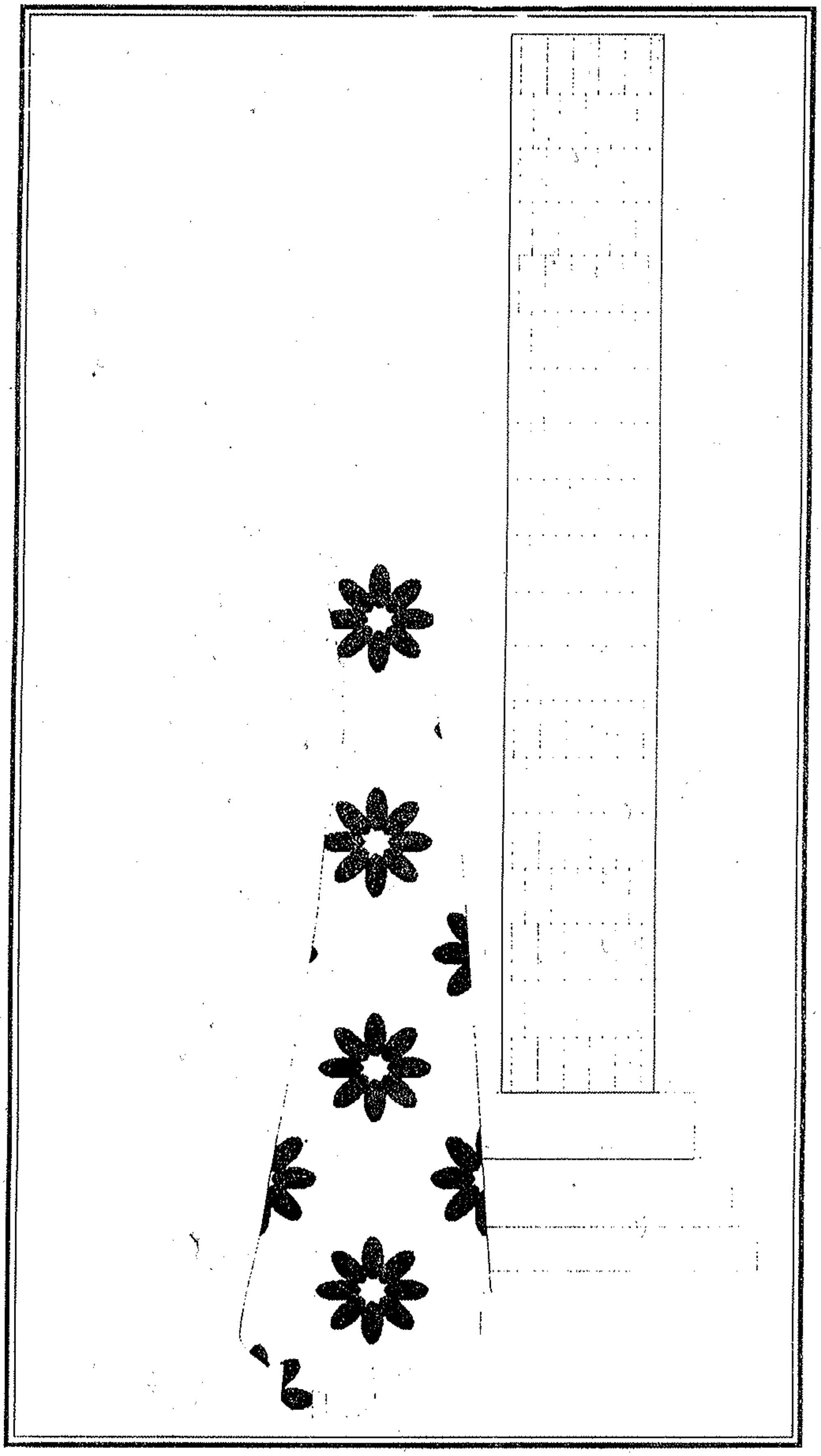

एक मोटी फिगर व फ्लोराल प्रिन्ट

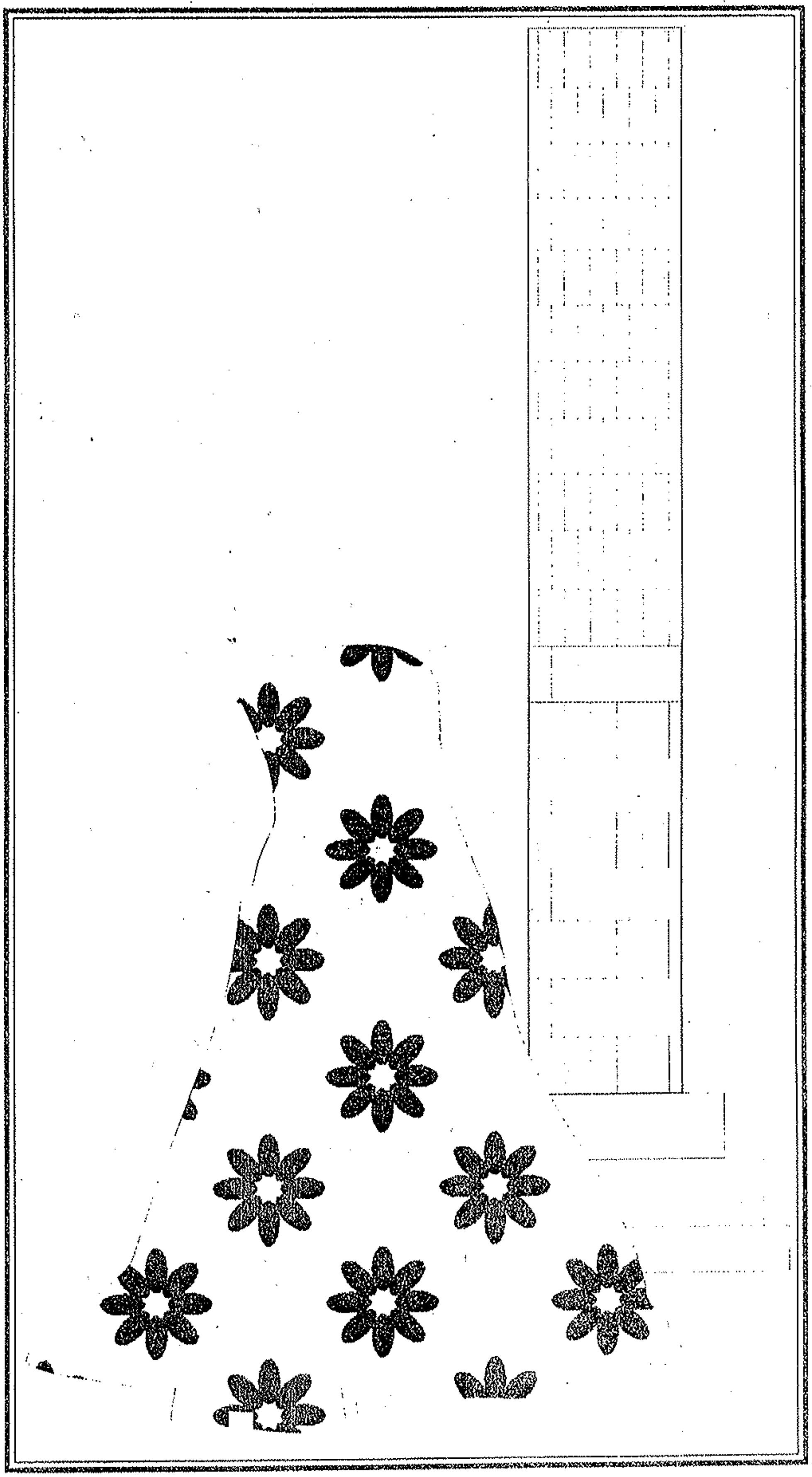

एक लम्बी फिगर व चेक्स

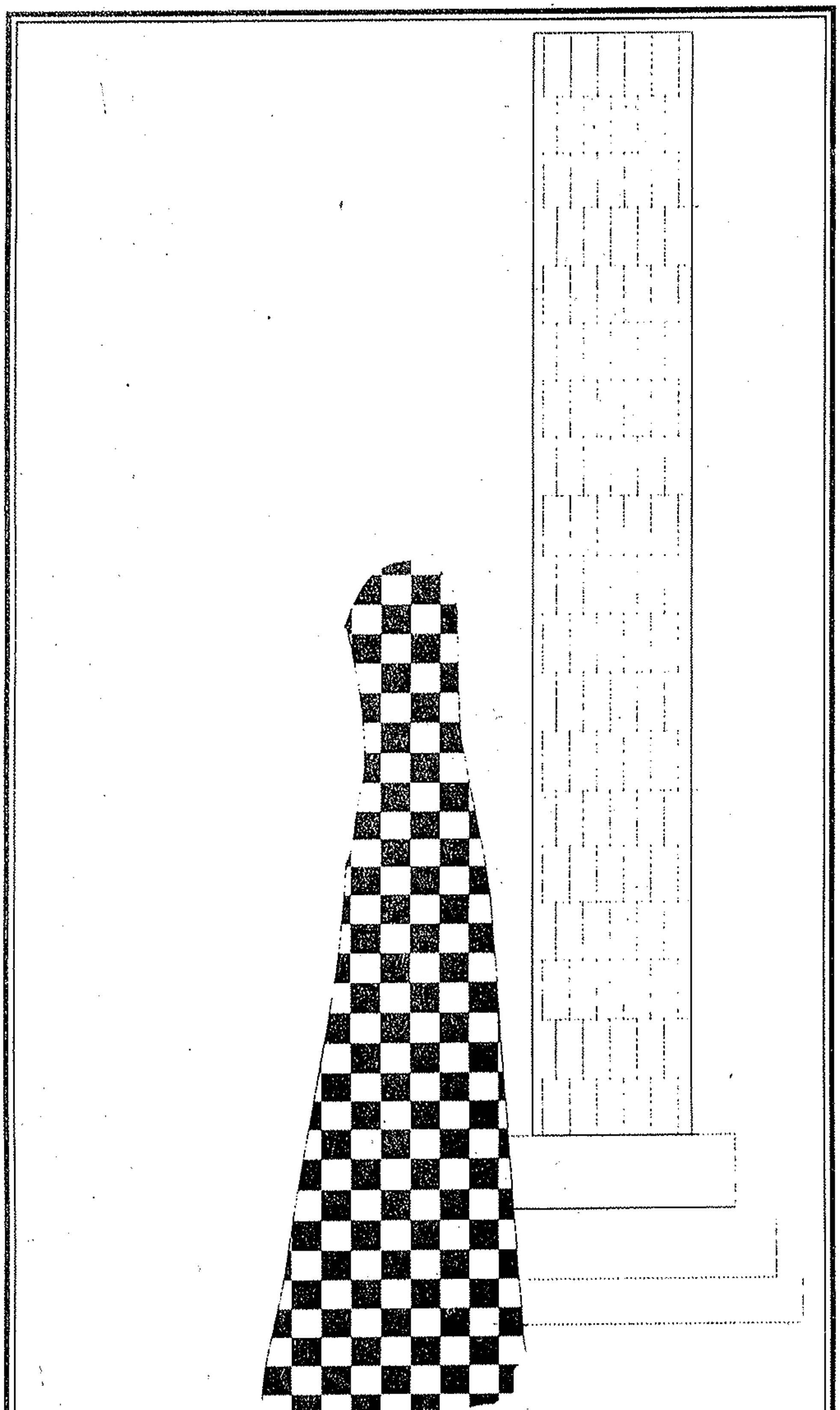

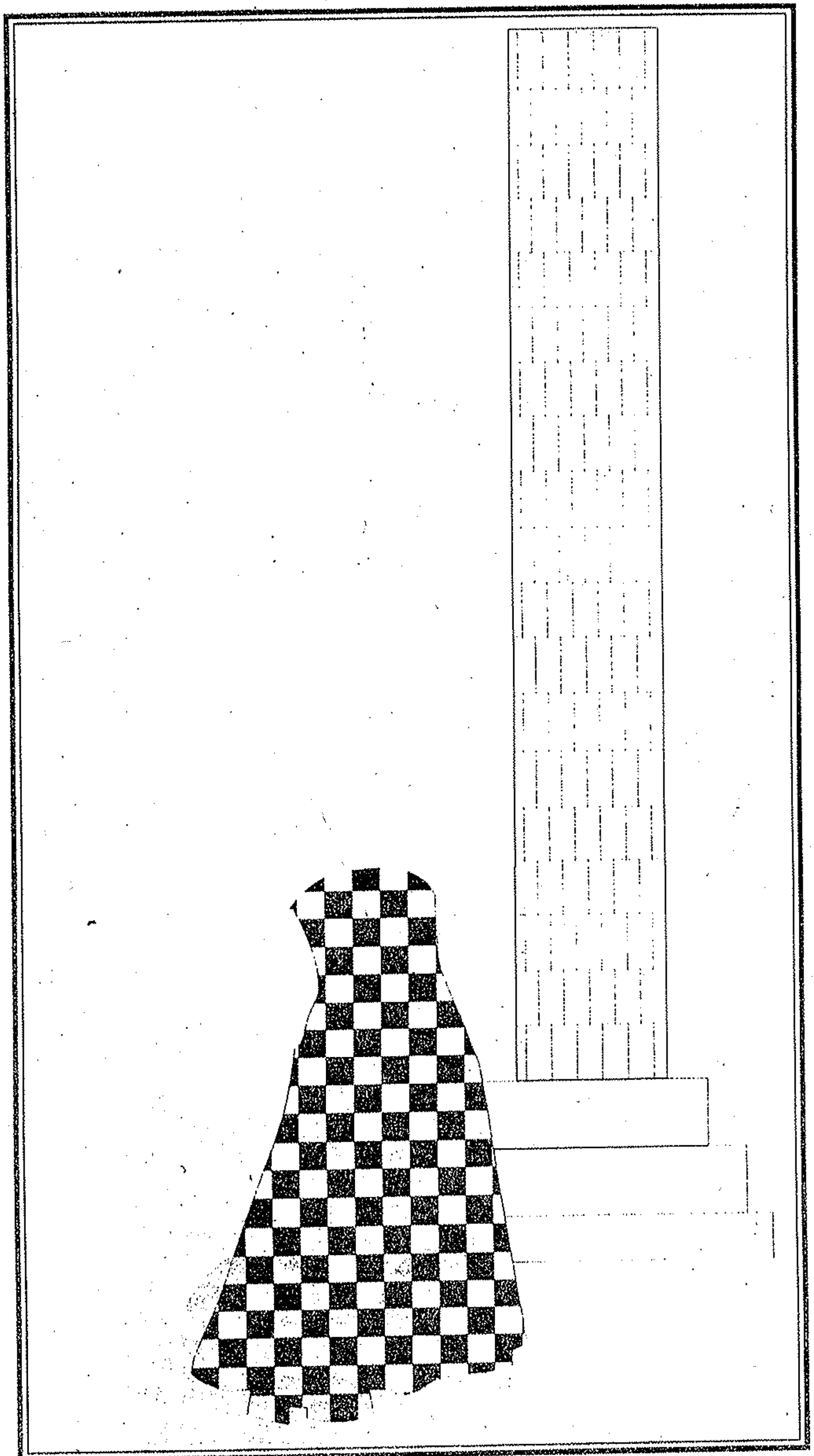

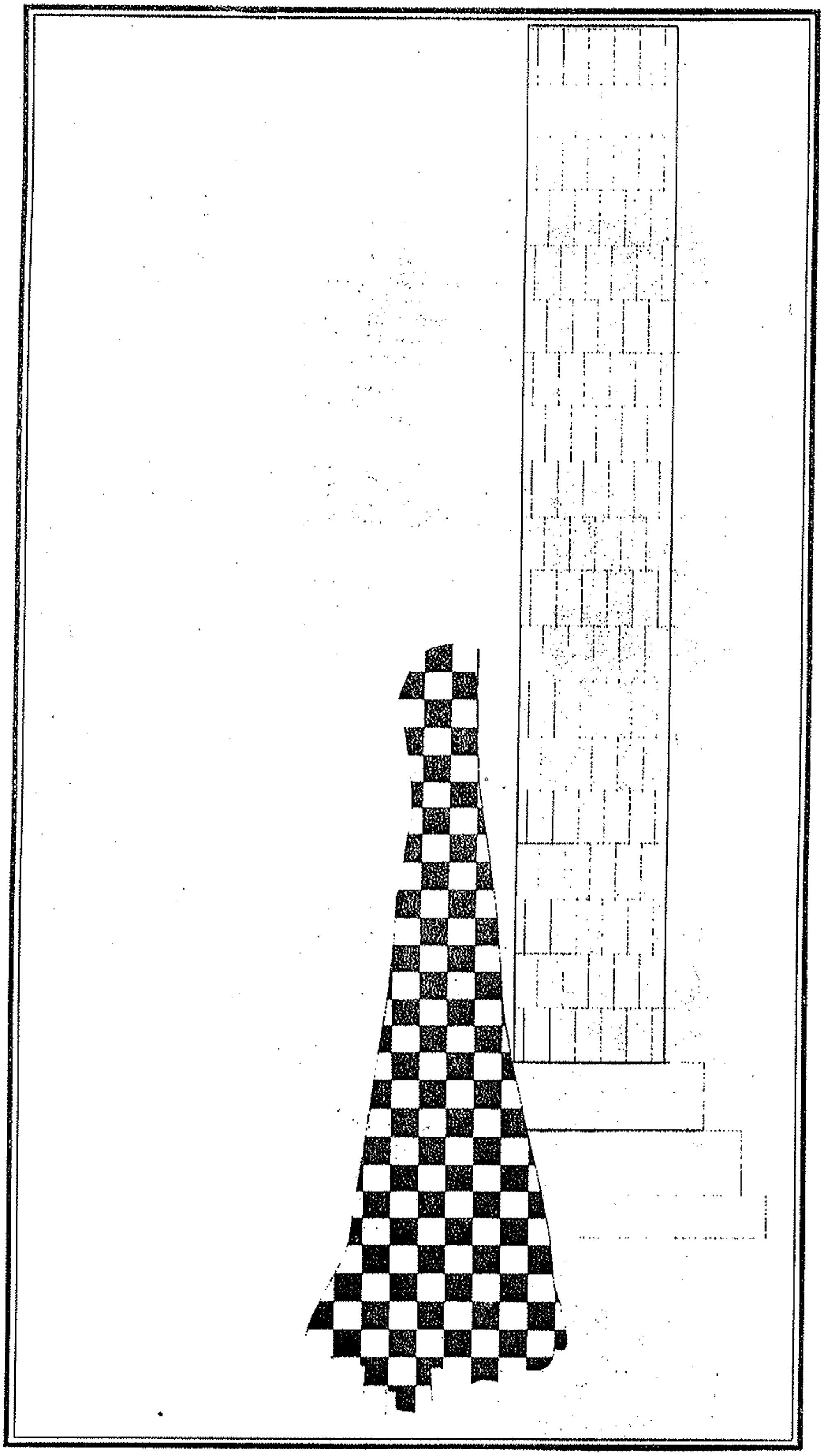

एक मोटी फिगर व चेक्स

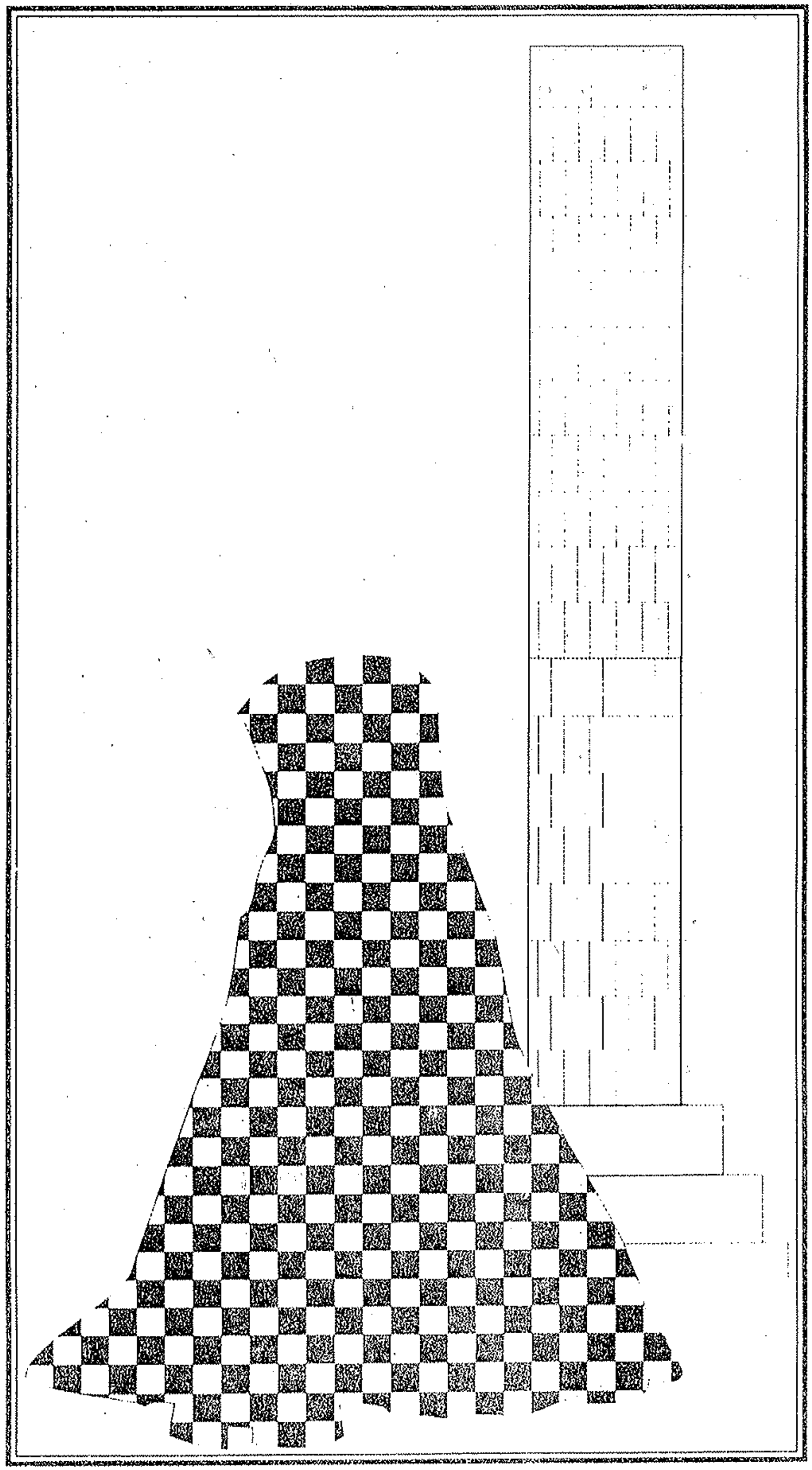

अभ्यास-

१– विभिन्न प्रिन्ट लें और उन्हें फिगर पर रखकर प्रभाव का अध्ययन करें।

२– विभिन्न प्रकार की धारियाँ लें और उन्हें एक फिगर पर रखकर प्रभाव का अध्ययन करें।

१३.४ सारांश:-

इस यूनिट में फिगर पर विभिन्न कपड़ों के प्रिन्ट का प्रभाव दर्शाया गया है।

१३.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न–१ एक लम्बी आकृति को किस प्रकार की धारियाँ जँचेगी?

प्रश्न–२ एक मोटी फिगर के लिये किस प्रकार का प्रिन्ट उपयुक्त रहेगा?

प्रश्न–३ एक लम्बी फिगर के लिये किस प्रकार के डॉट्स उपयुक्त रहेगें?

प्रश्न–४ किस प्रकार की धारियाँ एक नाटी फिगर पर जँचेगी?

प्रश्न–५ एक लम्बी फिगर को किस प्रकार का प्रिन्ट जँचेगा?

१३.६ स्वाध्ययन हेतु

१– इन्डियन कस्ट्यूम्स, द्वारा जी०एस० धूरये, प्रकाशक–बॉम्बे पापुलर प्रकाशन।

संरचना

१४.१ प्रस्तावना

१४.२ उद्देश्य

१४.३ राज्यों की पोशाकें

१४.४ सारॉश

१४.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

१४.६ स्वाध्ययन हेतु

१४.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

पारम्परिक परिधानों का अध्ययन डिजाइनिंग की विचारधारा में वृद्वि कर देता है। इस यूनिट में कुछ भारतीय राज्यों की पारम्परिक पोशाको पर व्याख्या शामिल है।

१४.२ उद्देश्यः-

भारतीय उपमहाद्वीप का एक सम्पन्न सांस्कृतिक इतिहास है। इनसे परिचय व अध्ययन, विद्यार्थियों की डिजाइनिंग क्षमता में वृद्धि में सहायक होगा।

१४.३ राज्यों की पोशाकें:-

भारतीय उपमहाद्वीप विशाल है। हर क्षेत्र का अपना विशिष्ट प्रकार का कपड़ा है। अपने विशेष पारम्परिक प्रिन्ट व वियर हैं, अपने विशेष पहनावे की शैली, माला, व्यवहार इत्यादि हैं।

साड़ी सर्वाधिक पहने जाने वाली पोशाक है। परन्तु हर राज्य में साड़ी के पहनने की शैली भिन्न है।

साड़ी सेन्सुअल व आकर्षक होती है तथा इसका सौन्दर्य समय का बाध्य नहीं है। यह सदा से ही सबसे अधिक पसन्द किया जाने वाला परिधान है जो औपचारिक

अवसरों व धार्मिक अ. ोजनों में पहना जाता है। इतने वर्षों के बाद भी इसका आकर्षण व सम्मान कम नहीं हुआ है। भारतीय महिलाओं का प्रमुख परिधान, बिना सिलाई वाली का इतिहास बहुत लम्बा है, करीब ५,००० वर्ष।

परन्तु निश्चित ही डिजाइन, पैटर्न व शैली बदलती रही है, परन्तु मूल साड़ी वही है– परिधान का एक टुकड़ा जो स्त्री के शरीर पर लपेटा जाता है। साड़ी एक लम्बा कपड़ा है, चार से आठ मीटर लम्बा व लगभग चार फीट चौड़ा, जिसे पूरे शरीर पर लपेटा अथवा ड्रेप किया जाता है। इसका अधिकतम भाग कमर पर प्लीट किया जाता है और फिर लपेट कर स्कर्ट या ट्राउजर का जोड़ा बनाया जाता है, साथ ही बचे हुए कुछ गज कपड़े को शरीर के ऊपरी भाग पर इस तरह लपेटा जाता है कि कम से कम एक कंध ा ढंके और कभी–२ सिर को भी ढंकता है।

साड़ी पहनने का सबसे सामान्य तरीका 'नेवी' तरीका है। इसमें प्लीट्स सामने की ओर होती है, जबकि पल्लू बॉये कंधे के ऊपर से जाता है।

कूर्गी शैली की साड़ी में प्लीट्स पीछे की ओर होती है और पल्लू का एक छोटा भाग कंधे पर ढंका होता है।

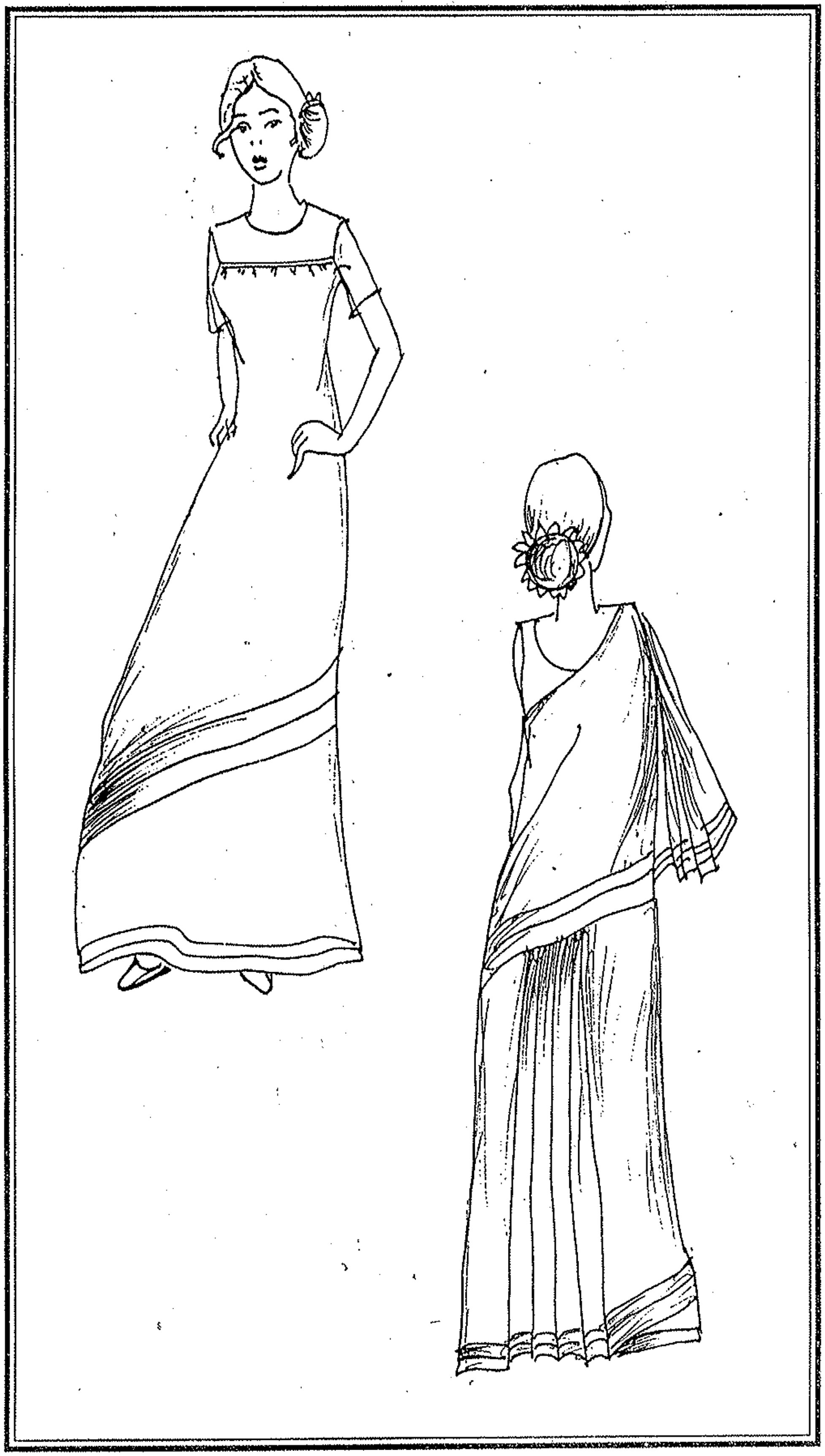

पारम्परिक रूप से बंगाल की साड़ियों में प्लीट्स नहीं होती। इस शैली में कोई प्लीट नहीं होती और साड़ी, सुरूचिपूर्ण रूप से शरीर पर ड्रेप होती है।

गुजरात में पल्लू पीछे के स्थान पर आगे की ओर पहना जाता है। अधिकतर साड़ियाँ छः गज लम्बी होती हैं।

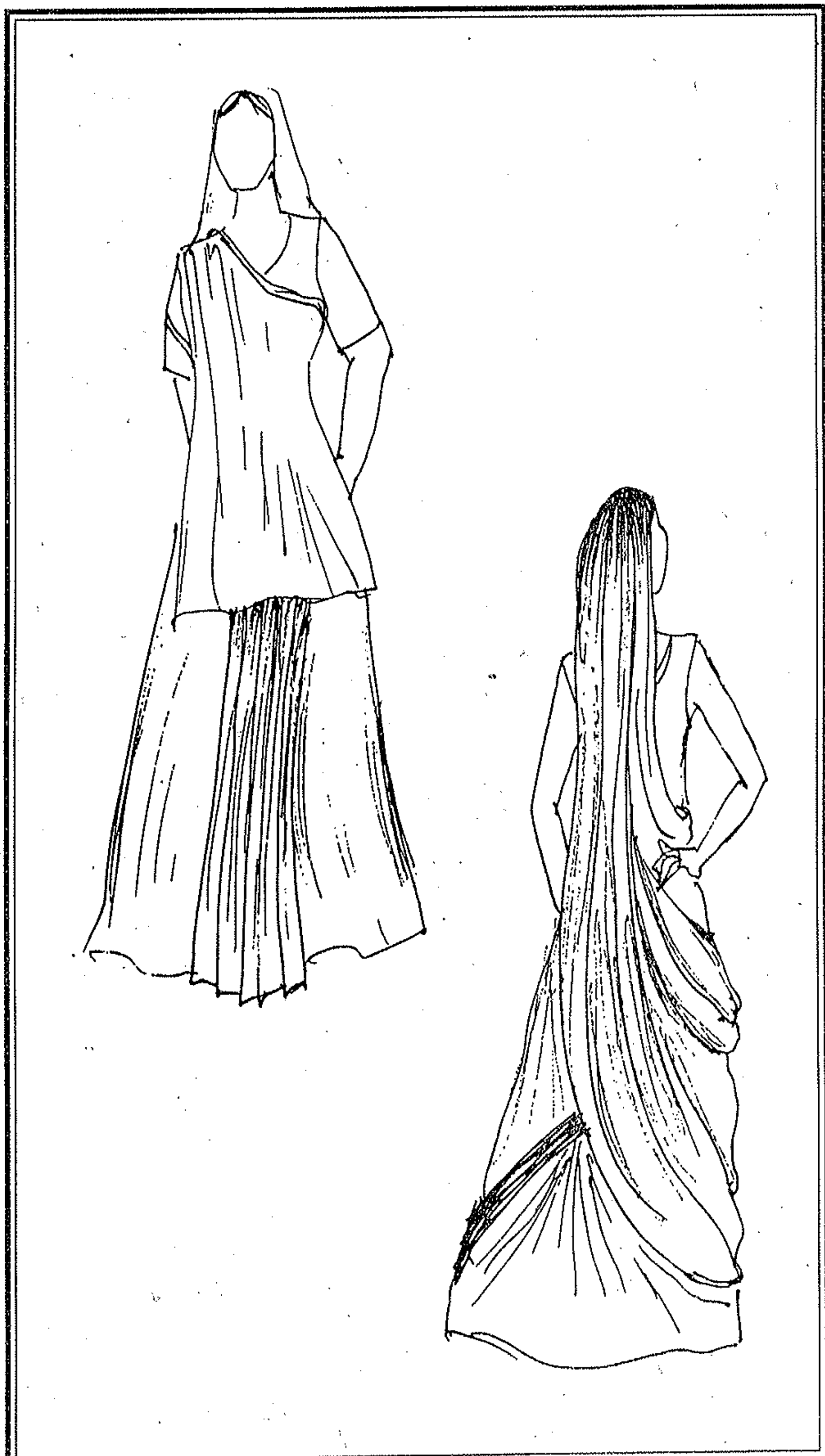

महाराष्ट्रियन व दक्षिण भारतीय शैली में नौ गज लम्बी साड़ी का प्रयोग होता है।

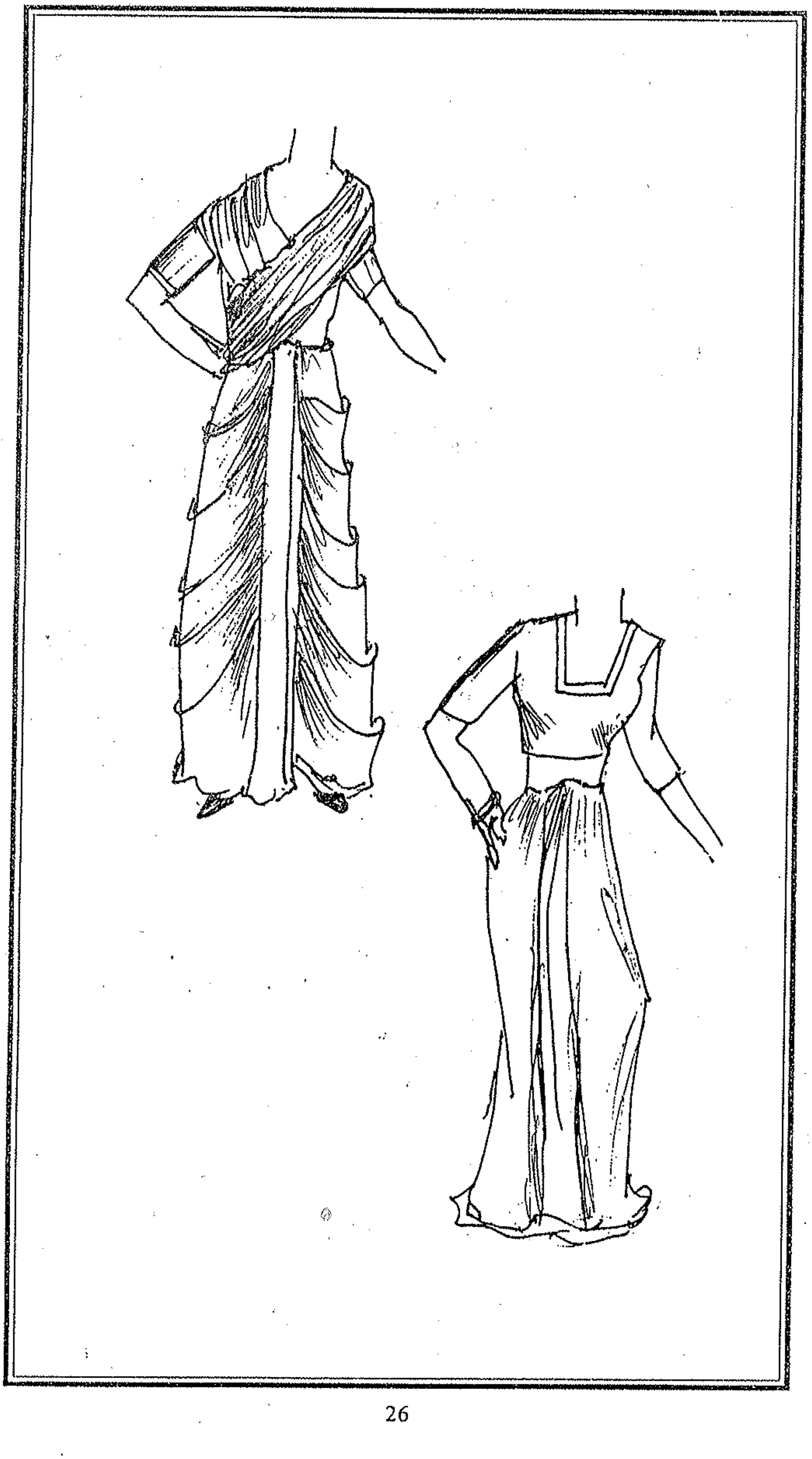

आपके चयन के लिये कई प्रकार की साड़ियाँ हैं:-

काँचीपुरम साड़ियाँ:-

काँचीपुरम के बुनकर भारी रेशमी साड़ियों में विशेषज्ञ होते हैं जिन्हें कसकर ऐंठे गए थ्री प्लाई, हाई डेनर धागों से मोटे जरी धागों का प्रयोग कर, सप्लीमेन्ट्री वार्प-एन्ड-वेफ्ट पैर्टनिंग के साथ बुना जाता है। बाजार की माँग के साथ कदम मिलाते हुए काँचीपुरम को सूती व सिल्क पोलिस्टर मिश्रित साड़ियों में भी विशेषता हासिल है।

परम्परागत मोटिफ जैसे आम, हाथी, मोर, हीरा, कमल, मटका, बेल, फूल, तोता, मुर्गी तथा कथाओं को प्रदर्शित करते मोटिफ का प्रयोग काँचीपुरम साड़ियों में अधिकाधिक किया जाता है और कुछ सिल्क साड़ियों को भी शुद्धजरी के स्थान पर धागों से बुना जाता है। हाल के समय में कम्प्यूटरीकृत डिजाइनों का भी प्रयोग किया जाता है, हलाँकि मोटिफ परम्परागत ही होते हैं।

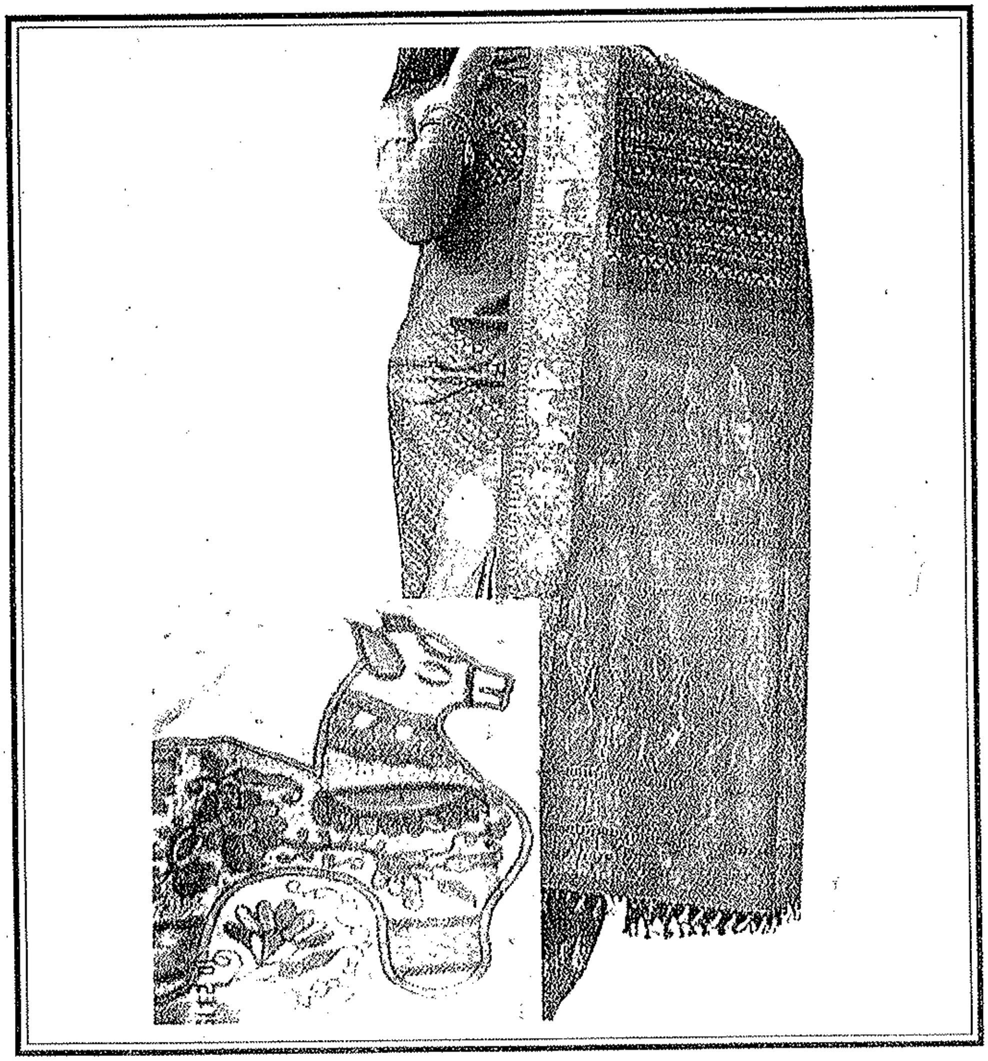

बालुचरी :-

बालुचरी बुनाई का सम्बन्ध बंगाल से है। मुर्शीदाबाद में बहरामपुर के पास भागीरथी नदी के तट पर बसा एक छोटा सा गाँव है जिसका नाम है बालुचर। अधिकतर बंगाली बुनाई मटका या टसर सिल्क में की जाती है, बालुचरी साड़ियाँ, मलबरी सिल्क में बुनी जाती हैं।

टेराकोटा की आक तियाँ तथा बिशनपुर के मन्दिर कई मोटिफ का प्रेरणास्त्रोत होते हैं और कभी-२ पल्लवों पर पूरे के पूरे ग्रन्थ दर्शाए जाते हैं। बालुचर से आए ब्रोकेट, बिना ऐंठे हुए स्लिम के धागों द्वारा बुने जाते हैं।

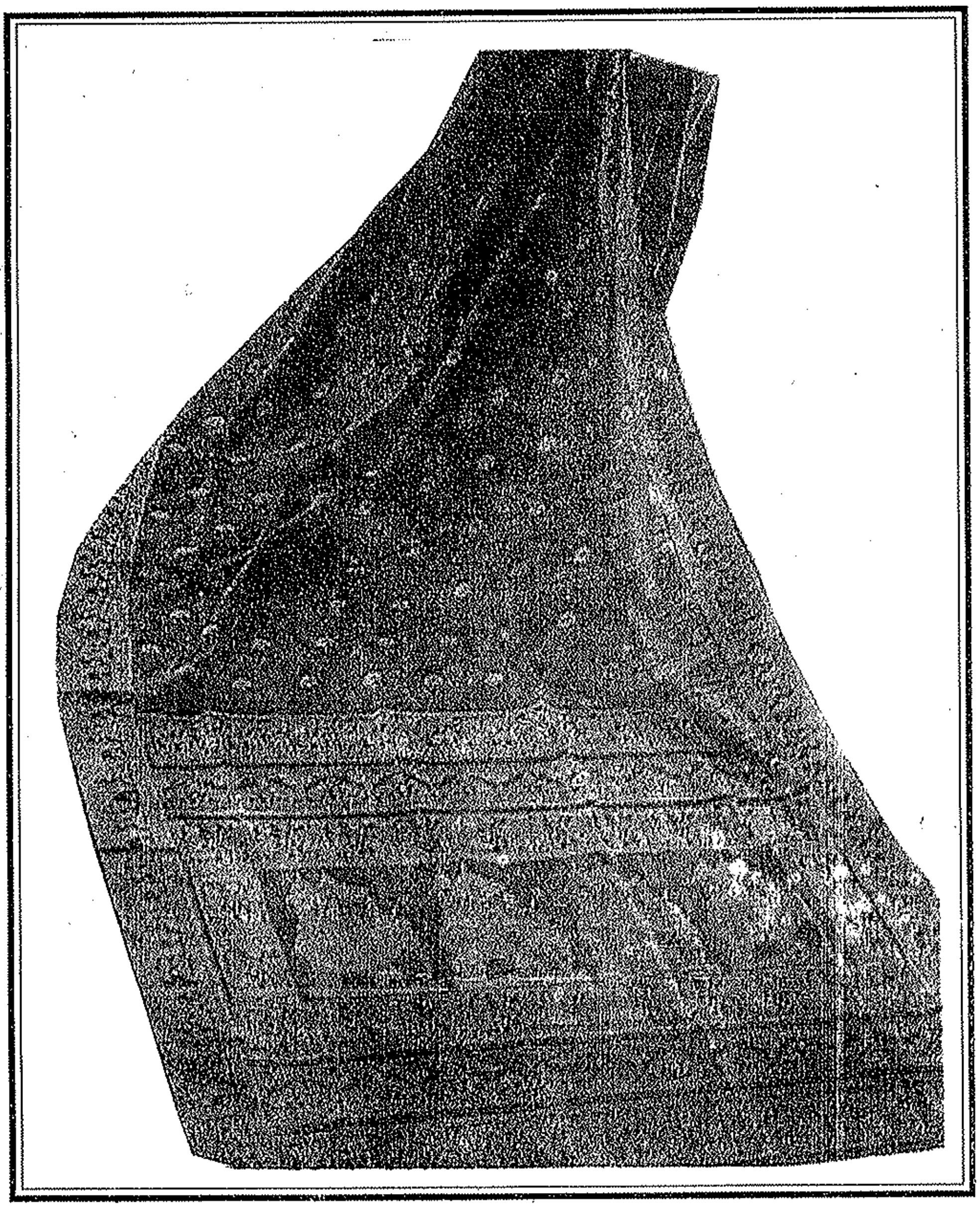

गढ़वाल साड़ियाँ:-

परम्परागत रूप से गढ़वाली साड़ियाँ इन्टरलॉक्ड अर्थात एक दूसरे से जुड़े बानों की तकनीक द्वारा बुने जाते हैं, जिनके बार्डर विरोधाभासी रंगों के होते हैं। गढ़वाल साड़ियों के रेशमी बार्डर, टसर अथवा मलबरी के बने होते हैं तथा बाकी भाग प्रायः बिना ब्लीच किए हुए सूती कपड़े और कई बार रंगीन सूती अथवा रेशम चेक्स का होता है।

गढ़वाल साड़ियों का रेशमी रूप, प्रायः चटख विरोधाभासी रंगों, जैसे कैनेरी पीला अथवा लाइम ग्रीन रंगों में बुना जाता है। डिजाइन की संरचना व शोभा में दक्षिण-पूर्वी प्रभाव प्रबल होता है। बुनकर रेशम बंगलौर से तथा जरी, सूरत से प्राप्त करते हैं।

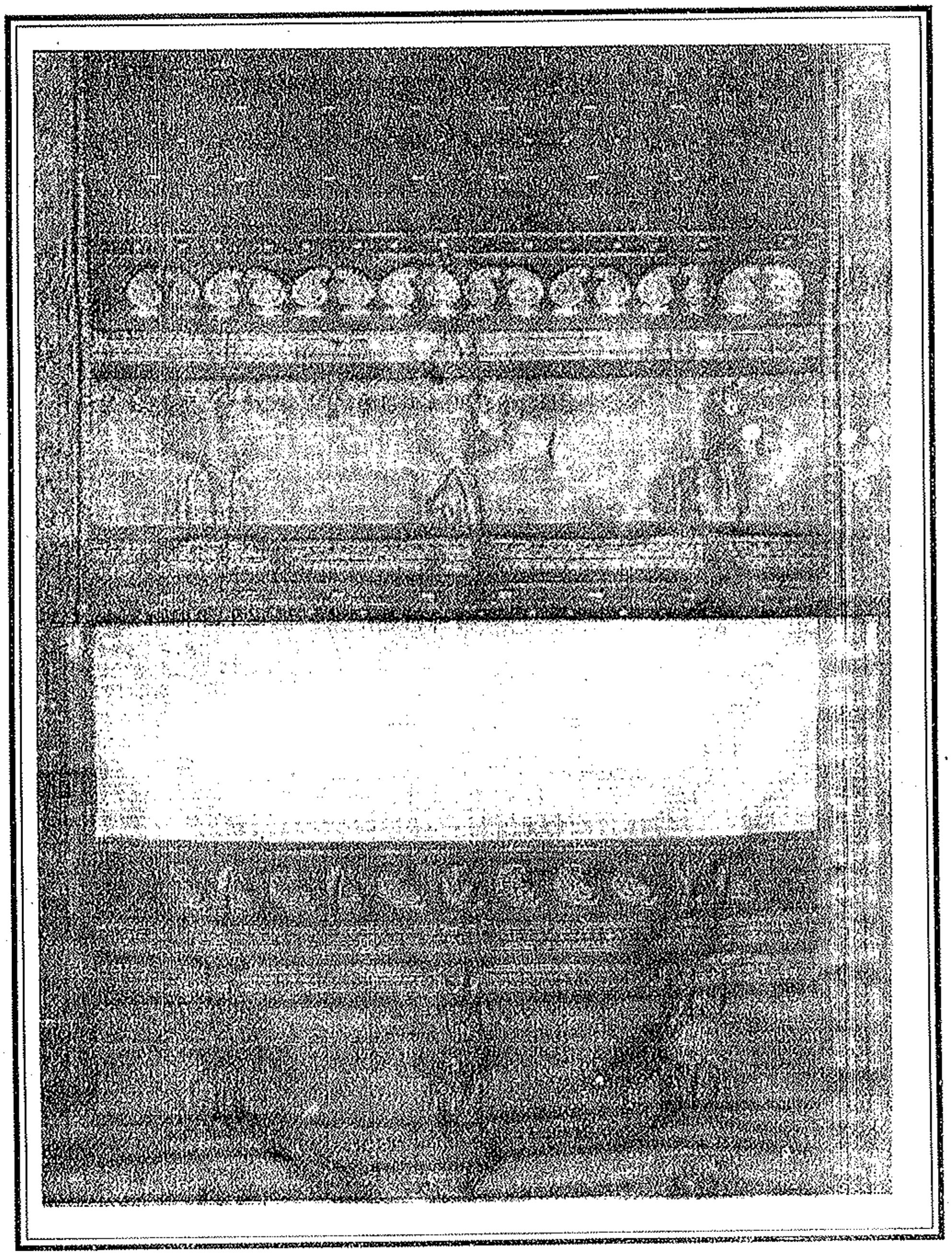

बनारसीः-

रेशम की साड़ी बनाने वाले, भारत के विभिन्न केन्द्रों में बनारस का नाम अग्रिणी केन्द्रों में से एक है। आदर्श बनारसी साड़ी, अपने भारी सोने-चाँदी के ब्रोकेड के लिए जानी जाती है। बनारसी तनचोई साड़ी विशेषकर प्रसिद्व है जो एक बारीक मिनिएचर जैसी दिखती है। बनारसी साड़ियों ने मुगल काल में लोकप्रियता हासिल की।

आज, यह पूरे विश्व में निर्यात की जाती है। ब्रोकेड आज अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता है।

चन्देरी:-

चन्देरी का इतिहास ग्यारहवीं सदी तक जाता है। यह साड़ियाँ सामान्यतः झीनी व हल्की होती है। इनमें साधारणतः शानदार सुनहरे बॉर्डर व पल्लव पर दो सुनहरी पट्टियाँ होती हैं। एक अन्य रूप में सुनहरे चेक्स के साथ कमल वाले मोटिफ होते हैं। यह नर्म रंगों में बुने जाते हैं।

आजकल चन्देरी बुनाई हाथ से पेन्ट, ब्लॉक प्रिन्ट तथा कढ़ाई से अलंकृत की जाती है।

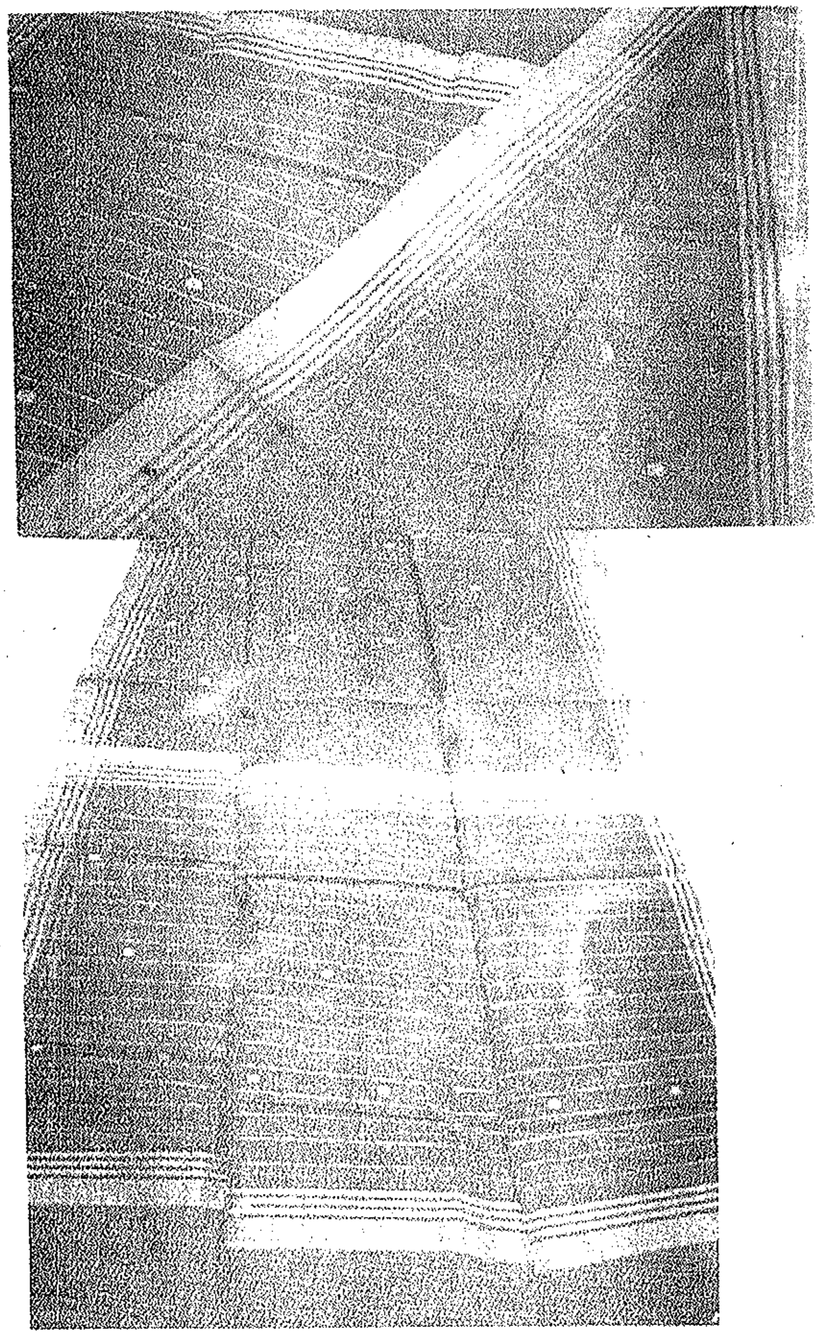

चिकन :-

चिकन की कढ़ाईदार साड़ियाँ अपने अविश्वसनीय कढ़ाई के पैटर्न के कारण संग्रह करने योग्य होती है। पल्लू व बॉर्डर पर कढ़ाई बेहतर गुणवत्ता लाने के लिये मोटे धागे से की जाती है। साड़ी पर किये गये कढ़ाई के पैटर्न किसी भी अन्य कपड़े पर भी किये जा सकते हैं।

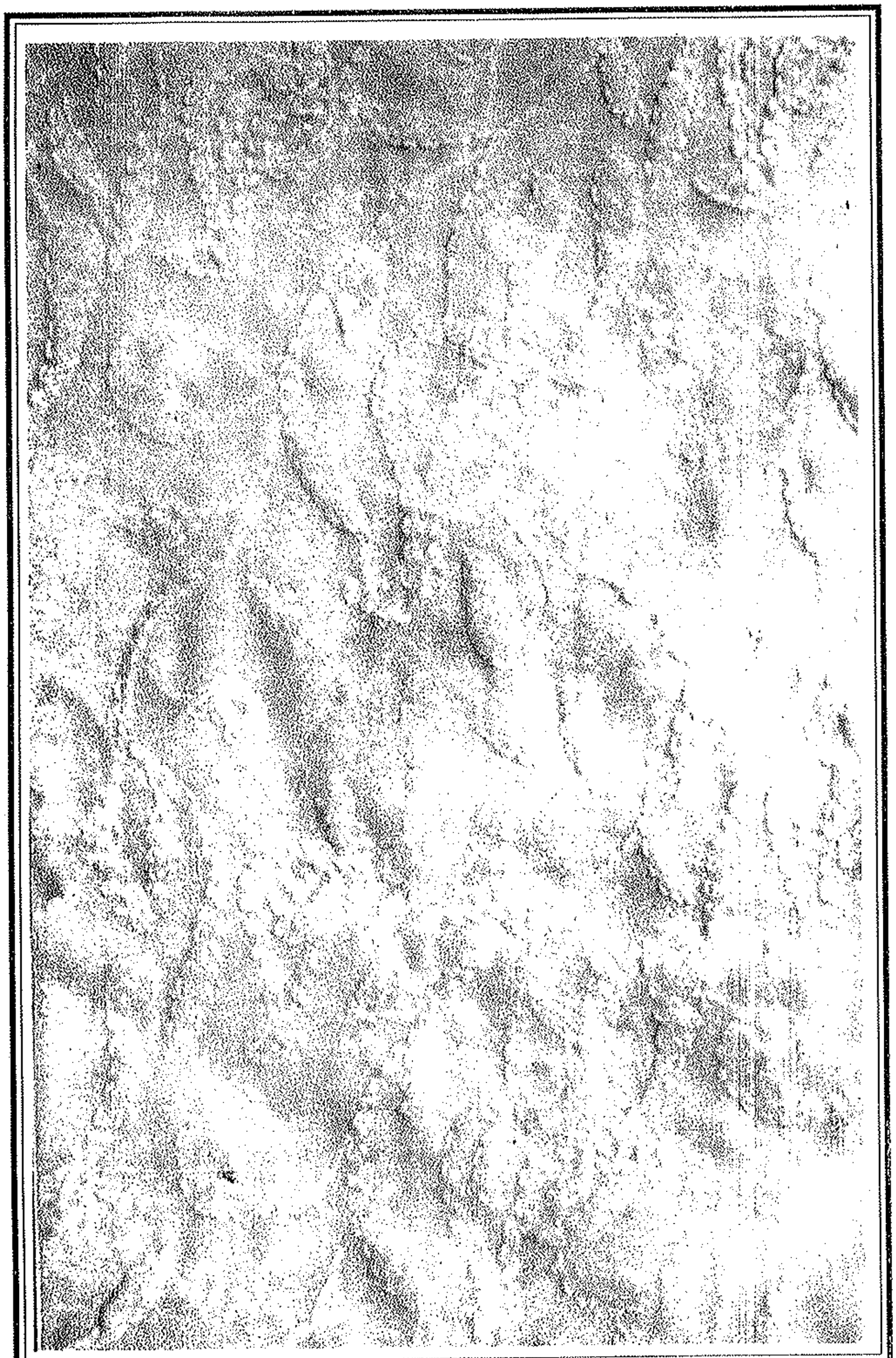

इकत:-

इकत, सामान्यतः जिगजैग बार्डर, मन्दिर आकृति तथा चटख रंगों से सम्बद्धहोता है। इसकी बुनाई के प्रमुख केन्द्र गुजरात, आन्ध्र प्रदेश व उड़ीसा में हैं। आजकल, इकत के सूती पायजामें अत्यधिक लोकप्रिय हैं। इकत केवल सामान्य सलवार कमीज व साड़ियों तक ही सीमित नहीं हैं। यह अब सिल्क की पैन्ट, स्कर्ट, टॉप तथा भरतीय पश्चिमी पोशाकों तक में प्रयोग किया जा रहा है।

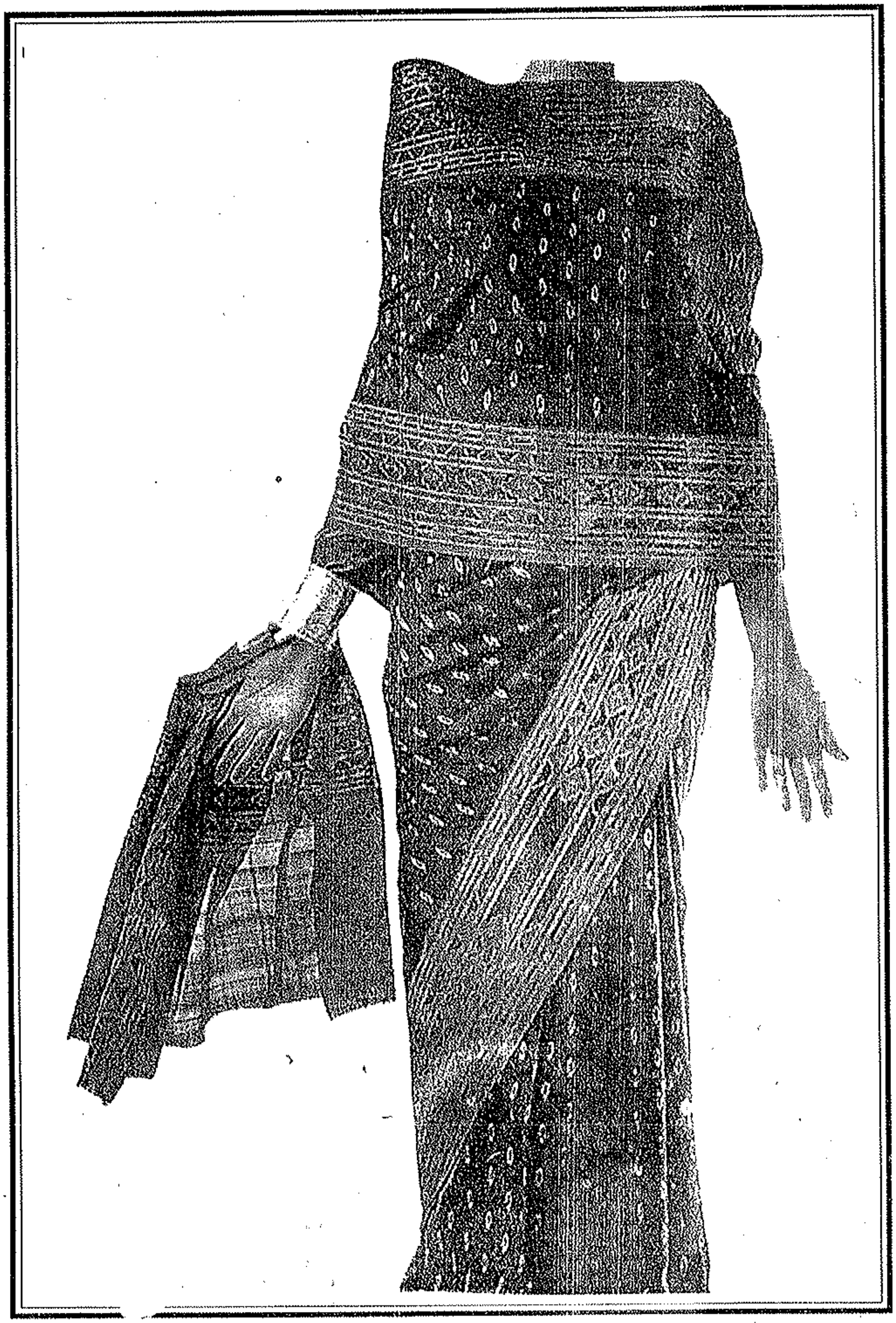

कोटाः-

कोटा (डोरियाँ) साड़ियो में पैटर्न की संकल्पना करने की लम्बी प्रक्रिया शामिल होती है जिसमें असल बुनाई का एक गणनात्मक ग्राफ बनाया जाता है। पहले केवल हल्के व एयरी रंगों का प्रयोग किया जाता था। फिर उन्हें चटख रंगों, सुनहरे बॉर्डर तथा चेक्स बनाती सुनहरी रेखाओं से सजाया जाता था। आज कोटा सभी चटख रंगों में आती है। जिससे सभी तकनीकों जैसे ब्लॉक प्रिन्टिंग, कढ़ाई व 'टाई एण्ड डाई' का प्रयोग बुनाई में किया जाता है।

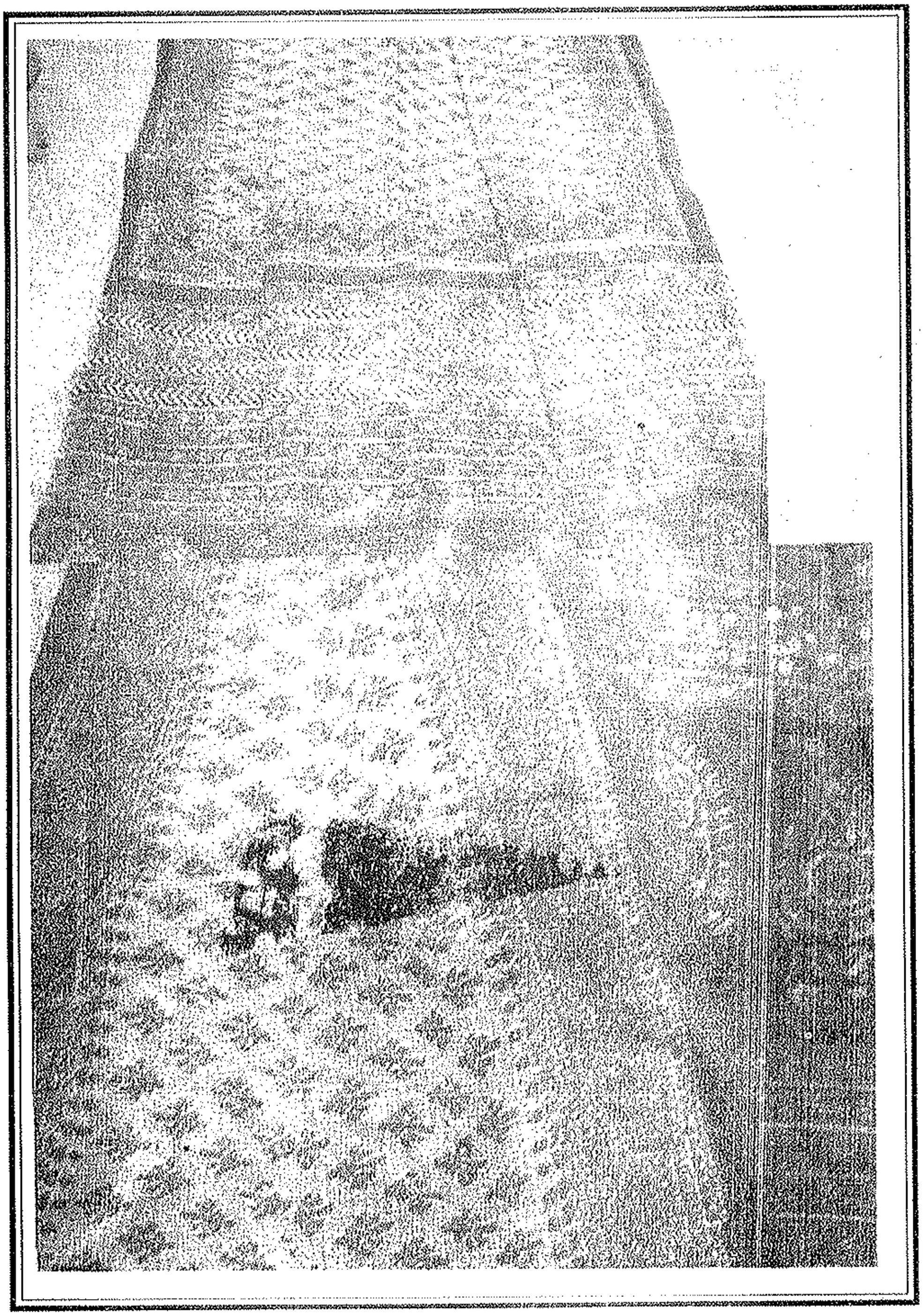

पैठनी:-

पैठनी का जन्म २०० बी०सी० में हुआ था तथा यह दो हजार वर्ष प्राचीन बुनाई है। विस्त त पल्लव पर बना डिजाइन तारा, मोर, पोपट, कैरी, रूई फूल, पंखा, कलश, पकली, कमल इत्यादि हो सकते हैं। प्रयोग में लाई गई कच्ची सिल्क, दक्षिण से आती है जबकि जरी गुजरात से प्राप्त होती है। पहले जरी बनाने के लिये केवल सोने का प्रयोग किया जाता था परन्तु अब चाँदी भी प्रयोग की जाने लगी है।

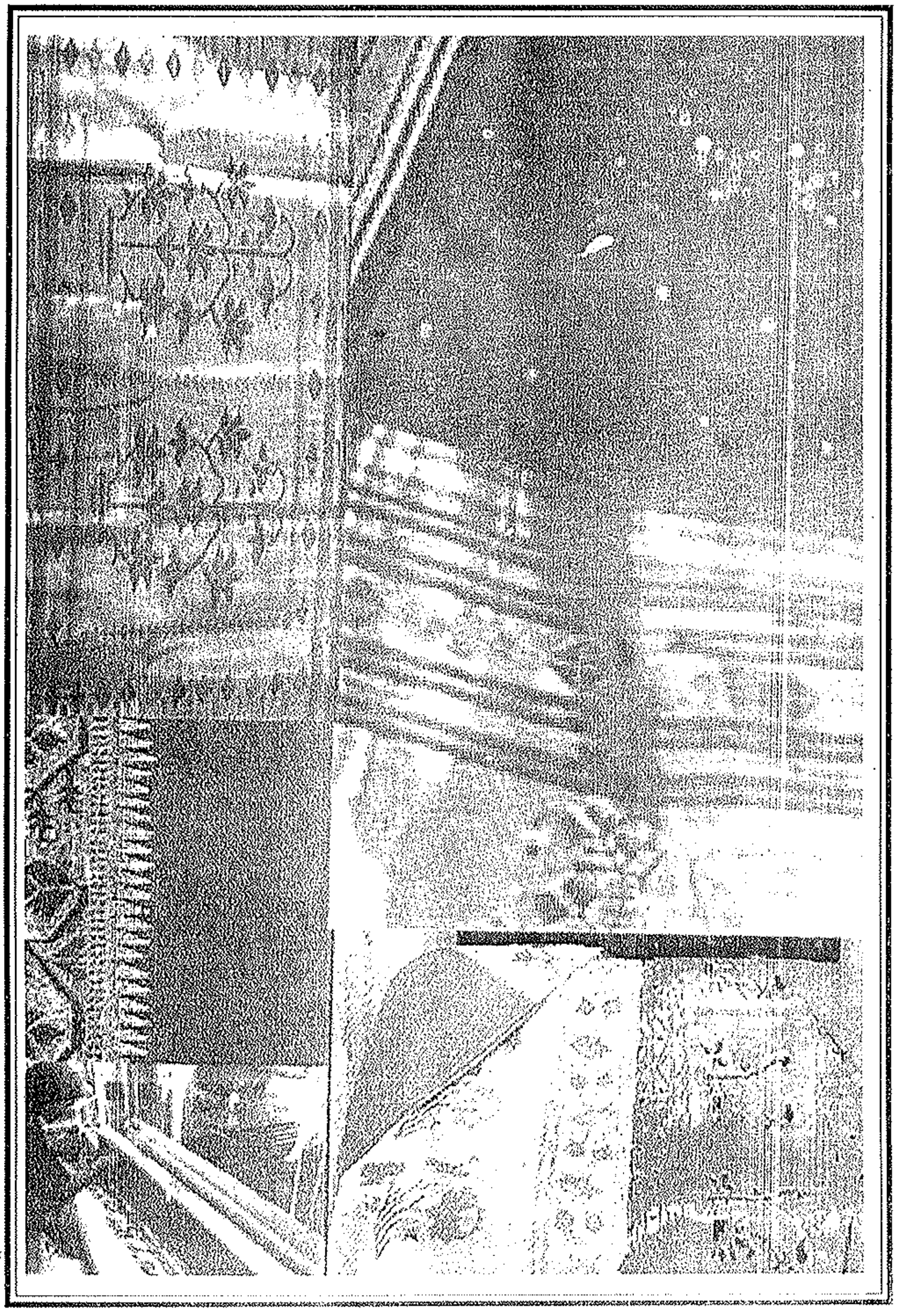

पटन पटोलाः-

पटोला एक पुराने तरीके के हाथ से चलने वाले हार्नेस करघे पर बुनी जाती है। मौलिक रूप से पटोला व इकत प्राकृतिक वेजीटेबल डाई से किया जाता था, परन्तु आज रासायनिक डाई का प्रयोग किया जा रहा है। पटोला की बुनाई में रंग व डिजाइन के सही संयोजन की आवश्यकता होती है। पटोला के कई बुनकर गुजरात में बस गये हैं।

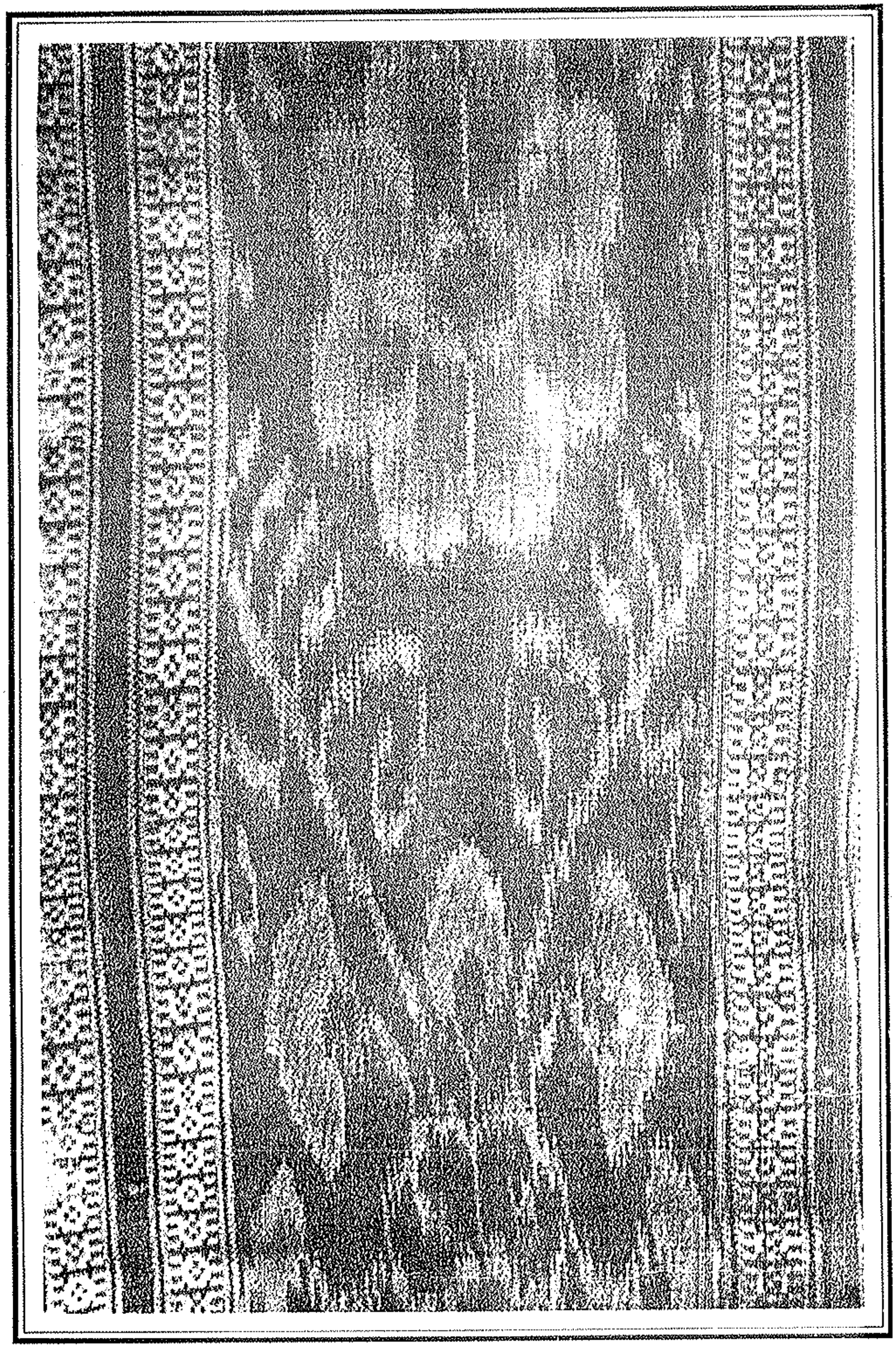

टाई एण्ड डाईः-

टाई एण्ड डाई कपड़े के कुछ भागों को गाँठकर, बाँधकर, मोड़कर अथवा सिलकर, रंगने को कहते हैं जिससे डाई करने पर डाई इन भागों पर नहीं चढ़ पाती। आज टाई एण्ड डाई, कुर्तो, दुपट्टों, साड़ियों, चोली, स्कार्फ, टी शर्ट इत्यादि पर देखी जा सकती है। यह तकनीक, चार्म नारंगी से लेकर चटख हरे, पीले तथा नीले चटख रंग देती है। मोती, सितारों, जरी व गोटा से अलंकृत कर देने पर डिजाइन और भी आकर्षक हो जाते हैं। टाई एण्ड डाई का सबसे पुराना संदर्भ बंधनी कहलाता था। राजस्थान, इस कार्य का गढ़ है।

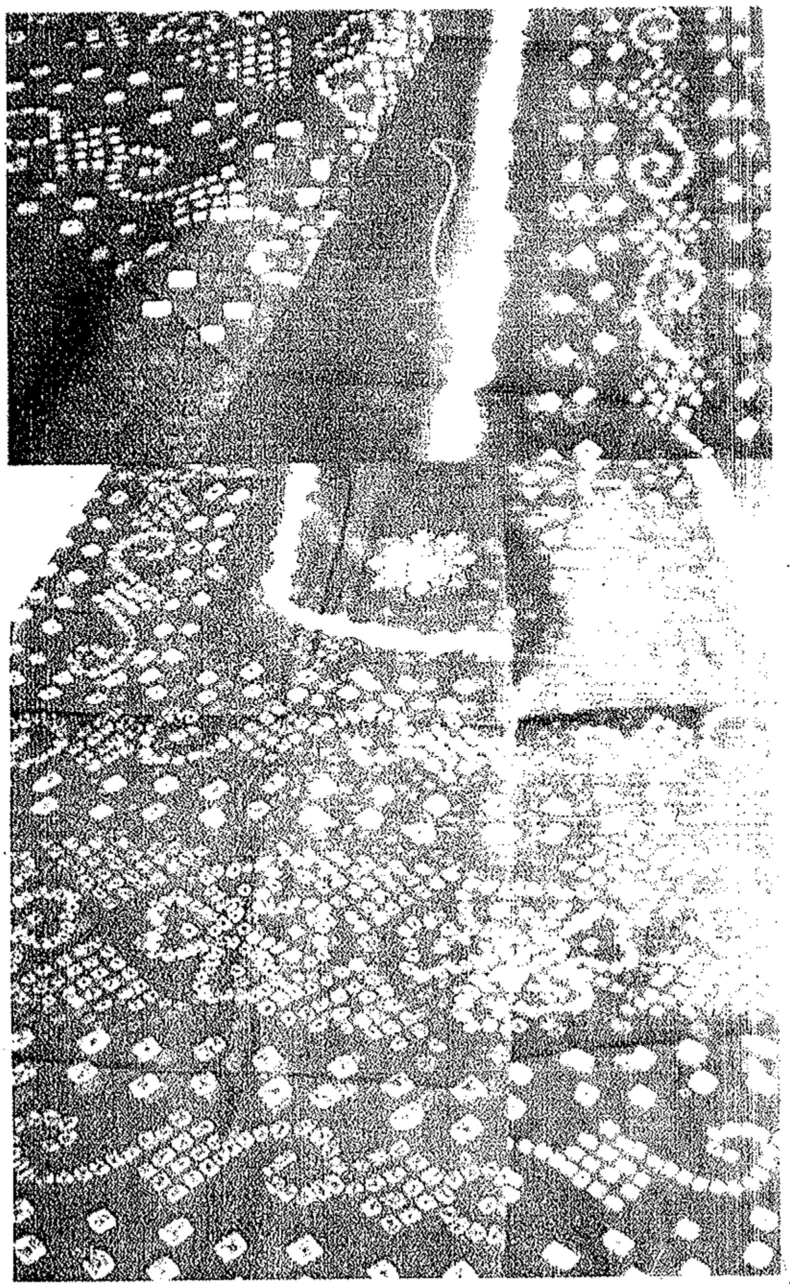

जरदोजीः-

जरदोजी का अर्थ है सोने की कढ़ाई, मुगल काल में जरदोजी हस्तशिल्पी स्प्रिंग्स, कड़े, सोने के तार, धातु के तारें, गोल सितारे, ढ़पका तथा कसब जैसी वस्तुओं का प्रयोग किया करते थे। सूरत और बनारस जरी के प्रमुख सप्लायर हैं। इस कला के कारीगर दिल्ली, आगरा, लखनऊ, फर्रुखाबाद, बरेली, भोपाल, बनारस, जयपुर, कलकत्ता, मुम्बई तथा हैदराबाद में स्थित है।

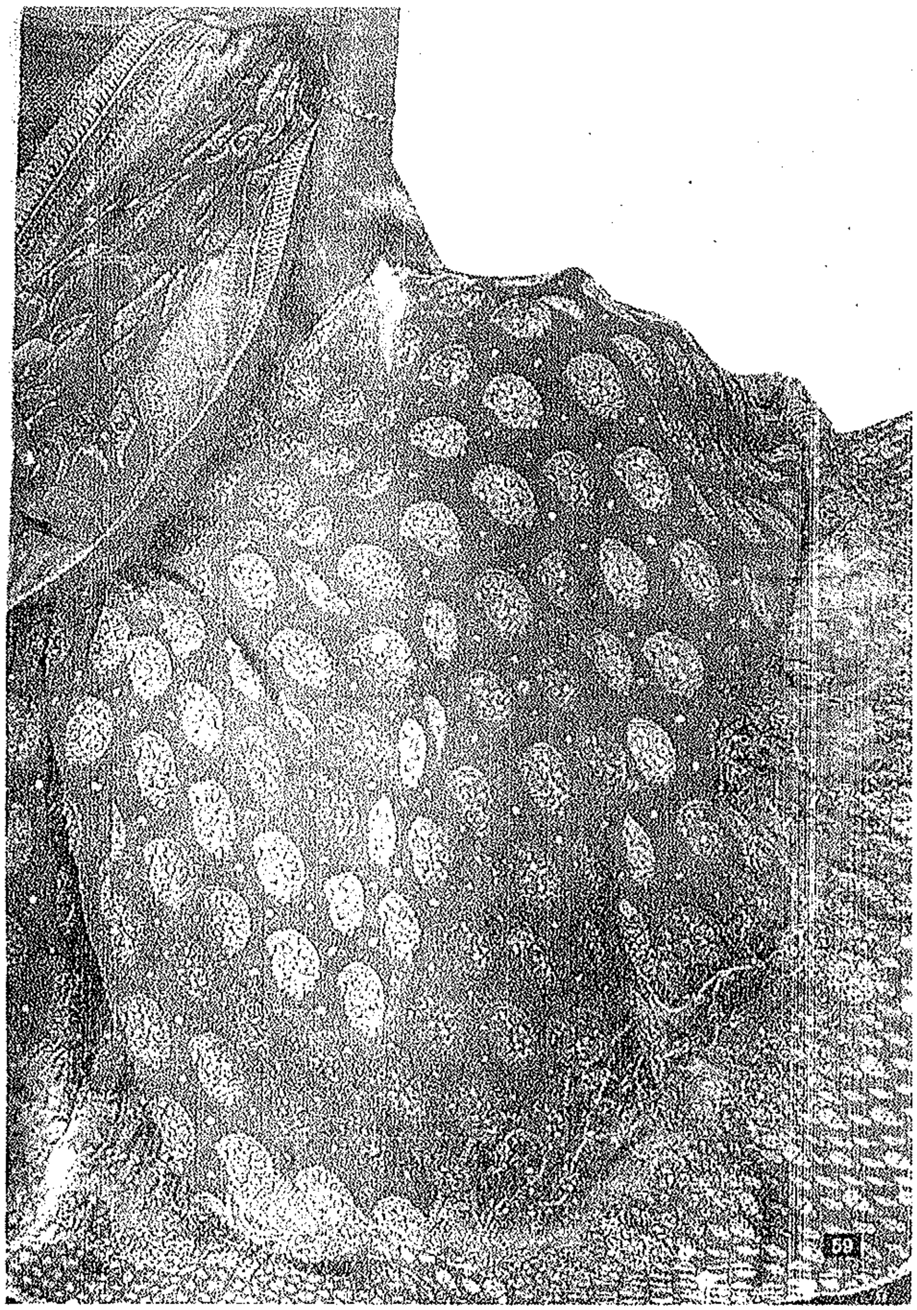

आज हम विभिन्न राज्यों के पुरूषों व स्त्रियों द्वारा पहनी जाने वाली पोशाकें देखते हैं–

कश्मीर

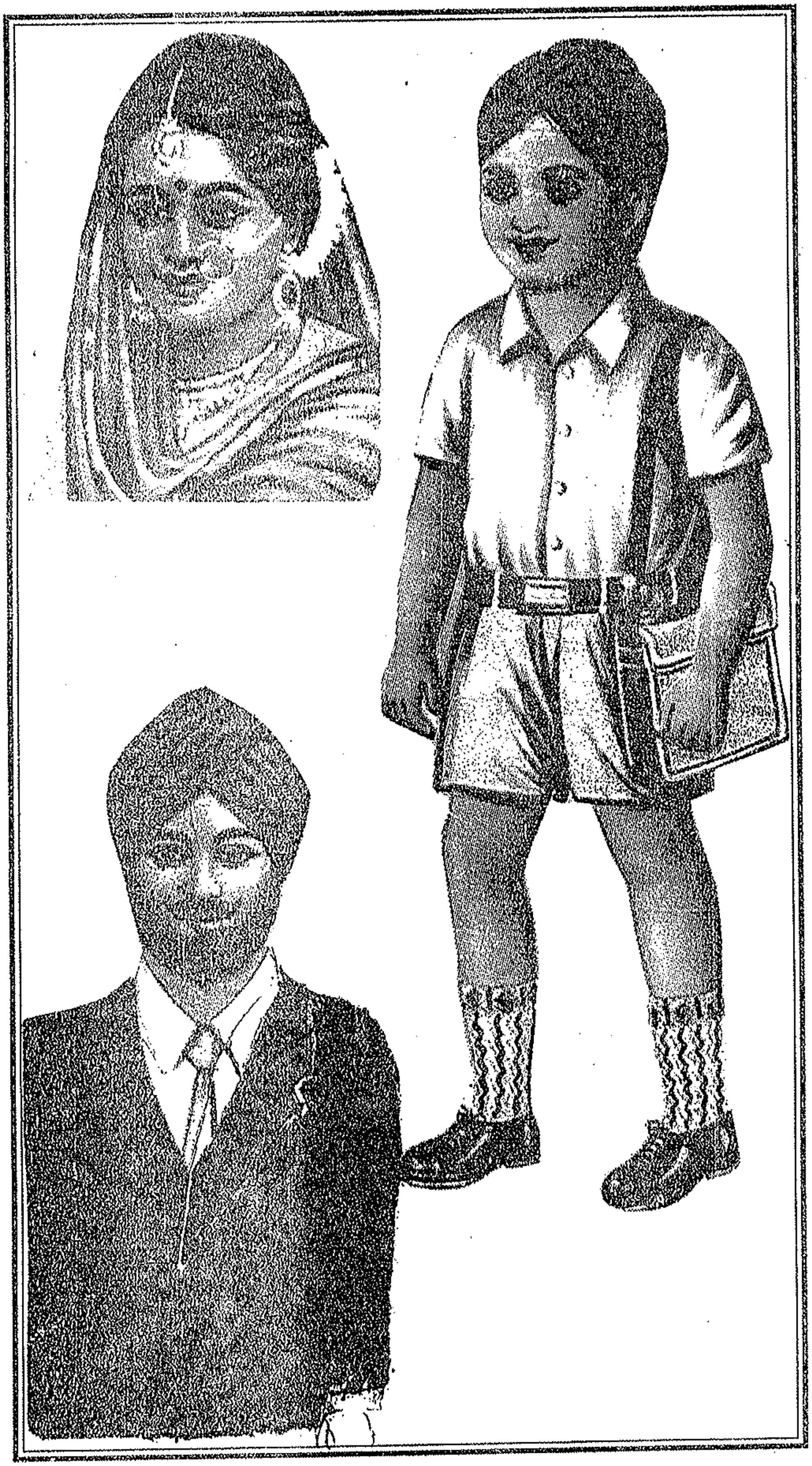

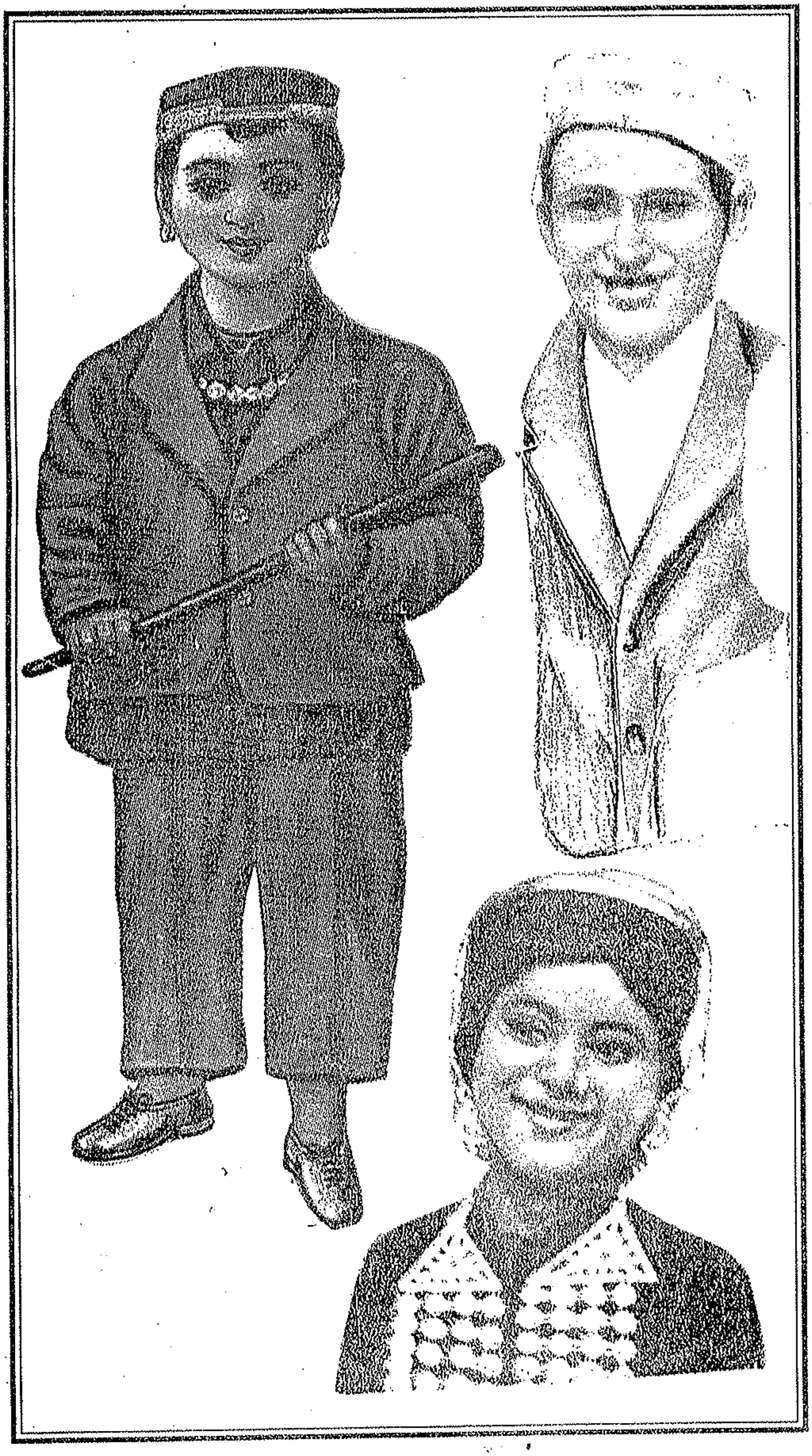

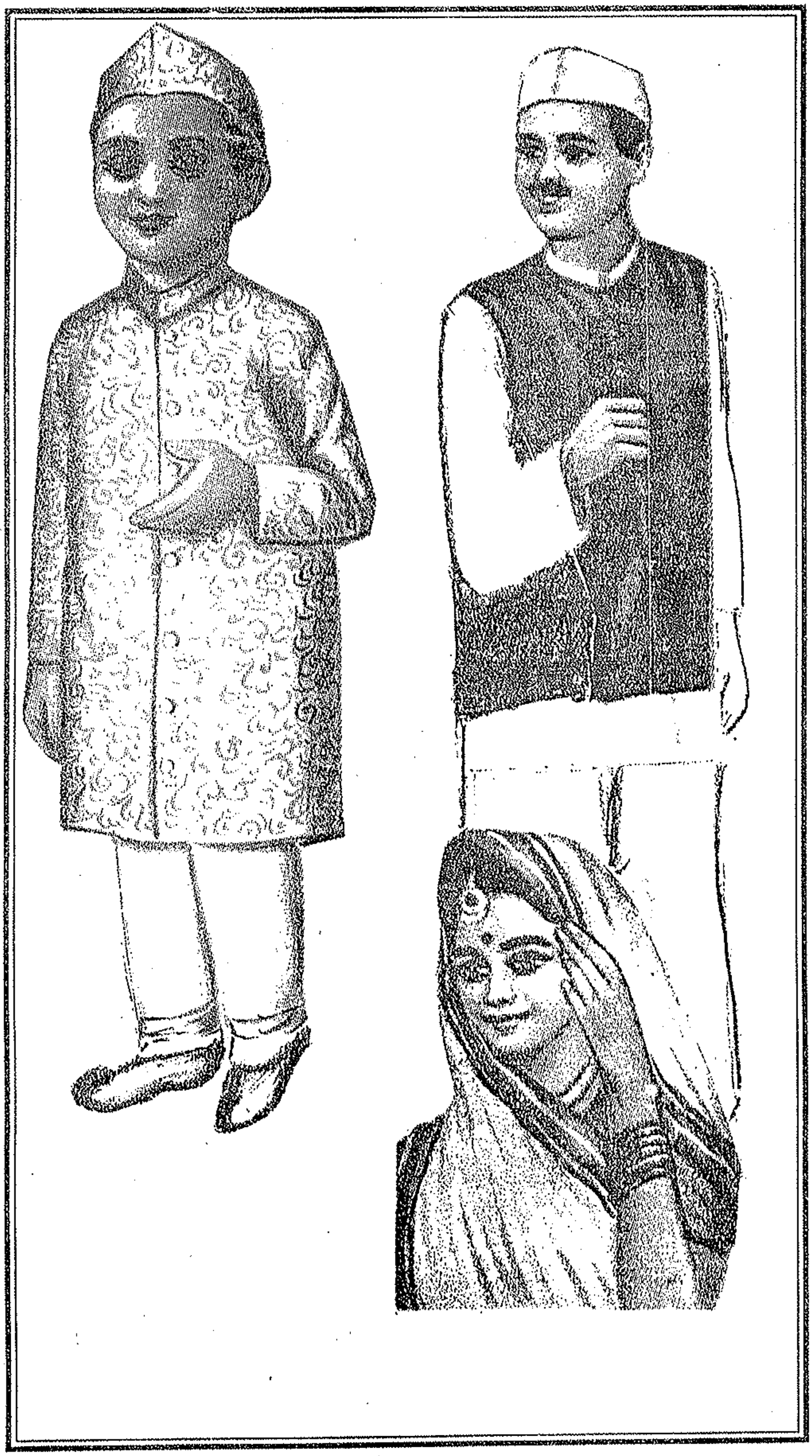

Bengal

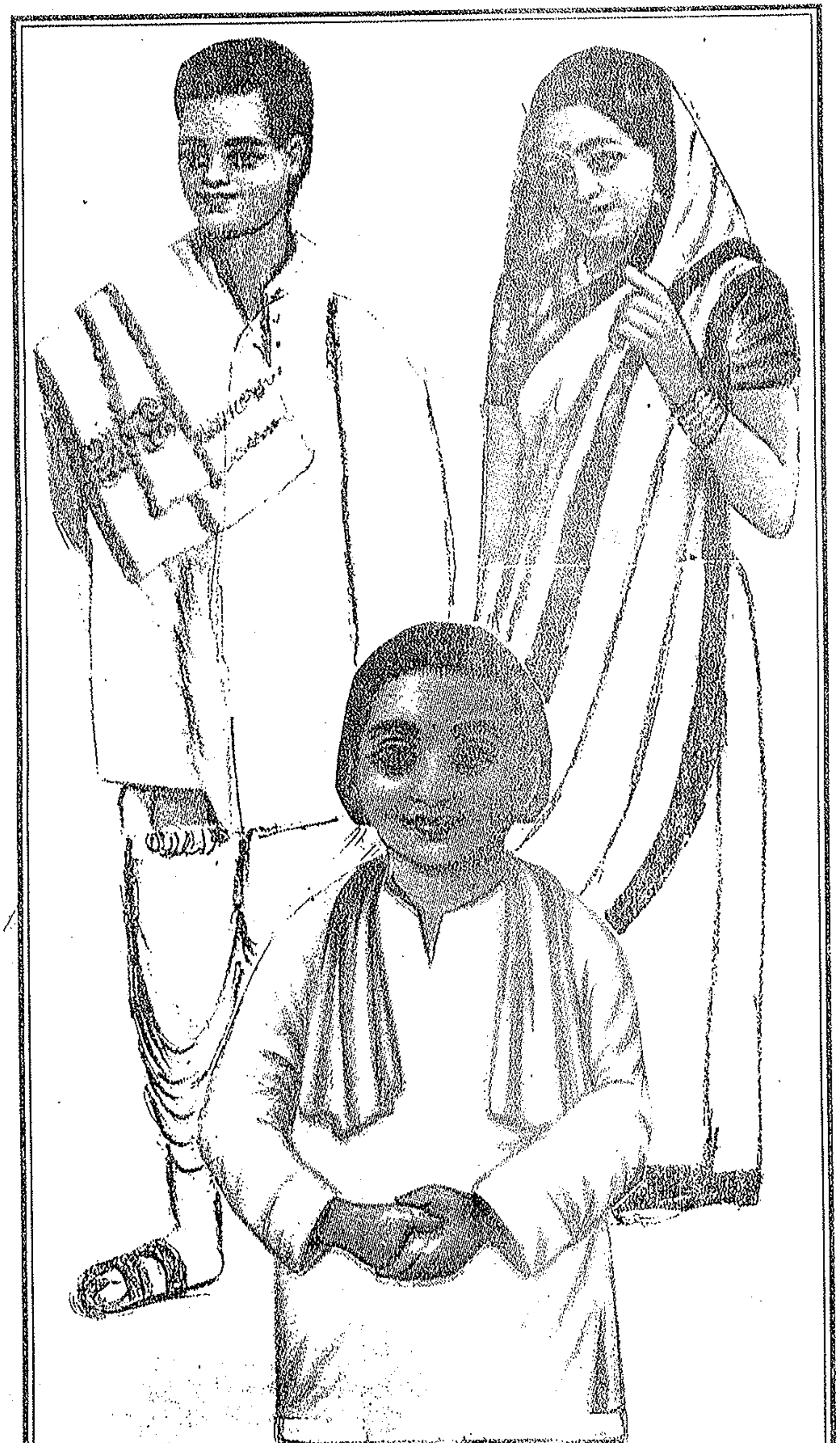

असम में सा· के दो भाग होते हैं-- मेखला व चदोअर

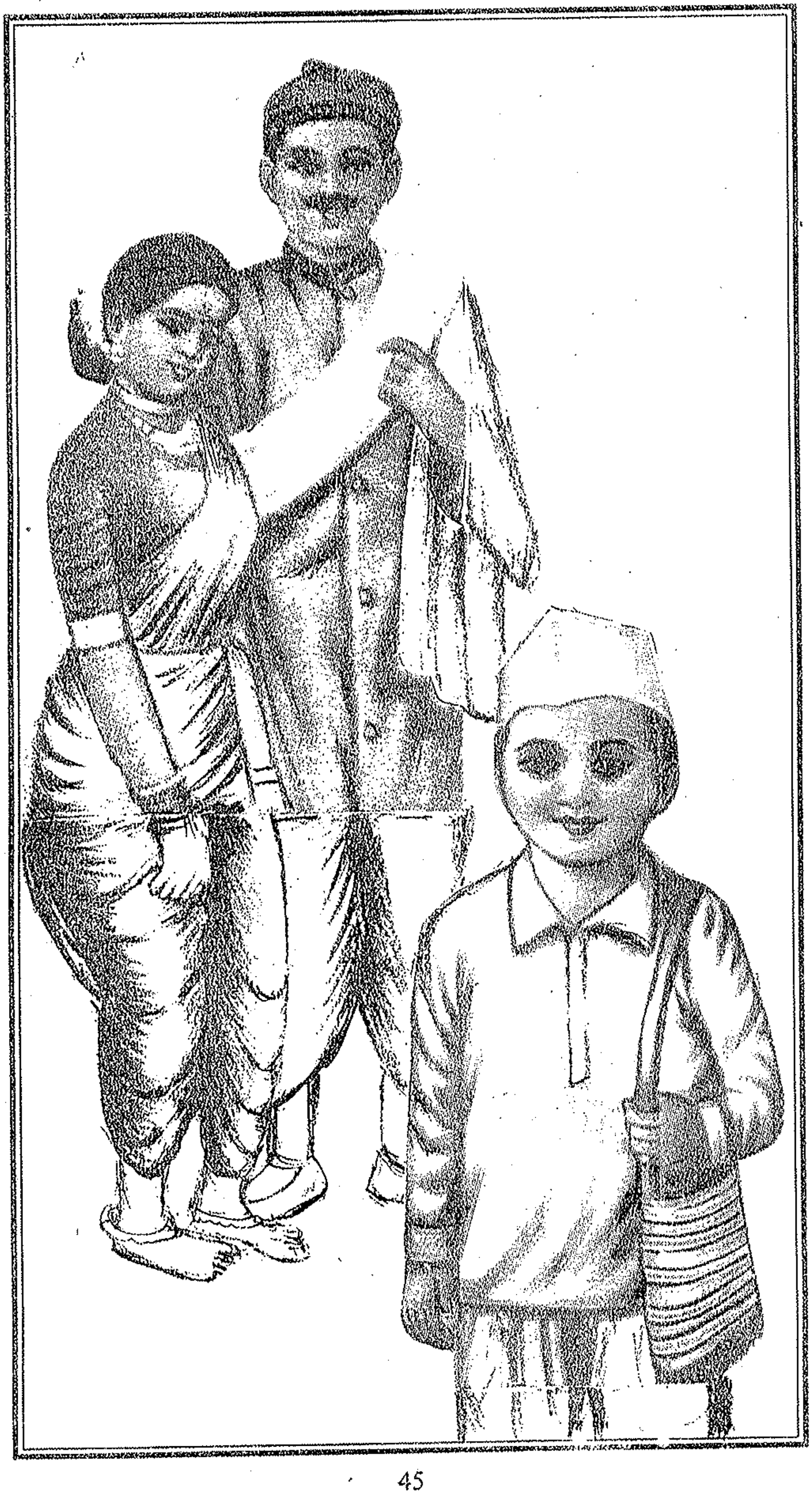

नौ गज कपड़े ो ड्रेप करने की परम्परागत शैली, दक्षिण भारत में सामान्यतः वैवाहिक अथवा धार्मिक अवसरों पर पहनी जाती है।

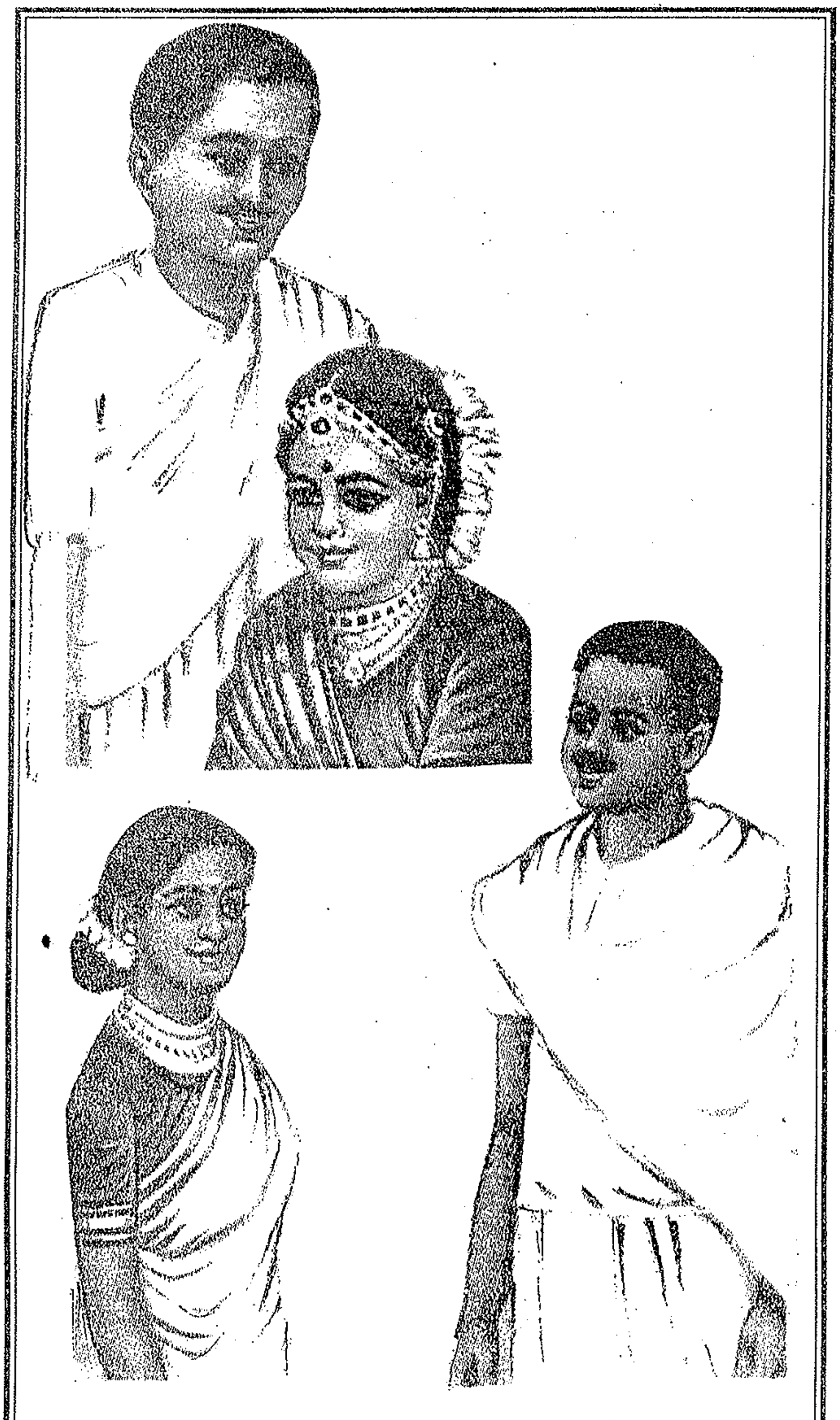

अभ्यास-

१— भारत के विभिन्न राज्यों की साड़ी का चित्र संग्रह तैयार करें।

२— भारत के विभिन्न राज्यों की पोशाकों का चित्र संग्रह तैयार करें।

१४.४ सारांशः-

भारतीय उपमहाद्वीप विशाल है। हर क्षेत्र का अपना विशिष्ट प्रकार का कपड़ा, अपने पारम्परिक प्रिन्ट व बुनाई तथा अपनी विशिष्ट लोकभाषा, व्यवहार, पहनावे की शैली इत्यादि है। साड़ी भारत में सर्वाधिक पहना जाने वाला परिधान है।

साड़ी पहनने की सबसे सामान्य शैली, 'नेवी' शैली है। कुर्गी शैली, बंगाली शैली, गुजराती, महाराष्ट्रीय तथा दक्षिण भारतीय शैली, कुछ अन्य शैलियॉ हैं। पूरे भारत में विभिन्न प्रकार की साड़ियॉ उपलब्ध हैं। कॉचीपुरम साड़ी, बालुचरी साड़ी, गढ़वाल साड़ी, बनारसी साड़ी, इकत साड़ी, चन्देरी साड़ी, चिकनकारी साड़ी, कोटा साड़ी, पैठनी साड़ी, पटोला साड़ी और टाई एण्ड डाई तथा जरदोजी साड़ी।

१४.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न—१ उत्तर प्रदेश के लोगों की पहनावे की शैली क्या है?

प्रश्न—२ बंगाल के लोगो की पहनावे की कौन सी शैली है?

प्रश्न—३ कश्मीर के लोगों की पहनावे की शैली क्या है?

प्रश्न—४ पंजाब के लोग किस शैली के पहनावे का अनुसरण करते हैं?

प्रश्न—५ दक्षिण भारतीय लोगों की पहनावे की क्या शैली है?

१४.६ स्वाध्ययन हेतु

१— वर्ल्ड ड्रेसेज द्वारा फ्रॉसिस केनेट, प्रकाशक—मिशेल बीजले।

यूनिट-१५

संरचना

१५.१ यूनिट प्रस्तावना

१५.२ उद्देश्य

१५.३ विभिन्न कथावस्तुओं पर आधारित डिजाइनिंग

१५.४ सारॉश

१५.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

१५.६ स्वाध्ययन हेतु

१५.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

यह यूनिट आपको कुछ विशेष कथावस्तु, विशेष गुण तथा अवसरों के उदाहरण देता है जिसके साथ आपको किसी विशेष उम्र के समूह के लिये डिजाइन करना होगा।

११.२ उद्देश्यः-

जब आप डिजाइनिंग करना प्रारम्भ करते हैं तो उसके कुछ निश्चित नियम व कारण होते हैं। यह आपकी डिजाइनिंग को व्यावहारिक व तर्कसंगत बनाते हैं।

१५.३ विभिन्न कथावस्तुओं पर आधारित डिजाइनिंगः-

जब एक डिजाइनर डिजाइनिंग प्रारम्भ करता है तो उसे यह जानना आवश्यक है कि वह किसके लिये डिजाइन कर रहा है जिसमें उम्र व लिंग जानना भी शामिल है। उसे यह भी पता होना चाहिये कि उसे किस अवसर के लिये डिजाइन करना है। कपड़े का चयन क्या है और अन्तिम परन्तु सबसे महत्वपूर्ण है **थीम** तथा विशेष फीचर।

डिजाइनिंग की थीम अथवा कथावस्तु में पोशाक का प्रकार, उम्र, लिंग, अवसर, कपड़ा विशेष फीचर तथा थीम शामिल होती है।

उदाहरण—1

वस्त्र:— फ्रॉक उम्र— तीन वर्ष

लिंग— स्त्री अवसर— सेमि फॉरमल

कपड़ा— सूती विशेष गुण— प्लीट्स

थीम— आइसक्रीम की स्टिक

उदाहरण--२

पोशाक–	जम्प सूट	उम्र–	एक वर्ष
लिंग–	स्त्री	अवसर–	कैजुअल
कपड़ा–	सूती	विशेष गुण–	जेबे

थीम -- कार्टून

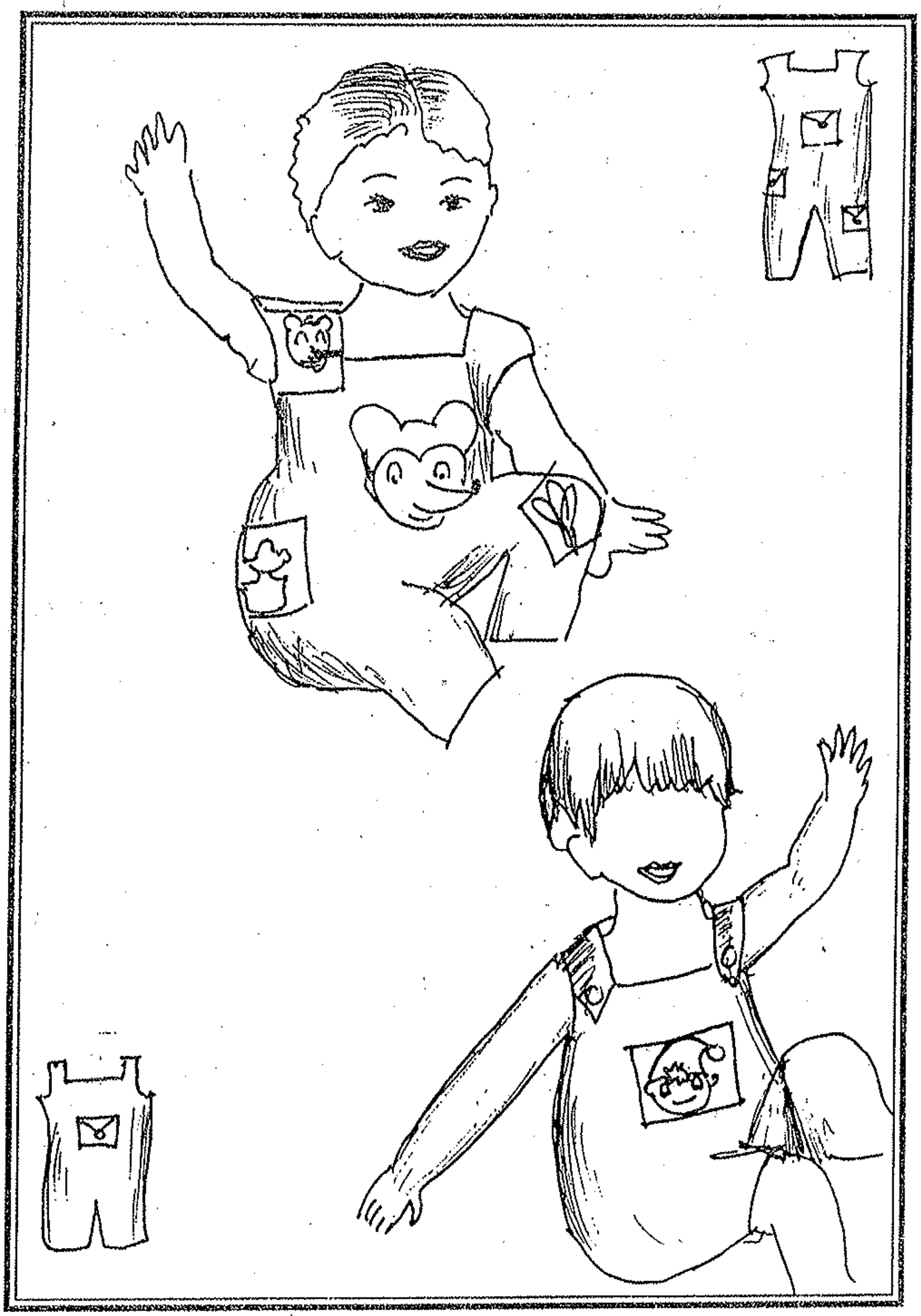

उदाहरण—३

पोशाक—	स्कर्ट	उम्र—	पाँच वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	औपचारिक
कपड़ा—	लाइक्रा	विशेष गुण—	फ्लेर
थीम—	बेबी डॉल		

उदाहरण—४

पोशाक—	स्कर्ट का टॉप्स	उम्र—	पॉच वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	औपचारिक
कपड़ा—	सूती	विशेष गुण—	टक्स
थीम—	पीटरपैन कॉलर		

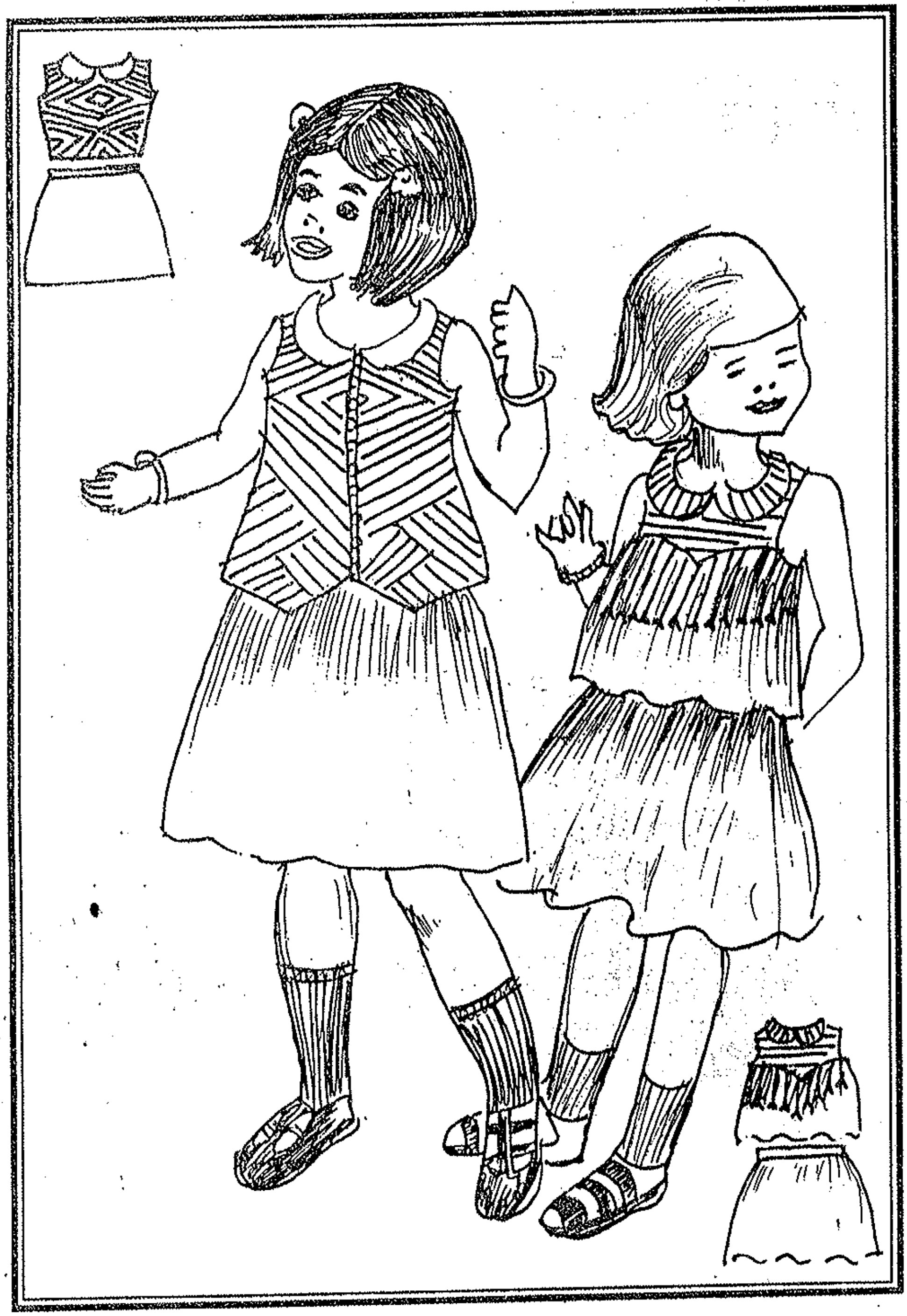

उदाहरण—५

पोशाक—	ट्यूब टॉप्स	उम्र—	आठ वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	दैनिक
कपड़ा—	सूती	विशेष गुण—	शियरिंग
थीम—	फ्लोरल छपाई		

उदाहरण–६

पोशाक–	लोअर	उम्र–	बारह वर्ष
लिंग–	स्त्री	अवसर–	दैनिक
कपड़ा–	सूती	विशेष गुण–	शीयरिंग
थीम–	कॉर्ड		

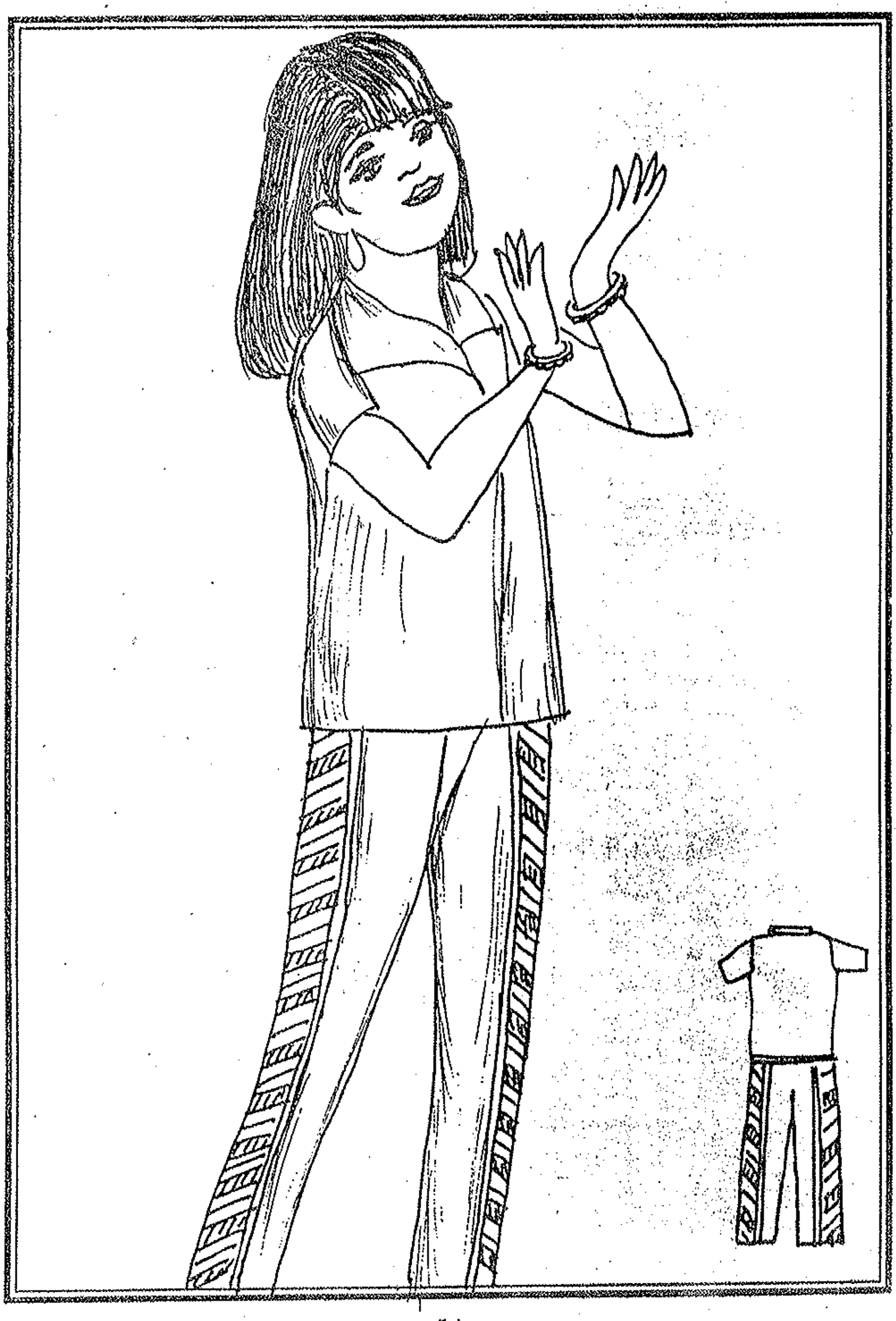

उदाहरण–७

पोशाक–	स्कर्ट	उम्र–	बारह वर्ष
लिंग–	स्त्री	अवसर–	दैनिक
कपड़ा–	सूती	विशेष गुण–	योक्स्
थीम–	चुन्नट		

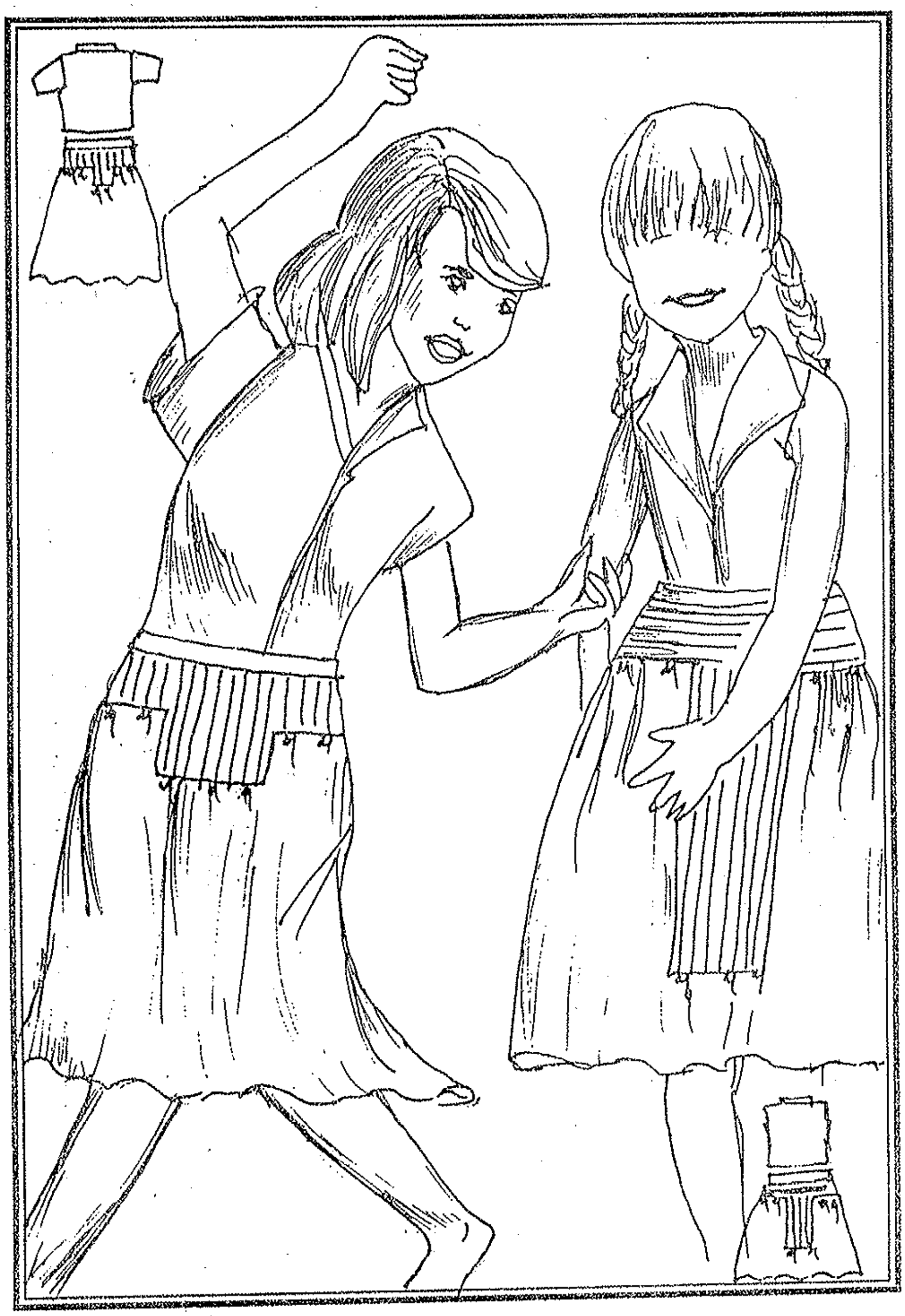

उदाहरण–८

पोशाक–	सलवार कमीज	उम्र–	बीस वर्ष
लिंग–	स्त्री	अवसर–	सेमि फॉरमल
कपड़ा–	सूती	विशेष गुण–	ए–लाइन
थीम–	कढ़ाईदार टेप के साथ प्रिन्ट		

उदाहरण—६

पोशाक—	चूड़ीदार कुर्ता	उम्र—	बीस वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	दैनिक
कपड़ा—	सूती	विशेष गुण—	गला
थीम—	लूप्स		

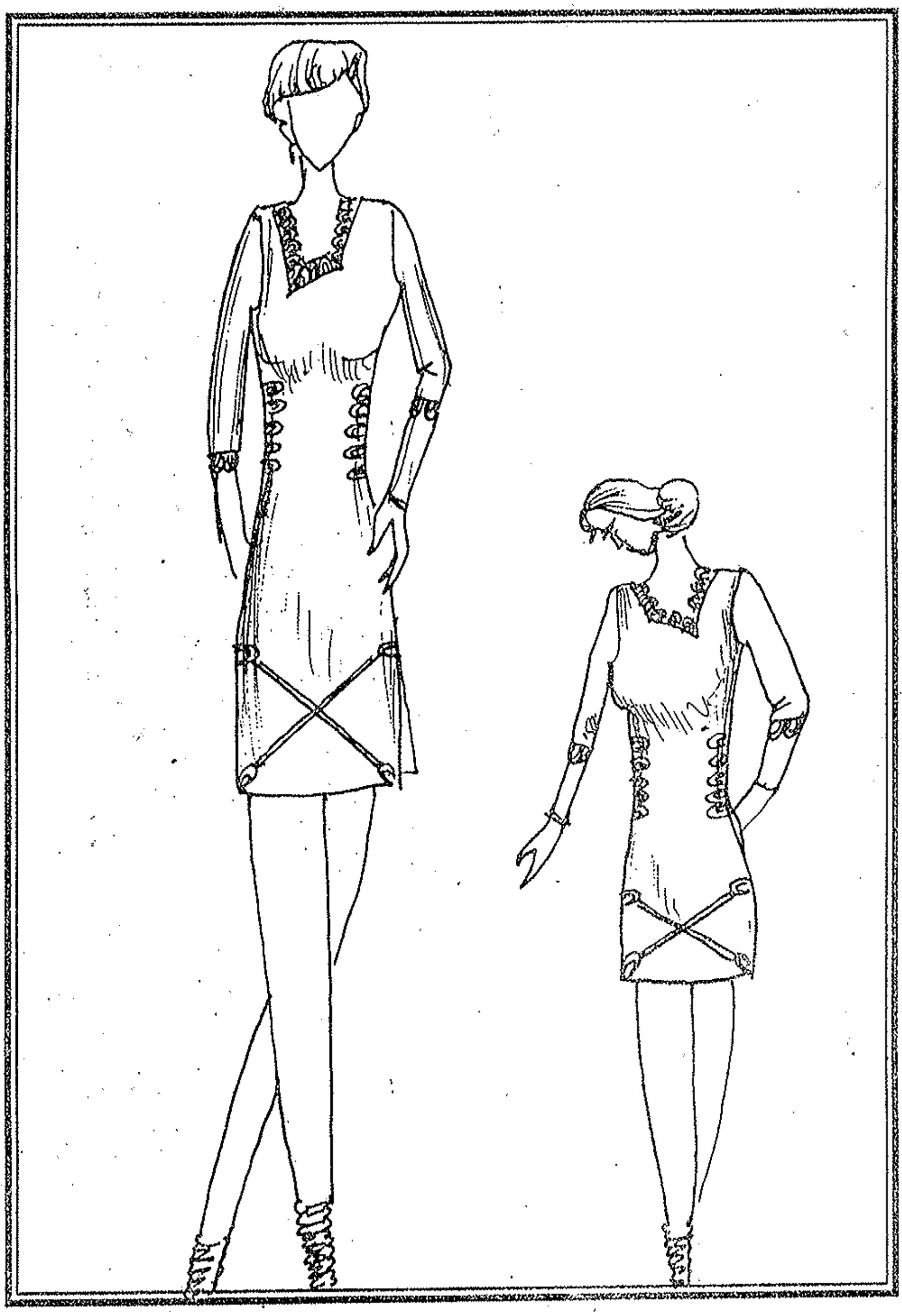

उदाहरण—१०

पोशाक—	पैरलेल	उम्र—	बीस वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	सेमि फॉरमल
कपड़ा—	क्रेप	विशेष गुण—	सन रे प्लीट्स
थीम—	दो भिन्न प्रिन्ट वाले कपड़े		

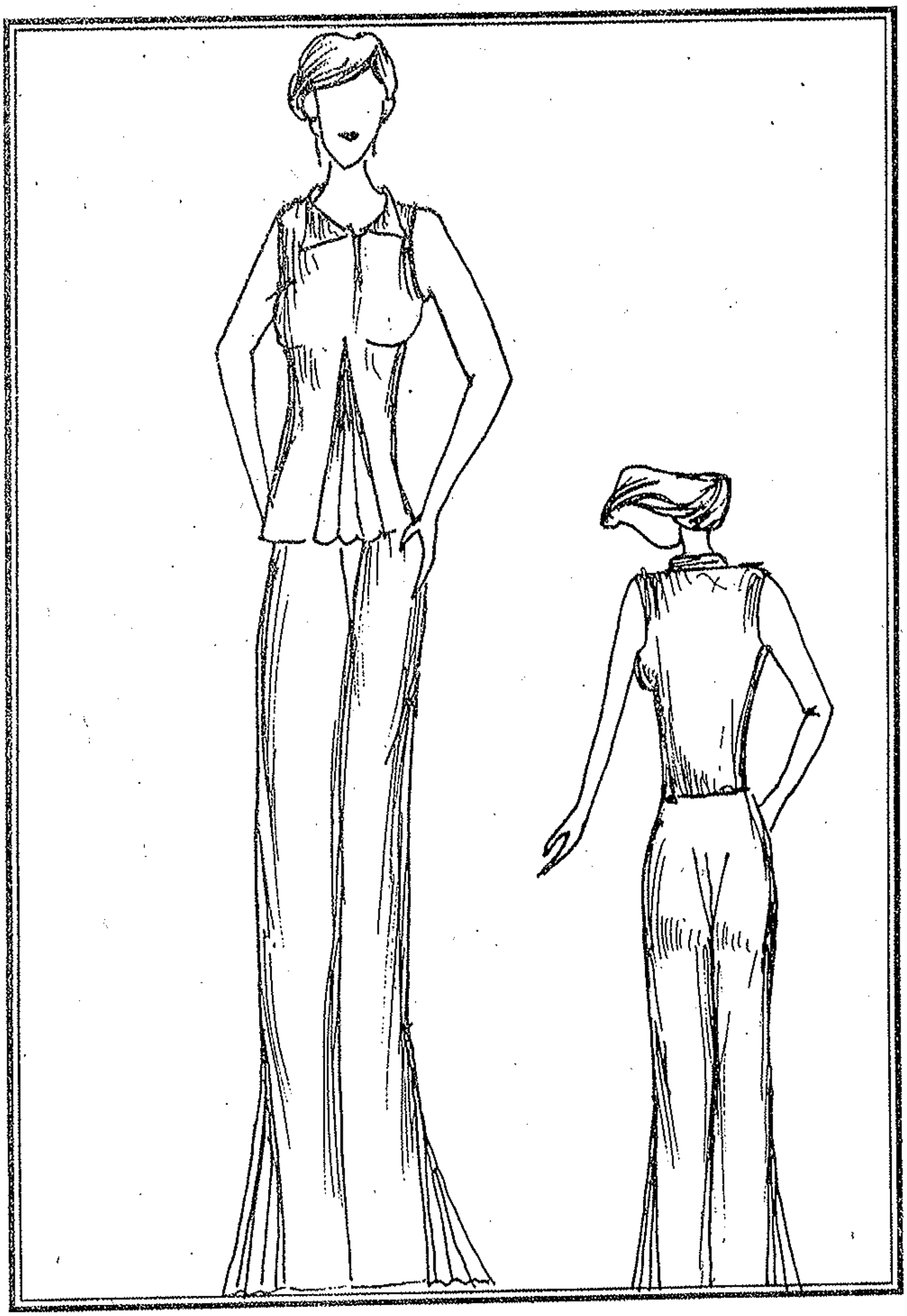

उदाहरण—११

पोशाक—	शिफ्ट	उम्र—	बीस वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	सेमि फॉरमल
कपड़ा—	मिश्रित सूती	विशेष गुण—	प्लीट्स
थीम—	बटन		

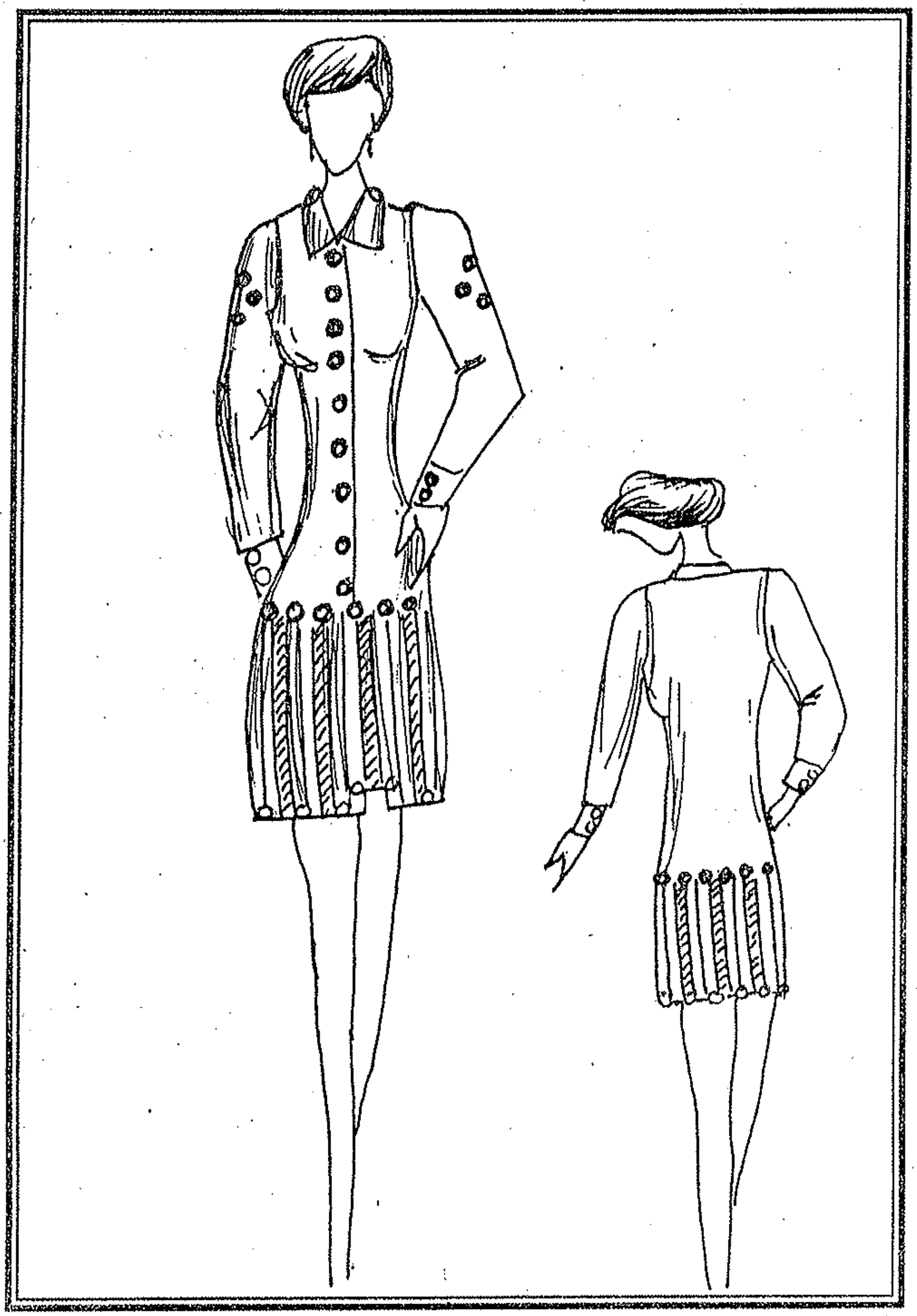

उदाहरण—१२

पोशाक—	सलवार कमीज	उम्र—	बीस वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	औपचारिक
कपड़ा—	शिफॉन	विशेष गुण—	प्रिंसेस लाइन
थीम—	कढ़ाई		

उदाहरण—१३

पोशाक—	नाइटी	उम्र—	बीस वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	रात्रि की पोशाक
कपड़ा—	साटिन	विशेष गुण—	लेस
थीम—	पेस्टल		

उदाहरण—१४

पोशाक—	गाउन	उम्र—	बीस वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	रात्रि की पोशाक
कपड़ा—	साटिन	विशेष गुण—	लेस
थीम—	पेस्टल्स		

उदाहरण—१५

पोशाक—	इवनिंग ड्रेस	उम्र—	बीस वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	औपचारिक
कपड़ा—	जार्जेट	विशेष गुण—	काउल
थीम—	लैम्पशेड		

उदाहरण—१६

पोशाक—	मिडी	उम्र—	बीस वर्ष
लिंग—	स्त्री	अवसर—	बीच वियर
कपड़ा—	सूती	विशेष गुण—	प्लीट्स
थीम—	हवाइन प्रिन्ट		

अभ्यास

१— विभिन्न प्रकार के फ्रॉक का चित्र—संग्रह तैयार करें।

२ विभिन्न प्रकार के सलवार सूट का चित्र—संग्रह तैयार करें।

१५.४ सारांशः-

पोशाक का प्रकार, उम्र, लिंग, अवसर, कपड़ा, विशेष गुण तथा थीम की जानकारी का होना डिजाइनर के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

१५.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न—१ एक वर्ष के बच्चे के लिये बेबी फ्रॉक डिजाइन करें, विशेष गुण हैं गैदर अथवा चुन्नट।

प्रश्न—२ दो वर्ष के बच्चे के लिए धारीदार कपड़े वाला जम्पसूट डिजाइन करें जिसका विशेष गुण पिपिंग हो।

प्रश्न—३ दस वर्ष के बच्चे के लिये डेनिम कपड़े की बनी स्कर्ट डिजाइन करें जिसका विशेष गुण कढ़ाई हो।

प्रश्न—४ सोलह वर्षीय लड़की के लिये एक पोशाक डिजाइन करें जिसका विशेष गुण, फ्लेयर हो।

प्रश्न—५ बीस वर्षीय लड़की के लिये पार्टी वियर सलवार कमीज डिजाइन करें।

१५.६ स्वाध्ययन हेतु

१ दि ट्रिम लाइन आफ वर्ल्ड कस्ट्यूम्स फिगर लीफ टू स्ट्रीट फैशन, द्वारा क्लॉडिया मुलर, प्रकाशन—थॉमस और हडसन।

यूनिट-१६

संरचना

१६.१ यूनिट प्रस्तावना

१६.२ उद्देश्य

१६.३ फैशन शो के लिये डिजाइनिंग

१६.४ सारॉश

१६.५ स्वर्निधार्य प्रश्न/ अभ्यास

१६.६ स्वाध्ययन हेतु

१६.१ यूनिट प्रस्तावनाः-

जब भी डिजाइन प्रदर्शित किये जाते हैं वह फैशन शो द्वारा ही किये जाते हैं।

१६.२ उद्देश्यः-

एक फैशन डिजाइनर जो अपना संग्रह प्रदर्शित न कर सके, कभी सफल नहीं हो सकता। उसे प्रदर्शन की कला अवश्य आनी चाहिये। यह यूनिट बताता है कि यह कैसे किया जाता है।

१६.३ फैशन शो के लिये डिजाइनिंगः-

फैशन शो के लिये डिजाइनिंग करते समय सम्पूर्ण रूप को मस्तिष्क में रखना पड़ता है। सम्पूर्ण रूप में पोशाक, एसेसरीज, मेकअप तथा केश सज्जा सम्मिलित हैं। पोशाक को पहनने वाली मॉडल का चुनाव भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

फैशन डिजाइनर व फैशन निर्देशक जितनी महत्वता कपड़ों को देते हैं उतनी ही कपड़ों की एसेसराइजिंग को देते हैं। एक ही पोशाक को लेकर वह दर्जन भर रूपों की रचना कर सकते हैं। मूलभूत पहनावे के साथ साथ एसेसरीज भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। आप एक एटायर से दूसरे तक जाते हुए एसेसरीज व कपड़ों की आपसी अदल

बदल की क्षमता भी विकसित कर पायेगें।

सामान्यतः आपके जूते कपड़ों के रंग अथवा उससे गहरे रंग के होने चाहिये। यह एक फ्लूड लाइन बना देता है। चटख या हल्के जूते आँखों को नीचे की ओर आकर्षित करते हैं।

हैंड बैग- एक अच्छा हैन्ड बैग, एक महत्वपूर्ण एसेसरीज है। हैन्डबैग का रंग परिधान के समन्वयक होना चाहिये। कुछ स्त्रियाँ कंधे पर बैग टाँगना अधिक आरामदायक महसूस करती हैं।

बेल्ट कमर को आकर्षक बना देती है और पोशाक को सुन्दर रूप देती है। यह स्कर्ट व ब्लाउज के साथ ऐसे मेल खाती है जैसे एक दूसरे के लिये ही बनी हो। कपड़ों की ही तरह बेल्ट भी फैशन से अन्दर या बाहर होती रहती है। एक अच्छी, गहरी समन्वयक रंग जैसे काले, भूरे अथवा नेवी रंग की बेल्ट पहनावे के लिये अति उत्तम सिद्ध हो सकती है। एक सुनहरी धातु की बेल्ट सुबह से संध्या तक के सभी लुक्स के लिये उत्तम रहेगी।

एक अच्छी घड़ी का होना भी आवश्यक है। चमड़े अथवा सादे सुनहरे बैण्ड वाली घड़ी हर रूप के लिये उत्तम रहती है।

कान की बाली एक परिपूर्ण रूप देते हैं। बटन, बॉल अथवा सरल ट्विस्ट डिजाइन, कार्यकारी पोशाकों के साथ उत्तम लगते हैं, चाहे सुबह हो अथवा शाम।

खुला अथवा ओपेन कलर अथवा सादी नेकलाइन को कभी–कभी फिलर की आवश्यकता होती है। एक सरल सोने की चेन इस कार्य को पूर्ण करेगी। एक अन्य आभूषण जो आपके रूप में नर्मी लाने का कार्य करता है व आपकी पोशाक को आयाम देता है वह है चूड़ी अथवा ब्रेसलेट। आपको आवश्यकता है केवल एक कलात्मक डिजाइन की।

यदि दिन के कपड़े जीवन के गंभीर पहलू के लिये होते हैं तो शाम के कपड़े मनोरंजन व कल्पनाओं के होते हैं। दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद, शाम को एक खूबसूरत परिधार दिन भर की थकान मिटा कर नये उत्साह का संचार कर सकता है।

केवल छः टुकड़ों के साथ कई प्रकार के इवनिंग कूल्स की रचना की जा सकती है। एक भारी दुपट्टा एक पैन्ट, कुर्ता, एक साड़ी, चोली और ड्रेसी ब्लाउज जो वेलवेट सिल्क साटिन या शिफॉन जैसें कपड़ों में हो।

सर्वप्रथम व सबसे महत्वपूर्ण यह जानना है कि मॉडल के केश किस प्रकार हैं, क्या वें–

१— तैलीय अथवा अ ाली केश हैं।

२--- शुष्क अथवा ड्राई केश हैं।

३— मिश्रित अथवा मिक्स्ड कन्डीशन केश हैं।

४--- सन्तुलित अथवा सामान्य केश हैं।

आगे आपको उनकी मोटाई तथा टेक्सचर और घुंघराले होने की क्षमता का अध्ययन करना होगा जिससे कि उन केश शैलियों को सुनिश्चित किया जा सके, जिसमें केश सही अवस्था में रहेगें तथा इसके लिये चेहरा, कद, भार तथा जीवन शैली को भी ध्यान में रखना होगा।

हर कोई अति सुंदर नहीं हो सकता। परन्तु साथ ही कोई भी असल में सादा अथवा साधारण दिखने वाला नहीं होता। विश्व में अति प्रसिद्ध कई मॉडल, अभिनेत्रियॉं तथा फिल्मी हस्तियॉं आज भी "सादी दिखने वाली" समूह में शामिल होती, यदि उन्होनें अपने रूप को सर्वोत्तम बनाने की कला नहीं जानी होती। आपको आपका सर्वश्रेष्ठ दिखाने में कॉस्मेटिक्स महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पहले कदम के रूप में अपना चेहरा, शीशे में देखकर सावधानीपूर्ण अध्ययन करें। सबसे पहले समझने वाली बात है कि चेहरे का आकार क्या है। चेहरे के चार मूल आकार होते हैं-- गोल अर्थात राउन्ड, वर्ग अर्थात स्क्वायर, हृदयाकार और अण्डाकार। हलॉंकि हर चेहरा, इनमें से किसी एक वर्ग में शामिल हो, यह अनिवार्य नहीं है। जब आपने अपने चेहरे के आकार का अनुमान लगाया तब आपको सही मेकअप कराने की आवश्यकता है।

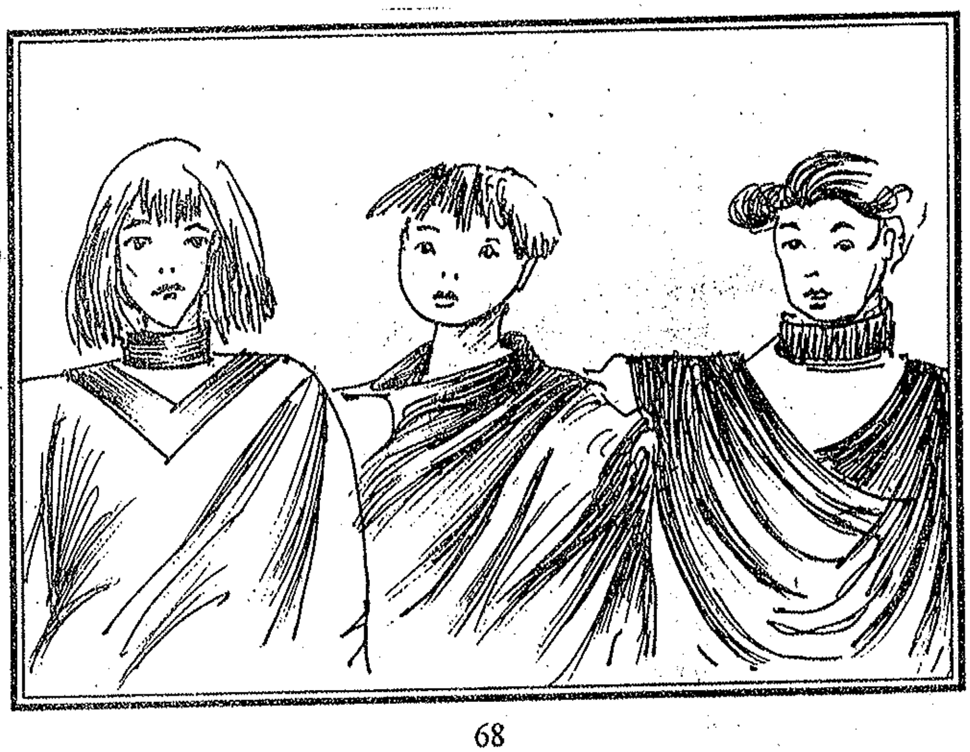

हर्ट शेप-

हृदय के आकार का सर्वश्रेष्ठ रूप उभारने के लिये चीकबोन्स को हल्के रंग से हाईलाइट करें। इसके नीचे व ठोड़ी पर ब्लशर लगायें।

ओवल शेप-

अण्डाकार चेहरे की अति उत्तम संरचना को, चीकबोन्स पर नर्म शेडिंग करके, उभार कर, सम्पूर्ण सौन्दर्य दें।

राउन्ड शेप-

वृत्ताकार चेहरे को, जबड़े की रेखा, गला तथा भौंह के ऊपर की ओर शेडिंग कर, पतला रूप दें। नाक के किनारे व नोंक को हाईलाइट करें।

स्क्वायर शेप-

वर्गाकार चेहरे पर जबड़े से गाल तक शेप कर नर्म बनाएँ। फिर कनपटी के ऊपर रंग डाल कर चेहरे को पतला करें।

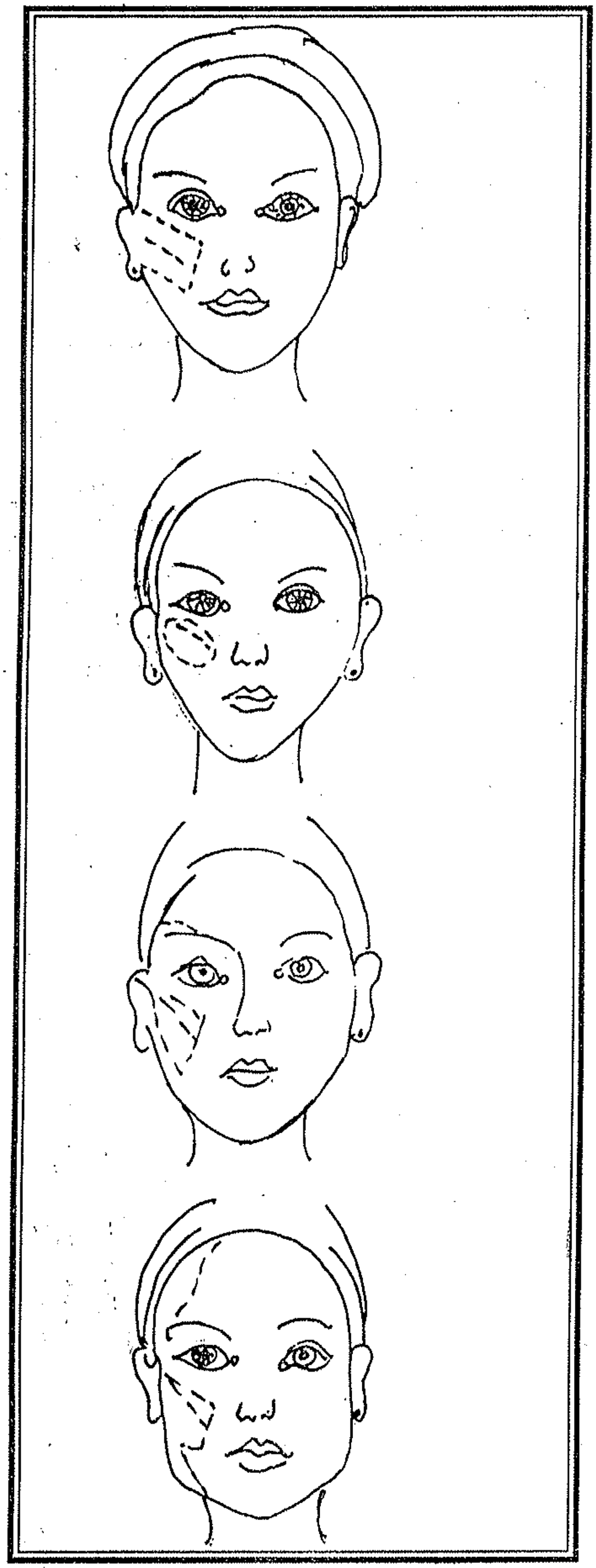

चेहरे के आकारानुसार केश सज्जाः- अच्छी तरह काटे गये केश आपके रूप में चार चाँद लगा सकते हैं। अतः ऐसी शैली का चयन करें जो आप पर जँचे।

चाहे आप जिस भी शैली का चयन करें आपके केश सदा स्वस्थ दिखने चाहिये व अच्छी अवस्था में होने चाहिये। यदि आपके केश लम्बे हैं तो विभिन्न शैलियाँ अपनाकर देखें। ऊपर बाँधे, खुले छोड़ें, चोटी करें अथवा बैरेट या रिबन बांधकर अपनी शैली में विविधता लाएँ।

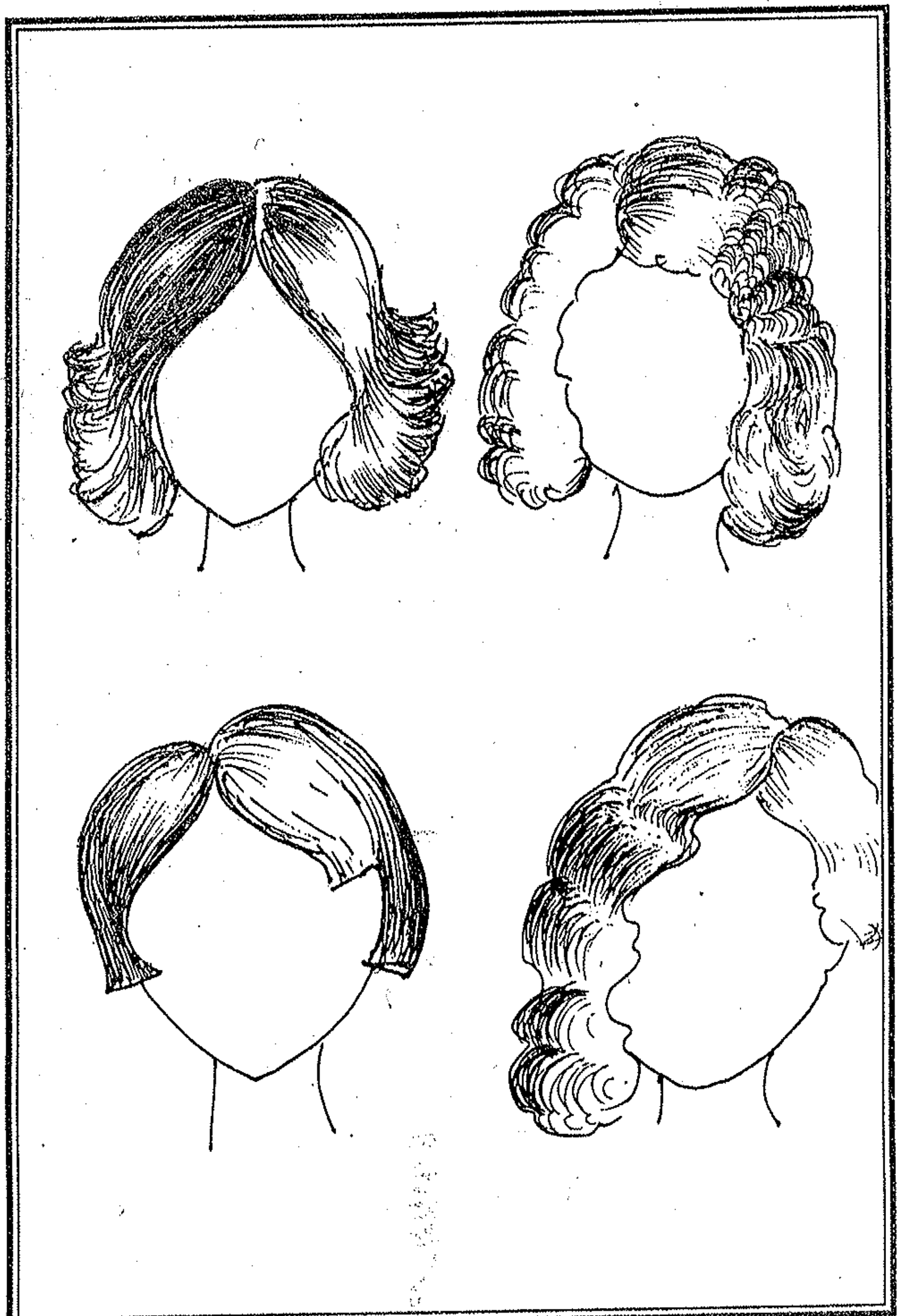

होंठ- यदि आपके होंठ पतले हैं तो चटख, गाढ़ी लिपस्टिक न लगायें। इनके स्थान पर हल्के परलिस्ड अथवा ग्लोसी रंगों का प्रयोग करें। गर्म, चटकीले रंग, मोटे होठों के लिये सर्वश्रेष्ठ होते हैं। ऐसे कोई भी रंग न लगाये जो होठों के प्राकृतिक रंग से अत्यधिक विरोधाभासी हों। लिपस्टिक होठों के अन्दर ही रखें।

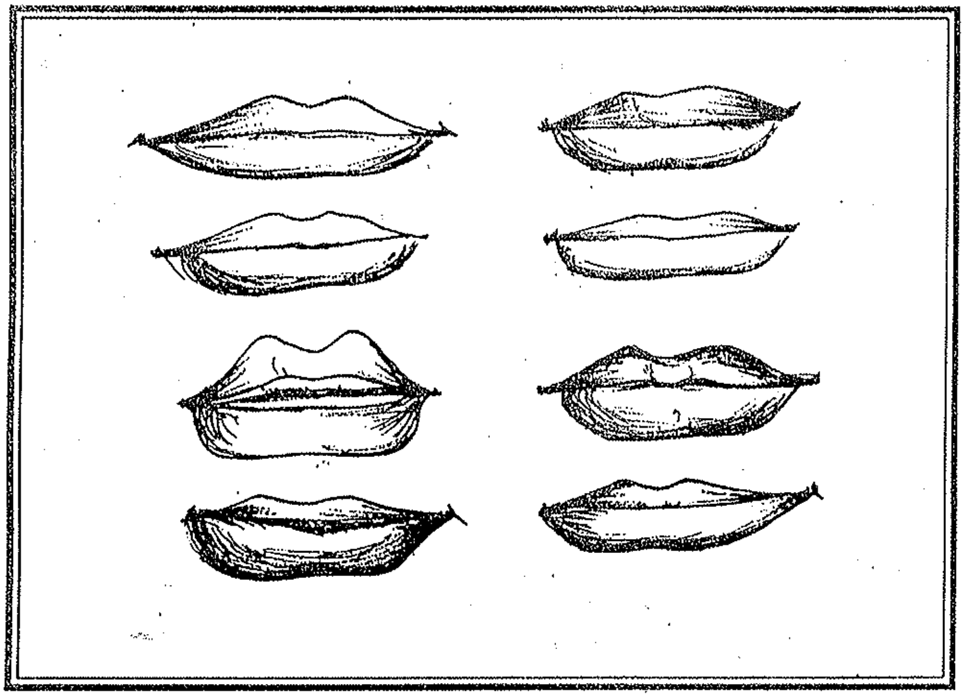

नाक- नथुनों के किनारों व नोक को शेड करके एक लम्बी नाक को छोटी दिखाया जा सकता है, जब वह नाक जो अत्यधिक पतली है को छोटा दिखाने के लिये उसके केन्द्र को शेड करेगें तथा किनारों का हाईलाइट करेगें, इसके विपरीत एक चौड़ी नाक को पतला दिखाने के लिये केन्द्र को हाईलाइट करें तथा किनारों पर शेड करें। एक स्नब नाक को सुधारने के लिये केन्द्र में नीचे तक हल्का हाईलाइट दें तथा नोक को शेड करें।

त्वचा-

सामान्य त्वचा- ऐसी त्वचा को समस्या मुक्त रखने के लिये सुबह–शाम की निरन्तर सफाई, माईश्चराइजिंग, संतुलित भोजन तथा उपयुक्त आराम करना चाहिये।

शुष्क त्वचा- अन्य प्रकार की त्वचाओं की तुलना में शुष्क त्वचा में झुर्रियाँ पड़ने का खतरा अधिक होता है। मेकअप लगाने से पहले व बाद में अच्छी तरह माईश्चराइजर लगाने से त्वचा को शुष्क होने से बचाया जा सकता है। उच्च प्रोटीनयुक्त भोजन करें

तथा खूब सारा पानी अ॰ ॥ तरल पदार्थ पियें।

ग्रीसी अथवा तैलीय त्वचा- तैलीय त्वचा पर जल्दी झुर्रियाँ नहीं पड़ती परन्तु इसमें दाग, धब्बे व झाईयाँ इत्यादि पड़ने का दुर्गुण होता है। इस प्रकार की त्वचा पर हल्के एस्ट्रिंजेन्ट का प्रयोग लाभदायक होगा।

आँखों की देखभाल- जब आप सौन्दर्य व सफाई की दिनचर्या पर आयें तो आँखों की अनदेखी न करें। थकी हुई आँखों पर अच्छी तरह आई क्रीम लगायें फिर उन्हें नम रूई के गोलों से ढँके।

चश्में- आप किस प्रकार के चश्में पहनते हैं वह आपके दिखावें को बहुत सारा अन्तर देगा।

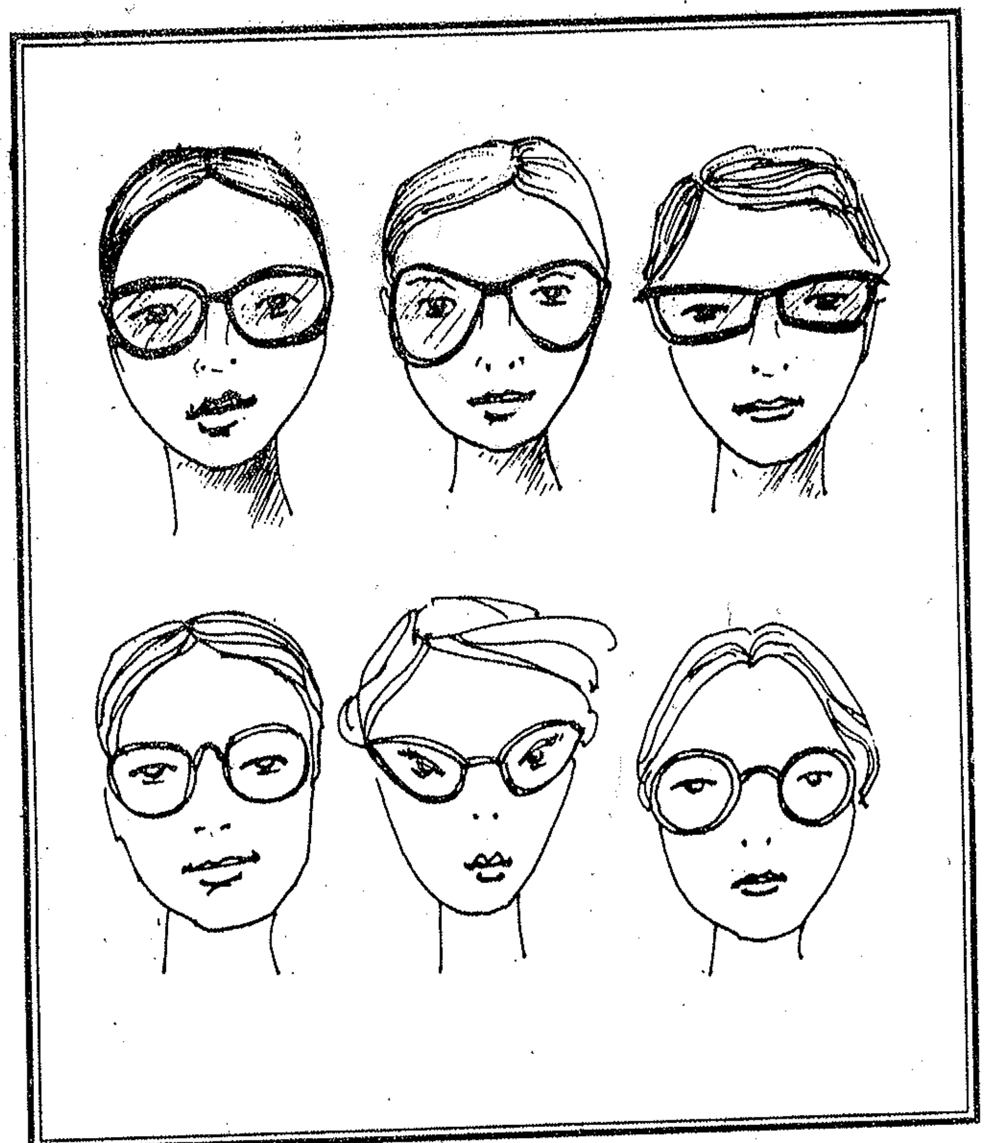

जब आप एक स्टेज पर प्रेजेन्टेशन करते हैं तो वह थोड़ा बढ़ा–चढ़ा कर पेश किया जाता है। जिससे वह उपभोक्ता को आकर्षित करे। अतः चुनी गई थीम व संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

अब हम एक संग्रह के लिये डिजाइन करते हैं जिसकी थीम जेब्रा की धारियाँ लेते हैं। वन्य जीवन की रक्षा करें। एक संग्रह में ५ से आठ पोशाकें होनी चाहिये।

अब हम इवनिंग गाउन्स का संग्रह मोर की डिजाइन थीम लेते हुए करते है।

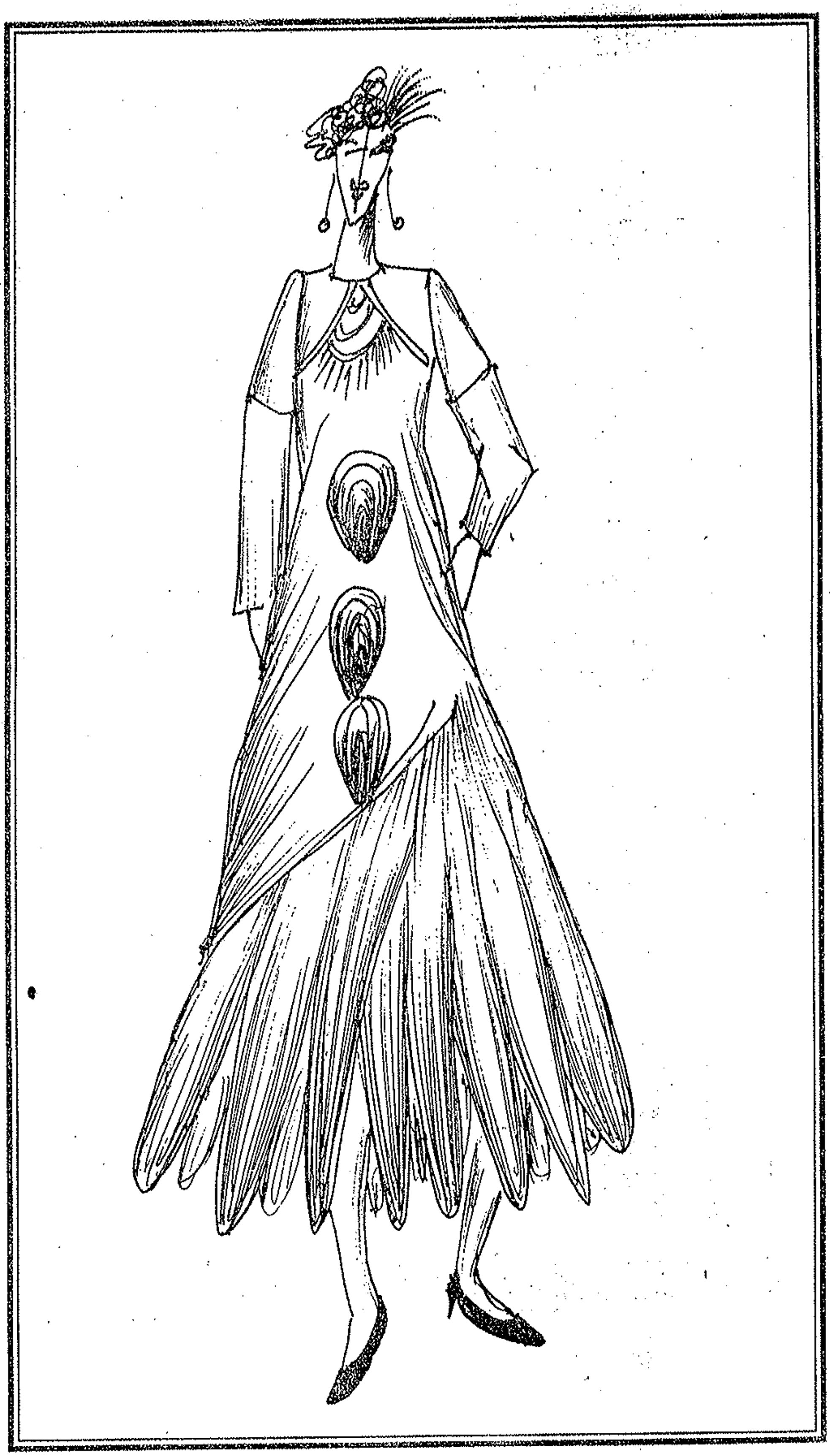

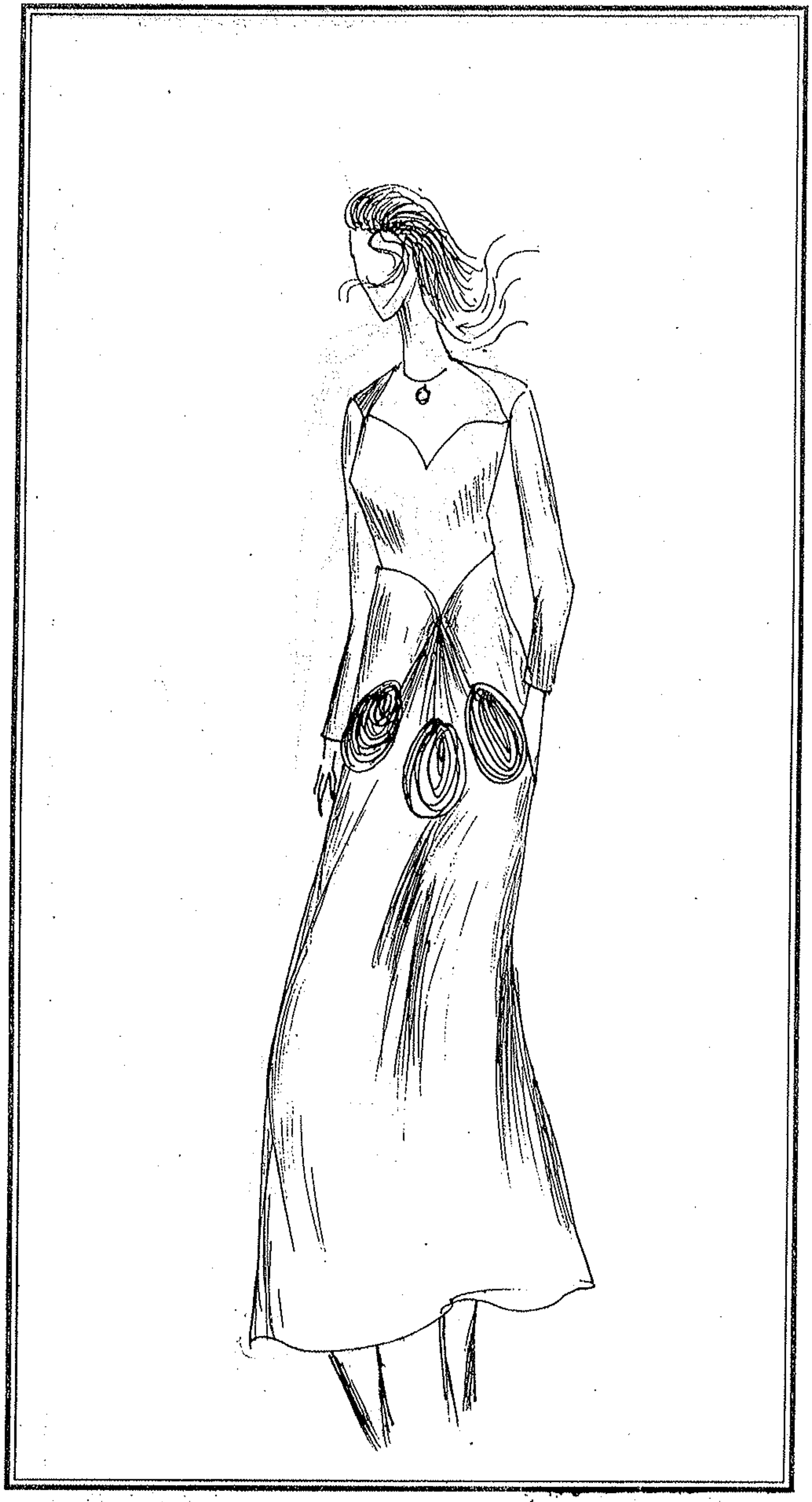

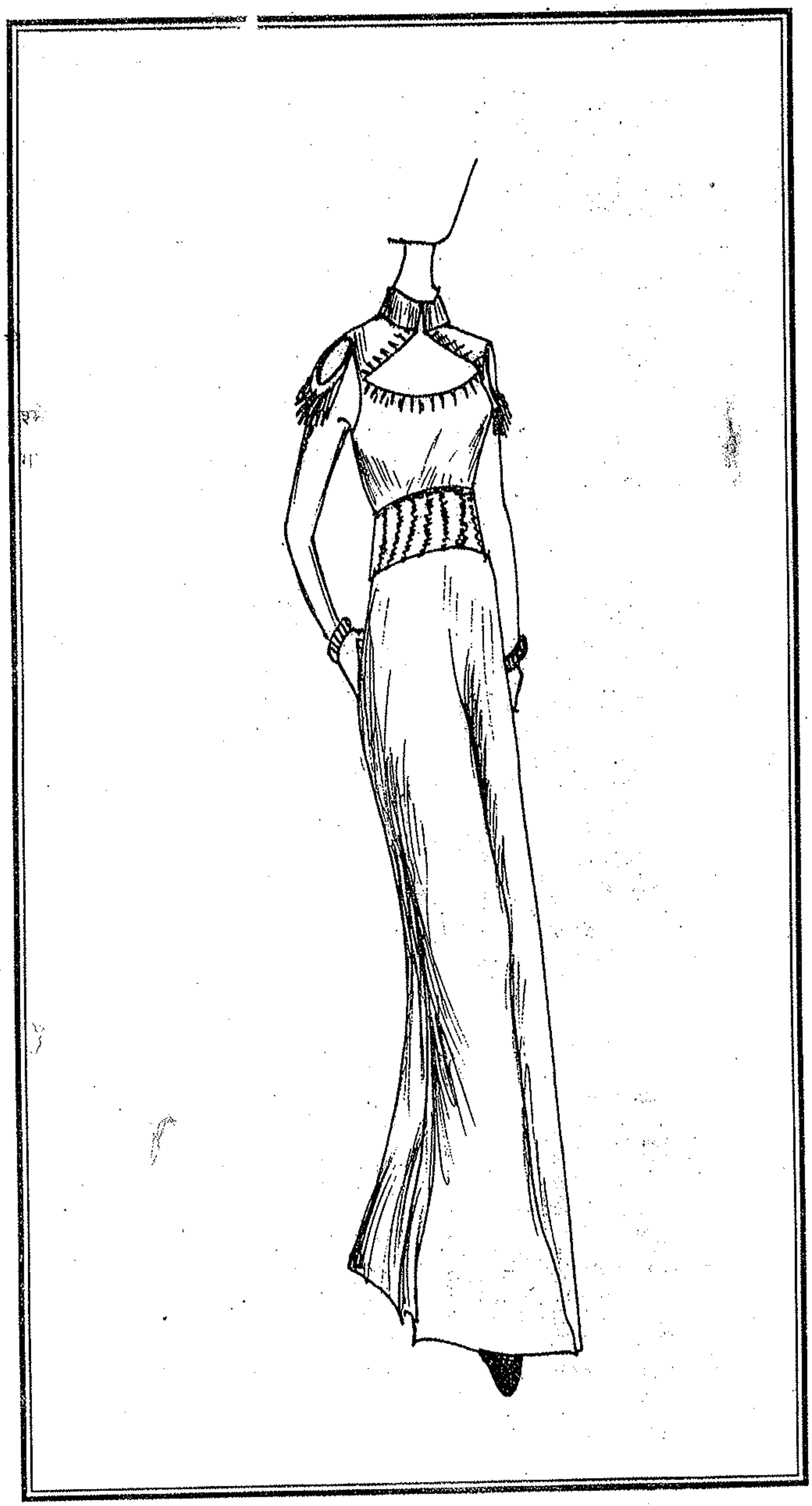

अभ्यास-

१ किसी प्रसिद्ध भारतीय डिजाइनर द्वारा किये गये प्रदर्शन का एक चित्र–संग्रह तैयार करें।

२– किसी पाश्चात्य फैशन डिजाइनर द्वारा किये गये प्रदर्शन का एक चित्र–संग्रह तैयार करें।

१६.४ सारांशः-

फैशन शो के लिये डिजाइन करते समय सम्पूर्ण लुक को ध्यान में रखना पड़ता है। सम्पूर्ण लुक में एसेसरी, मेकअप, केश सज्जा तथा पोशाक शामिल हैं। परिधान पहनने वाली मॉडल का चुनाव भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। संगीत व थीम को महत्ता देना आवश्यक है।

१६.५ स्वार्निधार्य प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न–१ फैशन प्रदर्शन के लिये क्या महत्वपूर्ण है?

प्रश्न–२ एसेसराइजिंग से क्या अर्थ है?

प्रश्न–३ फैशन प्रदर्शन करते समय मेकअप की क्या महत्ता है?

प्रश्न–४ केश सज्जा की क्या महत्ता है?

प्रश्न–५ चश्में का चेहरे पर क्या प्रभाव पड़ता है?

१२.५ स्वाध्ययन हेतु

१– पेरिस फैशन–द आर्ट डेको स्टाइल आफ २०, द्वारा मैडेलीन गिन्सबर्ग, प्रकाशक ब्रेकेन बुक्स, लन्दन।

NOTES